लोकप्रिय उपन्यास जिसपर रंगीन फिल्म भी बन गई है।

गुलशन नन्दा

कटी पतंग



कटी पतंग

'कटी पतंग' बड़ी ही विचित्र और
नाजुक परिस्थितियों में घिरी
एक सुन्दर युवती की ऐसी मार्मिक कहानी है,
जिसके बारे में स्वय लेखक का कहना है
कि इसे एक बार शुरू करके
आप समाप्त किए बिना
नहीं छोड़ सकते !
यह आपके प्रिय लेखक
गुलशन नन्दा का चिरप्रतीक्षित
अत्यन्त रोचक नया रोमांटिक उपन्यास है ।



हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली–३२

Nutan Regmi
20-3-1971
Patna

गुलशन नन्दा

कटी पतंग

पाठकों के प्रिय लेखक का
नया रोमांटिक उपन्यास

नवां संस्करण

मूल्य : तीन रुपये

लेखक की ओर से

दो शब्द

प्रिय पाठको,

मैं आपका कृतज्ञ हूं कि आप मेरे उपन्यासों को बहुत पसन्द करते हैं। यह भी मेरा सौभाग्य है कि किसी नये उपन्यास पर मेरा नाम देखकर आप उसे खरीद लेते हैं। आपका मेरे प्रति यह विश्वास मेरी लेखनी को बल देता है और मैं सदैव प्रयत्नशील रहता हूं कि मेरा हर नया उपन्यास आपके इस विश्वास के योग्य ही हो।

किन्तु आपके इस विश्वास का कुछ धोखेबाज़ लोग अनुचित लाभ उठाते हैं। पिछले महीनों में कुछ उपन्यास ऐसे छपे जिनपर लेखक के रूप में मेरा नाम है—और मुझे इसकी कोई जानकारी तक नहीं! ऐसे लोग मुझे तो नुकसान पहुंचाने का यत्न करते ही हैं, आपके साथ भी वे जालसाज़ी करते हैं। उनके विरुद्ध मैं हर सम्भव कानूनी कार्यवाही तो कर ही रहा हूं, आप पाठकों से भी इस सम्बन्ध में सहयोग की अपेक्षा करता हूं।

अपने पिछले उपन्यास 'सांवली रात' के बाद मैंने यह एक उपन्याय और लिखा है, जिसका नाम है—'कटी पतंग' इस प्रकार मैंने अब तक केवल निम्नलिखित २७ उपन्यास लिखे हैं :

१. मैली चांदनी
२. कांच की चूड़ियां
३. कलंकिनी
४. मैं अकेली
५. टूटे पंख
६. काली घटा
७. शीशे की दीवार
८. सांझ की बेला
९. सिसकते साज़
१०. नील कमल
११. माधवी
१२. सूखे पेड़ सब्ज़ पत्ते

१३. पत्थर के होंठ
१४. एक नदी दो पाट
१५. डरपोक
१६. जलती चट्टान
१७. घाट का पत्थर
१८. अंधेरे चिराग
१९. गेलॉर्ड
२०. देवछाया
२१. नीलकण्ठ
२२. सितारों से आगे
२३. राख और अंगारे
२४. तीन इक्के
२५. गुनाह के फूल
२६. सांवली रात
२७. कटी पतंग
२८. प्यासा सावन
२९. चिनगारी

इनके अतिरिक्त और कोई उपन्यास मैंने अभी तक नहीं लिखा। नया उपन्यास छपने पर मैं उसकी भूमिका में अपनी तब तक की सभी रचनाओं का उल्लेख पुनः कर दूंगा।

आपसे निवेदन है कि मेरे नाम का कोई भी नया उपन्यास देखने पर आप सबसे पहले उसके प्रकाशक का नाम व पता देखें। जाली उपन्यास पर पूरा पता नहीं दिया जाता, अतः यदि किसी उपन्यास पर मेरे प्रकाशक का पूरा पता न हो तो आप समझ लें कि वह जाली पुस्तक है। ऐसी किसी पुस्तक के बारे में मुझे उस विक्रेता और प्रकाशक का पूरा पता यदि आप भेज सकें, तो उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने में मुझे सुविधा रहेगी।

आशा है भविष्य में भी मुझे आपका स्नेह और सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

७, शीश महल
५–ए, पाली हिल्ज़,
बांद्रा, बम्बई–५०

भवदीय :
गुलशन नन्दा

कटी पतंग

"थोड़ी-सी और—बस दो घूंट !"

"ऊंहूं ! ज़्यादा न सताओ बनवारी !"

"जिद न करो शबनम ! देखो ना, गले की सारी रगें सूख रही हैं। पूरे बदन में खलबली-सी मच रही है।"

"आग से आग नहीं लगेगी तो और क्या होगा ! अच्छा, मैं चली।"

"शिब्बू ! मेरी शिब्बू ! रूठ गईं क्या ?"

"जब तुम अपनी शबनम को आग के पास रखोगे तो—तो उसका विनाश होगा ही !"

शबनम की इस भावात्मक बात पर बनवारी हंस पड़ा । उसने उसे खींचकर बिस्तर पर डाल दिया और गुदगुदाने लगा। वह बेचारी फुसफुसी-सी हंसी के साथ बिस्तर में मचलकर रह गई। कुछ अधिक तंग करने पर अपने-आपको छुड़ाने के लिए बनवारी की नंगी पीठ में काट लिया। बनवारी की हंसी एक हल्की-सी कराह में बदलकर रह गई।

कमरे के अंधकार में इन खुसर-फुसर की आवाज़ों को सहसा किसी आहट ने दबा दिया। उखड़ी हुई सांसें कुछ क्षण के लिए रुक गईं। लकड़ी की सीढ़ियों से किसीके कदमों की चाप उस कमरे की ओर बढ़ती आ रही थी।

फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई। बनवारी और शबनम के शरीर को जैसे किसी विद्युत्-तरंग ने छू दिया। वे तड़पकर एक-दूसरे से और भी सट गए।

शबनम ने उखड़ी हुई आवाज़ में पूछा—"इतनी रात गए कौन होगा ?"

इतने में दोबारा दस्तक हुई ।

बनवारी ने बत्ती जला दी। क्राउन होटल का वह अस्त-व्यस्त और गंदा-सा कमरा चमक उठा। शबनम उछलकर अलग हो गई। अपने उतरे हुए कपड़ों से अपना नंगा तन ढांपते हुए वह बालकोनी में खुलने वाले दरवाज़े के साथ चिपककर जा खड़ी हुई और तेज़ी से दरवाज़े पर टंगे पर्दे को खींचकर अपने-आपको छिपा लिया।

बनवारी ने शराब की बोतल को, जिसमें कुछ बूंदें अब भी बची हुई थीं, पांव से धकेलकर चारपाई के नीचे कर दिया। घबराकर उसने दरवाज़े की ओर देखा और बिस्तर से उठकर उसे खोलने के लिए बढ़ा। एक बार पलटकर उसने उस गंदे पर्दे की ओर भी देख लिया जिसके पीछे शबनम छिपी खड़ी थी और फिर कांपते हाथों से दरवाज़ा खोल दिया।

किवाड़ खुलते ही उसके मुंह से एक दबी-दबी-सी चीख निकल गई। चेहरे का रंग उड़ गया। उसके सामने दुशाला ओढ़े अंजना खड़ी थी। उखड़े हुए सांसों को संभालते हुए वह अभी कुछ पूछने ही जा रहा था कि अंजना कमरे के भीतर चली आई और बोली :

"मैं आ गई बनवारी !"

उसने एक ओर अपना अटैचीकेस रखा और पलटकर किवाड़ बंद कर दिए। बनवारी फटी-फटी निगाहों से उसे देख रहा था।

"लेकिन तुम्हारी तो आज शादी होने वाली थी ?" बनवारी ने प्रश्न किया।

"हूं ! होने वाली थी, लेकिन हुई नहीं।"

"क्यों ?"

"मैंने लोक-लाज के सारे बंधन तोड़ दिए।"

"कैसे ?"

"लग्नमंडप में बैठने से पहले ही मैं घर से भाग आई।"

"यह तुमने अच्छा नहीं किया अंजू !"

"और कोई रास्ता भी तो नहीं था बनवारी ! अपनी मुहब्बत की लौ को बचाने का।"

"कायर ही भावुकता का सहारा लेते हैं अंजना !"

"यह आज कैसी बहकी-बहकी बातें करने लगे ! पहले तो कभी तुम ऐसी बातें नहीं करते थे।"

यह कहते हुए उसने अपने कंधों से दुशाला उतारकर एक ओर रख दिया और बनवारी के पास आ गई। ज्योंही मेज़ पर पड़े

शराब के खाली गिलास पर उसकी नज़र पड़ी, बनवारी उसके भावों को ताड़ गया। तुरन्त बोल उठा—"बैठा पी रहा था अपना गम मिटाने के लिए।"

"अब मैं आ गई बनवारी! अब तुम्हें इन झूठे सहारों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैं दूंगी सहारा अपनी इन बांहों का! अब मैं तुम्हारे मुद्दतों के इन्तज़ार की बेचैनी को अपने गले लगा लूंगी।"

"लेकिन अंजू! यह ज़िन्दगी की सच्चाई नहीं है, यह तो उन्माद है। मेरी मजबूरियों का मज़ाक न उड़ाओ, लौट जाओ।"

"यह तुम—तुम कह रहे हो!"

"हां अंजू! इसीमें हम दोनों की भलाई है। तुम्हारी इज़्ज़त और मेरी मजबूरियां जीवन के दोराहे पर खड़ी हैं। अब उनका इम्तहान मत लो।"

"मैं उन मजबूरियों को भी गले लगाऊंगी बनवारी! जिस हाल में रखोगे उसीमें रहूंगी। हमने मुहब्बत से ही तो जीना सीखा है! उसीको ठुकरा दिया तो मेरी इज़्ज़त और तुम्हारी मजबूरियां मौत की परछाइयां बनकर रह जाएंगी।"

बनवारी ने पलटकर उसकी आंखों में झांका। उन शरबती आंखों में भय की जगह सैंकड़ों सितारे झिलमिला रहे थे। वह लोकलाज त्यागकर एक भविष्य की आशा लिए उसके सामने आ खड़ी हुई थी। आज बनवारी उन नज़रों का सामना नहीं कर सका। उसका सिर झुक गया। अपनी झेंप मिटाने के लिए उसने झुककर वह बोतल निकाली जिसमें अभी तक शराब के एक-दो घूंट बचे हुए थे। उन्हें उस खाली गिलास में डालकर वह एक ही सास में पी गया।

अंजना उसकी चुप्पी को समझ नहीं सकी। उसने बनवारी के कंधे का सहारा लेने की कोशिश की तो बनवारी ने उसके गाल पर चुटकी लेते हुए मुस्कराकर कहा—"कितनी भोली हो तुम!"

अंजना कुछ समझ न सकी। उसने अपने मेहंदीलगे हाथों को उसके सामने फैला दिया और बोली:

"बनवारी! यह देखो—मेरे हाथों की मेहंदी जो मेरे भाग्य की रेखाओं को मिटा न सकी।"

"लेकिन अब यह तुम्हारी आशाओं को ज़रूर मिटा देगी अंजू!"

"बनवारी!"

"मुझे आशा नहीं थी अंजू कि तुम मेरे मज़ाक को इतनी संजीदगी से लोगी। मुझे समझे बिना वह कदम उठा लोगी जो तुम्हें कहीं का

नहीं रखेगा।"

"आज तो तुम सचमुच बहक गए हो। तुमने ज़्यादा पी ली है।" उसने बनवारी के हाथ से खाली गिलास ले लिया और उसे अपने हाथों में थामे-थामे फिर बोली—"मेरे प्यार का इम्तहान मत लो बनवारी! मुझे अपनी मज़बूत बांहों का सहारा दो। अब मुझमें बहस की ताकत नहीं रही। देखो बनवारी! विरह के दुःख ने मेरा अंग-अंग तोड़कर रख दिया है।" यह कहते हुए उसने बनवारी के गले में बांहें डाल दीं।

बनवारी ने उसकी बांहों को गले से हटाकर झटक दिया और बोला—"लौट जाओ अंजू! जिस प्यार का नाम लेकर तुम मेरा बोझ बनना चाहती हो, मैं अभी उसके योग्य नहीं। अगर तुम्हारे दिल में प्यार का आदर होता तो तुम सगाई से पहले ही अपने मामा को अपने निश्चय से सूचित कर देतीं।"

"तुम्हें मालूम तो है कि मैंने कई बार उनसे कहने की कोशिश की, लेकिन साहस नहीं हुआ।"

"तो आज घर से भागकर तुमने उनकी कौन-सी इज़्ज़त बढ़ाई है! इससे तो यही अच्छा था कि उन्हें साफ-साफ अपना फैसला सुना देतीं। भरी बिरादरी में अपने प्रेम को स्वीकार कर लेतीं।"

"इससे बड़ी बदनामी होती।"

"मामा के घराने की ना! तुम्हारे प्यार की तो नहीं होती!"

"तो अब क्या फैसला है तुम्हारा?"

"चुपचाप घर लौट जाओ। कहीं ऐसा न हो, तुम्हारी यह हरकत देखकर मामा तुम्हें तुम्हारी जायदाद से वंचित कर दे। तुम्हारे वे अधिकार छीन ले जो हमारे नये जीवन की बुनियाद बन सकते हैं।"

"हूं! अब समझी! तुम्हें मेरी मुहब्बत से ज़्यादा मेरी दौलत का ख्याल है।" अंजना की विचारधारा बदल गई। वह प्यार के घेरे से निकलकर जीवन के यथार्थ को समझने का प्रयास करने लगी।

"नहीं अंजू! मुझे गलत मत समझो। मैं ज़्यादा पीने से सचमुच बहक गया हूं। मेरा मतलब तुम्हारी दौलत से नहीं था, बल्कि तुम्हारे अधिकारों से था। अपने अधिकारों के लिए लड़ना हम सबका कर्तव्य है। कहीं ऐसा तो नहीं अंजू कि तुम्हारा मामा तुम्हारा ब्याह करके तुम्हारी जायदाद हजम करने की फिक्र में हो?"

वह बोलता जा रहा था, लेकिन अंजना की परेशान निगाहें

दूसरी ओर लगी हुई थीं। वह पर्दे के पीछे छिपी लड़की के सफेद पैरों को निहार रही थी जो पर्दे में छिप न सके थे।

वह धीरे-धीरे पर्दे की ओर बढ़ने लगी।

बनवारी अंजना का इरादा भांप गया। उसने उसकी निगाहों से आग बरसती देख ली जो पल-भर में सब कुछ जलाकर राख कर देने वाली थी।

अभी वह कुछ कहने ही जा रहा था कि अंजना ने लपककर उस पर्दे को खींच लिया। अधनंगी शबनम को वहां खड़ी देखकर उसके हृदय को एक धक्का-सा लगा और क्षण-भर के लिए उसे ऐसा महसूस हुआ मानो उसके शरीर में एक भूचाल आ गया हो।

इधर शबनम पानी-पानी हो गई और उसने अपने हाथों में पकड़े हुए कपड़ों में अपना मुंह छिपा लिया।

अंजना ने उन्हीं घातक नज़रों से बनवारी की ओर देखा जो बुत बना उसे निहार रहा था। अपनी सफाई में कुछ कहने के लिए उसके होंठ खुले ही थे कि अंजना ने गालियों की बौछार कर दी और अंत में अपने बिफरे हुए सांसों से वह केवल इतना ही कह सकी—"काश, तुम्हारे चेहरे का नकाब एक दिन पहले हट जाता!" और वह तड़प-कर बाहर जाने के लिए पलटी। बनवारी ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन कंधा झटककर वह बड़ी तेज़ी से सीढ़ियां उतर गई।

बनवारी के पांव तले की ज़मीन खिसक गई। उसकी मुद्रा गंभीर हो गई। वह रेंगता हुआ सा खिड़की के पास चला गया। पट खोलकर नीचे झांका तो अंजना टैक्सी में बैठकर जा रही थी।

सहसा किसीका कोमल हाथ उसके कंधे पर आया। यह शबनम थी जिसने बनवारी के पास आकर उसके मुर्दा शरीर में पुनः जान डालने का फैसला कर लिया था। शबनम ने अलमारी से दूसरी बोतल निकाली और एक डबल पेग उसके आगे कर दिया। बनवारी ने मुड़कर शबनम की ओर देखा जिसके होंठों पर चंचल मुस्कराहट नाच रही थी।

"लो, दो घूंट और लो। पहला नशातो हिरन हो गया होगा!"

बनवारी ने मुस्कराकर उसके गाल पर चुटकी काट ली और दूसरे ही क्षण गिलास में छलकती हुई सुरा को कण्ठ में उंडेल लिया।

"लो, आज से उसका नाम अपनी डायरी में से निकाल दो।" शबनम ने गिलास में दूसरा पेग बनाकर बनवारी को देते हुए कहा।

"नहीं शिब्बू! उसका मेरी ज़िन्दगी में से निकल जाना इतना

आसान नहीं है।"

"बस इसी एक बात की तुममें कमी है बनवारी! तुम कभी अपनी हार नहीं मानते। पैसा, पैसा! हर वक्त पैसे की धुन! वह बेचारी मुहब्बत का सहारा लेने आई थी और तुमने उसे ठुकरा दिया। एक दिन तुम भी पछताओगे जब तुम्हारी जवानी दगा दे जाएगी। समझे! और तब—तब सच्चा प्यार ही तुम्हारा साथ देगा।"

"शिब्बू!" वह ज़ोर से चिल्ला उठा और उसने शराब का भरा गिलास दीवार पर दे मारा। शीशा चूर-चूर हो गया, ठीक उसी तरह जिस तरह आज बनवारी के इरादे चूर-चूर हो गए थे।

इस धमाके के बाद कमरे में फिर सन्नाटा छा गया, लेकिन इस सन्नाटे ने बनवारी के मन-मस्तिष्क में एक उत्तेजना भर दी।

बनवारी सत्य से सामना न कर सका। शबनम चुपचाप अंधेरे में खिसककर एक कोने में जा दुबकी और वह खिड़की के पास खड़ा दूर फैक्टरी की उस चिमनी की ओर देखता रहा जिसमें से काला-काला धुआं निकलकर स्वच्छ आकाश को गंदला कर रहा था।

२

"सरदारजी! ज़रा जल्दी...और तेज़! मैं आपको इनाम दूंगी।"

अंजना बड़े उत्तेजित भाव से, बौखलाई हुई सी बार-बार इन्हीं शब्दों को दुहराती और ज्यों-ज्यों ये शब्द सरदारजी के कानों में गूंजते, वे टैक्सी की चाल तेज़ कर देते, और क्षण-भर के लिए अंजना के दिल की तेज़ धड़कन टैक्सी की उस तेज़ चाल में गुम होकर रह जाती।

उसे अपने घर पहुंचने की बड़ी जल्दी थी। उसकी निगाहें उस पथरीली सड़क पर लगी हुई थीं जिसे टैक्सी बड़ी तीव्र गति से चीरती चली जा रही थी।

अंजना को पूरा विश्वास था कि वह लग्नमंडप में शादी की घड़ी से पहले ही पहुंच जाएगी और यों अपने मामा की इज़्ज़त पर आंच नहीं आने देगी।

सरदारजी ने टैक्सी की गति और तेज़ कर दी जैसे वे बिना बताए ही लड़की की भावनाओं को समझ गए थे और उसकी

सफलता का सेहरा अपने सिर लेना चाहते थे। वे सामने लगे आईने में बार-बार झांककर अंजना का चेहरा देख रहे थे, जिसपर रह-रहकर एक रंग आता था और दूसरा जाता था। उसकी इस घबराहट के पीछे न जाने कितनी अभिलाषाएं छिपी थीं !

अकस्मात् टैक्सी में जैसे भूचाल आ गया। वह सड़क के बीचो-बीच बुरी तरह उछलने लगी। सरदारजी ने बड़ी मुश्किल से चाल धीमी की, लेकिन इससे पहले कि अंजना इस गड़बड़ी के बारे में उनसे कुछ पूछती, टैक्सी सड़क से उतरकर एक पेड़ से टकराकर रुक गई।

एक ज़ोरदार झटका खाकर जब अंजना संभली तो टैक्सी ड्राइवर की बात ने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया। टैक्सी का पहिया बिलकुल बैठ गया था और इंजन से भाप निकल-निकलकर इधर-उधर बिखर रही थी।

"कितनी देर लगेगी सरदारजी ?"

"कम से कम आध घंटा।"

"आपने तो मेरा सब कुछ खत्म कर दिया।"

"वाह गुरु की मर्ज़ी बीबी ! तेरी बात विच आके तो मैंने अपनी टैक्सी का सत्यानास कर लिया।"

अंजना ने और अधिक बात बढ़ाना उचित नहीं समझा और चुपचाप सड़क के किनारे वाली पुलिया पर बैठ गई। सरदारजी पहिया बदलने लगे और वह वहीं बैठी सड़क की वीरानी निहारती रही। उसकी ज़िंदगी में अचानक एक तूफान आ गया था। होनी जो भी रंग लाने वाली थी उसकी ज़िम्मेदार वह खुद थी। आज अगर उसने अपने मामा की बात मानकर अपने झूठे प्यार को न्योछावर कर दिया होता तो उसे इस अग्नि-परीक्षा में से न गुज़रना पड़ता। परिस्थितियों ने एक अनोखा मोड़ ले लिया था। उसकी ज़रा-सी नासमझी ने उसकी ज़िंदगी को एक विचित्र मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया था।

अब केवल एक हल्की-सी आशा रह गई थी। वह थी संभावना मात्र कि शायद उसका जीवन नष्ट होने से बच जाए। इसके लिए वह मन ही मन भगवान से विनती कर रही थी और उसे पूरा विश्वास था कि भगवान उसकी भूल-चूक का इतना कठोर दंड नहीं देगा, लेकिन—? लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसके भाग्य और साहस दोनों ने अंतिम समय पर उसे धोखा दे दिया। उसकी आशाओं पर दुर्भाग्य

की छाया पड़ गई।

वह जब अपने घर पहुंची तो शादी की रोशनियां बुझ चुकी थीं। लग्नमंडप की बुनियादें उखड़ गई थीं। हवनकुंड की राख अपने आंचल में अंगारे छिपाए हुए थी जिसने उसके जीवन के सुख को सदा के लिए सुलगाके रख दिया था। उसका उखड़ा हुआ सांस वहीं रुक गया और वह एक हारे हुए खिलाड़ी की तरह उस मंडप को निहारने लगी जहां से उसका दूल्हा वापस चला गया था। उसने अपनी बरबादी पर चीखना चाहा, लेकिन उसका गला रुंध चुका था।

घर के सन्नाटे और चारों ओर छाए अंधेरे ने वातावरण को भयानक बना रखा था। वह हवेली, जो गंगापुर की सबसे ऊंची हवेली थी और जिसपर उसके पुरखों की इज़्ज़त के झंडे गड़े हुए थे, आज उसकी दीवारें गिरती दिखाई दे रही थीं।

अंधेरे में टटोलती हुई वह उस ज़ीने की ओर बढ़ी जो पिछवाड़े से उसके कमरे तक जाता था। उसने पांव से जूती उतारकर एक ओर फेंक दी और दबे पांव अपने कमरे की ओर बढ़ी।

उसके कमरे में भी लगभग अंधेरा था। केवल आतिशदान की आग की हल्की-सी रोशनी थी। धीरे से किवाड़ सरकाकर वह अंदर आ गई और फिर दरवाज़ा भेड़कर पलटी ही थी कि उसके रुंधे हुए गले से हल्की-सी चीख निकल गई।

सामने पुरखों की पुरानी कुर्सी पर उसका मामा बैठा था। उसकी आंखों में आज प्यार की जगह खून उतरा हुआ था और आंखें जैसे पथराके रह गई थीं। इससे पहले कि उसका मामा अपनी भांजी पर गरजकर बरस पड़ता, अंजना उसके पांव पर गिर पड़ी और रो-रोकर गिड़गिड़ाने लगी :

"मुझे माफ कर दो मामा ! मुझे माफ कर दो। मेरी मामूली-सी गलती की तुम्हें इतनी बड़ी सज़ा मिलेगी, यह मुझे मालूम नहीं था। तुम मेरा गला घोंट दो मामा, मेरा गला घोंट दो। अपनी बहन की निशानी अपने हाथों मिटा दो। जलाकर राख कर दो उसे जिसने तुम्हें इस बुढ़ापे में ऐसा दुःख पहुंचाया है।"

वह फूट-फूटकर रोने लगी, लेकिन फिर अचानक ही उसकी आवाज़ रुक गई। गला सूख गया और वह आंखें फाड़कर, मामा की लाल-लाल आंखों में झांकने लगी। वह क्रोधित आंखें अब भी पथराई हुई थीं—वह तो सदा के लिए पथरा चुकी थीं। उसकी ज़बान हमेशा के लिए तालू से चिपक गई थी और उसके पीले मुर्दा होंठों पर

मानो अभी तक एक आवाज़ तरंगित थी—'अंजू ! मैं तुझे कभी क्षमा नहीं करूंगा।'

अंजना के मुंह से एक हृदय-विदारक चीख निकल गई। उसकी चीख सुनकर सारा घर दहल उठा। विवाह के अवसर पर आए हुए सारे रिश्तेदार चौंक पड़े। एक-एक करके सभी अंधेरे कमरों में उजाला हो गया। एक शोर-सा कानों में सनसनाने लगा। हर कोई तेज़ी से ऊपर चढ़ता आ रहा था। ऐसा लग राह था जैसे हवा के झोंकों ने यह खबर हर किसीके कान में डाल दी थी कि लाला राजकिशन यह दुनिया छोड़ चुके हैं।

अंजना भयभीत हो गई जैसे वही अपने मामा की हत्यारी हो। और वह कदम जो सीढ़ियों पर तेज़ी से बढ़ते आ रहे थे, उसे रौंदने को आतुर हो रहे हों। उन लोगों का सामना करने का उसमें साहस नहीं रहा। उसने झपटकर पिछले दरवाज़े का किवाड़ खोला और उन्हीं अंधेरों में खो गई जिनका सहारा लेकर वह अपने कमरे तक आई थी।

एक धड़ाके के साथ किवाड़ अन्दर की ओर खुले और घर आए मेहमान और नातेदार तेज़ी से लाला राजकिशन की ओर बढ़े। उन्हें मुर्दा पाकर उनका रोना-चिल्लाना शुरू हो गया। घर में एक कुहराम मच गया।

अंजना को लगा जैसे उसकी दुनिया में सदा के लिए अंधेरा छा गया है। वह अचानक फिसलकर एक ऐसी गहरी खाई में जा गिरी थी जिसकी गहराइयों का अनुमान लगाना कठिन था।

अपनी सिसकियों को साड़ी के आंचल से रोके वह उन्हीं अंधेरों में छिपी रही। उसमें किसीके भी सामने आने का साहस नहीं था। उन लोगों की वह बातें भी सुन रही थी जिनमें केवल उसकी भर्त्सना की जा रही थी, उसे कोसा जा रहा था। मामा की मौत का और उस घराने के नाम को हमेशा के लिए डुबो देने का उसीको ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा था।

अंजना कुछ देर तक उन लोगों की बातें और रोने-धोने की चीख-पुकार सुनती रही और फिर न जाने क्या सोचकर वह उसी अंधेरे में सरकती हुई ज़ीने से नीचे उतर गई। उसके कदम बोझिल होते जा रहे थे, दम टूटता जा रहा था, लेकिन वह बढ़ती जा रही थी। वह कहीं दूर भाग जाना चाहती थी, बहुत दूर, सैकड़ों-हज़ारों मील दूर—एक ऐसी जगह जहां उसे कोई पहचान न सके, जहां वह सबके

लिए अपरिचित हो, जहां लोगों के व्यंग्य-बाण उसे छेद न सकें।

वह बढ़ती गई सुनसान और शांत गलियों में···उन वीरान रास्तों पर जिनकी कोई मंज़िल नहीं थी। वह उस बस्ती से दूर भाग जाना चाहती थी जहां से अभी तक उसे घृणा की गन्ध आ रही थी, जहां उसे प्यार के बदले धोखा मिला था और जहां पल-भर में उसकी दुनिया तहस-नहस हो गई थी।

जब वह गंगापुर के छोटे-से स्टेशन पर आई तो अगली गाड़ी आने में अभी दो घंटे की देर थी। रात की कालिमा भयानक हो चली थी। प्लेटफार्म पर सिवाय रेलवे कर्मचारियों के दूसरा कोई दिखाई नहीं देता था। वह चुपचाप एक कोने में पड़े बेंच पर जा बैठी।

रात की इस स्तब्धता को चीर रही थी तो बस एक आवाज़ पुराने इंजन की, जो वहां से कुछ दूर शंटिंग कर रहा था और लाइन पर खड़े मालगाड़ी के खाली डिब्बों को धकेलकर धीरे-धीरे एक ओर ले जा रहा था। जैसे ही किसी खाली डिब्बे को धक्का लगता, वह पटरी पर रेंगता हुआ दूर तक चला जाता।

अंजना अपने-आपको भी कुछ देर के लिए उस खाली डिब्बे की तरह समझने लगी जिसे उसके भाग्य ने शंट करके जीवन की विचित्र पटरी पर धकेल दिया था।

यह सोचते ही उसकी आंखों में आंसू आ गए, लेकिन वह पी गई। सर्द हवा से बचने के लिए उसने आंचल से अपना सिर ढक लिया। जभी उसने देखा कि बिजली के खम्भे का सहारा लिए कोई खड़ा बीड़ी के कश लगा रहा है और उसकी ओर घूर-घूरकर देख रहा है। फिर उस अजनबी ने बीड़ी का एक लम्बा कश खींचा और उसे एक ओर फेंककर कह उठा—"तुम अंजू हो ना? लाला राज-किशन की भांजी जिसकी ड्योढ़ी से बारात लौट गई?"

अंजना को लगा जैसे उसने एक ज़हरीला नश्तर उसके दिल की गहराइयों में उतार दिया हो। उसके दिल में फिर से एक बवंडर उठ खड़ा हुआ। उसका वश चलता तो वह उस आदमी का मुंह नोच-कर आंखें बाहर निकाल लेती जो उसे पहचानकर चोट करने का साहस कर रहा था, लेकिन वह दिल मसोसकर रह गई। उसने वह बेंच छोड़ दी और उस ओर बढ़ चली जिधर बिजली की कई बत्तियां एकसाथ जगमगा रही थीं। वह आदमी एक फुसफुसी-सी हंसी हंसकर रह गया।

फर्स्ट क्लास के वेटिंग रूम में घुसने से पहले अंजना ने पलटकर चोर-निगाहों से देखा। वह अभी तक वहीं खड़ा उसीकी ओर देख रहा था। अंजना ने वेटिंग रूम का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया।

कमरा खाली था, लेकिन एक लंबी-चौड़ी कुर्सी पर एक नन्हा-सा बच्चा पड़ा चिल्ला रहा था। उस नन्ही-सी जान को वहां देखकर पहले तो उसका दिल धक् से हो गया, लेकिन फिर संभलकर वह इधर-उधर देखने लगी। वहां कोई नहीं था। वह यह सब देख घबरा उठी। विकल हो एक बार ध्यान से उसने बच्चे की ओर देखा और फिर किसी आहट को सुनकर ठिठक गई।

नज़रें उठाकर सामने देखा तो बाथरूम से कोई लड़की बाहर निकल रही थी। उसके हाथों में एक बर्तन था जिसमें से गरम पानी भाप छोड़ रहा था। दोनों ने पल-भर के लिए एक-दूसरे की ओर देखा और फिर उस लड़की ने जैसे चिल्लाकर पुकारा—"अंजू!"

अंजना ने भी उसे पहचान लिया था। "पूनम," कहकर वह भी उसकी ओर बढ़ी। पूनम ने हाथ का बर्तन एक ओर रख दिया और अंजना को बांहों में कस लिया।

उन पुरानी सखियों के मिलन को नन्हे बच्चे की चिल्लाहट ने सहसा झंझोड़ दिया। पूनम अंजू से अलग होकर बच्चे के लिए दूध बनाने लगी।

अंजना भी उसके पास बैठ गई और नन्हे को देखते हुए बोली—"किसका है?"

"हट, बेईमान कहीं की! यह भी भला पूछने की बात है!"

"कहां हैं इसके डैडी?" अंजना ने तुरन्त दूसरा प्रश्न कर दिया।

पूनम ने यह सवाल सुना तो सिर से पांव तक कांप गई। उसकी चमकती हुई आंखों से जैसे कोई सितारा टूट गया। आंसू पलकों से ढलककर गालों पर फिसल आए। चेहरा सफेद! उलझे बाल! न सेंदूर न श्रृंगार! वह तड़पकर चिल्ला उठी—"नहीं पूनम! नहीं!"

"यह सत्य है अंजू! तुम्हारी पूनम अब विधवा है।"

"लेकिन यह सब हुआ कैसे?"

"जीप गाड़ी की एक दुर्घटना में वे मुझसे सदा के लिए जुदा हो गए।" पूनम ने अपने आंसू पोंछते हुए उत्तर दिया।

बोतल में दूध डालकर वह बच्चे को पिलाने लगी। रोता-चिल्लाता

बच्चा चुप हो गया और जल्दी-जल्दी चुसनी चूसने लगा। अंजना पर मानो एक नया पहाड़ टूट पड़ा। पूनम की शोकातुर ज़िंदगी के बारे में सोचकर वह अपना दुःख-दर्द भूल गई। उस मौन वातावरण में भी इंजन की आवाज़ ही विघ्न डाल रही थी जो अभी तक खाली डिब्बों को धक्के लगा रहा था।

"अब कहां जा रही हो ?" अंजना ने पूछा।

"नैनीताल, अपनी ससुराल। दोपहर की गाड़ी से यहां पहुंची थी।"

"तुम्हें वहां से कोई लेने नहीं आया ?"

"नहीं। और आना भी किसे था !"

"क्यों ?"

"वे अपने मां-बाप के इकलौते बेटे थे। इस बुढ़ापे में उन लोगों का सफर करना बहुत मुश्किल है।"

"कैसे लोग हैं ?"

"मैं क्या जानूं ! मैंने तो अभी तक उन्हें देखा भी नहीं।"

"क्यों ?"

वह मौन हो गई। उसने बच्चे के मुंह से बोतल निकाल ली। वह पेट भरने पर सो गया था। पूनम ने कम्बल से उसके कोमल शरीर को ढक दिया और चुपचाप अंजना के बराबर आ बैठी।

"तुमने बताया नहीं पूनम !" अंजना ने अपना प्रश्न दुहराया।

"जब से उन्होंने मुझसे शादी की, वे घर नहीं गए।"

"क्यों ?"

"उनके पिताजी इस शादी के लिए राज़ी नहीं थे। उन्होंने अपने बेटे से साफ कह दिया कि उसे दोनों में से एक को चुनना होगा—अपने पिता को या अपनी प्रेमिका को।"

"तब ?"

"उन्होंने पूनम को चुन लिया और वह घर सदा के लिए छोड़ दिया।"

यह सुनकर अंजना के दिल को एक चोट लगी। उसे प्यार की उस जीत के सामने अपनी हार का आभास हुआ। एक उसका चाहने वाला था जिसने उसे रास्ते की ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया था। वह गुमसुम बैठी अपनी ज़िंदगी के बारे मे सोचती रही। उसे मौन देखकर पूनम ने उसकी शादी के बारे में पूछ लिया जिसे सुनकर वह कांप गई। उत्तर देने के बजाय उसके होंठ कांपने लगे।

पूनम ने अपना प्रश्न दुहराया—"बताओ ना अंजू! कब है तुम्हारा ब्याह? सुना था जल्दी ही होने वाला है।"

"हो चुका।"

"कब?" पूनम चौंक पड़ी।

"दो दिन पहले।"

"लेकिन तुम…!"

"घर से डोली न उठ सकी। बारात लौट गई।" सिसकती आवाज़ में वह बोल पड़ी।

अब की पूनम के दिल को धक्का लगा। क्षण-भर के लिए उसे ऐसा लगा जैसे उसकी सहेली उससे मज़ाक कर रही हो; लेकिन फिर उसकी पलकों पर आए आंसुओं को देख पूनम का संदेह विश्वास में बदल गया। अंजना की मुद्रा यथार्थ का रूप धारण किए हुए थी।

उसने अंजना का हाथ थाम लिया और उसका दिल हल्का करने के लिए पूरी कहानी सुनाने की ज़िद की। अंजना ने बिना घटाए-बढ़ाए पूरी कहानी सुना दी।

अंजना के गम ने पूनम को और भी उदास कर दिया। वे कहानियां और किस्से जो वे किताबों में पढ़ा करती थीं, आज यथार्थ का रंग लिए उनकी अपनी ज़िदगियों को रंगे हुए थे।

पूनम ने उसे दिलासा दी, बोली—"अब कहां जाने का इरादा है?"

"यहां से कहीं दूर, जहां मुझे कोई न जाने। कोई अपना न हो, जहां मैं अपना नया जीवन शुरू कर सकूं।"

"औरत की ज़िदगी को तो मर्द का सहारा चाहिए। उस नाव की मंज़िल क्या जिसका खेवनहारा न हो!"

"लेकिन मुझे अब मर्दों से घृणा-सी हो गई है। मैंने जीवन-भर विवाह न करने का फैसला कर लिया है।"

पूनम के पीले अधरों पर फीकी-सी मुस्कान उभरी जैसे उसे अंजना के निर्णय पर विश्वास न हुआ हो। परछाइयों की तरह उभरकर मिट जाने वाला इरादा था यह!

वह बोली—"एक बात कहूं?"

"कहो।"

"मानोगी?"

"हूं।"

"तुम मेरे साथ नैनीताल चलो।"

अंजना पूनम की बात सुनकर चकित हो उसे निहारने लगी।

पूनम ने फिर वह बात दुहराई तो अंजना ने साफ इंकार कर दिया।

पूनम ने सहानुभूति जताते हुए उसे समझाया—"पागल न बन। इतनी बड़ी दुनिया में अकेले कहां भटकेगी!

"कहीं भी, लेकिन किसी दूसरे का बोझ नहीं बनूंगी।"

"मैं कोइ पराई हूं! मेरी अच्छी बहन! मान जा। मेरा अजीरन जीवन भी तुम्हारा साथ पाने से कट जाएगा और तू भी नया जीवन अपना सकेगी।"

"तुम्हारे ससुराल वाले क्या सोचेंगे?"

"कह दूंगी, मेरी छोटी बहन है। इस दुनिया में हमारा और कोई नहीं, इसीलिए इसे अपने साथ ले आई।"

"नहीं पूनम! नहीं! न जाने वे क्या समझें! अभी तो तुम भी उस घर में अजनबी होगी!"

"तुझे इन बातों से क्या? तू मान जा, अपने लिए नहीं तो मेरे लिए ही सही। अनजान लोग! अनजान जगह! दोनों मिलकर रहेंगी तो कट जाएगी ज़िंदगी।"

इससे पहले कि अंजना पूनम की बात का कोई जवाब दे, पूनम ने मुंह पर उंगली रखकर उसका मुंह बंद कर दिया। उन दोनों की ऊंची आवाज़ों के कारण बच्चा नींद से जग गया था। पूनम ने उसे गोद में ले लिया और बांहों के झूले में झुलाने लगी।

इधर अंजना के मन में एक द्वन्द्व उठ खड़ा हुआ, एक उलझन-सी पैदा हो गई। जीवन के कटु सत्य की छाया उसके मन में लहराने लगी। वह मौन हो पूनम और उसके बच्चे की ओर देखती रही। जब दोनों की नज़रें मिलीं तो तनिक मुस्कराकर अंजना ने पूछा—"क्या नाम है नन्हे का?"

"राजीव!"

सुन्दर-सा कोमल बच्चा देखकर कुछ देर के लिए उसके दिमाग ने अन्य बातें सोचना बन्द कर दिया।

३

गाड़ी तेज़ी से भागी जा रही थी। फर्स्ट क्लास के एक सुनसान डिब्बे में अंजना और पूनम आमने-सामने की सीटों पर बैठी थीं।

राजीव सीट के कोने में लेटा हुआ था। पूनम किसी पत्रिका के अध्ययन में लीन थी और अंजना मौन धारण किए खिड़की से बाहर छाए अंधकार में घूर रही थी, जिसमें नज़र आते धुंधले साये गाड़ी की विपरीत दिशा में भागे चले जा रहे थे। गाड़ी की गड़गड़ाहट चारों ओर छाए सन्नाटे को भंग कर रही थी।

अंजना ने अपनी सहेली का साथ देना मान लिया था और अब उसकी छोटी बहन बनकर उसकी ससुराल जा रही थी—एक नई ज़िदगी शुरू करने, एक नई दुनिया बसाने। उसके जीवन में ऐसा परिवर्तन आएगा, यह बात उसने स्वप्न में भी नहीं सोची थी।

सहसा पूनम की आवाज़ ने उसे चौंका दिया। वह पूछ रही थी—"क्या सोच रही हो अंजू ?"

"यही कि आज जीवन किस डगर पर चल पड़ा है !"

"तो इस डगर पर चलने से डरती क्यों हो, जबकि मैं तुम्हारे साथ हूं ?"

"हां पूनम ! सन्तोष तो इसीलिए मिल गया है। अगर आज तुम न मिलतीं मुझे तो न जाने मेरी मंज़िल कहां होती और क्या होती !"

"भाग्य में यही बदा था।"

"भाग्य की भी तुमने खूब कही ! जानती हो, मामा ने मुझसे क्या कहा था ?"

"क्या ?"

"ब्याह-शादी सब संयोग की बात है। होनी को कोई टाल नहीं सकता। मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि तेरे भाग्य में इतना अच्छा वर लिखा होगा।"

"तब ?"

"तब मेरे मन में एक और धुन सवार थी और वह थी बनवारी की मुहब्बत। मैं उसके पीछे दौड़ी। अंत में मृगतृष्णा की भांति धोखा खाकर जब संयोग के अंक में लौटी तो मन में एक विश्वास-सा था जो मुझे उस ओर बड़ी तेज़ी से खींचे लिए जा रहा था। मुझे मामा की यह बात सच्ची मालूम होती थी कि मेरा संयोग उसीसे बंधा हुआ है जिससे उन्होंने तय किया है।"

यह कहते-कहते वह रुक गई। उसके हृदय की धड़कन तेज़ हो गई। पूनम एकटक उसकी ओर देख रही थी।

दो-एक क्षण बाद अंजना ने फिर कहना शुरू किया :

"लेकिन जब वह संयोग टूट गया तो इन रूढ़िवादी बातों से मेरा

विश्वास उठ गया। मामा की कही बात मुझे एक धोखा नज़र आने लगी।"

"यह दोष तुम्हारा नहीं, उस घड़ी का है जिसने तुम्हारी भाग्य-रेखाएं बदल दीं।"

अंजना के अधर स्वरहीन हो गए। पूनम ने उसके दिल के दर्द को समझने का प्रयत्न किया और धीरे से बोली :

"लड़का कैसा था ?"

"मैंने देखा ही नहीं। बनवारी की लगन में उसे देखने की सोच भी न सकी, लेकिन राम जाने कब और कैसे भावुकता में बहकर मैंने मामा से 'हां' कर दी।"

"बेचारा वह लड़का क्या सोचता होगा ! तुम कैसी लड़की हो जिसने शादी के दिन भागकर उसकी ज़िंदगी में एक उलझाव पैदा कर दिया !"

अंजना फिर मौन हो गई। उसे भी कुछ देर के लिए अजनबी से हमदर्दी-सी हो गई जो उससे बिछुड़कर न जाने कहां होगा !

"क्या नाम था उसका ?" पूनम ने उसे अधिक देर तक विचार-मग्न न रहने दिया।

अंजना उसके इस प्रश्न पर चौंक पड़ी। उसका वदन कांप उठा।

पूनम ने बातों में रस पैदा करने के लिए मुस्कराकर फिर छेड़ा—"अरी ! शरमाती क्यों है ? नाम तो अपने पति का नहीं लिया जाता। उसका नाम लेने में क्या हर्ज है जो तुम्हारे हाथ से निकल गया ?"

"कमल मोहन।" वह ज़बान दांतों में दबाकर धीरे से बोली और अपना मुंह अपने हाथों में छिपा लिया।

पूनम ने उसके घावों को अधिक कुरेदना न चाहा। वह सिमट-कर बैठ गई और फिर पत्रिका पढ़ने में व्यस्त हो गई। गाड़ी की गड़गड़ाहट और इंजन की चीख से वातावरण में विकलता की लहरें दौड़ रही थीं।

सहसा एक धमाका हुआ। रात की कालिमा कंपित हो उठी। पूनम और अंजना को ऐसा लगा जैसे भूचाल आ गया हो। पूनम चीख उठी और झपटकर अपने बच्चे की ओर लपकी। उसे अपनी गोद में दुबका लिया। दोनों सहेलियां एक-दूसरे को थामने का निश्चय कर ही रही थीं कि उनके मुंह से एकसाथ चीखें निकल गईं। उसके बाद उन्हें मालूम नहीं क्या हुआ। उन्हें ऐसा लगा जैसे वे किसी

गहरे अंधेरे में डूब गई हों।

रेलगाड़ी अचानक पटरी से उतर गई थी। डिब्बे एक-एक करके एक-दूसरे से टकरा गए थे। इंजन ज़मीन में धंस गया था। रात की भयानकता अंधकार का आवरण डालकर उस जंगल के वीराने में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत कर रही थी। यात्रियों में विचित्र होहल्ला मच गया था।

प्रत्येक यात्री एक-दूसरे से बिछुड़कर रह गया। कोई किसीका सहारा रहा न कोई किसीका साथी। बस एक विधाता का नाम था जो चीखते-चिल्लाते, रोते-धोते यात्रियों के अधरों पर था। घावों से निढाल कोई कराह रहा था, कोई सिसक रहा था और कोई खून से लथपथ था। किसीके प्राण-पखेरू निकल चुके थे और किसीके निकलने वाले थे। त्राहि-त्राहि मची हुई थी।

इस ट्रेन दुर्घटना के कोई तीन दिन बाद बड़ी कठिनाई से अंजना ने अपनी सहेली का पता लगाया। भाग्य ने अंजना को जीवन-दान दिया था। साधारण-सी खराशें आई थीं। चेतना लौटते ही उसने पूनम की तलाश शुरू कर दी थी। उसे अपनी ज़िंदगी, अपने दुख-दर्द की परवाह नहीं थी। पूनम को ढूंढ़ने के सिवा उसे और कुछ सूझता नहीं था। कई दिनों तक वह भटकती रही।

अन्त में एक दुर्घटना-पीड़ित सहायता-शिविर में एक रजिस्टर पर पूनम का नाम मिला। वह खुशी से पागल हो जाती लेकिन आस-पास की दशा देखकर वह सिहर उठी। वह तुरन्त अस्थायी अस्पताल में जा घुसी और उसकी नज़रें चारों ओर पूनम को खोजने लगीं। घायलों की आहें और उनकी बुरी दशा उसे साहसहीन न बना सकीं। ऐसे दुखद वातावरण के बीच आशा की एक किरण विह्वलता के घुप अंधेरे में उसे धीरज बंधा रही थी। वह पूनम और उसके बच्चे को देखने के लिए बेकल थी।

पूनम के लिए प्यासी आंखें उन तमाम घायलों को टटोल रही थीं जिनमें वह कहीं छिपी बैठी थी। वह रोगियों की चारपाइयों की लाइन के साथ आगे बढ़ती गई।

एक रोगी की शय्या के पास पहुंचकर वह सहसा ठिठक गई जैसे स्याह बदलियों में पूनम का चांद नज़र आ गया हो। वह उस रोगी को देखने लगी जिसकी चारपाई के बराबर वाले बिस्तर पर राजीव पड़ा हुआ था।

पूनम को देखकर उसके मुंह से चीख निकल ही जाती, लेकिन उसे अपनी आंखों पर जैसे यकीन नहीं आया। उसके होंठ फड़फड़ाकर रह गए।

वह पूनम की चारपाई के पास जाने के लिए डरते-डरते आगे बढ़ी जिसे डाक्टरों ने घेर रखा था। पूनम दर्द से कराह रही थी। दो-तीन नर्सें उसे पकड़े हुए थीं। पूनम सिर से पांव तक कुचल गई थी। उसकी दोनों टांगें कट चुकी थीं। चेहरा भयानक लग रहा था। सारा बदन पट्टियों से बंधा हुआ था और वह अर्घ मूर्छित अवस्था में चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी—"मुझे मरने दो···मैं अब···जीना नहीं चाहती।"

डाक्टरों ने ज़बरदस्ती उसे इन्जेक्शन दे दिया और दूसरे ही क्षण वह अचेत हो गई। उसकी चारपाई के पास वे यंत्र रखे हुए थे जिनके द्वारा उसके शरीर में खून और ग्लूकोज़ पहुंचाया जा रहा था।

अंजना धीरे-धीरे आगे बढ़ती-बढ़ती उसके आगे पहुंची और बड़े ध्यान से उस पूनम के चांद को देखने लगी जिसपर विधाता ने क्रूर कुचक्र चलाया था—ऐसा कुचक्र जिसने उसे काल के गाल में झोंक दिया था।

"आप ?" डाक्टर ने रुख पलटते ही अंजना से पूछा जो अचरज और निराशा की प्रतिमा बनी पूनम को निहार रही थी।

वह तुरन्त बोल उठी—"जी, मैं—मैं इसके साथ हूं। यह पूनम है।"

"अच्छा हुआ आप आ गईं। इनके पास किसी न किसीका होना बहुत ज़रूरी है।"

"कैसी तबीयत है अब इनकी ?"

"खतरे से खाली नहीं है। थोड़ी ही देर पहले इन्होंने ज़हर खाने की कोशिश की थी।"

डाक्टर की यह बात सुनते ही अंजना के दिल को एक धक्का लगा। वह सिर से पांव तक कांप उठी।

डाक्टर ने नम्र भाव से समझाया कि वह उसे पल-भर के लिए भी अकेले छोड़कर कहीं न जाए।

इतने में एक नर्स भागती हुई डाक्टर के पास आई और उसे किसी और रोगी की ओर लेकर चली गई। उसकी हालत शायद बिगड़ गई थी। डाक्टर चला गया लेकिन अंजना को एक अनोखी

उलझन में डाल गया। वह स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी, पूनम की कभी ऐसी दुर्दशा भी होगी कि वह विषपान के लिए विवश हो जाएगी।

अंजना का दिल भर आया लेकिन वह मजबूर थी। उसके वश में कुछ न था। वह उसकी दर्द-भरी और विकल दशा देखकर चीख उठती लेकिन रोगियों की हृदय-विदारक हाय-हाय से वातावरण इतना वेदनापूर्ण था कि वह उसे और अधिक वेदनात्मक नहीं बनाना चाहती थी। अतः पूनम से निगाहें हटाकर अंजना ने उस मासूम बच्चे की ओर देखा जो आराम से सोया हुआ था। उसके बदन पर तनिक चोट भी नहीं आई थी। शायद उसे बचाते-बचाते पूनम अपना सब कुछ खो बैठी थी।

अंजना चुपचाप पूनम के पास बैठ गई। ज्यों-ज्यों शीशे की बोतल से ग्लूकोज़ टपक-टपककर उसकी रगों में समा रहा था, अंजना को उसकी जिंदगी की आशा बंधती जा रही थी; लेकिन उसकी बिगड़ी हुई सूरत देखकर उसका दिल दहल गया था, उसकी सारी अभिलाषाएं मिट गई थीं। उसे नारी-जाति पर तरस आ रहा था। वह सोच रही थी कि औरत ठीक उस किश्ती की तरह है जो तूफान के थपेड़ों से हिचकोले खाती रहती है। अगर दुर्भाग्य से उसका मल्लाह पतवार छोड़कर उसे भंवर में अकेला छोड़ दे तो वह कहीं की नहीं रहती।

अकस्मात् पूनम को कुछ होश आ गया। उसके पीले-पीले सूखे होंठ फड़फड़ाए। वह अपने बच्चे को याद कर रही थी। अर्धमूर्छित अवस्था में कुछ ऐसी बातें बुदबुदा रही थी जो समझ में नहीं आती थीं।

अब वह डाक्टर को पुकारने लगी। अंजना ने झुककर उसकी बात समझने की कोशिश की।

पूनम कह रही थी—"डाक्टर ! बच्चे के दूध का समय हो गया है···मुझे उठने दो···इतना बोझ मेरे सिर पर न रखो डाक्टर !··· मैं उसके तले दबी जा रही हूं।"

उसकी आवाज़ में कंपन थी। सांस रुक-रुककर चल रही थी। ज़बान लड़खड़ा रही थी। जब उसे कोई जवाब नहीं मिला तो वह चिल्ला उठी। उसकी चीख में एक दर्द था जो वायुमंडल में बिजली की लहर की तरह दौड़ गया।

नर्स ने लपककर झटपट खून की नली उतार दी।

"नन्हा सो रहा है पूनम !" अंजना के मुंह से स्वतः निकल गया।

पूनम एकदम चुप हो गई। उसने आंखें खोलीं और अपने चेहरे पर बंधी पट्टियों में से झांककर देखा। उसकी आंखें चमक उठीं। दो-एक क्षण वह शान्त भाव से देखती रही और फिर मद्धिम स्वर में बोल उठी—"कौन?"

"अंजू, तुम्हारी सहेली। पूनम!"

वह फिर चुप हो गई।

अंजना ने अपनी बात दुहराई—"मैं हूं पूनम! तुम्हारी सहेली। राजीव सो रहा है।"

पूनम ने बड़ी कठिनाई से अपना कमजोर हाथ उठाया। ऐसा लगा जैसे अंजना की आवाज़ ने उसकी मुर्दा रगों में पल-भर के लिए रूह फूंक दी हो। अंजना ने लपककर उसके हाथ को पकड़ लिया और धीरे-धीरे उसे दबाने लगी। इस प्यार-भरे संपर्क से उसमें कुछ स्फूर्ति आई। उसका सारा शरीर कांपने लगा।

सहसा उसके मुंह से निकला—"मैं अब जिन्दा···नहीं हूं अंजू!"

"छि: छि:! ऐसी बात क्यों करती हो! तुम बहुत जल्दी अच्छी हो जाओगी।"

"किसके लिए? ज़िंदगी तो पहले ही बोझ बन गई थी मेरे लिए जब मैं चंगी-भली थी, और अब—अब तो यह काया भी एक बोझ बन गई है। इस बोझ को कौन उठाएगा?"

"मैं—मैं जो तुम्हारे साथ हूं! तुम्हारी छोटी बहन!"

अंजना ने झुककर उसकी आंखों में झांकने का प्रयास किया। पूनम की आंखों में आंसू छलक आए थे। उसे लग रहा था जैसे मझधार में डूबते-डूबते किसी तिनके का सहारा मिल गया हो।

पूनम बड़े प्यार से बोली—"मेरे नसीब जाग उठे अंजना! तू मिल गई मुझे। अब मेरी सारी कठिनाइयां हल हो गईं।"

अंजना की समझ में उसकी बात तो न आई फिर भी उसने स्वीकारसूचक ढंग से सिर हिला दिया।

"तुम्हें एक सहारे की तलाश है ना?" पूनम पुनः बोली।

उसकी यह बात सुनकर अंजना चौंक उठी। उसने चकित हो उन अधरों की ओर देखा जिनकी पीलिमा पर कुछ लाली आ गई थी। जैसे निराशा अचानक आशा में बदल गई हो। वह पूनम की उखड़ी-उखड़ी बातों को समझने के लिए तनिक और सरक आई।

"जानती हो ना, इस दुनिया में जीना कितना कठिन है?" पूनम ने कहा।

"हूं !"

"खास तौर से उस लड़की के लिए जिसका कोई रक्षक नहीं हो ।"

"मुझे किसी रक्षक की ज़रूरत नहीं रही पूनम ! मुझे तो मर्दों से घृणा हो चुकी है । तुम्हारा साथ मिल गया है, इसी सहारे जीवन बीत जाएगा । मैं भी इस बच्चे की मुस्कराहट से मुस्करा लूंगी ।"

"और मैं मर गई तो ?"

"छिः ! भगवान के लिए ऐसा मत सोचो ।"

पूनम ने अंजना की यह बात सुनी तो उसके अधरों पर मुस्कान थिरक उठी । अंजना को लगा जैसे सफेद कफन से ढके हुए मुर्दे के नीले अधर सहसा खिल उठे हों ।

पूनम बोली—"सच्चाई से कौन मुंह फेर सकता है ! कितना सुनहरा अवसर है अंजू ! तुम्हें एक सहारे की तलाश है और मुझे एक हमदर्द की जो अपना हो और मेरे बच्चे को अपना सके ।"

"यह सब क्या कह रही हो तुम ?"

"वह जो मुझे कहना चाहिए । मुझे वचन दो अंजू, कि तुम मेरे बच्चे को अपना लोगी । उसे मां का प्यार दोगी ।"

"दिल छोटा न करो पूनम ! मैं तुम्हारे साथ हूं । मैं तुम्हारी बहन हूं । हम-तुम दोनों उसे पालने-पोसने में ही अपना जीवन बिता देंगे ।"

"सच ?"

"हां पूनम ?"

"जानती हो ना अंजू ! मेरी ससुराल वालों ने अब तक मेरी सूरत नहीं देखी है ।"

"जानती हूं ।" अंजना उसके दिल की तह तक पहुंच गई, फिर भी अनजान-सी बनकर बोली—"बेचारे न जाने तुम्हारे लिए कितना तड़प रहे होंगे !"

"तुम एक काम करो ।"

"क्या ?"

"वहां जाकर मेरी जगह ले लो ।"

"पूनम !" वह आगे कुछ बोल नहीं सकी । दिल थामकर रह गई । उसे लगा जैसे पूनम ने भरपूर शक्ति से उसके सिर पर हथौड़ा दे मारा हो । वह एकदम गुमसुम हो गई । बड़ी दुखदायी शांति छा गई ।

अंत में पूनम ने शांति भंग की—"उसीमें तुम्हारी भलाई है अंजू ! तुम्हें सहारा मिल जाएगा, मुझे मेरे बच्चे की मां मिल जाएगी ।"

"पूनम !"

"हां अंजू । मेरी ससुराल वाले मुझे इस दशा में देखेंगे तो घृणा से मुंह मोड़ लेंगे । जवान बेटे की मौत के बाद अगर उन्हें मेरा यह सदमा पहुंचा तो न जाने क्या हो जाएगा ।"

"नहीं पूनम ! तुम ठीक हो जाओगी ।"

"यह झूठी तसल्ली है । वादा करो अंजू कि तुम उन्हें इस बुढ़ापे में यह दूसरा सदमा नहीं पहुंचने दोगी । वचन दो कि राजीव को तुम अपना बेटा समझकर पालोगी । यह मेरी धरोहर है तुम्हारे पास ! तुम मेरी जगह पूनम बन जाओगी ।"

"पूनम !"

पूनम कमज़ोरी की इस हालत में यह सब कहते-कहते भावुकता में बह गई । उसका सांस गले में अटकने लगा ! ज़बान लड़खड़ाने लगी और वह अचेत हो गई ।

अंजना ने उसे दो-चार बार पुकारा, लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं मिला । ज्योंही उसने पूनम के मुंह से झाग निकलते देखा, वह डर गई । पूनम की सांस रुक-रुककर चल रही थी । वह उसकी बदलती हुई स्थिति को भांप गई और चिल्लाकर डाक्टर को बुलाने के लिए दौड़ी । पास खड़ी नर्स उसे घबराहट में देख मदद के लिए आ गई ।

डाक्टर के साथ अंजना जब पूनम के पास लौटी तो पूनम—? पूनम इस दुनिया से विदा हो चुकी थी । डाक्टर ने धीरे से उसकी खुली आंखों को बन्द कर दिया । अंजना फूट-फूटकर रोने लगी । कुछ दिनों की मित्रता ने इतनी घनिष्ठता पैदा कर दी थी कि उसकी मौत से अंजना के दिल पर इतनी अधिक चोट पहुंची जो उसे अपनी दुर्दशा पर पहले नहीं पहुंची थी ।

शोकातुर विलाप तथा डाक्टरों और नर्सों की भाग-दौड़ से राजीव की आंख खुल गई । वह मां के लिए चिल्लाने लगा ।

जब अस्पताल के दूसरे लोग पूनम की मौत पर आंसू बहा रहे थे, अंजना एक ओर खड़ी बच्चे की चिल्लाहट सुन रही थी । सहसा उसकी दृष्टि राजीव से हटकर पूनम की ओर चली गई उसके अंतिम दर्शन के लिए ।

अंजना को आभास हुआ जैसे पूनम के नीले होंठों से अब भी ये

शब्द निकल रहे हैं—'यह झूठी तसल्ली है, वादा करो अंजू ! तुम राजीव को अपना लोगी । तुम मेरी जगह पूनम बन जाओगी । यह मेरी धरोहर होगा । तुम्हें एक सहारा चाहिए और उसे ममता । बोलो अंजू ! बोलो ! वचन दो ।'

अंजना ने अपने कान बन्द कर लिए । पूनम की पुकार सहसा बंद हो गई, लेकिन बच्चे के रोने की आवाज़ अभी तक उसके कानों को छेद रही थी । वह अधिक सहन न कर सकी । नारी का कोमल हृदय पिघल गया । उसके अन्दर दबी हुई ममता मचल उठी । वह बेचैन हो गई । अपने हृदय को शांत करने के लिए वह राजीव की ओर बढ़ी और लपककर अपनी पूनम की अंतिम भेंट को उठा लिया । अपने कलेजे से लगा लिया ।

उसे कुछ धीरज मिला, कुछ शांति मिली । ज्वाला की तरह भड़कती-धधकती मानसिक विकलता में ठंडक पड़ गई । वह उस बच्चे के बदन की गरमी पाकर कुछ क्षण के लिए पूनम की सर्द मौत को भूल गई ।

अंजना के दिल में जीने की अभिलाषा फिर से जाग उठी । शोक पर शोक सहन करते-करते उसके आंसू सूख गए थे । उसने दिल ही दिल में अपनी सखी की थाती को अपनाने का निश्चय किया । उसमें अंजू का मनहूस भेस छोड़कर पूनम के रूप में जीने का साहस आ गया । वह अतीत के दुख भूलकर आने वाले सुनहरे भविष्य की कल्पना करने लगी ।

सहसा किसी कार्यकर्ता की आवाज ने उसे चौंका दिया जो उससे पूछ रहा था—"इसका नाम पूनम ही था ना ?"

"जी ।"

"इनसे आपका रिश्ता ?"

"मेरी बड़ी बहन थीं ।"

"और यह बच्चा ?"

"अब मेरे पास रहेगा ।"

"यहां से कहां जाना है आपको ?"

"नैनीताल ।"

"कब ?"

"मौका मिलते ही..."

"इस मौत की सूचना...?"

"मैं दे दूंगी ।"

"इनके पति का नाम ?"

"चन्द्रशेखर।"

"आपका पता ?"

"द्वारा, लाला जगन्नाथ, १६, लेक विव, नैनीताल।"

"थैंक यू।"

वह कार्यकर्ता पूछताछ करके चला गया लेकिन वह चुपचाप खड़ी उस 'लेक विव' की कल्पना करने लगी जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।

यह सब कुछ करने की हिम्मत अगर कोई दिला रही थी तो वह थी पूनम की अंतिम इच्छा और उस बच्चे का प्यार जो उसके सीने से चिपका उसके ब्लाउज़ के बटन से खेल रहा था।

४

बेमौसम की झड़ी लगी हुई थी। बादलों के धुंधलके में से लगातार टप-टप बूंदें बरस रही थीं और कुहरे ने संध्या के खिले मुखड़े पर अपनी कालिमा का आवरण डालना आरम्भ कर दिया था।

अंजना इस भीगे मौसम में एक प्राइवेट टैक्सी में बैठी पूनम की ससुराल जा रही थी। अपने जीवन में वह पहली बार नैनीताल जा रही थी। नई जगह, नये लोग, अनजाना वातावरण और—और एक अनोखी ज़िंदगी! इन सब बातों को सोचकर उसका दिल बैठा जा रहा था लेकिन न जाने कौन-सा आकर्षण था जो उसे इस नई मंज़िल की ओर लिए जा रहा था।

कोलतार की भीगी हुई सड़क पर जब कभी टैक्सी का पहिया किसी गढ़े पर उछलता तो वह अपनी तन्मयता से हड़बड़ा-सी जाती और राजीव को अपनी बांहों में कस लेती। उसकी कल्पनाएं उन बादलों की तरह ही थोड़ी देर के लिए बिखर जातीं।

राजीव को सरदी से बचाने के लिए उसने उसे अपने गरम दुशाले से अच्छी तरह ढक लिया और टैक्सी ड्राइवर से पूछा, "अभी कितना रास्ता और है भाई ?"

"बस सत्रह-अठारह मील, मेम साहिबा !"

"अंधेरा होने से पहले पहुंचा दोगे ना ?"

"अगर अल्लाह ने चाहा।"

वह चुप हो गई और फिर से अपने-आपमें खो गई।

पूनम तो अब इस धरती पर रही नहीं लेकिन उसकी प्रतिच्छाया ने अंजना को घेर रखा था। यह बच्चा, उसका सामान, उसके आभूषण और उसकी सारी निशानियां अस्पताल के कार्यकर्ताओं ने बटोरकर उसे सौंप दी थीं। उसके बदले में उसने पूनम के नाम से एक कानूनी गारंटी बांड भरकर उन्हें दे दिया था।

वह ज्यों-ज्यों उस रास्ते पर बढ़ रही थी, उसका अतीत उसे छोड़कर उस कुहरे में गुम होता जा रहा था। वह अंजू से पूनम बन चुकी थी।

पूनम के बैग में उसके पति की तस्वीर और ससुराल वालों के कई खत थे जिनको पढ़कर वह उनके बारे में बहुत कुछ समझने लग गई थी, लेकिन फिर भी न जाने किस भय से वह भयभीत भी हो रही थी।

सफर के दो-चार मील और कम हो गए। अचानक राजीव की आंख खुल गई और वह भूख से विलखने लगा। कोशिश करने पर भी रानीखेत में अंजू को दूध का डिब्बा न मिला था और उसने बच्चे को ब्रांडी की कुछ बूंदें पिलाकर सुला दिया था, लेकिन अब उसकी चिल्लाहट उसे फिर परेशान करने लगी। उसने चुप कराने की बहुतेरी कोशिश की लेकिन वह चुप न हुआ।

"शायद इसे भूख लगी है बीबीजी!" टैक्सी ड्राइवर ने हमदर्दी जताते हुए कहा।

"जानती हूं, लेकिन क्या करू?"

"मां का दूध नहीं पीता क्या?"

"नहीं।" स्वतः उसकी ज़बान से निकल गया और इसके साथ ही वह सुन्न-सी होकर रह गई। इस 'नहीं' के पीछे गहरा रहस्य था।

अब वह ड्राइवर से भी घबराने लगी। कहीं वह उससे कोई और अनाप-शनाप सवाल न कर बैठे। अतः वह बच्चे को चुप कराने का एक और असफल प्रयत्न करने लगी।

वर्षा थम चुकी थी। अंजना ने टैक्सी रोकने के लिए कहा। ड्राइवर ने ब्रेक लगा दिए और सड़क के किनारे टैक्सी रोक दी। अंजना ने दबी ज़बान से सामने के टी-स्टाल से दूध लाने के लिए कहा और टैक्सी ड्राइवर टैक्सी से उतरकर टी-स्टाल की ओर बढ़ चला।

"ठहरो।"

अंजना की बारीक आवाज़ सुनकर वह रुक गया। उसने पलटकर देखा। अंजना बैग में से पैसे निकालकर उसे देने लगी थी। बैग खलते ही टैक्सी ड्राइवर की आखें फटी की फटी रह गईं। उसने बैग में रखे हुए नोटों का पुलिंदा और ज़ेवरात की एक झलक देखी और दस का एक नोट लिए वह टी-स्टाल की ओर चल पड़ा।

थोड़ी ही देर में वह दूध ले आया। अंजना ने दूध के कुछ घूंट बच्चे के मुंह में डाल दिए। बच्चा भूख से विलख रहा था। दूध पीते ही उसे चैन आ गया और वह फिर अंजना की ओर देखकर मुस्कराने लगा। उसकी मुस्कराहट एक बिजली बनकर उसके दिल पर कोंदी। उसे फिर पूनम की याद आ गई। कितनी समानता थी इस बच्चे और इसकी मां के होंठों की मुस्कराहट में! यह देखकर वह तड़प उठी।

टैक्सी फिर उसी सड़क पर भागी जा रही थी। राजीव गाड़ी के हिचकोलों के कारण अंजना की गोद में सो गया था। वह चुपचाप बैठी अपनी उधेड़बुन में व्यस्त थी।

टैक्सी ड्राइवर अब सामने की खुली सड़क पर नहीं देख रहा था। उसकी निगाहें सामने लगे आईने पर जमी हुई थीं। वह बड़े ध्यान से अंजना के प्रतिबिंबित चेहरे पर छाए भावों का अध्ययन कर रहा था।

ढलती शाम, दूर तक किसी मानव का पता नहीं, अकेली औरत और उसपर बैग में नकदी और ज़ेवरात! ड्राइवर के दिमाग में वार-बार ये बातें चक्कर लगाने लगीं; उसकी सभ्यता को कुंठित करने लगीं। यह मेहनत के ठीकरों से उस दौलत को अच्छा समझने लगा। अंजना के बैग में रखे हुए ज़ेवरात उसकी नीयत को डांवाडोल करने लगे।

सहसा उसने टैक्सी को बड़ी सड़क से उतारकर एक कच्ची सड़क पर डाल दिया। यह रास्ता जंगल के किसी रास्ते से जाकर मिलता था। सड़क बदलते ही गाड़ी उछली और अंजना ने चकित नज़रों से उस रास्ते की ओर देखा जो क्षण-प्रतिक्षण घने जंगल में बदलता जा रहा था। यह दृश्य पहले तो उसे अनोखा मालूम हुआ, और फिर भय पैदा करने लगा। उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गई। न जानते हुए भी उसे ऐसा आभास हुआ जैसे वह किसी गलत रास्ते पर ले जाई जा रही है, या किसीने अकस्मात् उसका जीवन-पथ बदल दिया है।

"ड्राइवर ! कहां जा रहे हो ?" उसने वेचैन होकर पूछा ।

"नैनीताल, बीबीजी !"

"वहां तो वह सड़क जाती है ।"

"यह रास्ता भी वहीं निकलता है । छोटा है, जल्दी पहुंचा देगा ।"

"लेकिन ..'

"घबराइए नहीं बीबीजी ! कच्चा रास्ता है लेकिन अब दूरी कम हो गई है । अंधेरा होने से पहले ही हम पहुंच जाएंगे ।"

ड्राइवर ने यों तो उसे सन्तुष्ट कर दिया, लेकिन अंजना के दिल में समाया हुआ भय कम न हुआ। वह रास्ते के दोनों ओर फैला घना जंगल देखकर डरने लगीं । उड़ते हुए बादल जब पेड़ों को छूते हुए निकल जाते तो वातावरण को और भी भयानक बना जाते । जब उसका संशय हद से ज़्यादा बढ़ने लगा तो वह चिल्ला उठी, "ड्राइवर ! गाड़ी रोको ।"

ड्राइवर ने कोई उत्तर नहीं दिया । उसने गाड़ी की चाल तेज़ कर दी । अंजना शंकित हो उठी । ड्राइवर की नीयत में खोट दिखाई दे रहा था । उसने ड्राइवर का कंधा पकड़कर झंझोड़ दिया और उसे गाड़ी रोकने की आज्ञा दी । वह इसपर भी मौन ही रहा और टैक्सी की रफ्तार बढ़ा दी ।

अंजना ने उसकी सूरत सामने लगे आईने में देखी । उसके भद्दे और खुले होंठों पर दानवता नाच रही थी । आंखों की पुतलियों में खून उतर आया था । एक मानव दानव का रूप धारण कर रहा था । अंजना का दिल धक्-धक् करने लगा । उसने अपने-आपको संभाला और राजीव को सीने से लगा लिया । दोनों ओर फैले घने जंगल देखते हुए वह फिर चिल्लाई—"ड्राइवर ! गाड़ी रोक लो ! मैं कहती हूं रोक लो वरना मैं दरवाज़ा खोलकर कूद जाऊंगी !"

लेकिन ड्राइवर के कानों पर जूं न रेंगी । वह जानता था, वह ऐसा नहीं कर सकती । उसने जब गाड़ी न रोकी तो अंजना ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, लेकिन उसकी चिल्लाहट घने पेड़ों में दुबककर रह गई ।

अंजना को एक नये खतरे का आभास हुआ । उसने अपनी साड़ी का आंचल खिड़की से बाहर निकाल दिया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी । वह बेचारी बेबस और मजबूर उस शैतान के चंगुल से निकल जाना चाहती थी, लेकिन आबादी से मीलों दूर कोई होता तो उसका

विलाप सुनकर उसकी सहायता को आता।

यकायक वह चौकन्नी हो गई। सामने से एक जीप गाड़ी चली आ रही थी। उसने तुरत हाथ बाहर निकालकर आंचल हवा में लहराना शुरू कर दिया और चिल्ला-चिल्लाकर अपनी आवाज़ उस तक पहुंचाने का प्रयास करने लगी। ड्राइवर ने जब जीप को देखा तो वह बदहवास हो उठा। उसने गाड़ी की चाल और तेज़ कर दी और फुर्ती से किनारा काटकर जीप के पास से निकल गया।

जीप गाड़ी, जो टैक्सी की रफ्तार देखकर पहले ही किनारे पर रुक गई थी, अंजना की चिल्लाहट को सुनकर आगे न बढ़ी। जीप में बैठे नौजवान ने फिर उस आवाज़ को सुना जो दूर तक गूंजती चली गई।

साड़ी का आंचल, जवान लड़की की चीख और सुनसान जंगल का रास्ता—! इन सबने मिलकर उस नौजवान की शंका को विश्वास में बदल दिया।

नौजवान ने यह सब कुछ देखा, यह सब सुना और तेज़ी से जीप का रुख बदलकर उस टैक्सी का पीछा करने लगा। थोड़ी ही देर में वह टैक्सी बहुत दूर निकल गई थी। नौजवान ने अपनी जीप को पूरी स्पीड पर छोड़ दिया और फिर मिनटों में उसे जा घेरा।

ड्राइवर ने बड़ी शीघ्रता से अपनी टैक्सी को जंगल की एक दूसरी सड़क पर डाल दिया, लेकिन कुछ ही कदम की दूरी पर वह कीचड़ में धंस गई। ड्राइवर मजबूर हो गया। वह एक हारे हुए जुआरी की तरह अपनी सीट से बाहर उछला और अंजना के हाथ से बैग छीन लिया। इससे पहले कि नौजवान जीप गाड़ी से बाहर आता, टैक्सी ड्राइवर दौड़ता हुआ घने जंगल में घुस गया। उस नौजवान ने पिस्तौल निकाला और भागते हुए ड्राइवर की टांग पर गोली चला दी। गोली लगते ही उसकी चीख निकली। हाथ से बैग छूटकर ज़मीन पर गिर पड़ा, लेकिन वह उसी ज़ख्मी हालत में भागता चला गया और देखते ही देखते कुहरे से ढके जंगल में गायब हो गया।

नौजवान ने काफी दूर तक उसका पीछा किया, लेकिन वह नज़रों से ओझल हो चुका था। फिर अकेली लड़की का ख्याल आते ही वह रुक गया और वापस लौट आया। रास्ते में उसने गिरा हुआ बैग उठा लिया और आते ही उसे अंजना को दे दिया।

"शायद यह आपका है!" उसने हांफते हुए कहा।

अजना ने कांपते हाथों से बैग पकड़ लिया और थरथराते होंठों से कांपते स्वर में बोली—"जी हां, धन्यवाद !"

नौजवान ने देखा कि वह उस ठंडी संध्या में भी पसीने से भीग चुकी थी। घबराहट से उसका मुंह पीला पड़ चुका था। वायुमंडल के शीत से उसके होंठ नीले पड़ गए थे।

"कहां जा रही थीं आप ?"

"नैनीताल।"

"यह सड़क तो जंगल के रास्ते काठगोदाम जाती है।"

इतना सुनकर एक हिचकी-सी अंजना की ज़बान पर आकर रुक गई और वह बच्चे को गोद में लिटाकर बड़ी कातर दृष्टि से उस नौजवान की ओर देखने लगी।

"नैनीताल कितनी दूर है अब ?"

"यहां से दस मील है, लेकिन आप जा न सकेंगी।"

"क्यों ?" अंजना ने विह्वल हो पूछा।

वर्षा अधिक होने से पहाड़ी नाले बह निकलते हैं तो रास्ता घंटों तक बन्द हो जाता है।"

यह सुनकर अंजना के मुंह से एक हल्की-सी 'उफ' निकल गई। वह एक ऐसे राही की तरह इधर-उधर देखने लगी जो अपना रास्ता भूल गया हो और उसे अपनी मंज़िल का कोई पता न हो।

नौजवान ने उसकी घबराहट को देखते हुए कहा—"आप चाहें तो कुछ घंटे मेरे यहां रुक सकती हैं।"

अंजना ने चिंताग्रस्त भाव से उसकी ओर देखा तो नौजवान हड़बड़ाकर बोला—"जी ! मेरे यहां से मेरा मतलब है मेरा घर। लगभग दो मील होगा यहां से।"

"आप···?"

"मैं इस एरिया का फारेस्ट आफीसर हूं और मेरा नाम कमल है।"

उसका नाम सुनते ही अंजना ने अपनी निगाहें उठाकर उसकी ओर देखा। कमल उसके चेहरे पर छाए भावों को समझता हुआ बोला—"घबराइए नहीं, आपको नैनीताल तक कुशलता से पहुंचा दिया जाएगा। सब प्रबन्ध हो जाएगा। आइए, कहीं बच्चे को सर्दी न लग जाए।"

अंजना इंकार न कर सकी। इसके सिवा कोई चारा भी न था। कमल ने ज्योंही टैक्सी का दरवाज़ा खोला, अंजना बच्चा संभाले

नीचे उतर आई और कमल का इशारा पाकर जीप में बैठ गई। कमल ने टैक्सी से उसका सामान निकालकर जीप में रख दिया।

कमल के स्टीयरिंग पर बैठते ही अंजना ने पूछा—"इस टैक्सी का क्या होगा ?"

"मैंने गाड़ी की चाबी ले ली है। जाते ही पुलिस चौकी में सूचना दूंगा।"

"पुलिस !" अंजना कांप उठी।

"आप तो डर गईं !"

"नहीं···मेरा मतलब है बेकार आपको तकलीफ होगी।"

"तकलीफ कैसी ! सूचना देना तो इसलिए भी ज़रूरी है कि वह मेरी गोली से ज़ख्मी हुआ है।"

वह चुप हो गई। अधिक बहस करना उसने उचित नहीं समझा। वह समय के फेर से डर रही थी। न जाने उसके नसीब में और क्या-क्या लिखा था। होनी उसकी ज़िंदगी से शायद कोई और खेल खेलने जा रही थी।

जीप गाड़ी रवाना हुई और वह चुपचाप फिर उन घने वृक्षों की ओर देखने लगी जिनसे धुंध छंट-छंटकर बादलों में समाने जा रही थी, लेकिन इसके साथ-साथ उसके भयभीत दिल की धड़कन भी धीरे-धीरे धीमी होती जा रही थी।

५

"मालूम होता है आपको कहीं देखा है मैंने !"

कमल ने अंगीठी में लकड़ी डालते हुए कहा और पलटकर अंजना की ओर देखने लगा जो आरामकुर्सी पर बैठी आग ताप रही थी। वह इस बात पर सिर से पांव तक कांप उठी और ठिठुरती आवाज़ में बोली—"जी नहीं, मैंने आपको कभी नहीं देखा।"

"क्या नाम बताया था आपने अपना !"

"पूनम !" बड़े मद्धिम स्वर में उसने जवाब दिया।

"कहां रहती हैं आप, नैनीताल में ?"

"वहां पहली बार जा रही हूं।"

"और इसीलिए आपने अकेले ही टैक्सी से यह रास्ता तय करने का फैसला किया था ! आपको मालूम नहीं, यह जंगल बड़ा खतरनाक है !"

"वह मेरी गलती थी। भगवान ने मेरी पुकार सुन ली जो आप मदद को आ पहुंचे। अगर आप न आते तो···"

"तो आप अपना सब कुछ खो बैठतीं—यह रुपया, यह ज़ेवर और अपने-आपको भी।"

कमल यह कहते-कहते पल-भर के लिए चुप हो गया और अंजना की मोटी-मोटी आंखों में झांकने लगा जिनमें अंगीठी के अंगारों का प्रतिबिंब था।

कमल ने बात पूरी करते हुए कहा—"यहां के लोग बस चार पैसों के लालच में किसीकी ज़िंदगी लेने में नहीं चूकते।"

"आप यहां कब से हैं ?" अंजना ने बात का रुख पलटते हुए कहा।

"छः महीने से, अपनी नौकरी भी बस इतनी ही हुई है।"

अंजना फिर मौन हो गई। बाहर ज़ोरों का तूफान था। वारिश थी कि थमने का नाम नहीं ले रही थी। उसका ज़ोर बढ़ता ही जा रहा था।

विवश होकर अंजना को रात कमल के पास ही काटनी पड़ी। कमल ने सवेरा होते ही उसे नैनीताल पहुंचाने का वचन दिया था। राजीव उसके शयन-कक्ष में लिहाफ की गरमी में चुपचाप सो रहा था।

"नैनीताल में कौन रहता है आपका ?" कमल ने कुछ देर बाद फिर बात छेड़ी।

अंजना सिहर उठी लेकिन अपना भाव छिपाने के लिए बोली—"ससुराल है मेरी।"

"कौन लोग हैं वे ?"

"वहां के रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर लाला जगन्नाथ।"

"क्या—लाला जगन्नाथ, लेक विव वाले ?"

"आपने उनका नाम सुन रखा है क्या ?"

"नाम ही नहीं सुन रखा है मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता भी हूं, लेकिन आप···! पूनम ! उनकी बहू ! शेखर की बीवी !"

कमल ने कुछ चकित होते हुए कहा और उसका चेहरा कुम्हला गया। अंजना भी पूनम के पति का नाम सुनकर चौंक गई। लेकिन उसने अपनी घबराहट को छिपाने का भरसक प्रयत्न किया और लड़खड़ाती-सी निगाहों से कमल की ओर देखने लगी। कमल को शायद अभी तक इस बात पर यकीन नहीं आया था।

"हां, मैं ही शेखर की पत्नी हूं !"

"लेकिन···लेकिन वह तो गाड़ी की दुर्घटना में···"

"बच गई जीवित। कितनी अनोखी बात है! है ना ?"

"यह तो खुशी की बात है। यह जानकर वे लोग कितने खुश होंगे! आपने उन्हें खबर नहीं दी क्या ?"

"सोचा, बेकार बुढ़ौती में परेशान होंगे। खुद ही पहुंच जाऊंगी।"

"हूं! कल का सवेरा उनकी अंधेरी ज़िंदगी में उजाला भर देगा।"

अंजना ने ध्यान से कमल का मुंह निहारा। यह खबर सुनते ही उसका चेहरा दमक उठा था। गंभीरता खिल गई थी। उसने दो-चार बार नज़र भरकर अंजना को देखा जैसे उसे अब भी पूनम के जीवित बचने पर विश्वास न हो रहा हो।

अंजना ने अपनी शंका के समाधान के लिए पूछा—"आप मेरे ससुराल वालों को कैसे जानते हैं ?"

"वह तो मेरा अपना घर है। यानी मेरे डैडी और लालाजी मुंहबोले भाई हैं। मुझे यह नौकरी भी उन्हींकी सिफारिश और सहायता से मिली है।"

"मैंने तो उन्हें कभी नहीं देखा।"

"आप देख भी कैसे सकती थीं! शादी से पहले ही उन्होंने बेटे को घर से निकाल दिया। तीन बरस तक उन्होंने उसकी सूरत नहीं देखी।"

"मेरी वजह से।"

"मैं जानता हूं। तब मैं जर्मनी में पढ़ रहा था वरना कभी ऐसा नहीं होने देता।"

"क्या मेरा ब्याह ?"

"नहीं, बल्कि शेखर का वनवास। मैं उन्हें समझा-बुझाकर तुम लोगों का मिलाप करा देता। वे मिज़ाज के बड़े सख्त हैं, लेकिन दिल के धनी हैं। लेकिन अब···? अब क्या से क्या हो गया ? उनका बेटा हम सबको अंधेरे में छोड़कर चला गया। जवान बेटे की मौत ने उनके सोचने का ढंग बदल दिया है। वह संगदिल आदमी आज मोम हो चुका है। मां तो मानो दीवानी हो गई है।"

"मुझे तो उनके बारे में सोचकर भी डर लगता है। वे लोग सोचते होंगे, मैं ही उनके बेटे को निगल गई, डाइन बनकर खा गई।"

"नहीं, अब तो वे अपने-आपको कोस रहे हैं। सोच रहे हैं कि

लक्ष्मी जैसी बहू को ठुकराने का यह नतीजा मिला है उन्हें। भगवान ने यह सज़ा दी है उन्हें।"

अंजना ने निगाहें उठाकर कमल के चेहरे की ओर देखा। वह यह सब बड़ी गम्भीर मुद्रा में और बड़े विश्वास से कह रहा था जैसे वह उसी घराने का सदस्य हो और उनके दुख-दर्द और उलझन को समझता हो।

वह फिर अपने-आप बोल उठा—"मुझे पूरा विश्वास है, उनसे मिलने के बाद आपकी विचारधारा भी बदल जाएगी। जिन लोगों ने आपको कल ठुकराया था, आज आपको सिर-आंखों पर बिठाएंगे। आज अगर आप उनकी अमानत को लिए यहां तक न आतीं तो उनका जीवन असह्य हो जाता।"

सहसा बादलों में बिजली चमकी और उसकी भयानक कड़क से वायुमंडल कांप उठा। ऐसा लगा जैसे बादल फटकर किसी पहाड़ की चोटी को निगल गया है। वह डर गई। थोड़ी देर के लिए शांति छा गई जिसे तोड़ा राजीव की आवाज़ ने।

बादलों की गड़गड़ाहट से उसकी नींद खुल गई थी। उसके रोने की आवाज़ सुनकर वह तेज़ी से भागती हुई शयन-कक्ष में चली गई और राजीव को उठाकर गोद में छिपा लिया। अंजना की गोद मिलते ही राजीव का रोना कम हो गया। पास ही दूध की बोतल रखी थी। उसमें कुछ दूध भी था। अंजना ने वह बोतल उसके मुंह से लगा दी। वह चुस्कियां भरने लगा और चुप हो गया।

इस स्तब्धता में अंजना को ऐसा आभास हुआ कि भय के कारण उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गई है। बादलों की गरज, बारिश और तूफान का ज़ोर सुनकर उसके बदन में कुछ अजीब-सी झनझनाहट-सी हो रही थी। उसे यह सोचकर जितना ढारस बंधा था कि कमल के आने से उसकी आबरू बच गई, उतनी ही उसकी घबराहट इस बात से बढ़ गई कि कमल उसके ससुराल वालों को और पूनम के पति को अच्छी तरह जानता है, लेकिन वह स्वयं इससे ज़्यादा कुछ नहीं जानती थी कि शेखर की मौत डलहौज़ी की घाटियों में हुई थी—एक जीप की दुर्घटना से।

वह इन्हीं विचारों में खोई बैठी रही। राजीव दूध की कुछ चुस्कियां भरकर फिर सो गया।

सहसा एक आहट ने अंजना को चौंका दिया। सामने घर का नौकर खड़ा था।

"खाना तैयार है बीबीजी !"

"कमल बाबू कहां हैं ?"

"खाने की मेज़ पर आपका इन्तज़ार कर रहे हैं ।"

नौकर चला गया। अब वह क्या करे ? जिन प्रश्नों से बचने के लिए वह कमरे में आ छिपी थी वे उसके सामने फिर आ खड़े हुए। अब वह खाने से इंकार कैसे कर सकती थी ! बच्चे को सावधानी से बिस्तर पर लिटा दिया और उसे लिहाफ उढ़ाकर बाहर चली आई।

नौकर ने ठीक कहा था। कमल खाने की मेज़ पर बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह सिर को दुपट्टे से ढांपे मेज़ के पास पहुंच गई। कमल ने उठकर उसके लिए कुर्सी आगे कर थी। वह धीरे से केवल 'धन्यवाद' कह सकी और चुपचाप कुर्सी पर बैठ गई।

तुरन्त ही नौकर ने मेज़ पर खाना लगा दिया। कमल डोंगा उठाकर जैसे ही अंजना की प्लेट में सब्ज़ी डालने लगा, उसने उसका हाथ थाम लिया और बर्तन अपने हाथ में लेकर खाना परोसने लगी।

"आप यहां अकेले रहते हैं ?"

"नहीं तो, घर है, नौकर है, चारों ओर भांति-भांति के जानवर हैं।"

"मेरा मतलब है, अभी तक आपने अपना घर नहीं बसाया ? शादी नहीं की ?"

शादी का नाम सुनते ही कमल के चेहरे की लाली पीलाहट में बदल गई। वह मौन हो गया और चुपचाप खाना खाने लगा। अंजना को लगा जैसे उसने उसका निरादर किया हो। वह अपनी बात पर पछताने लगी और वह भी चुपचाप खाना खाने लगी।

"आप मेरी बात से बुरा मान गए ?" कुछ देर बाद अंजना ने बड़े नम्र स्वर में पूछा।

"नहीं। दरअसल शादी से मुझे नफरत है। ऐसे बंधनों में बंधकर इंसान अपनी आज़ादी खो बैठता है। अब आप ही सोचिए ना, शादी करके आपने क्या सुख पा लिया ? भरी जवानी में विधवा हो गईं। ज़िंदगी-भर एक बच्चे की ज़िम्मेदारी ! दुनिया-भर के ताने ! और···और···"

"आप ठहरे मर्द ! आप ऐसा सोच सकते हैं, लेकिन नारी-जीवन तो ऐसे ही बंधनों का योग है। प्यार, ममता और कर्तव्य—ये न हों तो नारी-जीवन खोखला हो जाता है।"

कमल ने उसकी बात सुनी और सिर उठाकर उसकी आंखों में झांका। उनमें एक अनोखी चमक छिपी हुई थी जिसने उसकी धारणा को अर्थहीन बना दिया था और वह एक हारे हुए खिलाड़ी की तरह अधिक बहस नहीं कर सका।

इधर अंजना ने यह बात कह तो दी थी, परन्तु उसके हृदय के भीतर छिपा हुआ झूठ फिर से उसे डसने लगा था। वह चुपचाप खाना खाने में लीन रही। कभी-कभी नज़रें उठाकर वह उस खिड़की की ओर भी देख लेती जिसपर बरसात के गिरते छींटे बढ़ते ही जा रहे थे।

दोनों खाना खा चुके। रात काफी बीत गई थी। अब सोने का समय था। कमल ने अपने शयन-कक्ष में अंजना का बिस्तर बिछवा दिया और वह स्वयं अपने अध्ययन-कक्ष में जा सोया। कमल की इस थोड़ी-सी भेंट से वह बड़ी प्रभावित हुई थी। वह अपने-आपको उसके करीब समझने लगी थी। इस नई जगह उसे नींद तो नहीं आ रही थी, लेकिन मानसिक शांति अवश्य मिल गई थी। एक मुद्दत के बाद वह अपने दिलो-दिमाग में एक चैन-सा महसूस कर रही थी।

यह एक छोटा-सा घर था। हर चीज ढंग से सजी हुई थी। यह सब कुछ देखकर अंजना अपनी कल्पनाओं के संसार में खो गई। उसे याद आया कि उसके सपनों में भी एक ऐसी दुनिया ने जन्म लिया था जिसे औरत का स्वर्ग कहना चाहिए, लेकिन वह सपना साकार नहीं हो सका। उसके जीवन में एक अवसर अवश्य आया अपना संसार बसाने का, मगर वह अवसर उसके हाथ से निकल गया और उस दुनिया का पोषक, उसका दूल्हा उसे मिलने से पहले ही बिछुड़ गया।

इसके बाद अंजना को उस पिशाच का ख्याल आया जिसने पल-भर में उसके विश्वास को छिन्न-भिन्न कर दिया था। बनवारी ने उसके जीवन को ऐसा मोड़ दिया कि वह कहीं की नहीं रही। इस निर्मम घटना के स्मरण से उसका हृदय ग्लानि से भर उठा। उसके दिल को एक धचका-सा लगा, और हृदय की पीड़ा आंसू के रूप में उसके पलकों पर आकर थर्राने लगी।

आज वह जीवन-सागर में हिचकोले खाती हुई एक ऐसी नौका थी जिसकी अपनी कोई मंज़िल नहीं थी। उसका भाग्य लहरों के उन रेलों में छिपा हुआ था जो उसे धक्के देकर किसी अनजानी मंज़िल की ओर ले जा रहे थे।

रात बीत गई।

सूरज निकलने से पहले ही अंजना नैनीताल जाने के लिए तैयार बैठी थी। नौकर बच्चे के लिए दूध ले आया था और अब नाश्ता बना रहा था।

अंजना ने बच्चे को दूध पिलाकर बाहर दालान में खेलने के लिए बिठा दिया और स्वयं बंगले के आसपास के दृश्य देखने लगी जो रात के भयानक अंधेरों से छुटकारा पाकर उजला हो चुका था।

वर्षा के बाद मौसम खिल उठा था। प्रातः का प्रकाश धरती से आकाश तक फैल गया था और इसमें भीगी हरियाली बड़ा मनोहर दृश्य उपस्थित कर रही थी। चिड़ियों की चहचहाहट ने अंजना के हृदय की बेचैन तरंगों में भी आशाओं की लय भर दी और कल तक जो दुनिया उसे स्याह और भयानक लग रही थी, आज बड़ी हृदय-ग्राही नज़र आने लगी।

उसकी निगाहें घूमती-फिरती अचानक उस गैरेज के पास जा रुकीं जहां कमल अपनी जीप गाड़ी का 'हुड' खोले गाड़ी का तेल और पानी चेक कर रहा था। एक प्रतिमा की भांति अडिग वहीं खड़ी वह उसे निहारती रही।

कमल ने हुड बंद किया और निगाहें उठाईं। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और अधरों पर मुस्कान बिखर गई। वह अपना हाथ पोंछता हुआ अंजना की ओर बढ़ आया।

"हलो! गुड मॉर्निंग!"

"नमस्ते।" अंजना ने झिझकते हुए उसका स्वागत किया।

"कहिए, रात कैसी कटी?"

"जी!" वह चौंक पड़ी।

"मेरा मतलब था—नई जगह, नया वातावरण, नये लोग! ऐसे में नींद आई या नहीं?"

"कुछ समय सोने में और कुछ जागने में कट ही गया।"

"शायद आंधी, तूफान और वर्षा के शोर ने सोने नहीं दिया?"

इतने में घर का नौकर रामू नाश्ता लिए आ पहुंचा। अंजना ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी और कमल के लिए चाय बनाने लगी। वह पास पड़ी कुर्सी खींचकर नाश्ता करने बैठ गया।

अंजना का जी सवेरे-सवेरे कुछ खाना नहीं चाह रहा था। कमल ने मजबूर किया। उसने तनिक धीमे स्वर में कहा—"बस, एक प्याली चाय पीऊंगी आपके साथ।"

अंजना ने चाय का पानी अपनी प्याली में उंडेला और उसमें चीनी-दूध मिलाने लगी।

"एक रात साथ क्या रहे, लगता है बरसों पुरानी मुलाकात है।" चाय की चुस्की भरते हुए कमल ने कहा।

अंजना के होंठ प्याली के किनारे जैसे चिपककर रह गए। उसने कनखियों से कमल की ओर देखा जो तेजी से मुंह चला रहा था।

"सोचती हूं, आपका यह एहसान कैसे उतारूंगी?"

"एक ढंग है।" कमल ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

"क्या?" वह चौंक उठी।

"जिस घर में आप जा रही हैं, वह शेखर की मौत के बाद वीरान हो गया है। उसे फिर से आबाद कर देना; भले ही अपनी खुशियों को कुचलना पड़े, लेकिन उस घर की खोई हुई बहार को लौटा देना। शायद शेखर के मां-बाप इस भुलावे में कुछ दिन और जी जाएं।"

अंजना ने देखा कि यह सब कहते हुए कमल की आंखों में आंसू आ गए। वह भावुकता में बह गया।

अंजना ने एक तरह से इस बात का वादा करते हुए कहा—"आपको उनसे इतनी हमदर्दी है, मुझे मालूम नहीं था।"

कमल ने डबडबाई आंखों से अंजना की ओर देखा।

वह तनिक रुककर फिर बोली—"उनकी सेवा तो मेरा धर्म है, मेरी आराधना है। मैं कोशिश करूंगी कि उनका दिल कभी दुखी न हो। उस घर की इज्जत अब मेरी इज्जत है।"

अंजना इससे अधिक और कुछ न कह सकी और जल्दी-जल्दी चाय पीकर अन्दर चली गई। कमल चुपचाप बैठा नाश्ता करता रहा और सोचता रहा कि उसने यह सब कुछ अंजना से कहकर अच्छा किया या बुरा किया; लेकिन वह किसी नतीजे पर न पहुंच सका।

अंजना जब कमरे में पहुंची तो उस समय घर का नौकर राजीव को लिए बगीचे में खड़ा था और उसे पालतू कबूतर दिखा रहा था। वह भी खिड़की का सहारा लेकर उन्हें देखने के लिए खड़ी हो गई।

कुछ देर बाद वहां से हटकर वह सामने के बुकशेल्फ के पास आई और कुछ किताबें निकालकर देखने लगी। अधिकतर कविता की पुस्तकें थीं और हर किताब पर कमल का नाम लिखा हुआ था, खरीदने की तारीख भी लिखी हुई थी। इससे एक बात का पता चल गया कि कमल को कविता-अध्ययन का बड़ा पुराना शौक है।

दाईं ओर अचानक कमल को देखकर वह बरबस झेंप गई। वह

चुपचाप खड़ा उसे निहार रहा था।

अंजना के हाथ में कविता की एक पुस्तक देखकर वह बोला—"आपको भी कविताएं पसंद हैं क्या ?"

"जी। आपका शौक भी बहुत पुराना लगता है !"

"कालेज के दिनों में था, लेकिन अब नहीं रहा।"

"क्यों ?"

"जीवन की कठोरता का अनुभव जो हो गया। उसके बाद यह कोमल भावनाएं एक स्वप्न-सी लगने लगी हैं।"

"यह आपका भ्रम है। जीवन के कठोर अनुभव ही तो इसमें यथार्थ का रंग भरते हैं।"

"इस यथार्थ में दर्द और जलन के सिवा और कुछ नहीं होता।"

"जिस दिल में दर्द और जीवन में जलन न हो, वह क्या हुआ ?"

कमल ने भर नज़र अंजना की ओर देखा। वह झेंप गई। उसकी घबराहट देखकर कमल मुस्करा पड़ा।

अंजना ने तुरत संभलकर धीरे से कहा—"आई एम सॉरी।"

इससे पहले कि इस बारे में वह अंजना से और बातें करता, वह दूसरे कमरे में चली गई और अपना सामान ठीक करने लगी। कमल ने जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाया और उसी खिड़की के पास चला गया जहां से राजीव नज़र आ रहा था और जो अभी तक उन कबूतरों का खेल देख रहा था।

६

कमल ने ज्योंही जीप गाड़ी लेक विव के सामने रोकी, अंजना का दिल धक्-धक् करने लगा। उसने फाटक के बाहर लगी हुई तख्ती पढ़ी जिसपर पूनम के ससुर का नाम मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा हुआ था।

कमल ने पहले उस दरवाजे की ओर और फिर अंजना की ओर देखा। वह और भी घबरा गई। कमल उसके चेहरे के भावों को परखता हुआ बोला—"यही घर है लाला जगन्नाथजी का। कुर्सी तो छिन गई उनसे, लेकिन अब तक लोग उनकी वैसी ही इज़्ज़त करते हैं।"

अंजना ने स्वीकारात्मक ढंग से सिर हिलाया और फिर उस शानदार लौहद्वार की ओर देखा। उसकी बनावट और मजबूती

देखकर उसे मालिक की मनोवृत्ति का कुछ-कुछ अनुमान हो गया।

कमल उसे वहीं रुकने के लिए कहकर अकेला फाटक की ओर वढ़ा। वह लालाजी को उनके जीवन की सबसे अनोखी भेंट देना चाहता था। उसने दरबान को फाटक खोलने का इशारा ही किया था कि अन्दर से पालतू कुत्तों के भूंकने की आवाज़ें आईं। उन आवाज़ों ने अंजना को कुछ भयभीत कर दिया। लेकिन वह संभल गई। नई जगह, नये लोग! न जाने उसे बहू मानने को तैयार भी होंगे या नहीं!

फाटक खुला। दो कुत्ते उछलते हुए आगे बढ़े और प्यार से कमल की टांगों से लिपटने लगे। उसने भी दोनों को प्यार किया और वे लौट गए। कमल जीप में लौट आया और उसे ड्राइव करके अन्दर ले गया।

जीप पार्लर में जा रुकी। सामने ही दालान में घर के मालिक लाला जगन्नाथ कुर्सी पर बैठे धूप सेंकने के साथ-साथ अखबार भी पढ़ रहे थे। उन्होंने अखबार से निगाहें हटाकर जीप की ओर देखा तो अंजना ने भी उनके चेहरे को तनिक ध्यान से देख लिया।

"यही हैं शेखर के बाबूजी, इस घर के मालिक।" कमल ने जीप से उतरते हुए कहा।

अंजना ने झट से सर पर आंचल खींच लिया और राजीव को सीने से चिपकाकर अपने दिल की घबराहट कम करने का प्रयास करने लगी।

जगन्नाथ ने जैसे ही कमल को पहचाना, उनका गभीर चेहरा दमक उठा और वे उन लोगों का स्वागत करते हुए बोले—"आओ, आओ बेटे! आज सवेरे-सवेरे यह सूरज इधर कैसे निकला? क्या ड्यूटी पर जा रहे हो?"

"जी हां, आज ड्यूटी ही ऐसी थी कि सुबह सवेरे ही घर से निकलना पड़ा।"

"किधर की तैयारी है?"

"कहीं की नहीं, यहीं आया था।"

"किसी काम से?"

"जी···!"

"कुशल तो है?" वे तनिक घबराकर बोले।

"बिल्कुल। एक खबर लेकर आया हूं आपके पास—एक ख़ुशी की खबर।"

"वह क्या ?" उन्होंने अधीर होकर पूछा।

"आपकी बहू और पोता जीवित हैं।"

"कमल !" एक कांपती हुई आवाज़ उनके मुंह से निकली और हाथ में पकड़ा हुआ चश्मा उन्होंने झट से आंखों पर चढ़ा लिया। वे ध्यान से कमल को देखने लगे कि कहीं वह उनसे मज़ाक तो नहीं कर रहा है, लेकिन कमल के चेहरे पर थिरकती हुई हार्दिक प्रसन्नता की लहरों ने उन्हें इस बात का विश्वास दिला दिया कि वह उनसे सच कह रहा है।

कुछ क्षण गुमसुम रहने के बाद उन्होंने खुशी से लहराकर पूछा—"कहां है मेरी बहू ? कहां है मेरी पूनम ?"

"जीप में।"

"कमल ! मेरे बच्चे ! कहीं तू मुझसे मज़ाक तो नहीं कर रहा है ?" जगन्नाथ ने बड़ी गंभीरता से पूछा और अपना रुख बदलकर उस जीप गाड़ी की ओर देखा जिसमें से अंजना अभी-अभी बाहर निकली थी—सफेद साड़ी में लिपटी भोली-भाली जवानी, गोद में बच्चा और माथे पर सोग की परछाइयां लिए हुए वह धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ रही थी।

गठिया के दर्द के कारण लालाजी मजबूर थे। वे अपनी लड़खड़ाती टांगों पर बड़ी मुश्किल से खड़े हुए और अपनी बहू के स्वागत के लिए दो कदम आगे बढ़े। सहारे के लिए उन्होंने अपनी छड़ी भी थाम ली। शोकातुर उस चांद-सी सूरत को देखते ही उनकी आंखें डबडबा आईं। उन्हें लगा जैसे उनके जीवन के अंधेरे क्षितिज पर कोई प्रकाशमान तारा उदय हो गया है।

अंजना ने झुककर उनके पैरों को छुआ और उन्होंने बहू को गले से लगा लिया। उनकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। उनकी मनःस्थिति को समझते हुए अंजना की आंखें भी भर आईं। पहले उन्होंने बहू का माथा चूमा और फिर अपने पोते राजीव को।

लाला जगन्नाथ के हाथों से छड़ी छूट गई। उन्होंने पीछे हटकर कुर्सी का सहारा लेना चाहा तो अंजना ने बढ़कर उन्हें अपने कन्धे का सहारा दिया और कमल ने लपक उन्हें पकड़ लिया। दोनों ने दुबारा आराम से उन्हें कुर्सी पर बैठा दिया। उन्होंने बड़ी कामना-भरी नज़रों से अपने कुल की आखिरी और इकलौती निशानी को देखा। अंजना ने आगे बढ़कर राजीव को उनकी गोद में डाल दिया। वे खुशी से आंसू रोककर बच्चों की तरह तुतली ज़बान में

बातें करते हुए खेलने लगे।

शेखर की मां, जो पूजा के लिए भगवान की मूर्ति के सामने बैठी अपने पाप-पुण्य का हिसाब लगा रही थीं, घर में कुछ आवाज़ों की भनक पाकर उस ओर आकर्षित हुईं। इतने में घर की नौकरानी रमिया ने आकर उन्हें पूनम बहू के आने की खबर सुनाई। फिर क्या था, शांति खुशी के मारे पागल हो गईं। उन्हें लगा जैसे भगवान ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उनकी झोली वरदानों से भर दी है।

अत्यधिक प्रसन्नता के मारे उनकी ज़बान गुंग हो गई। वहीं बुत बनी बैठी रह गईं। नौकरानी रमिया का सहारा लेकर किसी तरह उठीं और बहू को देखने चलीं।

वे जब बहू के सामने आईं तो अंजना को यह समझने में देर न लगी कि वही पूनम की सास हैं। उसने सास के पांव छूकर प्रणाम किया और गले मिलकर रोने लगी। शांति ने बहू को चुप कराने के बाद राजीव को अपने पति की गोद से ले लिया और उसे चूमने-चाटने लगीं। उनकी आंखों से बहते हुए खुशी के आंसुओं ने सबको विकलता से भर दिया। उन्हें तो ऐसा लगा जैसे उनका शेखर लौट आया हो। उनके अंधेरे दिल में ममता की किरणें फूट पड़ीं।

नौकरानी रमिया बहू को अन्दर ले गई और रंगा माली बहूरानी का सामान उतारने के लिए जीप की ओर बढ़ा। लाला जगन्नाथ और उनकी पत्नी शांति बार-बार कमल के सामने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने लगे। उन्होंने यह जानने के लिए कि पूनम कहां और कैसे मिली, प्रश्नों की बौछार कर दी।

अंजना घर के सदर हाल के एक कोने में बिछे हुए सोफे पर जा बैठी। रमिया खुशी से दीवानी हुई उसके इर्द गिर्द चक्कर-सा लगा रही थी। अंजना के कानों में अभी तक कमल की आवाज़ सनसना रही थी जो बाहर बैठी रेलगाड़ी की दुर्घटना और उसके बाद की घटनाओं का विवरण बता रहा था।

अंजना ने नज़रें उठाकर घर के वातावरण को परखना शुरू किया। वह जल्द से जल्द इस नये वातावरण और अपरिचित लोगों तथा अन्य स्थितियों से परिचित होना चाहती थी। उनसे अलग होकर रमिया का साथ उसे अच्छा लगा। ज्योंही उसने रमिया की ओर नज़रें उठाईं, उसे अपनी ओर घूर-घूरकर देखते हुए पाया। अंजना इससे रोमांचित हो उठी। अकस्मात् रमिया की गंभीरता

मुस्कराहट में बदल गई और वह अपनी सुरीली आवाज में बोली—"शेखर ने ठीक कहा था, पूनम का चांद है लालाजी की बहू !"

"लेकिन अब तो इस चांद में एक गहरा दाग है। वह अपने मनमन्दिर के देवता को खो बैठी है।"

"हां हां, बीबीजी ! आप सच कहती हैं। पुरखों का कहना है कि किसी चीज़ से ज्यादा मोह हो जाए तो वह हाथ से निकल जाती है।"

अंजना की आंखों में आंसू आ गए। रमिया अपनी कही बात पर पछताने लगी। अपनी समझ में उसने बहूरानी का दिल दुखाया था, लेकिन बहूरानी ने उसकी बात का बुरा न माना बल्कि सच्ची बात कहने पर उसकी प्रशंसा की।

थोड़ी ही देर में रमिया उससे घुल-मिल गई। अंजना को मालूम हो गया कि रमिया दिल की बड़ी साफ है और बातूनी भी है। उसकी बातों को सुनते-सुनते अंजना ने पूछा—"तुम्हारे छोटे सरकार की कोई फोटो यहां नहीं है क्या ?"

"है बीबी जी ! लेकिन सामने नहीं रखी जाती।"

"क्यों ?"

"उनका मुस्कराता हुआ चेहरा देखकर मांजी और बाबूजी रोने लग जाते हैं।"

"ओह !" उसने एक गहरा सांस लिया।

"जी तभी तो उनकी सब तस्वीरों को उन्हींके कमरे में रखकर उसे बन्द कर दिया गया है।"

अंजना ने घर के भूगोल को फिर से जांचना शुरू किया और बोली—"कहां है उनका कमरा ?"

"वह।" रमिया ने उंगली के इशारे से उस जीने की ओर इशारा किया जो सीधा एक कमरे तक जाता था। उसके दोनों किवाड़ बंद थे जैसे वह कमरा अपने में कोई गहरी और दर्दनाक दास्तान छिपाए हुए हो।

अंजना चुपचाप उस कमरे की ओर देखने लगी। रमिया ने उसे फिर झंझोड़ा—"जब से उनकी बुरी खबर मिली है, नौकरों के सिवा उस कमरे में कोई नहीं जाता।"

अंजना यह सुनकर परेशान-सी हो गई और अपना दुशाला उतारकर आराम से बैठ गई। उसने रमिया से कहा कि हवा लग जाने से उसके सिर में हल्का-हल्का दर्द होने लगा है। कहने की देर

थी कि रमिया झट से उठी और चाय बनाने के लिए रसोईघर में चली गई।

अंजना ने एक गहरा सांस लिया और अपनी जगह से उठकर कमरे में सजी हुई चीज़ों को देखने लगी। फिर वह धीरे-धीरे उस ज़ीने तक चली गई जो सीधा शेखर के कमरे की ओर जाता था। वह उसकी तस्वीर देखने के लिए बेचैन थी, लेकिन उसकी निगाहें कमरे के बंद दरवाज़े से टकराकर लौट आतीं। उसमें ऊपर कमरे तक जाने का साहस नहीं था।

इतने में किसी आहट ने उसे चौंका दिया। वह तुरन्त पलट पड़ी। कमल उस घटना की सारी कहानी सुनाकर इधर आ रहा था।

"कैसी लगी यह जगह, ये लोग ?"

"घड़ी-भर में क्या कह सकती हूं ! मैंने तो ऐसा सोचा भी न था कि बाबूजी और मांजी इतने आदर से स्वागत करेंगे।"

"और यह ऊपरी स्वागत नहीं है, बल्कि वे दिल से तुम्हें चाहते हैं।"

इतने में शांति बच्चे को उठाए अन्दर चली आई, क्योंकि बच्चे ने रोना शुरू कर दिया था। अंजना ने बढ़कर बच्चे को अपनी गोद में ले लिया और वह अंजना के सीने से लगते ही चुप हो गया।

"लो, बदमाश कहीं का ! मां से मिलते ही चुप हो गया।" शांति ने खुशी के आंसू पोंछते हुए कहा।

"बेटा किसका है !" कमल बोला।

"हट ! अच्छा बहू ! अब आराम कर ले, बच्चे को भी दूध पिला ले।"

"अच्छा मां, अब जाता हूं।" कमल ने अंजना के चेहरे से निगाहें हटाकर मां की ओर देखा और फिर रमिया की ओर, जिसने चाय की ट्रे लाकर मेज़ पर रख दी थी।

"एक कप चाय तो पीते जाइए।" अंजना ने झिझकते हुए कहा। लेकिन कमल ने जल्दी का बहाना बनाकर इंकार कर दिया।

शांति से रहा नहीं गया, बोली—"पहली बार बहू ने कहा है। पीकर जाओ बेटे !"

अब कमल इंकार न कर सका। अंजना ने बच्चे को रमिया

की गोद में दे दिया। वह उसे कमरे में रखे हुए खिलौनों से बहलाने के लिए ले गई। अंजना प्यालों में चाय उंडेलने लगी तथा मां और कमल बुत बने उसकी ओर देखने लगे।

अजना ने एक प्याला मां को और दूसरा कमल को दिया। मां ने रमिया से बाबूजी के लिए एक कप बनाने को कहा।

अंजना बोली—"मैं जा रही हूं।"

अंजना ने अपने लिए बनाया हुआ प्याला उठाया और बाहर चली गई।

उसकी तत्परता देख मां ने प्यार से कमल की ओर देखा। वह बोला—"कितने बदकिस्मत थे आप लोग जिन्होंने ऐसी बहू को ठुकरा दिया था!"

"ऐसा न कहो बेटा! हमें बहुत बड़ी सज़ा मिल चुकी है इसकी।"

कमल ने मां का दर्द समझा और चुप हो गया।

मां फिर बोली—"शायद भगवान ने हमारी सुन ली है जो हमारे बुढ़ापे का सहारा भेज दिया है।"

इधर अंजना चाय का प्याला लिए हुए बाबूजी के पास जा पहुंची।

वे उसे देखते ही बोले— "तुमने क्यों कष्ट किया बेटी?"

"यह तो मेरा धर्म है बाबूजी! आप क्या जानें, मैं कब से इस अवसर के लिए तड़प रही थी!"

"मुझे और अधिक लज्जित न करो बेटी! यह सब मेरी नासमझी का नतीजा था जो मैंने लक्ष्मी जैसी बहू को ठुकरा दिया। तुम जैसी देवी को अपनाने से इंकार कर दिया।"

"अब इन बातों को भूल जाइए बाबूजी! आप यों समझ लीजिए कि आपने मुझे बहू नहीं माना था और अब बेटी मानकर अपनी छत्रच्छाया में रख लिया है।"

यह कहकर वह लौट गई। लाला जगन्नाथ की आंखों से मोटे-मोटे आंसू ढलक पड़े। वे अपने दिल का दर्द कम करने के लिए अंजना के हाथ की बनी चाय के घूंट भरने लगे।

कमल चला गया। रमिया बच्चे को लिए खिलौनों में मग्न हो गई। बाबूजी फिर अखबार पढ़ने लगे और मां अपनी अधूरी पूजा पूरी करने के लिए फिर से भगवान की मूर्ति के सामने जा बैठी।

अंजना ने संतोष की सांस ली और चुपके-चुपके घर के चारों

कोनों में चलने-फिरने लगी। उसने एक मुद्दत के बाद आज आज़ादी का सांस लिया था। उसे एक प्रतिष्ठित सहारे की तलाश थी और वह उसकी पूनम ने अपनी मौत से पहले उसकी गोद में डाल दिया था।

अंजना का सामान नौकरों ने शेखर के कमरे में रख दिया था—वह कमरा जो अभी तक वीरान और दीनहीन अवस्था में पड़ा था, फिर से बसने जा रहा था। कमरे के जिस अंधेरे ने घर के उजालों को निगल लिया था, आज वह अंधेरा सिमटकर कहीं दूर जा छिपा था।

अंजना न जाने क्या सोचकर सीढ़ियों पर चढ़ गई जो उस बन्द दरवाज़े तक जाकर खत्म हो जाती थीं। उसे ऐसा लगा जैसे वह सचमुच इस घर की बहू हो, जो अब विधवा हो चुकी थी और इस घर की इज़्ज़त और सारी ज़िम्मेदारियों का बोझ भाग्य ने उसके कंधों पर डाल दिया था।

वह बन्द दरवाज़े के पास ठिठककर रुक गई। उसके दिल की धड़कन पहले से अधिक तेज़ हो गई। अंग-अंग में एक कंपकंपाहट पैदा हो गई। वह उस देवता के कमरे में प्रवेश कर रही थी जो कभी उसका सरताज था, लेकिन उसने कभी उसे देखा नहीं था। वह उसकी विधवा थी, लेकिन जीवन का एक पल भी उसने उसके साथ रहकर व्यतीत नहीं किया था। वह कुछ देर यही सब कुछ सोचती रही और फिर उसने किवाड़ धकेलकर खोल दिया।

कमरे का दृश्य सामने आते ही उसके दिल की धड़कन पल-भर के लिए थम गई। चलता हुआ सांस रुककर रह गया और वह फटी-फटी नज़रों से उस कमरे की वस्तुओं को निहारने लगी। अपने बोझिल कदम उठाते हुए वह अन्दर आई। समुचित ढंग से सारी चीज़ें सजी हुई थीं। कमरा भी साफ था। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ देर पहले वहां शेखर मौजूद था। वह धीरे-धीरे उस खिड़की की ओर चली गई जिसे थोड़ी ही देर पहले नौकर खोलकर चला गया था।

खिड़की का सहारा लेकर अंजना ने बाहर बिखरी पहाड़ियों पर नज़र डाली। उन पहाड़ियों में घिरी हुई एक झील दूर तक फैली हुई थी। उसका स्वच्छ झिलमिलाता हुआ पानी बड़ा मनोरम दृश्य उपस्थित कर रहा था। अंजना को लगा जैसे ठण्डी मधुर बयार उसके सूखे बालों को थपाथपा रही हो। उसकी घुटी हुई सांस फिर

से चलने लगी हो। चिड़ियों की चहचहाहट, खुली हवा में उनकी उड़ानें उसमें नवजीवन का संचार करने लगीं।

सहसा उसकी निगाहें सामने रेडियोग्राम पर रखे एक फोल्डिंग फ्रेम पर जाकर रुक गईं। वह लपककर उधर बढ़ी और उसे खोलकर देखा। यह फोटो शेखर का था जो उसने कभी झील के किनारे किसी चट्टान पर बैठकर खिंचवाया था। गठीले बदन का सुन्दर युवक, खिला हुआ चेहरा, मुहब्बत की रोशनी से चमकती हुई आंखें और निरन्तर मुस्कानों से खिले होंठ—फिर न जाने विधाता ने उसे इस धरती पर जीने का अवसर क्यों नहीं दिया।

यह सोचते ही उसे पूनम का ख्याल आ गया जो विरह की जलन से, चुभन से छुटकारा पाकर अपने पिया से जा मिली थी। उस बेचारी के भाग्य के दर्दनाक खेल की कल्पना करके अंजना की आंखों से आंसू बह निकले।

सहसा एक आहट सुनकर उसने पलटकर देखा। सामने शांति खड़ी थी। मां को सामने पाकर वह झिझक-सी गई। कांपते हाथों से उसने वह तस्वीर पुनः रेडियोग्राम पर रख दी और साड़ी के आंचल से अपने आंसू पोंछने लगी।

"और कितने आंसू बहाएगी उसकी याद में बहू! यहां तो आंखों का पानी ही सूख गया है।"

"यूंही मांजी! उनकी तस्वीर देख ली—आंखें भर आईं।"

"कोई औरत ही दूसरी औरत के दिल का दर्द पा सकती है बहू! अब उसकी सारी स्मृतियों को समेटकर अलमारी में बन्द कर दे। न ये सामने होंगी और न तेरा दिल दुखी होगा।"

"नहीं मांजी! ये स्मृतियां तो मेरे जीवन का सहारा हैं। इन्हें बिसार दिया तो मैं एक पल भी न जी सकूंगी।" अंजना ने कांपते हाथों से उस तस्वीर को दुबारा संभाला और अपने आंचल से साफ करके रेडियोग्राम पर रख दिया।

शांति ने बहू की आंखों में दृढ़ निश्चय को जन्म लेते देखा और उसे भगवान के भोग का प्रसाद देते हुए बोली—"बहू सच मानो, तुम आ गईं तो हमें बेटे के जाने का गम भूल गया है।"

"मैं भी भगवान से यही प्रार्थना करती हूं मां, कि मुझपर वे जो कुछ भी जिम्मेदारि ल गए हैं, उन्हें मैं पूरी तरह से निभा सकूं।"

"इन ज़िम्मेदारियों को बोझ न समझना बहू! हम तुम्हें फूलों

की तरह अपने पास रखेंगे। तुम अपने सारे दुखः-दर्द भूल जाओगी।"

मां ने उसे असीस दी और चली गई। अंजना के दिल का बोझ हल्का हो गया। वह भय जो उसे दिन-रात डस रहा था, सहसा निकल गया। वे लोग जिनके बारे में सोच-सोचकर वह शंकित होती रहती थी, इतने भले और सीधे-सादे होंगे, ऐसा वह सोच भी नहीं सकती थी।

सहसा उसके बदन में एक लहर-सी दौड़ गई। उसने शीघ्रता से अपना सामान खोला और हर चीज़ अलमारी में सजाने लगी। पूनम के रेशमी जोड़े, जो अब केवल उसकी स्मृति के चिह्न थे, इतनी सावधानी से संभालने लगी जैसे वे सब उसीके हों। वह अपनी दुनिया को भूलकर पूनम बन जाना चाहती थी। वह अंजना को भूलकर उन स्मृतियों को अपनाने के लिए तैयार हो गई थी जिनसे उसका कोई मतलब नहीं था।

बरबस उसके हाथों में पूनम का वह जोड़ा और ज़ेवरात आ गए जिन्हें पूनम ने अपने विवाह के अवसर पर पहना था। वह सुर्ख़ रंग का गोटेदार शादी का जोड़ा एक दुल्हन की कामना बनकर रह गया था। उसे देखकर अंजना का दिल दहल गया। यथार्थ फिर उसके सामने आ गया—वह यथार्थ जो उसके अपने ब्याह से सम्बन्धित था। वह जोड़ा जो दुल्हन बनकर उसने पहना था और जो उसके कलंक का कारण बनकर रह गया था।

यह सोचकर उसने अपना मुंह अपने उन हाथों से छिपा लिया जिनपर मेहंदी का रंग तो उड़ चुका था लेकिन कलंक की स्मृति अब तक उन लकीरों में छिपी हुई थी।

७

जीवन के कुछ दिन और व्यतीत हो गए। धीरे-धीरे अंजना का अस्तित्व मिटता चला गया और पूनम उस घर में निखरती चली गई। वह थोड़े ही दिनों में उस घर की दिनचर्या सीख गई। उसकी सारी इच्छाएं और कामनाएं दबकर रह गईं और वह शेखर की विधवा बनकर दिन बिताने लगी।

यह एक विचित्र संयोग की बात थी कि जिस लड़की ने ज़िंदगी की बहारों को अभी छुआ भी नहीं था उसे विवश होकर अपने दिल पर पत्थर रखकर एक विधवा का रूप धारण करना पड़ा। दुनिया

वालों के सामने तो उसकी सारी खुशियां वियोग और सोग में बदल चुकी थीं, लेकिन अन्दर ही अन्दर वह खुश थी। उसके हृदय को एक विचित्र ढारस मिल गया था। अजीब शांति मिल गई थी। वर्तमान की प्रफुल्लित कल्पनाओं ने अतीत की परछाइयों को अपने भार तले छिपा लिया था। उसने मौत में ज़िंदगी की झलक देख ली थी।

आज इस घर में वह आज़ादी की सांस ले रही थी। उसके सास-ससुर पड़ोस में किसीका हाल-चाल पूछने गए हुए थे। उपवन की मखमली घास पर वह बच्चों की तरह नंगे पांव उछल-कूद रही थी। अपनी आंखों पर दुपट्टे की पट्टी बांधकर वह अपने राजीव से आंख-मिचौनी खेल रही थी। राजीव उसे अलग छोड़कर स्वयं किसी पौधे के पीछे छिप जाता। अंजना अनजान-सी बनी उसे खोजने दौड़ती और हर बार जान-बूझकर उस पौधे को छोड़कर दूसरे किसी पौधे की ओट में झांकने लगती। इसपर राजीव अपने पौधे की ओट से निकलकर खुशी से ताली पीटने लगता। वह इसी खेल से अपना दिल बहला रही थी।

सहसा वह ठिठककर रुक गई। उसके चेहरे पर एक रंग आकर चला गया। लाज के मारे उसका सारा बदन पसीना-पसीना हो गया। उसने फौरन दुपट्टे से अपना सीना ढक लिया और कनखियों से उस व्यक्ति की ओर देखा जो राम जाने कब से खड़ा उनका यह खेल देख रहा था।

कमल ने उसकी घबराहट का अनुमान लगाया और उसकी ओर आते हुए बोला—"अरे! ठिठक क्यों गईं आप?"

"योंही। पागलपन सवार हुआ तो राजीव के साथ खेलने लग गई।"

"पागलपन क्यों? यह तो मन की तरंग है! इसे भला कौन रोक सकता है?"

"यह बंधन, यह दुनिया, मेरा भाग्य!"

"मैं इन रूढ़िवादी बातों को नहीं मानता। मैं तो यह जानता हूं कि मन के भावों को कुचलना पाप है।"

"वह तो अब इतने दब गए हैं कि उनका उभरना संभव ही नहीं है।"

"यह सच नहीं है।"

कमल की इस बात पर वह चौंक उठी और उसका इरादा भांपने के लिए उसने अपनी निगाहें कमल की नज़रों से मिलाईं।

वह तनिक रुककर फिर बोला—"अगर यह सच होता तो आज आपके चेहरे पर इतनी आभा कभी नहीं आती। चंचल मन आज फिर से बच्चों की तरह मचलकर यह आंखमिचौनी नहीं खेलता।"

"संसार वाले तो इसे पाप कहते हैं। वह किसी दुखियारी के अधरों पर मुस्कान देखते ही आपे से बाहर हो जाते हैं।"

"आप ठीक कहती हैं। विधवा से हर कोई सहानुभूति जताना तो जानता है, लेकिन उसके हृदय की पीड़ा समझने का प्रयत्न नहीं करता।"

वह चुप हो गई। विधवा शब्द क्या था, एक तीर था जो उसके सीने को छेदकर दिल में उतर गया। लेकिन वह बेबस थी। विवश होकर उसे यह चुभन सहन करनी पड़ी। जब उससे कोई बात न बन पड़ी तो मद्धिम स्वर में बोली—"एक बात आपसे कहूं?"

"हां, हां, जरूर।"

"मैं आपसे उम्र में छोटी हूं। बार-बार आपका मुझे 'आप' कहना अच्छा नहीं लगता।"

"तो क्या कहूं?" कमल ने मुस्कराकर पूछा।

"पूनम, केवल पूनम।"

'रिश्ता उम्र से बड़ा होता है और रिश्ते में जो बड़ा हो उसका नाम लेकर पुकारना उसकी तौहीन समझा जाता है।"

"नहीं, मैं नहीं समझूंगी। आपने मुझे केवल रिश्ते से नहीं जाना बल्कि एक हमदर्द की हैसियत से पहचाना है।"

"लेकिन···"

"सच्ची बात तो यह है कि जब कभी आप मुझे 'आप' कहकर पुकारते हैं, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे आप मेरे दर्द को उभार रहे हैं।"

"हूं! यह बात है! तो फिर आज से ही हम आपको आपके नाम से पुकारा करेंगे—पूनम!"

उसके अधरों पर 'पूनम' नाम आते ही वह मुस्करा दी जैसे पूनम कहकर कमल ने उसे अपना सामीप्य प्रदान किया हो। दोनों की बातें सुनता हुआ राजीव एक पेड़ के तने के पीछे छिप गया और 'मम्मी', 'मम्मी', चिल्लाकर उसे पुकारने लगा। अंजना की निगाह कमल से हटकर दूसरी ओर चली गई और वह चुपके-चुपके सरकती हुई उस पेड़ के पास जा रुकी जिसके पीछे राजीव छिपा खड़ा था।

अंजना ने लपककर उसे पकड़ लिया। वह चिल्लाने लगा। अंजना

ने उसे बांहों में लेकर सीने से भींच लिया। दोनों का प्यार देख कमल ने मुस्कराकर राजीव के गाल पर चुटकी ले ली। राजीव अंजना की गोद से उतरकर दूर भाग गया।

"बचपन भी कितना अनमोल है! न कोई फिक्र न कोई चिंता! जिधर मुंह उठाया, चल दिया।"

"मेरा तो यह अनमोल सहारा है। सच बात तो यह है कि गाड़ी की दुर्घटना में इसे अगर कुछ हो जाता तो मैं एक पल के लिए भी जीवित न बचती।"

"और जीना भी किसलिए था! इंसान या तो अपने भविष्य के लिए जीता है या अपने प्यार के लिए!"

कमल की इस बात ने एक बार फिर उसे परेशान कर दिया। उसे प्यार की याद दिलाकर उसने उसके दिल का दर्द बढ़ा दिया। दिल की गहराइयों में दबी मुहब्बत की चिंगारियां फिर उसके बदन को फूंकने लगीं। उसके हृदय की विकलता को समझते ही कमल ने बात बदल डाली और पूछने लगा—"बाबूजी कहां हैं?"

"वे और मांजी पड़ोस में किसी बीमार का हालचाल लेने गए हैं।"

"हां, एक बात कहना तो मैं भूल ही गया पूनम!"

"क्या?"

"वह टैक्सी ड्राइवर पकड़ा गया।"

"कब?"

"दो रोज पहले; और कमाल की बात यह है कि वह टैक्सी ड्राइवर का रूप भरे हुए था। असल में वह इस इलाके का नामी डाकू है—अब्दुल्ला, जिसकी पुलिस को एक अर्से से तलाश थी।"

यह सुनकर अंजना डर-सी गई। उस ड्राइवर का भयानक चेहरा उसके सामने आ गया और वह चुपचाप खड़ी हैरत से कमल के चेहरे की ओर देखने लगी। कमल उसके दिल की बात समझ नहीं सका। बोला—"क्या सोच रही हो?"

"अगर आप समय पर न पहुंचते तो न जाने क्या हो जाता!"

"मैं तो यह सोच रहा हूं कि अगर अब्दुल्ला न होता तो हमारी मुलाकात इतनी रोचक कैसे बनती!"

रोचक शब्द पर वह फिर टुकुर-टुकुर देखने लगी। वह झेंप गया और अपनी सफाई के लिए कहने लगा—"मेरा मतलब उस जंगल की मुलाकात से था। यहां तो हो ही जाती इस घर में, लेकिन फिर

हम एक-दूसरे के लिए अजनबी-से रहते।"

जभी लालाली की आवाज़ ने कमल को आकर्षित किया। वे पड़ोस से लौट आए थे। कमल आंखों के इशारे से ही अपने दिल की बात अंजना को समझाकर सदर हाल की ओर बढ़ चला।

अंजना देर तक वहीं खड़ी उसे देखती रही। उसकी बातों में आज कितनी मिठास थी! जब कभी कमल उसके पास आता तो न जाने क्यों उसे आभास होने लगता जैसे उसकी ज़िंदगी की कोई कमी पूरी हो गई हो और जब वह चला जाता तो फिर से वही कमी उभर आती और वह उदास हो जाती।

'रोचक' शब्द बार-बार उसके कानों से टकराने लगा। एक क्षण के लिए उसके दिल में एक गुदगुदाहट-सी हुई और दूसरे ही क्षण वह यथार्थ के साक्षात्कार से कांप उठी। वह एक विधवा है। एक बच्चे की मां है। उसके लिए किसी परपुरुष में तनिक दिलचस्पी लेना भी पाप है। फिर उसकी नज़रें उस हरी-भरी घास पर दौड़ गईं जहां राजीव घर के माली से खेल रहा था। वह अन्दर जाने के लिए मुड़ी।

ज्योंही उसने पिछवाड़े के दरवाज़े से निकलकर ज़ीने पर कदम रखा, उसे बाबूजी की आवाज़ सुनाई दी। वे कमल से कह रहे थे—"बहू का कदम घर में क्या पड़ा कि तुमने भी हफ्ते में दो बार सूरत दिखानी शुरू कर दी, वरना हफ्तों सरकार को फुरसत ही नहीं मिलती थी।"

"नहीं चाचाजी!"

"अरे, सच कहते डरता क्यों है?" शांति बड़बड़ाई—"घर में कोई बातचीत करने वाला हो, कोई पूछने वाला हो, तो कोई आए। आपके पास आकर क्या करे! अखबार की रोज़ाना की खबरों के सिवा आपके पास है ही क्या!"

बाबूजी बीवी के पक्ष लेने पर हंस दिए। कमल ने भी इस अवसर का फायदा उठाया और शांति की बात की हामी भर दी। कहने लगा :

"सच चाचाजी! बहू के आ जाने से घर में रौनक आ गई है। आपको ऐसा महसूस नहीं होता क्या? राजीव की चहचहाहट ने इस सूने घर के सूने और दुखी जीवन को सुखद बना दिया है।"

अंजना अधिक देर वहां नहीं रुक सकी। वह धीरे-धीरे उन सीढ़ियों पर चढ़ गई जो उसके कमरे तक जाती थीं। कमल के शब्द दूर तक उसके कानों में गूंजते रहे। उसने कमरे में आते ही उन

आवाज़ों पर किवाड़ बन्द कर दिए जो नीचे से आ रही थीं।

ज़रा-सी देर में फिर सन्नाटा छा गया। शेखर का कमरा उसकी ज़िंदगी का आईना बना हुआ था। चारों ओर मौत की सी खामोशी छाई थी। वह वातावरण, जो सदा उसे शांति प्रदान करता था, उसे मानसिक बल देता था, आज उसके दिल की धड़कनों से खेलने लगा। बार-बार उसके मन में एक ही सवाल उठता था—'कहीं कमल की यह हमदर्दी उसके दिल की बेचैनियों का कारण न बन जाए ?'

ज्यों-ज्यों वह ऐसा सोचती, उसके दिमाग की नसें फटने-सी लगतीं। अंग-अंग में एक विचित्र-सी कंपन का आभास होने लगा। उसके हाथ-पांव बर्फ जैसे ठंडे पड़ने लगे। उसने तेज़ी से बढ़कर उस रेडियोग्राम का सहारा लिया जिसपर शेखर की तस्वीर रखी थी। लेकिन वह शेखर की निगाहों का सामना न कर सकी। उसे लगा जैसे वह उसे सचमुच पूनम समझकर घृणा से देख रहा है। वह उसकी आराधना पर शंकित हो उठा है। वह उन निगाहों की ताब न ला सकी। उसने झट से उस तस्वीर को उलट दिया और वहां से हटकर उसने अपनी अलमारी के पट खोले।

वह अपना जोड़ा बदलने के लिए कपड़े उलटने-पलटने ही लगी थी कि पूनम और शेखर के ब्याह का फोटो निकल आया। उसने उसे निकालकर भर नज़र देखा। उसमें भी शेखर की नज़रें उसपर संदेह कर रही थीं। न जाने किस उलझन की लपेट में आकर उसने उस तस्वीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। वह शायद पूनम के कल्पित अस्तित्व को भी मिटा देना चाहती थी।

जब उसने तस्वीर के उन टुकड़ों को अपनी मुट्ठी में बंद किया तो पूनम के शब्द फिर उसके कानों में गूंजने लगे। वह फिर अपना वचन दुहराने लगी। उसीने जीवन को नया रूप दिया था। वह उसे उसकी ज़िम्मेदारियां समझाने लगी। वह शेखर की विधवा है। अंजना मर चुकी है। अब वह उसके बच्चे की मां है।

इतने में दरवाज़े पर किसी आहट ने आकर उसकी मानसिक उथल-पुथल को समाप्त कर दिया। उसने जल्दी से मुट्ठी में लिए हुए तस्वीर के उन टुकड़ों को पास रखी एक डिबिया में बंद कर दिया। फिर पलटकर जो देखा तो शांति उसके सामने खड़ी थी।

"आइए मांजी !"

"यहां अकेली बैठी क्या कर रही हो ?"

"कुछ नहीं मांजी ! हां, सोच रही थी, यह सब जेवरात आपके

हवाले कर दूं। कोई इधर-उधर न हो जाए।" अंजना ने तुरंत बात पलट दी।

उसकी इस बात पर मां मुस्कराती हुई बोली—"जब तू इन्हें सुरक्षित नहीं रख सकती तो भला मैं क्या रखूंगी? फिर यह तुम्हारी चीज़ है, तुम्हीं इसे संभालो।"

"लेकिन मैं..."

"जानती हूं। लेकिन यही औरत की पूंजी होती है। जो भगवान बुरा वक्त न लाए, सहारा बनती है।" मां ने ज़ेवरों की ओर देखते हुए कहा।

सहसा उसकी नज़रें एक हार पर जा रुकीं। सोने की इस पतली और सुन्दर-सी ज़ंजीर में एक लाकेट लगा हुआ था। उसकी उंगलियों ने उसे टटोला और फिर वह लाकेट खोल दिया।

अंजना ने जैसे ही उसमें जड़ी शेखर की तस्वीर देखी, उसे एक धक्का-सा लगा। वह सांस रोककर एक नज़र से उसे और दूसरी नज़र से मां को देखने लगी। मां बेटे की भोली सूरत को एकटक देखती जा रही थी। उसकी आंखों में आंसू उतर आए थे, लेकिन उसने उन्हें बहने नहीं दिया।

मां के दिल का दर्द वह जान गई इसलिए उस दाहक स्तब्धता को समाप्त करते हुए वह बोली—"यह उन्होंने दिया था पिछले बरस, मेरे जन्मदिन के अवसर पर।"

"हूं। जानती है, यह उसे कहां से मिला?" शांति ने मुस्कराहट के साथ पूछा।

"ऊं हूं।"

"मैंने उसे भिजवाया था, अपने पति से चोरी—तेरे लिए।"

"जी, उन्होंने भी यही कहा था कि मांजी ने भेजा है, लेकिन मैंने सोचा, मेरा दिल रखने के लिए कह रहे हैं।"

"तू तो ऐसा सोचेगी ही! हमने अपना विश्वास जो खो दिया था तुझे ठुकराकर।"

"नहीं मांजी! मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा था। मुझे विश्वास था कि एक न एक दिन नफरत की यह दीवार टूट जाएगी। हमारा मेल-मिलाप हो जाएगा। लेकिन मुझे क्या पता था कि यह मिलाप मेरे दुर्भाग्य की छाया में होने वाला है।" और अंजना की आंखों में आंसू उमड़ आए।

"नहीं बहू, नहीं। ऐसे विचार मन में क्यों लाती हो! विधाता

के आगे किसीकी नहीं चलती । होनी को कोई नहीं टाल सकता ।"

मां ने अपने आंचल से अंजना के आंसू पोंछ डाले ।

जब मां ने उसके गले में वह ज़ंजीर पहनानी चाही तो अंजना ने इंकार कर दिया। मां ने ज़िद की, लेकिन जब वह फिर इंकार करने लगी तो मां ने झट से वह ज़ंजीर उसके गले में डाल दी ।

"सिंगार करना और बात है बहू ! यह यह तो निशानी है उसकी ।"

अब अंजना कुछ न कह सकी और विवश होकर ज़ंजीर को गले में पहन लिया । वह अपने-आपको शेखर के लगाव से जितना भी दूर ले जाने का प्रयास करती थी, उतना ही वह उसका पीछा करता था और पास आता जा रहा था। कभी-कभी तो वह सचमुच अपने-आपको शेखर की बेवा समझने लग जाती थी । अनदेखे और कल्पित पति की विधवा ! बिना जने बच्चे की मां ! और फिर वह एक विधवा के कर्तव्य और ज़िम्मेदारियों को निभाने लगती ।

मां ने उसके गले में पड़े लाकेट की ओर भरपूर नज़रों से देखा तो उसके बेचैन दिल को जैसे अचानक चैन आ गया । फिर वह जाते-जाते सहसा रुककर बोली—"लो, जिस काम से आई थी वह तो भूल ही गई !"

"क्या, मां ?"

"तुम्हारे ससुरजी का हुक्म हुआ है कि वे आज फिर सूप पिएंगे तेरे हाथ का बना हुआ । दो-चार दिन तूने उनकी आवभगत क्या की कि अब हर रोज़ फर्माइशें होने लगीं ।"

"तो क्या हुआ मांजी ? मेरा तो सौभाग्य है कि वे मेरे हाथ की बनी चीज़ें पसन्द करते हैं ।"

"पसन्द ही नहीं करते, बल्कि चटखारे ले-लेकर मुझे ताने देते हैं कि ज़िंदगी-भर मैंने कुछ नहीं सीखा । अब तू उनके लिए जल्दी से सूप बना ला, वरना मेरी जान को आफत में डाल देंगे ।"

मां की बात सुनकर अंजना के दिल में गुदगुदी-सी हुई और वह रसोईघर की ओर चली गई ।

८

अंजना ज्योंही उपवन में से अन्दर आई, सामने जगन्नाथ कुर्सी पर विराजमान मिले । उसे देखते ही बोले—"बहू ! अभी तक तुम

तैयार नहीं हुई !"

"मैंने तो वहां जाने से इंकार कर दिया था, बाबूजी !"

"लेकिन मैंने कमल से वादा किया था कि बहू ज़रूर जाएगी। तुम तो जानती हो, मेरा या तुम्हारी मां का वहां जाना अच्छा नहीं लगता।"

"लोग क्या सोचेंगे ?"

"कुछ भी नहीं। हममें से किसी न किसीको ज़रूर वहां जाना चाहिए। कमल मेरे बेटे के समान है। हममें से कोई नहीं गया तो बुरा मान जाएगा।"

अंजना ससुर से बहस नहीं कर सकी और विवशतावश उसे कमल के यहां जाने के लिए तैयार होना पड़ा। उधर बाबूजी ने माली से ताकीद कर दी कि वह किश्ती झील में डाल दे और इधर बहू से जल्दी करने के लिए कहा। रमिया राजीव को बहलाने के लिए सामने के पार्क में चली गई थी।

आज कमल का जन्मदिन था। उसने अपने जन्मदिन की पार्टी का प्रबन्ध रेनबो क्लब में किया था। वह चाहता तो मेहमानों को लाला जगन्नाथ के घर भी निमंत्रित कर सकता था, लेकिन ज़माने के दस्तूर के ख्याल से वह उस सोगवार घर में खुशी का कोई उत्सव नहीं करना चाहता था।

सारे मेहमान आ चुके थे। चारों ओर चहल-पहल, हंसी-खुशी फैल रही थी। रंगारंग कपड़ों से सारा वातावरण झिलमिला रहा था। नाच-गाने की महफिल जमी हुई थी। हर आदमी केक काटे जाने की रस्म का बड़ी बेताबी से इंतज़ार कर रहा था, लेकिन कमल की निगाहें मेहमानों की इस भीड़ में पूनम को ढूंढ़ रही थीं। उसे विश्वास था कि वह अवश्य आएगी।

सहसा उसके एक साथी ने उससे ठिठोली करते हुए कहा—"इजाज़त हो, तो आपको पैदा किया जाए।"

इस वाक्य पर लोगों की हंसी छूट गई, लेकिन कमल ने हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहा—"थोड़ी देर और—अभी दो-चार मेहमान और हैं।"

"उन दो-चार के लिए हमें क्यों इस जाड़े में ठिठुराया जा रहा है ?"

एक दूसरा साथी बोल पड़ा—"चलो माफ किया। क्या जाने उन दो-चार मेहमानों में कोई बड़ा महत्त्वपूर्ण मेहमान हो !"

यह सुनकर कमल कुछ झेंप गया मानो कहने वाले ने उसके दिल की छिपी सच्ची बात को खोल दिया हो। वह उनसे निगाह बचाकर जैसे ही दूसरी ओर मुड़ा कि सामने क्लब के डेक पर पूनम खड़ी थी। वह उसकी ओर बेझिझक निगाहों से देखने लगा।

पूनम अभी-अभी किश्ती छोड़कर किनारे पर उतरी थी। श्वेत रेशमी साड़ी, बिना मेकअप के चेहरा, कानों में झिलमिलाती हल्की बालियां जो गले की ज़ंजीर से बड़ी मनोहर समानता रखती थीं, सादगी की एक अनोखी तस्वीर, संगमरमर की एक प्रतिमा—ऐसा मालूम होता था जैसे खूब सजे-धजे तारागण जैसे अतिथियों की ओट से पूर्णिमा का चांद उभरकर सामने आ गया हो। हर किसीकी निगाहें सादगी की इस प्रतिमा पर केन्द्रित थीं जो आंखों में संचित घबराहट लिए आगे बढ़ रही थी और जिसे आज से पहले उन्होंने कभी नहीं देखा था।

कमल की निराश निगाहों में अचानक चमक आ गई। वह तेज़ी से उसकी ओर बढ़ा और उसे अपने साथ क्लब के लान की ओर ले आया जहां मेहमानों का ठठ लगा हुआ था। कमल ने पूनम का परिचय अपने अफसरों और अन्य साथियों से कराया। जब लोगों को पता चला कि वह लाला जगन्नाथ की बहू है जो पिछले साल ही विधवा हो गई थी, तो उनका कलेजा मुंह को आ गया। हरेक को उसकी भरपूर जवानी की अवस्था पर दया आ गई, जो जवान उमंगों के साम्राज्य पर राज्य करने से पहले ही लुट चुकी थी।

उसके चेहरे की लाली, आंखों में सितारों की सी चमक और ललाट का उठान देखकर किसीको विश्वास ही नहीं होता था कि वह विधवा है। फिर भी लोग सहानुभूति जताने के लिए बढ़े। मर्द इसलिए कि वह यौवन का एक तूफान थी और औरतें इसलिए कि उसपर भरी जवानी में वज्र गिरा था।

थोड़ी देर में ही वह उन सबके दिल में समा गई। लोगों के प्रश्नों से और उनके अनोखी पहेलियां बूझते-बूझते कमल का दम घुटने लगा। तभी उसने लोगों का ध्यान बदलने के लिए केक काटने की रस्म का एलान कर दिया। सब लोग उस मेज़ के पास जमा हो गए जिसपर केक रखा हुआ था।

कमल ने बढ़कर अंजना को पास बुलाया और केक काटने की रस्म पूरी करने लगा। केक कटते ही वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। अंजना ने लोगों की ओर कनखियों से देखा जैसे कमल

की इस खुशी में वह बराबर की सहयोगी थी।

लोग खाने-पीने में व्यस्त हो गए और कमल उनकी आवभगत में। क्लब के बैंड ने फिर पाश्चात्य धुन बजानी शुरू कर दी जिससे वातावरण में मधुरता भर गई। हर आदमी मस्ती में झूमने लगा।

कमल की निगाहों ने उस भीड़ में फिर अंजना को तलाश करना शुरू कर दिया। वह इस भीड़ में अनजबी थी। उसका कोई परिचित नहीं था। कमल को शंका थी कि कहीं वह बोर न हो रही हो। वह अच्छी तरह जानता था कि उसे ऐसी रंगीन ज़िंदगी से कोई रुचि नहीं थी। वह तो केवल उसका दिल रखने के लिए इस समारोह में चली आई थी।

कमल ने देखा, वह सबसे परे क्लब के एक कोने में चली गई थी और झील के किनारे बने हुए एक पत्थर के चबूतरे के पास खड़ी थी—उस भीड़ के शोर से बिलकुल अलग-थलग और अकेली।

कमल ने उसके लिए प्लेट में खाने की दो-चार चीज़ें रखीं और उस चबूतरे तक जा पहुंचा।

वह अंजना के पास जाकर रुक गया जो उसकी आमद से बेखबर झील के नीले और गहरे जल की ओर देख रही थी। वह चुपचाप खड़ा उसके पलकों पर उगे हुए आंसुओं की उन बूंदों की ओर देखने लगा जिनमें उस नीली झील का प्रतिबिम्ब नाच रहा था।

"ओह! आप!" वह बरबस चौंक उठी।

"तुम्हारे मनोभावों का अध्ययन कर रहा था।"

"मैं तो···योंही···मैं···"

"उस भीड़ से अलग आकर खड़ी हो गई!"

"और करती भी क्या?"

"मैंने तो तुम्हें इसलिए बुलाया था कि कुछ देर के लिए तुम्हारा मन बहल जाए, वातावरण बदल जाए। वह एकांत जो सदा तुम्हें डसता रहा है, इस भीड़ और चहलपहल में खो जाएगा।"

"नहीं, कमल बाबू! अब तो मुझे एकांत से प्यार-सा हो गया है।"

"तभी तुमने मेरे जन्मदिन के उत्सव में आने से इंकार कर दिया था।"

"यह बात नहीं, मैं जन्मदिन की खुशी में शामिल तो होना चाहती थी, लेकिन उन लोगों से डरती थी जिन्हें मैंने कभी देखा नहीं। न जाने वे क्या समझें!"

"क्या समझें ?" उसने निःसंकोच पूछा।

अंजना उसके मनोभाव को ताड़कर कांप उठी। उससे कोई जवाब न बन पड़ा। वह विह्वल और लज्जित दृष्टि से उसे निहारने लगी। उसके दिल की बात बार-बार उछलकर होंठों तक आ रही थी, लेकिन उसे कहने का साहस नहीं हो रहा था।

कमल उसकी मानसिक दशा देखकर स्वयं बोल पड़ा—"यही ना, कि डिप्टी साहब की बहू का कमल से क्या नाता है, क्या रिश्ता है, जो वह अपनी सोग-भरी दुनिया को छोड़कर उसकी महफिल की रौनक बढ़ाने चली आई ?"

अंजना चकित होकर उसकी ओर देखने लगी जो जीवन के यथार्थ को लापरवाही से तौल रहा था।

कमल ने प्लेट उसकी ओर बढ़ाई और बोला—"जब अपना मन गंगाजल की तरह पवित्र हो तो दुनिया वालों की परवाह नहीं किया करते। एक रिश्ता टूट जाने से संसार के सारे रिश्ते तोड़ डालना अच्छा नहीं होता।"

अंजना ने उसकी बात ध्यान से सुनी और मन-मस्तिष्क की तराजू में तौलने लगी। इसमें झूठ भी क्या था ? जब अपना मन साफ है तो यह भय कैसा ? लेकिन वह अपनी मानसिक दशा बता नहीं सकती थी। इस पवित्र गंगा में भी पाप की एक स्याह लहर निरंतर बह रही थी लेकिन इस सत्य से पर्दा हटाने की क्षमता उसमें नहीं थी।

कमल ने प्लेट में सेकेक का एक टुकड़ा उठाया और उसे अंजना के मुंह की ओर बढ़ा दिया। वह तनिक झिझकी, लेकिन कमल ने ज़बरदस्ती वह टुकड़ा उसके मुंह में ठूंस दिया।

"तुम्हारी भी बच्चों जैसी हालत है पूनम !" कमल ने कहा।

"क्या ?" भरे हुए मुंह से अंजना फुसफुसाई।

"ज़बरदस्ती खिलाना पड़ता है।"

यह सुनकर वह हंसने लगी। एक मुद्दत के बाद कमल ने उसके चेहरे पर स्वच्छंद मुस्कान देखी थी, ठीक बच्चों जैसी, लेकिन फिर दूसरे ही क्षण वह मौन हो गई जैसे उसे कोई बात याद आ गई हो।

क्यों ? क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं, लेकिन लोग क्या सोचेंगे ?"

"फिर वही ! दिल ने हंसना चाहा, तुम हंसने लगीं। सोग तो भाग्य ने दे ही रखा है पूनम ! लेकिन इस सोग को हल्का करना तो



माधवी : एक दुल्हन जो लगन-मंडप में बैठने से पहले ही भाग गई ।



कमल : कविता का पुजारी, लेकिन जब से जीवन के सत्य को समझा,
कविता की कोमल कल्पना समाप्त हो गई।



शबनम : आज तुम्हारी मधु पराई हो गई न ?

कैलाश : शबनम, जिन्दगी में न जाने कितनी माधवियां आईं और गईं।
अफसोस तो यह है कि उसके मामा की दौलत पराई हो गई…



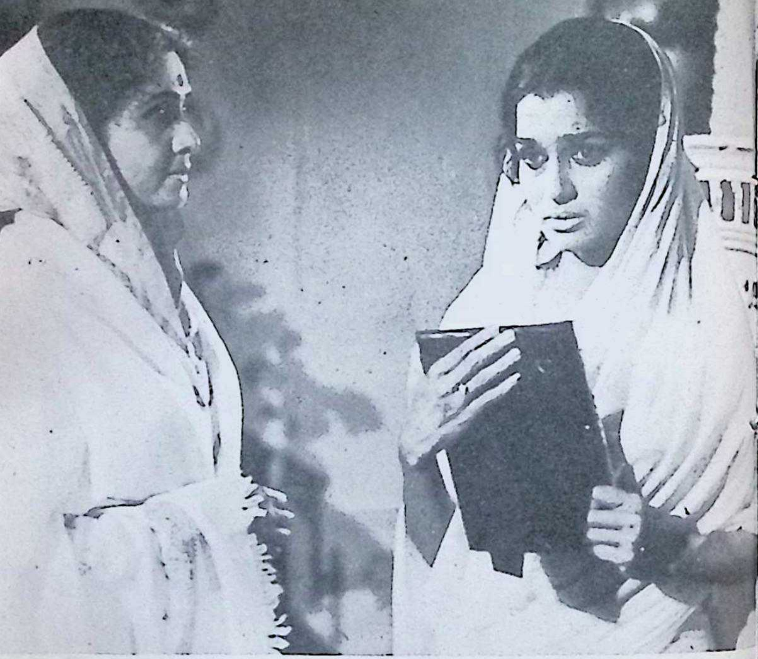
कमल : लगता है मैंने आपको कहीं देखा है............क्या नाम
बताया आपने............

माधवी : ....पूनम ।

माधवी : सोच रही थी कि मुझे देखकर वे लोग क्या सोचेंगे………

कमल : आपकी गोद में अपने खानदान के वारिस को पाकर फूले नहीं समाएंगे और फिर आप ही तो उनके बुढ़ापे का सहारा हैं ।





शांति : लाओ बहू, इसे अलमारी में रख दूं। सामने रहेगी तो देखकर तुम्हें दु:ख होगा।

माधवी : ये छोड़कर चले गए, मांजी······अब इनकी तस्वीर भी आंखों से ओझल हो गई तो जीना मुश्किल हो जाएगा।

कमल : आपने ठीक कहा, चाचाजी, बहू और मुन्ने के आ जाने से घर में रौनक आ गई है·········बहार-सी छा गई है ।





कमल : क्षमा चाहता हूं। अनजाने में मैंने आज आपको तुम कह दिया।

माधवी : 'तुम' में जो अपनापन है वह शायद 'आप' में नहीं।

···जीवन की निराशा ममता की आशा बनकर रह गई।

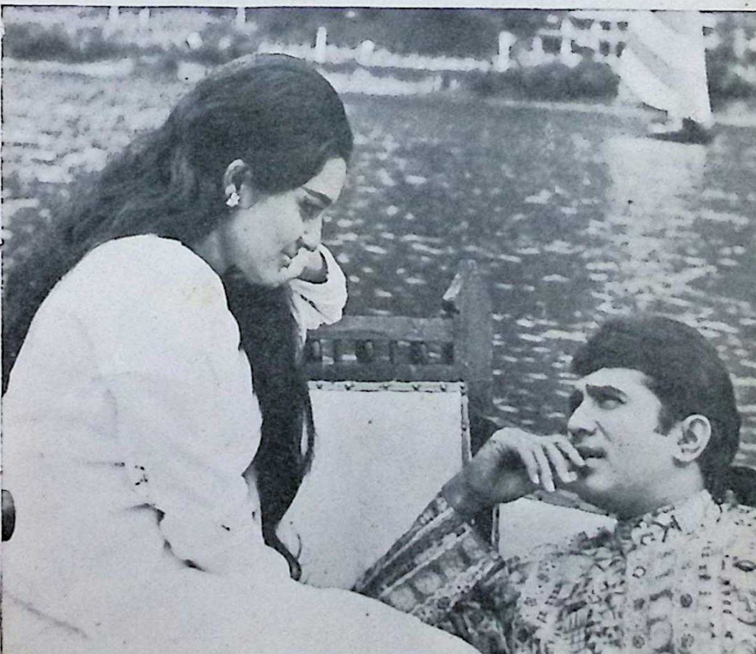




कमल : पूनम, हंसी तुम्हारे चेहरे पर ऐसे खिलती है जैसे एकसाथ सैकड़ों झरने फूट पड़े हों।

माधवी : अगर आज आपको वह मधु मिल जाए तो क्या आप उसे क्षमा कर देंगे ?

कमल : हां, पूनम............अब तो उसके दिए हुए दर्द पर किसी हमदर्द का साया पड़ गया है ।





शबनम : मेरा नाम है शबनम········लोग प्यार से कहते हैं मुझे शब्बो। तुम्हारा नाम क्या है, नीना, मीना अंजू, मंजू, मधु···?



कैलाश : होली का दिन है, गले लग जाओ........अब मुझे तुम्हारी दौलत नहीं, दिल चाहिए ।



···कैलाश के आ जाने से यह नज़दीकियां फिर से दूरियां बन गईं ।



कमल : वह देखो, माली के लड़के ने उसे सबसे बचाकर हासिल कर लिया । अब वह उसे अपनी नई डोर में बांधकर खुले आकाश में उड़ाएगा, उसे कटने नहीं देगा ।

माधवी : फिर भी कहलाएगी तो 'कटी पतंग' ही ।



•••कमल न नैनीताल की उन वादियों में माधवी को बाहुपाश में लेकर उसके आंसू पोंछ दिए और सदा के लिए दो प्रेमी हृदय एक हो गए ।

अपने वश में है।"

अंजना ने सिर नीचे झुका लिया। हाथ में पकड़े हुए बैग में से रूमाल निकालकर मुंह साफ किया और फिर बैग में से एक डिबिया निकालकर कमल को भेंट की। वह हैरान होकर पहले अंजना और फिर उस मखमली डिबिया की ओर देखने लगा। कमल ने वह डिबिया ले ली और धीरे से उसे खोला। उसमें सोने के कफलिंक्स की एक जोड़ी थी।

"यह क्या ?"

"एक छोटी-सी भेंट ! आपके जन्मदिन पर !"

"लेकिन इसकी क्या जरूरत थी ?"

"सबके सामने देने का साहस नहीं हुआ। मूल्यवान वस्तुओं में यह साधारण-सी वस्तु शायद शोभा नहीं देती।"

"नहीं पूनम ! सच्चे दिल से दी हुई कोई मामूली-सी चीज़ भी कोहनूर हीरे से कम नहीं होती और फिर यह तो मूल्यवान भेंट है।"

"अगर आप इसे स्वीकार करें तो !"

कमल ने उसे जेब में रख लिया और कृतज्ञ दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए बोला—"मेरे लिए यह अनमोल भेंट है पूनम ! जब भी मैं इसे अपने हाथों में लगाऊंगा तुम्हारी भोली सूरत मेरे सामने आ जाएगी।"

मेहमानों में एक शोर उठा और कुछ लोग कमल की ओर बढ़े। उन्होंने सब मेहमानों की ओर से महफिल को रंगीन बनाने के लिए एक गाने का निवेदन किया। वे उसे खींचकर ले जा रहे थे कि अंजना ने पूछ लिया—"आप गाते भी हैं ?"

"सिर्फ गाते ही नहीं, खूब गाते हैं।" उनमें से एक ने कहा और कमल को खींचता हुआ सबके बीच में ले गया।

कमल को विवश होकर गीत गाना पड़ा। उसका मधुर स्वर अंजना ने पहली बार सुना था। उसने तो कभी सोचा भी नहीं था कि कमल बाबू इतना अच्छा गाते भी हैं।

झील का किनारा, महफिल की खामोशी और दूर तक फैली हुई दुल्हन की भांति पुष्पों से लदी चोटियों का दृश्य स्वर की मधुरता और भी बढ़ा रहा था। अंजना को लगा जैसे वे गीत के बोल न होकर उसके अपने दिल के टुकड़े हैं जो इस समय उसके हृदय के भावों को व्यक्त कर रहे हैं।

महफिल समाप्त हो गई। मेहमानों का जमघट क्षण-प्रतिक्षण कम होता जा रहा था। हर कोई इस अवसर पर कमल को बधाई देकर आगे बढ़ जाता था। अंजना चुपचाप एक कोने में खड़ी उन लोगों को देखती रही जो एक विशेष ढंग से कमल के पास आते और अपने दिल की बात कहकर विदा हो जाते।

आखिर जब क्लब का लान खाली हो गया तो कमल अंजना के पास आया जो अब अकेली बच रही थी और घर जाने के लिए उसकी अनुमति की प्रतीक्षा कर रही थी।

"अंजना ने धीमे स्वर में कमल से पूछा—"अब मैं जाऊं?"

"नहीं, संध्या गहरी हुआ ही चाहती है। अकेले जाना ठीक नहीं। मैं छोड़ आता हूं।"

"लेकिन आप···?"

"मुझे भी उसी रास्ते से घर लौटना है और फिर बाबूजी क्या सोचेंगे अगर इस समय तुम्हें नाव में अकेला भेज दिया!"

अंत में अंजना उसकी बात मान गई और किश्तीवाले को छुट्टी दे दी गई। वह पहले कभी इस झील के किनारे वाली सड़क पर नहीं गई थी। हां, इस सड़क को वह अपने कमरे की खिड़की से देखा अवश्य करती थी। आज वह उसे घूमकर देखना चाहती थी। वह कमल का इशारा पाते ही उसकी जीप में जा बैठी।

इतने में उसे याद आया कि बाबूजी के लिए कुछ दवाइयां बाज़ार से ले जानी हैं। सामने का बाज़ार अभी तक खुला हुआ था।

उसने कमल से जीप चलाने के लिए कहा और बोली—"किसी कैमिस्ट की दुकान के सामने रोक दीजिएगा।"

"क्यों?"

"बाबूजी के लिए कुछ दवाइयां लेनी हैं। नौकर को नुस्खा देना भूल गई थी।"

कमल ने जीप स्टार्ट की और कुछ ही मिनटों में एक कैमिस्ट की दुकान के सामने ला खड़ा किया। अंजना नीचे उतरी और काउंटर की ओर बढ़ चली। कमल ने जल्दी से गाड़ी की चाबी खींची और अंजना के साथ हो लिया।

अंजना ने काउंटर पर जाते ही बैग से नुस्खा निकालकर काउंटर पर रख दिया। सेल्समैन ने ध्यान से उसकी ओर देखा और इससे पहले कि नुस्खे की दवाइयां लाता, वह एकदम बोल पड़ा:

"अंजू! तुम!"

अंजू ने चकित होकर उसे देखा।

वह नुस्खे को हाथ में लेकर फिर बोला—"पहचाना नहीं तुमने ? मैं राकेश हूं ! लखनऊ में हम एकसाथ एक ही कालेज में पढ़ते थे।"

"आपको शायद भ्रम हो गया है। मैं अंजू नहीं पूनम हूं और मैं कभी लखनऊ नहीं गई।" अंजना ने दृढ़ स्वर में कहा।

राकेश, जो अभी तक फटी-फटी निगाहों से देख रहा था, तुरत बोला—"आई एम सॉरी मैडम !"

वह नुस्खा लेकर अंदर चला गया। अंजना चुपचाप खड़ी अपनी कंपन पर काबू पाती रही।

कमल, जो सब कुछ सुन रहा था, सहसा हंस पड़ा। अंजना और भी घबरा गई। इसपर कमल ने कहा—"इसमें उसका कोई दोष नहीं पूनम ! कभी-कभी मिलता-जुलता चेहरा इंसान को चक्कर में डाल देता है। याद है, जब मैंने पहली बार तुम्हें देखा था तो मैं भी चकरा गया था !"

राकेश काउंटर पर वापस आ गया था। वह बोला—"मैं भी इन्हें देखकर चकरा गया था। इनकी सूरत हूबहू अंजना से मिलती है। वह मेरे साथ कालेज में पढ़ती थी।"

अंजना शीघ्रता से वे दवाइयां समेटने लगी जो राकेश ने लाकर उसके सामने रख दी थीं।

इतने में कमल ने पूछा—"पूनम ! तुम्हारी कोई जुड़वां बहन तो नहीं है ?"

"नहीं।" उसके बदन में दौड़ता हुआ खून क्षण-भर के लिए रुक गया।

"ठहरिए ! शायद मेरे कालेज ग्रुप में इनका फोटो भी हो।" राकेश ने बिल बनाकर कहा और फिर अंदर जाने लगा।

"रहने दीजिए हमें बहुत जल्दी है। फिर कभी सही।" अंजना ने यह कहकर उसे रोक दिया और बिल के पैसे देकर अपनी घबराहट समेटे कमल के साथ बाहर जाने लगी।

राकेश ने उन्हें पुकारा। वह बकाया लेना भूल गई थी।

उसकी परेशान और उलझी हुई सूरत को इस बीच कमल ने कई बार ध्यान से देखा। जीप पर बैठते ही उसने पूछा :

"आज कुछ परेशान लगती हो पूनम !"

"नहीं तो। घर लौटने में देर हो गई है। बाबूजी क्या सोचेंगे ?"

कमल ने यह सुनते ही जीप चला दी।

कमल और अंजना जब सदर हाल में पहुंचे तो संध्या रात के पहले पहर में बदल चुकी थी। अंजना का दिल भय से कांप रहा था। लाला जगन्नाथ आतिशदान के सामने बैठे आग ताप रहे थे और शांति राजीव का एक स्वीटर बुन रही थी। उनकी आहट पाकर दोनों की निगाहें उनकी ओर उठीं। जगन्नाथ बहू को देखकर मुस्करा दिए।

अंजना ने पास आते ही उनके पैरों को छुआ और वह सारी दवाइयां, जो उनके लिए लाई थी, बैग से निकालकर सामने की मेज़ पर रख दीं।

लालाजी ने दुलार से कहा—"तुमने क्यों तकलीफ की बहू? रंगा को नुस्खा दे दिया होता।"

"तकलीफ कैसी बाबूजी! और फिर उसी ओर तो मैं गई थी। सोचा, लेती चलूं।"

"और तुम कहो भाई! बर्थ-डे कैसे रहा?" लाला जगन्नाथ ने कमल की ओर मुंह फेरते हुए पूछा।

"बहुत अच्छा। आप लोग वहां नहीं थे, बस इसी बात का रंज था।"

"लेकिन हमारी प्रतिनिधि हमारी बहू जो थी। बेचारी घर में बैठी-बैठी घुटन महसूस करती रहती है। सोचा, तनिक मन बहल जाएगा।"

"यह तो मानव-प्रवृत्ति है कि वह परिवर्तन चाहता है।" कमल तुरत बोल पड़ा और इस बात की साक्षी के लिए उसने अंजना की ओर देखा। वह यह सुनकर झेंप गई और अन्दर जाने के लिए बढ़ी।

"राजीव सो गया है बहू!" शांति ने कहा।

"दूध पी लिया था?"

"हां, दूध पी लिया और तुम्हें याद भी नहीं किया।"

इतने में घर की नौकरानी रमिया कॉफी की ट्रे थाम अन्दर आई और लाला जगन्नाथ ने कमल को रोककर कहा—"लो, भाग्यशाली हो। कॉफी आ गई।"

आप तो जानते हैं, कॉफी का प्याला मेरी कमज़ोरी है।"

सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए अंजना के कदम रुक गए। उसने रमिया को जाने का इशारा किया और स्वयं कॉफी बनाने लगी।

कमल ने अपने सर्द हाथों को एक-दूसरे से रगड़ा और उन्हें आग के पास ले गया। तभी शांति ने आवाज़ कसी :

"अब तो तू शादी कर ले कमल ! जंगलों में मारा-मारा फिरता है। घर आने पर कम से कम कॉफी तो मिलेगी बीवी के हाथों की।"

शादी की बात सुनते ही उसके तन-वदन में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई। मुंह लाल हो गया। वह अतिशदान का सहारा छोड़ दूसरी ओर हो गया और फिर धीरे से बोला—"नहीं मां ! ऐसा फिर कभी न कहियो ! आप तो जानती ही हैं मेरे ज़ख्मों को।"

"हां, जानती हूं, लेकिन एक न एक दिन तुम्हें इन बंधनों में पड़ना ही होगा। फिर हर लड़की एकसमान नहीं होती। जहां अंधेरा है वहां धूप भी है।"

"तुम बेकार इससे उलझ पड़ीं।" लाला जगन्नाथ ने शांति का मुंह बंद कर दिया और फिर बोले—"सीधी बात कह दो ना, केदार बाबू का खत आया है। उन्होंने एक लड़की देख रखी है।"

"वह तो दिन-रात लड़कियां ही देखते रहते हैं। आप उन्हें लिख दीजिए, मुझे उनकी पसन्द से ब्याह नहीं करना है।"

अंजना इस बहस को समझ न सकी। वह उसके पास आई और कॉफी का प्याला देते हुए बोली—"कॉफी।"

वह अंजना को सामने पाकर झेंप-सा गया और कनखियों से उसकी ओर देखकर उसने प्याला ले लिया।

"नादान न बनो बेटा !" शांति फिर बोली—"उनकी पसन्द नहीं तो अपनी पसन्द की ले आना, लेकिन जब तक तू कोशिश नहीं करेगा, कैसे मिलेगी वह लड़की ?"

"लेकिन कितनी लड़कियां हैं मां, इस संसार में—जो तुम्हारी बहू की तरह, अपना सब कुछ खोकर भी अपने-आपमें सिमट जाने को ही जीवन समझती हैं !" कमल ने कहा और लंबे-लंबे घूंट भरते हुए प्याला खाली कर दिया।

अभी अंजना उसकी बात की तह तक नहीं पहुंची थी कि वह सबको नमस्कार करता बाहर चला गया। लाला जगन्नाथ और शांति चुपचाप उसे देखते ही रह गए।

अंजना ने दूसरा प्याला बाबूजी को देते हुए पूछा—"ये ब्याह-शादी की चर्चा से इतने घबराते क्यों हैं मांजी ?"

"वह भी सच्चा है बहू। उसके साथ ऐसी घटना घट चुकी है कि ऐसे बंधनों से उसका विश्वास उठ गया है। एक तुम्हीं हो जिससे हंसके वह बात कर लेता है, वरना किसी औरत के सामने जाने से

भी घबराता है ।"

"क्यों ?"

"बेचारे का दिल टूट गया उस दिन, जब उसकी बारात दुल्हन के घर से खाली वापस लौट आई ।"

"क्यों ?" अंजना ने चौंकते हुए पूछा ।

"दुल्हन शादी के दिन घर से भाग गई थी । उस अभागिन ने बेचारे की इज़्ज़त और दिल दोनों को छलनी कर दिया ।"

"कब की बात है ?"

"चार महीने पहले की ।"

"बारात कहां गई थी ?"

"गंगापुर ।"

"गंगापुर !" वह सिटपिटा गई ।

"हां बहू ! वहां के एक बड़े वकील के घर रिश्ता हुआ था कमल का—रायज़ादा राजकिशन के घर ।"

अंजना ने जब अपने मामा का नाम सुना तो उसके पांव तले से ज़मीन निकल गई । वह अपने-आपमें ही न रही । वह अपने ही बोझ से जैसे धरती में धंसती जा रही थी ।

कुछ देर की इस अजीब-सी खामोशी के बाद लाला जगन्नाथ ने कहा—"जभी से वह ब्याह-शादी के नाम पर झुंझला जाता है जैसे उसे नारी-जाति से घृणा हो गई हो ।"

लाला जगन्नाथ ने एक आह भरी और कमल के दिल के दर्द को प्रतिबिंबित किया ।

अंजना के सपनों को सहसा अंधे अंधेरे ने डस लिया । उसके दिल की थरथराहट में अब भय भी लहराने लगा । वह वहां से चुपचाप अपने कमरे में चली आई । वह कमल जिसके बारे में सोचकर उसके हृदय में गुदगुदाहट होती थी, अब उसके नाम से ही उसे भय होने लगा ।

कुछ देर बाद, अकारण ही, राम जाने क्यों वह अपने कमरे की खिड़की के पास जाकर गुमसुम खड़ी हो गई । वह अपने सामने फैली हुई उस झील को एकटक निहार रही थी जो आज एक बर्फीले टीले जैसी लग रही थी । उसे ऐसा लगा जैसे वादी की सर्द हवा ने पानी की लहरों को बर्फ के फर्श में बदल दिया है और वह उन्मादी-सी नंगे पांव उसपर दौड़ती जा रही है—एक ऐसी मंज़िल की तलाश में जो अचानक किसी भूचाल के कारण उन बर्फीले ढोकों के नीचे धंस-

कर गुम हो गई है और धीरे-धीरे वह बर्फानी आग उसके तलवे चाट-कर उसे भी निगल जाने वाली है।

९

राकेश अलमारी में दवाइयों की शीशियां सजा रहा था कि उसकी निगाहें सहसा किसी सूरत का प्रतिबिंब देख कंपकंपा गईं। उसने ध्यान से शीशे में फैले धुंधले चित्र को देखा और फिर झट से पलट-कर अंजना की ओर देखा जो अभी-अभी शो-केस के सामने आ खड़ी हुई थी। राकेश ने आज फिर गहरी नज़रों से उसके चेहरे की ओर देखा और पास आते हुए धीमी आवाज़ में बोला—"गुड मॉर्निंग ! मैडम !"

अंजना ने मुस्कराकर उसके अभिवादन का उत्तर दिया और साथ लाए नुस्खे को उसके सामने रख दिया। राकेश को लगा जैसे आज उसके चेहरे पर उस दिन की सी घबराहट नहीं है।

वह जल्दी से नुस्खे के अनुसार दवा निकालकर उसके सामने ले आया और बोला—"चार रुपये पचास पैसे।"

"आप यहां दवाइयों का काम कब से कर रहे हैं ?" अंजना ने बैग में से सौ का नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए पूछा।

"कालेज के फौरन बाद। लगभग साल-भर हो गया।" उसने रुक-रुककर कहा और अपने नौकर को छोटे नोट लाने के लिए भेज दिया।

अंजना ने कहा—"आई एम सॉरी ! आज मेरे पास एक भी छोटा नोट नहीं है।"

"मैं भी सुबह-सुबह बस पहले ग्राहक का मुंह देख रहा हूं।" लेकिन यह कहते हुए वह कुछ झेंप-सा गया।

"उस दिन आपने अपनी किसी कालेज-भेंट का ज़िक्र किया था !" अंजना ने विषय बदलते हुए कहा।

"ओह ! आप अंजना की बात कर रही हैं ! मैं तो सोच रहा था कि आप मेरी उस दिन की बात से शायद बुरा मान गई होंगी। यकीन कीजिए, उसकी सूरत हूबहू आपसे मिलती है।"

"आप तो कह रहे थे कि आपके पास उसकी तस्वीर भी है।"

"जी।" राकेश ने कहा और तुरत अपनी मेज़ की एक दराज खोलकर उस तस्वीर को बाहर निकाल लिया जो कालेज ग्रुप की थी

ग्रौर शायद उस दिन ग्रंजना के जाने के फौरन बाद उसने तलाश करके दराज में रख ली थी।

ग्रंजना ने ज्योंही ग्रपनी कांपती हुई उंगलियों से तस्वीर पकड़ी, राकेश बोल उठा—"ग्राप खुद ही देख लीजिए, कितनी सूरत मिलती है उसकी ग्रापसे। यह दूसरी लाइन में तीसरे नंबर पर।"

"क्या नाम था उसका ?" ग्रंजना ने ग्रनजान बनकर ग्रपनी तस्वीर को ग्रचरज-भरी दृष्टि से देखते हुए पूछा।

"ग्रंजना—लेकिन कालेज में उसे ग्रंजू के नाम से पुकारते थे।"

"विचित्र संयोग है। सचमुच ही यह मेरी दूसरी सूरत है।"

इतने में किसी ग्राहट ने उसे चौंका दिया। उसने पलटकर देखा तो उसे सामने से कमल ग्राता दिखाई दिया।

कमल ने काउंटर की ग्रोर बढ़ते ही राकेश से ब्लेड का एक पैकेट मांगा ग्रौर फिर ग्रंजना की ग्रोर देखकर 'हलो' कहा।

कमल को इस तरह सामने पाते ही ग्रंजना जैसे पत्थर का बुत बन गई ग्रौर उसके हाथ में से वह तस्वीर फिसलकर फर्श पर जा गिरी।

"हलो !" ग्रंजना ने मुर्झाई हुई बल्कि मुर्दा ग्रावाज़ से कहा।

राकेश ने उसके पीले पड़ गए चेहरे की ग्रोर देखा ग्रौर इतनी सावधानी से झुककर तस्वीर उठा ली कि कमल की उसपर नज़र न पड़ सकी।

"दवा लेने ग्राई थी।"

"ग्रंकिल के लिए ?"

"नहीं, राजीव के लिए।"

"क्यों, कुशल तो है ?"

"मामूली खांसी की शिकायत है।"

"ग्रोह ! ऐसी बात थी तो किसी नौकर से मंगवा ली होती।"

"योंही चली ग्राई। सोचा, ज़रा हवाखोरी हो जाएगी।"

राकेश ने ग्रपने नौकर के हाथ से सौ का नोट वापस ले लिया जिसका छुट्टा नहीं मिला था।

उसने वह नोट ग्रंजना को लौटाते हुए कहा—"कोई बात नहीं, फिर कभी दे जाइएगा।"

"कितने का बिल है ?" कमल ने पूछा।

"चार रुपये पचास पैसे।"

कमल ने दस का नोट रख दिया ग्रौर काउंटर पर रखा हुग्रा

ब्लेड का पैकेट उठाकर दोनों का बिल चुका दिया।

अंजना, जो पहले ही घबराहट से गुमसुम खड़ी थी, कुछ न बोली। कमल का इशारा पाते ही वह उसके साथ दुकान से बाहर चली गई।

न जाने क्यों राकेश देर तक वहीं खड़ा-खड़ा उसे शंकित दृष्टि से देखता रहा। फिर उसकी तस्वीर को एक ओर रखकर अंजना के चेहरे को पढ़ने लगा। उसे लगा जैसे इस पूनम और कालेज की अंजना के बीच कोई गहरा रहस्य है।

"चलिए, मैं आपको घर तक छोड़ आऊं।" दुकान से बाहर आकर कमल ने कहा।

"ऐसा भी क्या—मैं चली जाऊंगी।"

"लेकिन आपकी गाड़ी ?"

"आपसे कहा ना, घर में बैठे-बैठे जी उकताया तो सैर करने बाज़ार तक निकल आई।"

"बड़ा अच्छा किया। आखिर घर की घुटन में कोई कब तक बैठ सकता है !"

"जी !" यह सुनते ही वह चौंक गई और फौरन बात बदलते हुए बोली—"आप लगभग एक हफ्ते से हमारे यहां नहीं आए।"

"दौरे पर गया हुआ था, कल शाम ही लौटा हूं।"

"बाबूजी आपका कई दिनों से इंतज़ार कर रहे थे।"

"वह क्यों ?"

"शायद आपके डैडी का खत आया है।" यह कहकर वह सड़क के किनारे की ओर बढ़ी।

"मैं जानता हूं।" वह भी साथ हो लिया।

"कहते थे, कोई ज़रूरी काम लिखा है।"

"उस काम की भनक हमारे खतों में भी है।"

"क्या है ?"

"शादी की चर्चा। उन्होंने एक लड़की देख रखी है। संयोग से आजकल वह नैनीताल में ही आई हुई है अपनी मम्मी के साथ।"

"तब ?"

"डैडी ने लिखा है, उसे जाकर देख लूं।"

"ख्याल तो बुरा नहीं।"

"वह क्यों ?"

"मंज़िल खुद चलकर मुसाफिर तक आ पहुंची है।"

"लेकिन मुझे उस मंज़िल की तलाश नहीं है।"

"क्यों ?"

"सच बात तो यह है कि मुझे शादी-ब्याह से नफरत हो चुकी है।"

"शादी-ब्याह से नहीं, बल्कि औरतजात से।"

"पूनम !" वह थरथरा उठा।

अंजना चलते-चलते रुक गई और उसकी झेंपी हुई निगाहों को देखने लगी जो उससे कुछ कहना चाहती थीं लेकिन साहस नहीं हो रहा था।

"मैं सब कुछ जानती हूं। मांजी ने मुझे सब बता दिया है।" अंजना ने धीरे से कहा।

"एक बात और भी है।"

"वह क्या ?"

"शायद भगवान को वह रिश्ता पसंद नहीं था जभी तो उसने वह बंधन बनने से पहले ही तोड़ दिया।"

"लेकिन दुनिया वाले तो कहते हैं कि यह रिश्ते जन्म-जन्म के होते हैं। यह कभी टूटा नहीं करते।"

"लेकिन यहां तो टूट गए।"

"शायद इसलिए टूट गए कि असली बंधन उस लड़की से होने निश्चित हों जो अब नैनीताल में आपके लिए आई है।"

"नहीं, यह कैसे हो सकता है ?"

"क्यों नहीं हो सकता ! यों भी शादी के बिना ज़िंदगी एक बोझ-सा बनकर रह जाती है।"

कमल ने तुरत ही मुंह मोड़ लिया और एक कंकड़ झील में फेंकते हुए उसने अंजना की ओर देखा। उसकी आंखें भी झील की तरह गहरी थीं।

अंजना की आंखों की गहराई में झांकता हुआ वह बोला—"अगर यह बात सच है तो फिर तुम्हारी ज़िंदगी क्यों एक बोझ बन गई पूनम ? जो शादी-ब्याह के सपने देखकर आकाश में उड़ने की अभिलाषा रखती थी, आज पाताल में धंसकर रह गई है।"

"यह आपसे किसने कहा ?"

"तुम्हारे नसीब ने। क्या यह गलत है कि जिसका बचपन अभी जवानी की गोद में भी नहीं आया था उसे एक विधवा की ज़िंदगी मिली ? जो अब एक नन्हे बच्चे की मां है और उसे जीवन का यह

भार उठाए-उठाए मीलों चलना है ! बरसों तक अपने दुर्भाग्य की छाया तले बसेरा लेना है !"

"नहीं कमल ! तुमने मुझे गलत समझा है। मैं उसे जीवन का भार नहीं समझती । उसी फूल की मुस्कान तो मेरी ज़िंदगी है, मेरा सपना है और उनकी याद मेरा सहारा । कौन कहता है कि मैं एक विधवा हूं ? बेबस हूं ?"

उसकी यह बात सुनकर कमल के मन को एक धक्का-सा लगा और अब जो उसने अपनी नज़रें अंजना से मिलाईं तो उसकी पलकों से आंसू फिसलकर मोतियों की तरह बिखर गए ।

वह अपनी इस बहस के कारण लज्जित हो गया और एक दूसरा कंकड़ झील के पानी में फेंकते हुए बोला—"मुझे बड़ा अफसोस है, मैंने तुम्हें दु:ख पहुंचाया ।"

"दु:ख को सुख में बदलना चाहो तो कोई कठिन नहीं है ।"

"मैं समझा नहीं ।"

"मेरी बात को मानकर ।"

"वह कैसे ?"

"अपने डैडी का कहा मानकर लड़की देख लो । फैसला अपने-आप हो जाएगा ।"

"लेकिन तुम्हें क्या पता, मुझे कैसा जीवन-साथी चाहिए ?"

"दिल की बात कह दो, वैसा ही जोड़ा ढूंढ़ लेंगे ।"

"मैं तो सौंदर्य से अधिक आचरण चाहूंगा । एक ऐसी लड़की जो अपने पति के बिना इस धरती पर और कुछ सोच न सके । उसमें तुम जैसा आदर्श हो, जो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीना जानती हो ।"

"तुम्हें क्या मालूम कि वह तुम्हारी इस विचारधारा से भी अधिक आदर्श नारी हो ? एक नज़र देख तो लो उसे ।"

"एक नज़र में किसीके दिल की दशा कैसे जानी जा सकती है ?"

"वाह ! परखने वाले किसीकी एक ही झलक से उसके दिल की गहराइयों को भांप लेते हैं । दर्पण देखते हो पता चल जाता है, मैल कहां जमी हुई है ।"

"तो एक काम करो, पूनम !"

"कहो ।"

"उसे परखने के लिए तुम मेरे साथ चलना ।"

"मैं···मैं···?" वह घबरा गई—"मैं वहां क्या करूंगी ?"

"अपनी परखने वाली नज़रों से उस लड़की को जांचने। अगर तुम्हें वह पसंद आ गई तो मैं इंकार नहीं करूंगा।"

"मेरी पसंद गलत भी तो हो सकती है।"

"नहीं पूनम ! तुम जैसी आदर्श नारी मेरे लिए कभी गलत लड़की नहीं चुन सकती। और तुम उससे बातचीत में वह सब कुछ पूछ लोगी जो मैं न पूछ सकूंगा उससे।"

अंजना के लिए कमल ने एक नई पहेली खड़ी कर दी। उसे एक नये चक्कर में डाल दिया। वह कोशिश करने पर भी उसकी बात से इंकार नहीं कर सकी।

कमल चला गया लेकिन अंजना अपनी जगह से न हिल सकी। वह वहीं बैठी रही और झील की उन शांत गहराइयों को देखती रही जो उसके दिल की तरह गहरी थीं।

बार-बार उसके कानों में कमल के ये शब्द गूंज रहे थे—'मैं तो सौंदर्य से अधिक आचरण चाहूंगा। एक ऐसी लड़की जो अपने पति के बिना इस धरती पर और कुछ सोच न सके। उसमें तुम जैसा आदर्श हो, जो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीना जानती हो।'

कमल उसे पसंद करता था। उसने कभी-कभी उसकी पुतलियों में अपनी तस्वीर नाचती देखी थी और अपने दिल में उसके प्रति खिचाव-लगाव का आभास भी किया था। कई बार उसका मन चाहा कि साहस करके उससे सब कुछ कह दे कि जिस दुल्हन के आंचल से उसका दामन बांधा जाने वाला था, वह वही अभागिन है जिसकी अब अग्नि-परीक्षा हो रही है, लेकिन वह ऐसा कहने का साहस न बटोर सकी ताकि वह तस्वीर जो आज एक देवी की तरह उसकी आंखों में समाई हुई थी, कहीं गिरकर धरती की धूल में न दब जाए।

यह सोचते ही उसकी आंखों में आंसू आ गए। दिल के दर्द ने करवट ली और वह तड़पकर रह गई। वह यथार्थ से मुंह मोड़ना चाहती थी। वह आज को भूलकर कल के सपनों में खो जाना चाहती थी, लेकिन उसका अतीत हर कदम पर सामने आकर उसके आंचल से लिपट जाता था। वह जितना अपने-आपको छिपाना चाहती थी, समय की गति उतना ही उसे खोलती जाती थी।

उसने मुड़कर देखा। कमल निगाहों से ओझल हो चुका था, ठीक उसी तरह जैसे कभी वह उसकी ज़िंदगी से ओझल हो चुकी थी। वह यही कुछ सोचती-विचारती धीरे-धीरे कदम बढ़ाती अपने घर की ओर चली गई।

दूर सुनसान झील में एक किश्ती चली जा रही थी, उसीकी तरह अकेली, डगमगाती !

१०

पालीटन होटल के बाहरी चबूतरे पर अंजना और कमल एक कोने में बैठे बड़ी बेचैनी से उस लड़की की प्रतीक्षा कर रहे थे जो ठीक पांच बजे वहां आने वाली थी।

दोनों चुपचाप बैठे कॉफी पी रहे थे और कभी-कभी एक-दूसरे की ओर कनखियों से देख लेते थे। होटल के बड़े हाल में से पाश्चात्य संगीत की धुन लगातार उनके कानों में गूंज रही थी।

"वे लोग अभी तक नहीं आए !" कमल ने उकताकर कहा।

"इतने अधीर क्यों हो ! दस-पांच मिनट की देर हो ही जाती है लड़कियों को बनते-संवरते !" अंजना ने दबी मुस्कराहट से कहा।

कमल उसकी बात सुनकर झेंप गया और फिर से कॉफी की चुस्कियां लेने लगा।

कुछ देर बाद अंजना बोली—"एक बात कहूं ?"

"हूं !"

"आज फैसला हो ही जाना चाहिए।"

"वह क्यों ?"

"कम से कम मुझे कोई साथी तो मिल जाएगा दिल की बात कहने के लिए।"

"यानी तुम मुझे इसीलिए मुसीबत में फंसाना चाहती हो ताकि तुम्हें कोई साथी मिल जाए ?"

"मुझे ही नहीं, हम दोनों को।"

"पहले लड़की तो पसन्द कर लो।"

"मेरा दिल गवाही दे रहा है वह जरूर अच्छी होगी।"

"और अगर वह आई ही न, तो ?"

"तो--! तो—! लेकिन ऐसा सम्भव नहीं।" वह घबराकर बोली।

उसकी इस घबराहट पर कमल खिलखिलाकर हंस पड़ा। कॉफी का प्याला थरथराकर उसके होंठों से अलग हो गया और वह उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—"ऐसा लगता है पूनम ! मुझसे कहीं ज़्यादा जल्दी तुम्हें है मेरे ब्याह की।"

"हां, जल्दी तो है ही और हो भी क्यों ना—! बाबूजी ने सारी ज़िम्मेदारी मुझपर जो डाल दी है।"

"कैसी ज़िम्मेदारी ?"

"तुम्हें ब्याह के लिए राज़ी करने की।"

"हूं ! तो यह सब कुछ तुम्हें विवश होकर करना पड़ रहा है ?"

"नहीं-नहीं !" वह घबराकर बोली और जल्दी-जल्दी कॉफी पीने लगी।

कमल ने देखा उसके माथे पर पसीने की बूंदें उभर आई हैं। क्षण-भर वह उसे निहारता रहा, फिर बोला—"एक बात जानती हो पूनम ?"

"क्या ?"

"आज तुमने फिर मेरे दिल में औरत की चाह पैदा कर दी है और मैं पुरानी बातें भूलकर सचमुच जीवन-साथी के बिना अपने-आपको अकेला पा रहा हूं।"

"सच !"

"हूं। सच ! मैं तुमसे नहीं छिपाऊंगा।"

और फिर उनकी नज़रें एक-दूसरे से टकराकर एकसाथ ही उधर उठ गईं जिधर वह लड़की और उसकी मां आ खड़ी हुई थीं। दोनों चौंककर अपनी-अपनी जगह संभलकर खड़े हो गए और मुस्कराकर उनका स्वागत करने लगे।

"मैं मिसेज़ खन्ना हूं।" उस अधेड़ उम्र की औरत ने अपने होंठों को तनिक सिकोड़ते हुए उनसे कहा।

कमल और अंजना ने हाथ जोड़कर उनको नमस्ते की और बैठने का इशारा किया।

मिसेज़ खन्ना जिसने अपने अधेड़पन को मेकअप और चमकीले कपड़ों में छिपाने का सफल प्रयत्न किया था, कुर्सी पर बैठने के लिए बढ़ी। वह अपनी तेज़-तेज सांसों पर काबू पाते ही कमल की ओर गहरी नज़रों से देखती हुई बोली—"यह है मेरी बेटी, कमलेश ! हम इसे प्यार से कम्मो कहते हैं।"

"मम्मी !" कमलेश ने नज़ाकत से अपने बदन को एक झटका देते हुए कुछ ऐसे ढंग से कहा कि उसकी बोटी-बोटी फड़क उठी और उसने बड़े अनोखे ढंग से कमल की ओर देखकर अपने अधरों पर ऐसी मधुर मुस्कान पैदा की जैसे वह पहली नज़र में ही उसपर मर मिटी हो।

कमल नयनों के इस बाण को सह न सका और कुर्सी से पीठ टिकाकर आराम से बैठ गया।

अंजना सतर्कता से दोनों की निगाहों को पढ़ रही थी।

कमलेश ने अपने दुपट्टे को सीने पर सरकाते हुए विचित्र भोलेपन से कहा—"मम्मी का भी जवाब नहीं ! अब मैं कोई बच्ची थोड़े ही हूं जो मेरा नाम बिगाड़कर आप बुलाएं !"

"जी हां, आप ठीक कहती हैं।" बिना कुछ सोचे-समझे कमल ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"ये हैं कमल, कमल सिन्हा।" अंजना ने उसका परिचय दिया।

"ओ ! वेरी ग्लैड टू मीट यू।" कमलेश ने कुर्सी पर बैठते-बैठते कबूतरी की तरह फुदककर कहा, और अपने खुले होंठों को ज़बरदस्ती बन्द करते हुए लजा-सी गई।

उसकी इस अदा में कुछ ऐसा उन्माद था कि कमल ने मुश्किल से अपनी हंसी रोकी।

अंजना ने बातों को कुछ सार्थक बनाने के लिए मिसेज़ खन्ना से पूछा—"आप नैनीताल पहली बार आई हैं शायद !"

"नहीं जी, मैं तो हर बरस आती हूं, लेकिन कम्मो पहली बार आई है।"

"पहली बार नहीं मम्मी ! दूसरी बार ! याद नहीं, दस बरस पहले भी यहां आई थी !" कमलेश इठलाती हुई बोल पड़ी।

"होश संभालने के बाद तो पहली ही बार आई है ना ?" मिसेज़ खन्ना ने सामने लगे आईने में प्रतिबिंबित अपना व्यक्तित्व निहारते हुए कहा।

"लेकिन यह आपको कैसे विश्वास हुआ कि आपकी बेटी ने अब पूरी तरह होश संभाल लिया है ?" कमल ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए पूछा।

"जी !" कमल की बात सुनकर पहले तो मिसेज़ खन्ना क्षण-भर के लिए चकित हुईं और फिर वे अकस्मात् हंसने लगीं।

कमल भी हंस पड़ा। उनकी मिली-जुली हंसी देखकर कमलेश फिर लजा गई और दांतों में उंगली दबाते हुए बोली—"आप इतने मनोरंजक होंगे मुझे मालूम न था।"

"मैं तो इस बात का समर्थक हूं कि ज़िंदगी मनोरंजन ही का दूसरा नाम है।"

कमल की बात सुनकर कमलेश खिल उठी, लेकिन अंजना ने बीच

में कूदकर मजा किरकिरा कर दिया। वह बोली—"अरे भई ! यह अवसर मनोरंजन का नहीं है, लेकिन इन्हें तो एक बहाना चाहिए था कमलेश से बात करने का।"

अंजना की यह बात सुनकर कमल झेंप गया और उसने सामने खड़े बैरे को आवाज़ दी। बैरा तुरत आ गया। कमल ने मीनू कार्ड लेकर अंजना के सामने रख दिया और वह बारी-बारी हरेक की पसंद पूछने लगी। वे सब एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

अन्त में कमल ने असमंजस में पड़े लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए कमलेश की ओर इशारा करके कहा—"कहिए तो मैं आपकी पसंद का आर्डर दे दूं ?"

"शौक़ से।"

"एक स्पेशल ट्यूटी फ्रूटी।"

"ओह ! आपने कैसे जाना कि कम्मो की यही पसंद है ?"

"मम्मी ! प्लीज़ !"

"ओ ! आइ एम सॉरी। मेरा मतलब कमलेश से था।"

"बच्चे अक्सर ऐसी ही चीज़ें पसंद करते हैं।" कमल ने दबी आवाज़ में कहा।

कमलेश उसकी ओर कनखियों से देखने लगी।

उसे देखकर कमल के चेहरे पर एक रंग आता और एक जाता था। वह विचित्र असमंजस में फंस गया। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह एक नज़र उस लड़की पर और दूसरी अंजना पर डालता।

अंजना उसकी मनोदशा भली भांति समझ रही थी।

वह लड़की अल्हड़ थी और मां अत्यन्त फैशनपरस्त। कमल को दोनों पसंद नहीं आईं। फिर भी वह उनकी आवभगत में लगा हुआ था।

अंजना और कमल जब अधिक देर तक मौन रहे तो मिसेज़ खन्ना बोलीं—"अभी तो बचपना है मेरी बेटी में। फिर भी मैं सोचती हूं, कोई अच्छा लड़का हो तो उसे सौंप दूं।"

"अपने कमल बाबू को भी बचपना बेहद पसंद है।" अंजना ने वार्ता में गरमी पैदा करते हुए कहा।

उसकी इस बात से कमल को एक ठेस पहुंची। उसने तिरछी नज़रों से अंजना के होंठों में दबी मुस्कान देखी और मिसेज़ खन्ना से संबोधित हुआ—"आप ठीक कहती हैं। हमारी पसंद तो इनकी

पसंद है।" यह कहते हुए उसने अंजना की ओर इशारा किया।

"तब तो मैं समझूं कि मेरी कमलेश इनको पसंद आ गई!" कमलेश की मम्मी ने चहककर अंजना का हाथ थाम लिया।

"जी, वह तो है ही, लेकिन घर में मां-बाप से राय भी तो करनी है।" अंजना तनिक घबरा गई और उसने धीरे से अपनी उंगलियों को मिसेज़ खन्ना के हाथ से छुड़ा लिया।

मिसेज़ खन्ना और कमलेश के चेहरे का रंग ज़रा देर के लिए फीका पड़ गया।

बैरे ने आकर चाय की ट्रे और आइस क्रीम रख दी। कमल ने अपने सामने से ट्यूटी फ्रूटी का गिलास सरकाकर कमलेश के सामने कर दिया।

अंजना चाय बनाने लगी। कमलेश बार-बार तिरछी नज़रों से कमल की ओर देख रही थी। मिसेज़ खन्ना ने चिकोटी काटी और वह अपनी मां का इशारा समझकर चाय बनाने के लिए बढ़ी। शक्करदानी उठाकर कनखियों से कमल की ओर देखते हुए पूछा—"शक्कर?"

"आधा चिम्मच।"

"और आप?"

"एक।" अंजना ने उत्तर दिया।

"आधा—एक—और मम्मी! दो!" कमलेश ने गिन-गिनकर प्याले में चीनी डाली और फिर प्यालों में चाय उंडेलने लगी।

मिसेज़ खन्ना ने बेटी की सराहना करते हुए कहा—"घर में तो यह बड़ी लाड़ली है। एक गिलास पानी भी पीना हो तो नौकरों को आवाज़ें देने लगती है।"

"क्यों न दे! भगवान ने कृपा जो कर रखी है।" यह कहते हुए कमल ने कमलेश की ओर देखा जिसके हाथ चाय बनाते हुए कांप रहे थे।

अंजना बोल उठी—"मैके में लड़कियां लाड़ली होती हैं। ससुराल में कदम रखते ही सारा लाड़-प्यार मां-बाप के घर रह जाता है।"

"आप ठीक कहती हैं बहन! लेकिन आपने अभी तक अपना परिचय नहीं दिया।"

"मैं···मैं···" वह हकला गई।

"पूनम।" कमल तुरत बोल उठा—"यूं तो रिश्ता कुछ नहीं,

लेकिन फिर भी मेरे बहुत करीब हैं।"

"आप साफ-साफ कहिए ना।" अंजना ने टोक दिया और अपना परिचय स्वयं दिया। यह भी बता दिया कि वह लाला जगन्नाथ की बहू है।

जब मिसेज़ खन्ना ने लाला जगन्नाथ के बेटे की चर्चा छेड़ी तो अंजना का दमकता हुआ चेहरा मुरझा गया। पलकें भीग गईं।

तभी किसीकी निगाहों को अपनी ओर घूरते देखकर अंजना व्याकुल हो उठी। सामने की सीढ़ियों से उतरती हुई एक सुरबाला-सी सुन्दरी की ओर देखते ही वह बेसुध हो गई।

वह सुन्दरी उसे घूर-घूरकर देख रही थी जैसे वह उसे पहले से जानती हो। अंजना उसकी नज़रों की ताब न ला सकी और अपनी घबराहट छिपाने के लिए उसने चाय का प्याला हाथ में उठा लिया, लेकिन इस घबराहट के मारे उसके हाथ कांप गए और चाय का प्याला छलक गया। छींटे उसकी साड़ी पर आ गिरे।

उसने उस घूरने वाली सुंदरी की ओर भयभीत दृष्टि से देखा जो अब हाल की ओर जा रही थी।

"कोई बात नहीं। बातों में ध्यान कहीं और चला गया होगा।" मिसेज़ खन्ना ने अपने रूमाल से उसकी साड़ी का आंचल साफ करते हुए कहा।

"शायद आपका ध्यान उस लड़की के भड़कीले लिबास की ओर खिंच गया था।" कमलेश ने उसकी नज़रों की व्याकुलता से अनुमान लगाया और बताया कि वह लड़की इस होटल की कैबरे डांसर है।

"आई एम सॉरी।" अंजना ने अपनी घबराहट छिपाते हुए कहा और अपनी कुर्सी से उठकर अपना आंचल साफ करने बाथरूम की ओर चली गई।

उसके वहां से जाते ही कमल ने जल्दी-जल्दी चाय पीना शुरू किया। फिर बोला—"यह सौभाग्य का संकेत है।"

"क्या?" मिसेज़ खन्ना चौंक उठीं।

"साड़ी पर चाय का गिर जाना।"

एक क्षण के लिए दोनों मां-बेटी कमल के इस वाक्य पर सोचती-विचारती रहीं और फिर एकसाथ ज़ोर से हंस पड़ीं। कमल ने भी उनका साथ दिया।

हाल पार करके अंजना जब बाथरूम पहुंच रही थी तो उसकी निगाहें एक क्षण के लिए फिर जम गईं। होटल की वह डांसर हाल

के एक कोने में कुछ लोगों के साथ बैठी हुई थी। अंजना को देखते ही वह फिर उसे घूरने लगी। अंजना गर्दन नीची किए तेज़ी से बाथ-रूम में चली गई।

उसकी घबराहट पहले से कहीं अधिक बढ़ गई थी। उसकी समझ में इसका कारण नहीं आ रहा था कि वह नर्तकी उसे क्यों इस तरह घूर रही है। वह अपने-आपको दुनिया की निगाहों से छिपाकर रखना चाहती थी, लेकिन न जाने कैसे कोई न कोई उसकी ज़िंदगी के दोराहे पर उसे पहचानने का प्रयास करने लग जाता था। उसके मन में अभी तक उस नर्तकी जैसी कोई सूरत नहीं आ रही थी जो उसने कभी देखी हो। उसने अपनी चेतना के पर्दों को उलट-पलटकर बारी-बारी अपने कालेज की सारी लड़कियों के चेहरों को याद करने की कोशिश की लेकिन कोई मुखड़ा ऐसा नहीं मिला जो उस नर्तकी से मिलता-जुलता हो।

वह नल का सहारा लिए अपना आंचल साफ कर रही थी कि सहसा दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई और उसके साथ ही उसका दिल उछलकर उसके हलक में आ अटका। सामने की दीवार में लगे आईने में उस नर्तकी का प्रतिबिंब देखकर वह रोमांचित हो उठी।

नर्तकी उसके पास आकर खड़ी हो गई और अपने बैग में से लिपस्टिक निकालकर अपने होंठों पर चढ़ाने लगी। उसे मेकअप करते देख अंजना ने अपनी नज़रें झुका लीं और साड़ी का आंचल जल्दी-जल्दी साफ करने लगी। नर्तकी ने इठलाते हुए उसकी ओर देखा और एक गहरा सांस लेते हुए बोली :

"आंचल पर पड़े धब्बे तो इस पानी से धुल जाएंगे, लेकिन जीवन के आंचल पर पड़े धब्बे इतनी आसानी से नहीं धुल सकते।"

यह वाक्य सुनते ही अंजना के हृदय में एक हूक उठी और वह टुकुर-टुकुर उसकी ओर देखने लगी। इठलाती मुस्कान अभी तक नर्तकी के सुर्ख अधरों पर नृत्य कर रही थी।

उसने अंजना के अचरज का अनुमान लगाते हुए पूछा—"क्यों, क्या ख्याल है अंजू ?"

"मैं समझी नहीं, तुम क्या कहना चाहती हो !" अंजना ने गीले आंचल को निचोड़कर अपनी बांह पर फैला लिया और प्रश्न-सूचक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी।

"शायद तुमने मुझे पहचाना नहीं ?"

"कौन हो तुम ?"

"शबनम, तुम्हारे बनवारी की शिब्बू ।"

बनवारी का नाम सुनते ही उसे लगा जैसे किसीने उसके कान में गरम शीशा उंडेल दिया हो। जैसे चोटी से पांव तक शीत लहर दौड़ गई हो। वह पथराई नज़रों से उसकी ओर देखने लगी जो अभी तक एक छोटी एक बड़ी आंख किए उसे निहार रही थी।

"यहां क्या कर रही हो अंजू ? ये तुम्हारे साथ दूसरे लोग कौन हैं ?"

"तुम्हें धोखा हुआ है। मैं अंजू नहीं, पूनम हूं।" वह कठोर स्वर में उसकी बात का उत्तर देते हुए बाहर चली गई, लेकिन उसके चेहरे के पीलेपन ने शबनम से साफ-साफ कह दिया कि वह अंजू ही है।

शबनम ने अपना प्रतिबिंब आईने में देखा और उसके अधरों पर व्यंग्यात्मक मुस्कान उभर आई।

अंजना जब कमल के साथ उसकी जीप में बैठी अपने घर जा रही थी तो जैसे उसे चुप्पी लग गई थी। आधा रास्ता निकल जाने पर भी जब वह कुछ नहीं बोली तो कमल ने अपने मतलब की बात छेड़ दी :

"कहो, लड़की कैसी है ?"

"अंजना की तंद्रा टूटी और बिना कुछ सोचे-समझे उसने कह दिया—"बुरी नहीं है।"

"तुम्हें पसन्द हो तो हां कह दूं।" कमल ने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा। इतने में धुआंधार कुहरे ने जीप को अपनी लपेट में ले लिया।

जब जीप उस धुंधलके से बाहर निकली तो अंजना ने कहा—"मेरी पसन्द से क्या होगा ! लड़की तुमने देख ली है, फैसला कर डालो।"

"मैं तो अपने जीवन की बागडोर अब तुम्हारे हाथों में सौंप चुका हूं।"

"लेकिन तुम्हारा दिल क्या कहता है ?"

"जो तुम्हारा दिल कहता है।"

"वह कोई गलत फैसला भी दे सकता है !"

"मुझे मंजूर होगा।'

"सोच लो, यह तुम्हारी ज़िंदगी का सवाल है।"

'सोच लिया।"

"तो शायद मैं तुम्हारे सपनों को तोड़ने जा रही हूं।"

"कैसे ?"

"मुझे लड़की पसंद नहीं।"

अंजना के इस उत्तर पर कमल की हंसी छूट गई। जीप गाड़ी फिर से गहरे धुंध में घिर गई थी। इस कारण दोनों एक-दूसरे को बड़ी मुश्किल से देख पा रहे थे। उसे गाड़ी चलाना वैसे भी दूभर हो रहा था। हंसते-हंसते उसने गाड़ी की चाल तेज़ कर दी और अपनी हंसी को रोकते हुए बोला—"मुझे यकीन था, तुम्हारी पसंद कभी गलत नहीं हो सकती।"

"वह कैसे ?"

"कमलेश जैसी जाहिल को न चुनकर ! जानती हो, तुम्हारे बाथरूम में चले जाने के बाद उसने क्या किया ?"

"ऊं हूं।"

"सामने की मेज़ से दो लड़के पकड़ लाई और उन्हें अपना ब्वाय फ्रेंड बताकर मुझसे उनका परिचय कराया।"

"तो इससे क्या हुआ ? आजकल की माडर्न लड़कियां तो इस पर गर्व करती हैं।"

"मेरा यह दृष्टिकोण नहीं है। पहली तो—शुक्र करो—लग्न-मंडप में आने से पहले ही भाग गई और अगर कहीं यह ब्याह के बाद किसी ब्वाय-फ्रेंड के साथ चली जाती, तो मैं कहीं का न रहता।"

कमल की बात सुनकर अंजना के हृदय में एक ठेस लगी। अभी तक वह नर्तकी शबनम उसकी आंखों में घूम रही थी और उसके मन को व्याकुल किए हुए थी, इसलिए अधिक बात करने की रुचि नहीं हुई और वह पहले की तरह मौन हो गई।

कमल ने जीप गाड़ी जब लेक विव के सामने रोकी तो घर का बड़ा फाटक बन्द था। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी होने लगी थी।

अंजना ने जीप से उतरते हुए कहा—"आइए ना।"

"नहीं, बहुत देर हो चुकी है और मुझे सुबह ही अल्मोड़ा जाना है सरकारी काम से।"

अंजना जीप से उतरी ही थी कि बारिश पहले से तेज हो गई।

"देखिए, बारिश तेज़ हो गई।"

"घबराओ नहीं, चलती-फिरती बदलियां हैं, अभी बरसकर भाग जाएंगी।"

बारिश से बचने के विचार से वह फिर सीट पर जा बैठी।

कमल ने गहरी नज़रों से उसके चेहरे को देखा और मुंह में सिगरेट दबाते हुए बोला—"एक बात पूछूं ?"

"पूछो।"

"जब से तुमने होटल में उस डांसर को देखा है, तुम कुछ उदास-सी हो गई हो। क्यों ?"

"नहीं तो।" वह अपनी घबराहट को छिपाने की कोशिश करती हुई बोली।

कमल ने एक क्षण के लिए उसकी उदास नज़रों को फिर देखा और लाइटर से सिगरेट सुलगाते हुए बोला—"मैं तुम्हारी इन उदासियों को खूब समझता हूं।"

"जी !" वह चौंक गई।

"कुछ पुरानी स्मृतियां ! कुछ हर्ष में बीते हुए क्षण ! होटल का वातावरण देखकर तुम्हें वह दिन ज़रूर याद आ गए होंगे जब शेखर तुम्हारे साथ था।"

"यही स्मृतियां और अतीत के संचित हर्ष ही तो हैं जिनके सहारे आदमी जी लेता है। ज़िंदगी के गम गलत कर लेता है।"

"हां पूनम ! कभी-कभी मैं सोचता हूं, तुम्हारे व्यथित हृदय की उदासी दूर कर दूं। तुम्हारी उन अंतर्दाही स्मृतियों को सदा के के लिए मिटा दूं।"

यह सुनते ही उसे कंपकंपी आ गई और नज़रें फेरकर वर्षा की बूंदों की लड़ियों को देखने लगी जो अंधेरे में चांदी की तरह चमक रही थीं।

कमल ने सिगरेट का धुआं फैलाते हुए धीरे-धीरे रुक-रुककर कहा :

"क्या ऐसा संभव है पूनम ! पूनम, क्या कभी ऐसा हो सकता है कि......"

"क्या ?" अंजना के होंठ थरथराए।

"तुम अपनी उदासियों को मेरी झोली में उंडेल दो।"

"फिर क्या होगा ?"

"मैं तुम्हारे आंचल में उल्लास के सितारे जड़ दूंगा।"

अंजना एकदम चुप हो गई और उसने शोकातुर आंखों से कमल की ओर देखा जिसने अपना सब कुछ उसके सामने खोलकर रख दिया था। वह मौन ही रही और सोचती रही कि कहीं उसकी 'हां'

या 'ना' से उसकी अराधना न टूट जाए और फिर वह जीप गाड़ी के वातावरण से उकताकर बोली—"नहीं, ऐसा सोचना भी पाप है।"

इतना कहते ही वह जीप से झट उतर आई। कमल ने अचरज से उसकी ओर देखा, लेकिन अंजना ने मुंह मोड़ लिया। वर्षा की परवाह किए बिना वह फाटक की ओर बढ़ती चली गई। कमल ने उसे रोकने के लिए एक बार पुकारा भी, लेकिन वह रुकी नहीं।

अंजना तेज़ी से चलती हुई अपनी कोठी के पार्लर में आ रुकी। वह बरसात के छींटों से भीग चुकी थी। चोर-निगाहों से उसने गेट की ओर देखा। जीप अभी तक खड़ी थी। कमल उसी तरह बठा सिगरेट के हल्के-हल्के कश ले रहा था।

सहसा उसने गाड़ी स्टार्ट की और अंजना ने संतोष की एक गहरी सांस ली। अपने भीगे हुए कपड़ों को समेटते हुए वह अन्दर चली गई और दबे पांव सीढ़ियां चढ़कर अपने कमरे में पहुंची।

राजीव सो चुका था। रमिया उसके पलंग का सहारा लिए फर्श पर बैठी ऊंघ रही थी। अंजना ने एक निगाह बच्चे को देखा और रमिया को धीमी आवाज़ से पुकारा।

आवाज़ सुनते ही वह हड़बड़ाकर उठ बैठी और अपनी मालकिन को अचानक सामने देखकर बौखला गई।

"योंही ज़रा आंख लग गई थी, बहू रानी!"

"कोई बात नहीं। राजीव रोया तो नहीं था?"

"बस ज़रा-सा, और फिर दूध पीते ही सो गया।"

रमिया की बात से सन्तुष्ट होकर अंजना अलमारी के पल्ले की ओट होकर कपड़े बदलने लगी। उसने ज्योंही गीली साड़ी उतारकर एक ओर रखी, रमिया ने बढ़कर उसे उठा लिया और बोली—"बाहर बरखा हो रही है क्या?"

"हां, लगता है तू घोड़े बेचकर सो रही थी।"

रमिया ने कोई जवाब नहीं दिया और गीली साड़ी फैलाने लगी।

अंजना ने जल्दी से साड़ी बदली और बाबूजी के बारे में पूछा।

रमिया बोली—"वे शायद अपने कमरे में होंगे।" और बाहर जाते हुए ज़रा रुककर पूछा—"आपके लिए खाना लगाऊं बहू रानी!"

"नहीं, मुझे भूख नहीं है।"

रमिया चली गई और अंजना फिर अपने ख्यालों में खो गई

जिनसे वह दूर भागना चाहती थी। उसके कानों में अभी तक कमल के वे शब्द सनसना रहे थे और उसे आभास हो रहा था कि पिछले कई दिनों से वह स्वतः उसकी ओर खिचती जा रही थी। घंटों चुपचाप बैठी मन ही मन वह कमल की बातों को दुहराया करती थी। उसकी परछाइयों से अपना दिल बहलाया करती थी और फिर दिल के किसी कोने में अनजाने चुभन की पीड़ा से व्याकुल हो उठती।

उसकी विवशता और उसका पाप उभरकर उसकी आशाओं के सितारों को अपनी स्याहियों में छिपा लेते थे। मगर आज कमल ने अपने दिल की बात कहकर उसके तन-बदन में छिपी ज्वाला को और भड़का दिया था। उसकी आशाओं और सपनों की पूर्ति के लिए एक रास्ता निर्धारित कर दिया था, उन्हें साकार रूप देने के लिए एक झलक दिखा दी थी और उसे लग रहा था जैसे बरसात के ये छींटे उसकी आशाओं को सींच रहे हैं।

राम जाने क्या सोचकर उसने अलमारी में से पैड और कलम निकाला और अपने मन की वेदना को पैड के एक कागज़ पर अंकित करती चली गई। शायद वह अपने दिल की आवाज़ उस लेख में छिपाकर कमल तक पहुंचाना चाहती थी।

अकस्मात् उसका हाथ रुक गया। कलम की स्याही कागज़ पर फैल गई और हवा से लहराते हुए खिड़की के पर्दे में एक छाया छिपी नज़र आई। पूनम के अन्तिम सांसों में गुंथी हुई आवाज़ उस तक पहुंचने लगी और उसके साथ ही एक वचन जो उसने मरने से पहले अपनी सहेली को दिया था, एक प्रण जिसे जीवन-भर निभाने की सौगन्ध खाई थी, उसे याद आने लगा और फिर अपने-आप ही उसकी नज़रें राजीव के कोमल चेहरे की ओर उठ गई। उसने कागज़ पर लिखी बातों की ओर एक बार देखा, शायद कुछ पढ़ भी लिया और फिर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। जब वह उन टुकड़ों को खिड़की से बाहर फेंकने लगी तो राम जाने क्या सोचकर ठिठक गई और लौटकर उन्हें आतिशदान में दबी चिनगारियों के हवाले कर दिया।

११

अंजना ने जब शिव मन्दिर में कदम रखा तो उसका रोम-रोम किसी अनजाने भय से सिहर उठा। वह उस मन्दिर में दिल के पाप को छिपाए चली गई। वह शेखर की विधवा न होते हुए भी उसके

मां-बाप के साथ उसकी स्मृति के पुष्पों को चुनने आई थी।

आज लाला जगन्नाथ के बुजुर्गों का दिन था। वे श्राद्ध के दिनों में सदा इसी मन्दिर में आते थे और ब्राह्मणों को खाना खिलाते थे, गरीबों को दान देते और दिन-भर भगवान के चरणों में बैठकर पूजा-पाठ में दिन बिता देते।

आज भी इसी विचार से पत्नी और बहू को लेकर वे शिव मन्दिर में आए थे। परिवार के बुजुर्गों की याद के साथ-साथ अपने जवान बेटे की मौत की याद में भी श्रद्धांजलि भेंट करने आए थे।

अंजना एक मासूम बच्चे की भांति पुरोहितों के कहने पर वह सब कुछ किए जा रही थी जो शेखर की विधवा को करना चाहिए था। दिन-प्रतिदिन का जीवन उसके लिए एक परीक्षा बनता जा रहा था और वह इस परीक्षा में सफल होने के लिए भरसक प्रयत्न कर रही थी। लेकिन आज जब उसने अपने भय और पाप को आंचल में समेटे शिव मन्दिर में प्रवेश किया तो उसके अंग-अंग में सिहरन दौड़ गई। उसने कांपते हाथों से फूलों की कलियां मूर्ति के चरणों में चढ़ा दीं।

दूर एक कोने में कोई संन्यासी ऊंची आवाज़ में किसीको समझा रहा था :

"सत्य और प्रेम किसी सच्चे हृदय में ही निवास करते हैं। जिसके मन में कुछ हो और संसार के सामने वह कुछ और जताए, वह मनुष्य सच्चे प्यार का अधिकारी नहीं होता। छल और कपट के संसार में रहने वाला न तो आप सुखी रहता है और न किसीको सुख दे सकता है।"

अंजना ने अपने कान उस प्रवचन की ओर से हटा लिए और तेज़ी से मन्दिर के दूसरे कोने में चली गई। वहां संगमरमर की जालीदार दीवार में भास्कर देवता झांक रहे थे। प्रकाश का जाल-सा बिछ रहा था। अंजना ने जब इस जाल में कदम रखा तो उसे लगा जैसे वह उजाला उसके दिल के अंधेरे कोनों को प्रकाशित करके सबके सामने उजागर कर देगा। वह उस उजाले को सह न सकी और फिर मंदिर के अंधेरे भाग में आ गई। सामने शिवजी की अनोखी मुद्रा की प्रतिमा थी। अंजना अपने चिंतित मन की व्याकुलता को दबाने का प्रयास कर रही थी, लेकिन जब वह किसी तरह उसे दबाने में असमर्थ रही तो शिवजी की मूर्ति के आगे माथा टेककर गिड़गिडाने लगी।

शांतिदेवी ने जब बहू की सिसकियां सुनीं तो झुककर प्यार से

उसका हाथ चूम लिया और धीरज बंधाते हुए बोली—"न रो बहू! नसीब का लिखा आंसुओं से थोड़े ही मिट सकता है!"

अंजना ने अपने आंसुओं को रोकने की कोशिश करते हुए मां की गीली आंखों की ओर देखा और उठकर मां के सीने से लिपट गई।

"मां! यह भगवान उन लोगों को क्यों दंड देता है जो किसीका मन नहीं दुखाते?"

"यह तो अपने कर्मों का फल है बेटी! मनुष्य ऐसी ही दाहक परीक्षाओं से तपकर कुंदन बनता है।"

किसीने मंदिर का घड़ियाल बजाकर उनके विक्षिप्त मन की वेदना की तन्मयता को भंग कर दिया।

सास-बहू ने एक-दूसरे को औरत के नाते से देखा और उस ओर चल पड़ीं जहां लगभग पचास ब्राह्मणों के लिए खाना परोसा जा रहा था।

लाला जगन्नाथ बड़ी सतर्कता से अपने पुरखों का बोझ उतार रहे थे। बहू को देखते ही बोले—"पूजा हो चुकी बहू?"

"जी बाबूजी!"

"तो एक काम करो बेटी। तुम घर चली जाओ।"

"लेकिन यह सब···"

"यह सब हम कर लेंगे। शेखर की मां है, नौकर है, माली है, और फिर यह काम तुम्हें शोभा नहीं देता। हम जो हैं, जाओ बेटी।"

"और आप···?"

"हम तो आज व्रत मन्दिर में ही तोड़कर लौटेंगे। तुम जाओ। घर अकेला है और राजीव भी।"

शांति ने भी बहू से लौट जाने के लिए कहा। अंजना ने ठहरने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने एक न सुनी। लालाजी यह नहीं चाहते थे कि उनकी बहू लोगों के सामने नंगे मुंह बैठे, वे लोग उसकी भरी जवानी के रंड़ापे पर तरस खा-खाकर उसके दिल पर बरछियां चलाएं।

अंजना ने जाने से पहले दोनों के पांव छुए और आशीर्वाद लेती हुई मन्दिर से बाहर चली गई। वह जब मन्दिर की सीढ़ियों से उतर रही थी तो उसे लगा हर कोई आंखें फाड़-फाड़कर उसे घूर रहा था। जाते-जाते उसके कान में किसी औरत की आवाज आई—"बेचारी भरी जवानी में विधवा हो गई, लेकिन सास-ससुर पान-फूल

की तरह संजोए हुए हैं और किसी काम को हाथ तक नहीं लगाने देते ताकि उसकी कोमल बांहें मैली न हो जाएं।"

कोई दूसरी बोल उठी—"इसकी यह साड़ी तो देखिए ! है तो सफेद, लेकिन बड़ी कीमती है, रेशम से ज्यादा मुलायम है !".

अंजना उनकी बातों पर ध्यान दिए बिना अपनी कार की ओर बढ़ गई और ड्राइवर से घर चलने के लिए कहा।

कार घर के फाटक पर आकर रुकी तो अंजना ने घर की चाभियों का गुच्छा हाथ में लिया और कार से उतरकर ड्राइवर को गाड़ी वापस ले जाने का आदेश दिया। तेज-तेज कदमों से उपवन की घास को रौंदती हुई वह अन्दर जाने लगी। घर में आज दूसरा कोई न था इसलिए बिना किसी झिझक के आंचल कंधों पर गिराए अन्दर चली आई।

अभी उसने सदर हाल में कदम रखा ही था कि उसके मुंह से हल्की-सी चीख निकलते-निकलते रह गई। उसने चकित होकर पहले तो राजीव को देखा जो कालीन पर बैठा अनेक खिलौनों से खेल रहा था और फिर उस पालिश किए चमकदार जूते की ओर देखा जो कालीन की ब्रश में धंसा हुआ था और उसे पहनने वाला बाबूजी की आरामकुर्सी में धंसा हुआ बच्चे को खेलते देख रहा था।

अंजना का कलेजा मुंह को आ गया। दिल की धड़कन जैसे रुक-सी गई। वह धीरे-धीरे कदम उठाती उस आदमी की ओर बढ़ी जिसका जूता अभी तक उसकी आंखों के सामने चमक रहा था। उसने जैसे ही अपनी गरदन उठाई, अंजना के कलेजे में एक हूक उठी और वहीं रुक गई। उसके मोटे और भद्दे जबड़ों को खुला देखकर अंजना को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ।

उसके सामने इस दिलेरी से आ बैठने वाला और कोई नहीं था बल्कि उसके जीवन को आग लगाने वाला बनवारी था। वह अंजना को भयभीत और चकित दशा में देखकर कुर्सी पर और पसर गया। बोला—"कैसी हो अंजू ?"

"तुम—! यहां - ! क्या करने आए हो ?"

"अपनी बिछुड़ी हुई ज़िंदगी की तलाश में भटकता हुआ आ पहुंचा।"

"रमिया कहां है ?" क्रोध से वह गरज उठी।

"मेरे लिए चाय लेने गई है।"

"किसकी इजाजत से ?"

"मेरी इजाज़त से। अपना घर समझकर यह धृष्टता कर बैठा।"

"तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था।"

"क्यों ?" उसके अधरों पर एक दुष्ट मुस्कान उभरी।

अंजना ने घबराहट और घृणा से एक नज़र उसके चेहरे पर डाली जो सुर्ख हो रहा था।

बनवारी ने उसकी गरम नज़रों की आंच का अंदाज़ा किया और अपने भद्दे चेहरे पर एक निशान को उंगलियों से छूते हुए बोला—"यह शिब्बू की निशानी है। रात उसका मेहमान था। यहां होटल में साली ने शराब के नशे में इतने ज़ोर से काटा कि अभी तक निशान बाकी है।"

अंजना के होंठ भय और क्रोध से थरथरा रहे थे। चेहरे पर एक रंग आ रहा था और एक जा रहा था। राजीव ने लपककर मां को पकड़ लिया और उसे चाभी वाली मोटर दिखाने लगा जो बनवारी उसके लिए लाया था। अंजना ने उसके हाथ से वह खिलौना छीनकर एक ओर फेंक दिया। राजीव रोने लगा।

इतने में रमिया चाय की ट्रे संभाले आ गई। उसने चकित दृष्टि से दोनों को देखा और ट्रे मेज़ पर रखकर रोते हुए राजीव को बाहर ले गई।

"मैं आज पछता रहा हूं अंजू !"

"वह अंजू मर चुकी है।"

"ऐसा न कहो। मेरी गलतियों की ऐसी सज़ा मुझे मत दो; और फिर तुमने मुझसे यह क्यों छिपाया कि तुम मेरे बच्चे की मां बनने वाली हो ?"

"बनवारी !" चिल्लाकर अंजना ने उसकी ओर घृणा से देखा।

वह पहले की तरह ही मुस्कराता रहा—"घबराओ नहीं। अंजू से पूनम बनना अगर मुश्किल नहीं तो बनवारी को फिर से अपनाना भी मुश्किल नहीं होगा।"

अंजना ने और भी क्रोधित होकर पांव की ठोकरों से बनवारी के लाए हुए खिलौनों को बिखरा दिया और फिर उन्हें उठा-उठाकर बाहर फेंकने लगी। साथ ही चिल्ला-चिल्लाकर बनवारी को वहां से तुरंत भाग जाने के लिए कहने लगी।

सहसा एक खिलौना उठाकर उसने ज्योंही बाहर फेंका, वह किसीके पांव से जा टकराया।

वह कमल था। अचानक दोपहर को और वह भी इस अवसर

पर कमल को वहां देखकर अंजना के पांव तले से ज़मीन खिसक गई। वह लज्जा से वहीं धंस गई। उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया। उसके लिए अपना आंचल उठाकर सिर पर ओढ़ना भी कठिन हो गया।

कमल ने झुककर पैरों में पड़ा हुआ वह खिलौना उठा लिया और दोनों को अचरज से देखता हुआ अन्दर आ गया।

"वह तो अच्छा हुआ पूनम ! तुम्हारा क्रोध हमारे पांव से लिपट-कर रह गया। कहीं सिर पर बरसता तो कुशल नहीं थी।"

"आई एम सॉरी।"

"दोष तो मेरा था जो मैं बच्चे के लिए ढेर सारे खिलौने ले आया। न ये आते और न इनका क्रोध यह रूप धारण करता।" बनवारी ने झट से बिगड़ी हुई बात बना ली।

"आपका परिचय ?" कमल ने अंजना की क्रोधित मुद्रा और बनवारी की सूरत दोनों को एकसाथ निहारते हुए पूछा।

इससे पहले कि वह कुछ कहती, बनवारी स्वयं सामने आ गया और बोला—"मुझे बनवारी कहते हैं। पूनम के शहर का रहने वाला हूं। आते समय इनकी आंटी ने बच्चे के खिलौने क्या भिजवाए कि ये मुझपर बरस पड़ीं। अब आप ही कहिए मिस्टर..."

"कमल नाम है मेरा।"

"हां मिस्टर कमल ! अब आप ही फैसला कीजिए, इसमें मेरा क्या दोष है ? बेचारी जब विधवा हुई तो आंटी ने घर में घुसने न दिया और जब इतने बड़े घराने की बहू कहलाने लगीं तो हरेक रिश्ता जताने लगा। मैं तो बेकार इस झगड़े में आ फंसा। अब इतने खिलौने उठाकर कहां ले जाऊं ?"

"बस इतनी-सी बात और यह गुस्सा ! यह तो ज़माने का दस्तूर है पूनम ! जब इन्सान को सहारा देने के लिए दो-चार बाज़ू मज़बूत हों तो हर कोई मदद देने के लिए बढ़ता है। और जब वह अकेला होता है तो कोई मुंह तक नहीं लगाता।"

"लाख रुपये की बात कही है आपने। इन्हें समझाइए ना, कि आंटी को माफ कर दें और ये खिलौने रख लें।"

"हां पूनम ! बच्चे के लिए प्यार से भेजे गए ये खिलौने रख लो। आंटी का नहीं तो इनका ही दिल रख लो जो इतनी दूर उठा-कर लाए हैं।"

बनवारी ने अंजना की निगाहों में लावा के समान उबलता क्रोध

देखकर तुरन्त कहा—"होटल पालीटन में ठहरा हूं। मिलना हो या कोई संदेशा भेजना हो आंटी को तो टेलीफोन कर लेना। कमरा नम्बर २१ है।"

"मुझे कुछ नहीं कहना है।" अंजना उबल पड़ी।

बनवारी निराश मुद्रा बनाए लौटने लगा तो कमल ने टोक दिया—"आप जा रहे हैं क्या?"

"जी।" वह चौंककर रुक गया—"अब तो जाना ही होगा।"

"चाय तो पीते जाइए।"

"नहीं साहब, यह न होगा हमसे। हम छोटे ज़रूर हैं लेकिन इतने गिरे हुए नहीं हैं कि जिस लड़की को अपने मुहल्ले से दुल्हन बनाके भेजा, उसीके घर का पानी पी लें।"

"लेकिन आप…"

"देखने में आधुनिक लगता हूं। पालीटन होटल में ठहरता हूं, लेकिन विचार तो पुराने हैं।"

बनवारी की इस बेतुकी बात पर कमल को हंसी आ गई। इससे पहले कि वह कुछ और कहता बनवारी नमस्ते कहता हुआ हाल से बाहर निकल गया।

'आदमी काफी दिलचस्प मालूम होता है!"

अंजना जो अभी तक अपने-आपमें नहीं थी, कमल की बात सुनकर चौंक गई।

कमल ने पुन: बड़ी गम्भीर मुद्रा में कहा—"तुम्हें इन खिलौनों को इस बेदर्दी से ठुकराना नहीं चाहिए।"

"आप न आते तो अब तक ये सब कूड़े के ढेर में चले जाते।"

"चलो अच्छा हुआ, मैं आ गया। तुम्हें इस रूप में देखना जो था! मैं सोच रहा था, काफी शीतल स्वभाव है तुम्हारा; लेकिन गुस्सा! उफ!" कमल ने अंजना के चेहरे की ओर देखते हुए कहा और फिर चाय की ट्रे पर झुककर चाय बनाने चला।

अंजना ने उसका हाथ परे हटा दिया, बोली—"लाइए, मैं बना देती हूं।"

"धन्यवाद।"

"अब उतनी गरम नहीं होगी।"

"चलेगी। इसे कहते हैं दाने-दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम। बनवाई किसके लिए थी और पीने कौन आ गया!"

"आप तो बस बात पकड़ लेते हैं।"

वह चुप हो गया और अंजना की ओर कनखियों से देखा। वह अभी तक गंभीर थी।

कमल ने चुपचाप अंजना के हाथ से प्याला ले लिया और एक घूंट भरकर बोला—"आज घर पर कोई नहीं क्या ?"

"नहीं, बाबूजी और मांजी मंदिर गए हैं। श्राद्ध के लिए।"

"और तुम ?"

"मैं अभी वहीं से आ रही हूं।"

"आप चाय नहीं पीएंगी क्या ?"

"नहीं, मेरा व्रत है। उनका श्राद्ध जो है।"

अंजना की अंतिम बात ने कमल के सीने में जैसे बर्छी घोंप दी। वह अपनी भावुकता दबाते हुए बोला—"मैं तुमसे बहुत लज्जित हूं पूनम !"

"वह क्यों ?"

"उस दिन मैंने गुस्ताखी कर दी थी। मैंने एक पतिव्रता स्त्री की आराधना को परखने की कोशिश की थी।"

"सच कहना कोई पाप नहीं है। मानव-जीवन में दो ही चीज़ें बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं--दिल और दिमाग। दिमाग जो सोचता है, दिल नहीं मानता और दिल जो मानता है उसे दिमाग सोचने की अनुमति नहीं देता।"

"तो मैं यह समझूं कि तुमने उस दिन वाली बात का बुरा नहीं माना ?"

"नहीं, अब आप आराम से चाय पीजिए।"

कमल ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा और एक ही घूंट में बाकी चाय पी गया। अंजना जो असमंजस में खड़ी अपनी उत्तेजना को समेट रही थी, झिझकते हुए पूछ बैठी—"आप कहीं बाहर गए हुए थे क्या ?"

"नहीं, तीन-चार दिन बुखार ने धर दबाया था इसलिए घर से निकला नहीं।"

"अब कैसे हैं ?"

"बिल्कुल ठीक ! और हां पूनम ! तुमको एक खुशखबरी सुनाने आया हूं।"

"मैं जानती हूं।" उसने तुरन्त उत्तर दिया, लेकिन कमल के खिले चेहरे की प्रसन्नता अंजना के दिल पर चोट कर ही गई। वह और पास खिसक आया।

"क्या जानती हो ?"

"यही कि आपको कोई लड़की पसंद आ गई है और आपने हां कर दी है।"

वह अंजना की बात पर खिलखिलाकर हंस पड़ा और खांसते-खांसते बोला—"तुम्हें तो बस रात-दिन मेरे ब्याह की चिन्ता लगी रहती है।"

"तो क्या मैंने गलत समझा है ?"

"बिल्कुल गलत। मैं ता तुमसे यह कहने वाला था कि मेरी बहन इस बार कालेज की छुट्टियां मनाने नैनीताल आ रही है।"

"फिर तो बहुत अच्छा होगा। कुछ दिन हम भी घुल-मिलकर समय काट लेंगे।"

'हां पूनम ! वह छोटी-सी थी जब मेरी मां चल बसीं। मगर वह छोटी बहन न होती तो हम बाप-बेटा कभी के घर से बेघर हो जाते।"

"कौन-सी क्लास में पढ़ती है ?"

"बी० ए० फाइनल में, नेशनल कालेज, लखनऊ में।"

"उसे भी चाह होगी अपनी भाभी की ?"

"तुमसे कम नहीं। वह तो अच्छा हुआ मेरे ब्याह पर बारात में शामिल न हो सकी वरना उसका दिल टूट जाता। रो देती वह भाई के नसीब पर !"

"वह क्यों नहीं गई थी ?"

"परीक्षा के दिन थे ना !"

वह फिर चुप हो गई। अपने बारे में कमल के विचार जानकर उसका रोआं-रोआं सिहर उठा। वह गुमसुम वहीं खड़ी रही। फिर धीमे स्वर में पूछा—"कब आ रही है ?"

"शायद अगले इतवार को।"

वह बेसुध-सी आगे बढ़ गई। सीढ़ियों पर चढ़ते-चढ़ते उसने एक पल के लिए रुककर सुदूर हाल में देखा। कमल राजीव के साथ खेलने लग गया था जो अभी-अभी रमिया के साथ अंदर आया था। वह दौड़कर कमल की टांगों से लिपट गया और फिर उन्हीं खिलौनों से खेलने लगा जो कुछ देर पहले बनवारी वहां छोड़ गया था।

बनवारी का ख्याल आते ही उसका बदन थरथरा उठा। बनवारी के अस्तित्व ने फिर उसे खतरे में धकेल दिया था। वह अपने-आपको पहचानने से डरने लगी। बेसुध-सी वह खिड़की का सहारा

लिए खड़ी हो गई और झील के लहराते जल की गहराई मन ही मन मापने लगी।

रमिया की आवाज़ ने उसकी सहमी-सिमटी भावना को छिन्न-भिन्न कर दिया। वह चौंककर पलटी और उसके हाथ में एक खत देखकर पूछ बैठी—क्या है रमिया ?"

"चिट्ठी है बहू रानी। वे मेहमान जो खिलौने लेकर आए थे, बाहर से ही देकर चले गए। कह गए थे कि जब मालकिन अकेली हों तो उन्हें दे देना।"

अंजना ने कांपते हाथों से वह खत थाम लिया और भर्राई हुई आवाज़ में पूछा—"कमल बाबू कहां हैं ?"

"वे तो चले गए।"

"और राजीव ?"

"नीचे बैठा खेल रहा है।"

"तो जाओ, उसे दूध पिला दो।"

रमिया आज्ञा-पालन के लिए तुरंत बाहर चली गई। अंजना ने लपककर सामने की खिड़की का पर्दा हटाया। कमल जीप में बैठ चुका था। उसने उसकी चुप्पी और निष्ठुरता को कहीं गलत न समझ लिया हो। यह सोचते ही उसका शरीर पसीने में नहा उठा।

उस खिड़की से हटकर उसने बाहर का दरवाज़ा बन्द किया और कांपते हाथों से चिट्ठी खोली। लिखा था :

"अंजू,

मैं कल शाम नेहरू पार्क में तुम्हारा इंतज़ार करूंगा—शाम के ठीक छः बजे।

तुम्हारा
बनवारी"

यह पढ़ते ही उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। अपने बेजान शरीर को उसने खिड़की का सहारा दिया और फिर उस गहरी झील की ओर देखने लगी।

१२

संध्या का समय था, छः बजने वाले थे। नेहरू पार्क में बनवारी पेड़ों के साये तले खड़ा बड़ी बेचैनी से अंजना की राह देख रहा था। उसे पूरा विश्वास था कि वह मिलने के लिए ज़रूर आएगी; लेकिन

जब वह उन पेड़ों से हटकर पार्क में देखता तो दूर तक अंजना का कोई निशान न देखकर उसका दिल बुझ जाता। घड़ी की सुइयां छः बजा रही थीं। ठंडी हवा के झोंके से बचने के लिए उसने एक वृक्ष के तने का सहारा ले लिया और सिगरेट सुलगाकर लंबे-लंबे कश लेने लगा। मुंह से धुआं निकलते ही उस ठंडी हवा में जम-सा जाता।

पहाड़ों में सूर्य के जल्द छिप जाने से एक सांवला-सा अंधेरा फैलता जा रहा था। ज्यों-ज्यों उसकी व्याकुलता बढ़ रही थी, उसका दम घुटने लगता था। वह फिर से अपने दिल में तरह-तरह के मंसूबे बांधने लगता। वह अपनी खोई हुई दुनिया में जीवन की एक आशा लिए नैनीताल आया था।

सहसा पास में वृक्षों से गिरे हुए सूखे पत्तों पर किसीके चलने की आहट आई। उसने पलटकर घनी झाड़ियों की ओर देखा जहां अंजना अभी-अभी आकर रुकी थी। उसे देखते ही उसकी आंखों में चमक आ गई। उसके सर्द और नीले होंठों पर एक मुस्कराहट पैदा हो गई। वह ललचाई नज़रों से उसकी ओर देखने लगा।

अंजना उसकी गहरी और भूखी निगाहों की ताब न ला सकी। बोली—"मुझे यहां क्यों बुलाया है?"

"मैंने नहीं बुलाया है, तुम्हारी मजबूरियां तुम्हें यहां खींचकर ले आई हैं।'

"मेरी कोई मजबूरी नहीं।" वह झुंझला उठी।

"तो चली जाओ।" बनवारी ने विषाक्त मुस्कान की बिजली उसपर गिराई।

वह उसके तेवर देखकर घबरा उठी और तेजी से पलटकर जाने लगी, लेकिन बनवारी की आवाज़ ने उसके कदम बांध दिए।

"मुझसे तो मुंह मोड़कर चली जाओगी लेकिन सच्चाई से कैसे मुंह मोड़ोगी अंजू!"

"वह अंजू मर गई बनवारी! उसे अब भूल जाओ।"

"जब पूनम बनकर भी तुम अंजू को नहीं भूल सकीं तो मैं कैसे भूल सकता हूं!"

"अब तुम्हें मुझसे क्या लेना..."

"तुम्हारे चमके हुए भाग्य में हिस्सा बंटाना है।"

"तुम मेरे कौन होते हो? मेरा-तुम्हारा साथ तो उसी दिन छूट गया जब तुमने मुझसे दगा की और धोखा दिया।"

"मैं मानता हूं, मैंने तुम्हें धोखा दिया; लेकिन आज तुम क्या कर रही हो ? तुम भी तो किसी घराने की बहू बनकर उन सबको धोखा दे रही हो।"

"बनवारी!" थरथराती हुई आवाज़ वृक्षों के झुरमुट में गूंज उठी।

"लेकिन जवाब नहीं तुम्हारा भी ! कितना बड़ा हाथ मारा है ! मैं तो ज़िंदगी-भर झक मारता रहा ! अब तुम्हें गुरु मानता हूं।"

"किसी अभागिन को यूं सताते दया नहीं आती ?"

"दया की इस दिल में जगह होती, पगली, तो उसी दिन तुम्हें अपनी बांहों में न ले लेता जब तुम मेरे लिए अपना सब कुछ छोड़कर चली आई थीं !"

"वह मेरी भूल थी। मेरी गलती थी जिसे मैं आज तक भुगत रही हूं।" यह कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू आ गए।

बनवारी मन ही मन खुश होता हुआ उसकी बेबसी देखता रहा। जब वह अपने दिल की भड़ास निकाल चुकी तो वह बोला—"तुम तो जानती हो अंजू ! मेरी ज़िंदगी में लड़कियों की कमी नहीं। कमी है तो बस पैसे की। आने से पहले ही चला जाता है। इस मामले में मैं बड़ा अभागा हूं।"

"तुम मुझसे क्या चाहते हो ?"

"जो माल लूटो, उसका आधा मेरी झोली में डाल दो। बस ! जीवन भर तुम्हारे एहसानों तले दबा रहूंगा।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि तुम पूनम हो, अंजना नहीं हो। मैं इस राज़ को हज़म करने की कीमत चाहता हूं और कुछ नहीं।"

"ऐसा कभी नहीं होगा।" अंजना ने दृढ़ स्वर में कहा और फिर बिना कुछ कहे-सुने वहां से चलती बनी।

बनवारी ने बढ़कर उसे रोकना चाहा लेकिन फिर उसने अपने-आपको ही रोक लिया। जल्दबाज़ी कहीं उसका खेल न बिगाड़ दे।

अंजना बढ़ती जा रही थी और बनवारी के कानों में सूखे पत्तों पर चलने की चरमराहट गूंज रही थी। बनवारी को विश्वास था कि वह एक न एक दिन इस चिड़िया को सोने के पिंजरे-सहित ही ले उड़ेगा।

अंजना जब घबराई हुई घर लौटी तो सामने बाबूजी बैठे हुए मिल गए। उन्होंने उसे देखते ही पूछ लिया :

"इतनी देर कहां लगा दी बेटी !"

"योंही ज़रा टहलने निकल गई थी झील के पास।"

"वह तो अच्छा किया तुमने, लेकिन जाना ही था तो शेखर की मां या रमिया को साथ ले लिया होता।"

"भूल हो गई बाबूजी !" उसने रुकते-रुकते उत्तर दिया।

"भूल कैसी बहू !" शांति ने बहू के आड़े आते हुए कहा और फिर पति से संबोधित हुई—"आप तो बहू को यों समझने लगे जैसे वह कल की बच्ची हो। ऐसी क्या आफत आ गई जो वह बाहर चली गई ज़रा ! घर में बैठे-बैठे तो दम घुटने लगता है।"

"मुझे इससे कब इंकार है ? मैंने तो बस इतना कहा है कि यों अकेली न जाती।"

दोनों शायद अभी और बहस करते, लेकिन राजीव ने दादा के पास आकर ऊधम मचा दिया।

वह बगीचे से बिल्ली का एक बच्चा उठा लाया था और हरेक को उसका खेल दिखा रहा था। जब वह मियाऊं-मियाऊं करता तो वह खिलखिलाकर हंसने लगता और उसके साथ ही सबके सब हंस पड़ते। यहां तक कि उसकी शरारत पर अंजना भी खिलखिला उठी। राजीव की हंसी ने पल-भर के लिए उसका गम भुला दिया और प्यार से उसके गाल पर चुटकी लेते हुए बोली—"शरारती कहीं का !"

"बिल्कुल शेखर पर गया है। वह भी छुटपन में ऐसा ही था।" शांति ने लाड़ से उसकी ओर देखते हुए कहा और उसे उठाकर बिल्ली के बच्चे को बाहर तक छोड़ने चली गई।

शेखर का नाम सुनते ही अंजना के दिल पर एक चोट लगी और वह चुपचाप सीढ़ियों की ओर बढ़ गई।

"बहू !"

बाबूजी की आवाज़ ने उसके कदम रोक लिए और वह पलटकर उन्हें देखने लगी। उन्होंने इशारे से उसे पास बुलाया और चमड़े के बैग से नोटों का एक पुलिंदा निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए बोले—"इन्हें संभालकर सेफ में रख दो। तराई वाली ज़मीन ठेके पर दे दी है। यह उसीकी पेशगी रकम है।"

"लेकिन बाबूजी ! इतनी बड़ी रकम ! मैं तो बड़ी लापरवाह हूं।"

"शेखर की मां से कम ही होगी ! फिर अब यह घर तो तुम्हें ही संभालना है। इस बुढ़ापे में भी क्या मुझे ही सब कुछ करना

होगा !"

अब अंजना कोई उत्तर न दे सकी। उसने सावधानी से रुपया संभाल लिया। बाबूजी ने बताया कि पूरा दस हज़ार है। अंजना उसे लिए हुए ऊपर चली गई।

ज्योंही उसने सेफ खोला और यह रकम उसमें रखी, उसे बनवारी की धमकी का ख्याल आ गया जो उसने अभी-अभी नेहरू पार्क में दी थी। वह समझ गई कि बनवारी उसे अपना स्रोत बनाकर इस घर की दौलत लूटने का इरादा रखता है। वह इस ख्याल से ही कांप गई और उसने तुरत सेफ का ताला बंद कर दिया। फिर उसने पलटकर देखा और घबराई हुई नज़रों से इधर-उधर देखने लगी जैसे बनवारी की दुष्ट निगाहें अभी तक उसका पीछा कर रही हों। उसने किसी अनजाने भय से भयभीत होकर कमरे के सारे दरवाज़े और खिड़कियां बन्द कर लीं और अपने-आपको संध्या के धुंधलके में छिपाकर एक कोने में बैठ गई और सिसकियां भरने लगी।

उसकी वह सिसकियां, वह विलाप वहीं दबकर रह गया। उसके दिल की दशा कोई नहीं जान सका। घरवाले उसे एक आदर्श नारी समझते थे। कमल बाबू उसे सचमुच पूनम समझकर उसके लिए अपने हृदय में अपार सहानुभूति और प्यार रखते थे; लेकिन अंजना से उन्हें बड़ी घृणा थी, क्योंकि उसने शादी की रात उनसे दगा की थी।

बनवारी तो उसे एक गुड़िया समझता था और उसकी कमज़ोरियों की आड़ लेकर उसकी ज़िंदगी से खेलने पर तुला हुआ था। इनमें कोई भी ऐसा नहीं था जो उसके दिल की सच्चाई की थाह पा सकता और उसके सीने में छिपे दर्द की पीड़ा का अनुमान लगा सकता।

बनवारी नेहरू पार्क से सीधा होटल चला गया। उसकी निराशा में आशा की एक झलक विराजमान थी। उसे अपनी चाल पर पूरा भरोसा था।

उसने सिगरेट का जलता हुआ टुकड़ा होटल के मेनगेट पर फेंक दिया और हाल में चला गया जहां शबनम का नृत्य हो रहा था। वाद्ययंत्रों की पाश्चात्य रोमांटिक धुन, हाल की धुंधली रोशनी, सुरा से मदमाते लोग और उसपर शबनम का लहराता-थिरकता अर्धनग्न शरीर दर्शकों पर बिजलियां गिरा रहा था।

बनवारी ने उस सुरम्य सुरबाला को अजीब निगाहों से देखा। उस रमणी की एक साधारण-सी झलक पाकर सैकड़ों लोग लोट-पोट

हो रहे थे, लेकिन बनवारी पर उसका तनिक भी प्रभाव नहीं था। वह उस कसाई की तरह उसके गोश्त-पोश्त को देखने-परखने लगा जो किसी भेड़ का झटका करने से पहले उसे टटोल-टटोलकर देखता है। शबनम के जवान शरीर में जो गरमी थी वह उसके लिए बर्फ बन चुकी थी। शबनम ने नाचते-नाचते ज्योंही उसपर नज़र फेंकी उसने लापरवाही से मुंह फेर लिया और तेज़ी से सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए अपने कमरे में चला गया।

आज वह परेशान था। उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। वह उसी बेचैनी में अपने कमरे के भीतर चला आया और बड़े ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर लिया।

संगीत की धुन खत्म हो गई। तालियों की आवाज़ से हाल गूंज रहा था।

बनवारी ने लापरवाही से अपना कोट सामने की कुर्सी पर फेंक दिया। गले की टाई ढीली की और थका हुआ शरीर लेकर बिस्तर पर पसर गया। तकिए का सहारा लेकर वह कमरे को ध्यान से देखने लगा जो एक नर्तकी की भांति ही सजा हुआ था और न जाने कितने मुसाफिर वहां आकर ठहर चुके थे। वह सजावट ठीक शबनम जैसी थी जो मेकअप और चमकीले कपड़ों में परियों जैसी लगती थी लेकिन अन्दर से उस फर्नीचर की तरह पुरानी और खोखली थी जिसे होटल-वालों ने खूबसूरत कपड़े पहनाकर और रंग-रोगन करके नया बना रखा था।

उस कमरे के अंधेरे कोनों में से शबनम के पसीने की गंध अब भी आ रही थी, लेकिन उस दुर्गन्ध को इस तरह सजा-धजाकर दूर करने का असफल प्रयास किया गया था जिस तरह शबनम यू डी क्लोन की सुगन्ध से अपनी गंध दूर करने का प्रयास करती थी लेकिन सफल नहीं होती थी।

व्याकुल मस्तिष्क को शांत करने के लिए उसने दुबारा सिगरेट सुलगाया और लम्बे-लम्बे कश लेने लगा। ज़रा-सी देर में ही उस कमरे में सिगरेट का धुआं फैल गया और उसे उस धुएं में छिपा हुआ वह चेहरा नज़र आया जो शबनम से बिल्कुल अलग था। वह अंजना का भोलाभाला और गुलाबी चेहरा था जो आज उसके कारण वियोगिनी बनी हुई थी, विधवा बनी हुई थी, ब्याह के बिना उस बच्चे की मां कहलाती थी जो न जाने किसका था!

यह सोचते ही उसके पतित शरीर ने एक दुखदायी अंगड़ाई ली।

वह उस पीड़ा से कराह उठा जिसने उसके सामने अतीत की उन रंगीन स्मृतियों को बिखेर दिया जब वह कालेज में पढ़ती थी और एक भोली-सी, नारी-सुलभ स्वभाव की तरुणी थी जो उसके झूठे प्यार को सच समझकर उसकी दीवानी हो गई थी।

इतने में धुएं की धुंध छंट गई और वह चेहरा आंखों से ओझल हो गया। अब उसके सामने शबनम का चेहरा उभर आया जो अभी-अभी बाहर से अन्दर आई थी और उसकी गम्भीर मुद्रा देखकर चुप-चाप खड़ी हो गई थी।

वह चौंक पड़ा। लेटे-लेटे ही सिगरेट को एश ट्रे में बुझा दिया। शबनम आईने के सामने चली गई और अपना झिलमिलाता लिबास उतारने लगी।

बनवारी ने दूसरा सिगरेट सुलगा लिया।

"भेंट हुई ?" शबनम ने अपने कपड़े एक ओर रखते हुए पूछा। वह अब अंदरूनी कपड़ों में थी और दर्पण में प्रतिबिंबित बनवारी के चेहरे को ध्यान से देखने लगी।

"जैसा मैंने सोचा था, वैसा ही हुआ। वह ठीक छः बजे पार्क में आ गई।"

शबनम ने सेंट की सुराहीदार शीशी उठाई और उसके फव्वारे अपने पूरे बदन पर छिड़कती हुई बोली—"क्या कहा उसने ?"

"मेरा साथ देने से इंकार कर दिया।"

वह उसके इस जवाब पर दिल ही दिल में मुस्करा उठी। अल्मारी से अपना नाइट गाउन निकालकर पहन लिया। जब वह और नहीं बोली तो बनवारी ने फिर कहा—"वह सोचती थी कि बनवारी उस-पर दया दिखाएगा। रहम की नजरों से देखेगा।"

"अब क्या इरादा है ?"

"यह सोने की लंका हाथ से निकलनी नहीं चाहिए। सुना है नैनीताल का बहुत बड़ा जागीरदार है उसका ससुर।"

"और कहीं अंजू ने अपनी मुहब्बत का तुमसे बदला ले लिया तो ?"

"वह क्या लेगी ! उसने तो उड़ने से पहले ही अपने पर काट लिए हैं।"

यह कहते हुए वह बिस्तर पर उछला और टांगें पसारकर आराम से बैठ गया। शबनम ने उसके चेहरे से उसके दिल की बात जानने की कोशिश की, लेकिन उसके इरादों को भांप नहीं सकी। उसने सामने

की अल्मारी खोली और बिल्लोरी सुराही में से गिलास में शराब उंडेलने लगी।

गिलास में सुर्ख शराब देखते ही बनवारी के विह्वल मन में एक लहर उठी। चेहरे पर कांति छा गई। बुझी हुई आंखें चमक उठीं। उसने ललचाई हुई नज़रों से शबनम को देखा जिसने शराब से छलकता हुआ वह जाम उसकी ओर बढ़ा दिया।

"तुम मेरी कमज़ोरी को खूब समझती हो शिब्बू!"

"कमज़ोरी को नहीं, परेशानी को।" शिब्बू ने उसके गालों को मसलते हुए उसे गिलास थमा दिया।

बनवारी ने गहरी नज़रों से उसके कोमलांगों को निहारा जिन्हें वह बरसों तक टटोल चुका था, लेकिन आज ज़बरदस्ती वह उसके सामने जवान बनने की कोशिश कर रही थी। बनवारी ने भी उसके गालों पर चुटकी ली और शराब के घूंट हलक में उतारने लगा। शराब का हलक से उतरना था कि उसके बदन में कामुकता की आग पहुंच गई। उसने लपककर शबनम को अपने पास खींच लिया और शराब के साथ-साथ उसके शरीर का भी उपभोग करने लगा।

"तुम तो चली जाओगी ना?"

"हां, कल रात को मेरा अंतिम परफार्मेंस है।"

"उसके बाद?"

बनवारी निरंतर उसके होंठों को मसल रहा था और इस रगड़ से शबनम के शरीर में एक अनोखी तरंग उठने लगी और वह मस्ती में लहराकर बोली—"यहां से शिमला, मसूरी और फिर दिल्ली।"

"मेरा क्या होगा?"

"जहां जाऊंगी, तुम्हें साथ खींचकर ले जाऊंगी।"

"नहीं शिब्बू!"

यह सुनते ही शबनम को एक धक्का लगा। बनवारी जिस उंगली से उसके होंठों को छू रहा था, उसे उसने दांतों से काट लिया।

बनवारी ने झट उंगली खींच ली और अलग होते हुए बोला—"यह क्या बदतमीज़ी है?"

"फिर तुमने क्यों कहा—'नहीं शिब्बू!'" बच्चों की तरह रूठते हुए उसने तोतली आवाज़ में कहा और अपना क्रोध दिखाने लगी।

बनवारी ने उसे प्यार से खींचकर अपनी बगल में बिठा लिया और उसे अपनी विवशता बताने लगा कि उसका नैनीताल में रहना बहुत ज़रूरी है। संभव है पुरानी जान-पहचान और मुहब्बत का सहारा

लेकर वह अंजना के फिर समीप पहुंच जाए और उसकी भटकती हुई ज़िंदगी में स्थिरता आ जाए।

"कहीं ऐसा तो नहीं बनवारी कि अपनी ज़िंदगी को स्थिर बनाते-बनाते मेरी मुहब्बत को ही ठिकाने लगा दो ?" शबनम ने अपनी शंका व्यक्त की।

"तुम भी बड़ी भोली हो। अगर मुझे तुमसे किनारा ही करना होता तो क्या मैं घर आई सुनहरी चिड़िया यों फुर्र से उड़ जाने देता ? मेरा और उसका क्या साथ ? शराब से उसे नफरत, नाच-गाने से उसे लगाव नहीं। मैं उस पालतू गाय का क्या करूंगा ! मुझे तो बिजली चाहिए जो शबनम में है।"

शबनम उसकी बात सुनकर लजाने लगी। बनवारी ने प्यार से उसे अपने पास खिसका लिया और उसके बदन की गर्मी से अपने बदन को गरमाने लगा। फिर उसने हाथ में पकड़ा हुआ जाम शबनम के होंठों से लगा दिया। वह इंकार करती हुई मचली लेकिन बनवारी ने ज़बरदस्ती कई घूंट पिला ही दिए।

"यहां रहकर क्या करना है तुम्हें ?" शबनम ने फिर पूछा।

"अंजू की कमज़ोरी से अपनी तकदीर का फैसला करना है।"

"डरती हूं बनवारी ? पैसा बटोरते-बटोरते कहीं अंजू के जाल में न आ जाओ।"

"फिर वही बात ? विश्वास नहीं रहा मुझपर ?"

"तुमपर तो है, लेकिन तुम्हारी नीयत पर नहीं है।"

"लेकिन उन कागज़ात पर तो है जिनके आधार पर हम मियां-बीवी के रिश्ते में बंधे हुए हैं !"

"हां, वही तो एक सहारा है मेरा जो तुम्हारी नीयत पर भी विश्वास कर लेती हूं।"

बनवारी ने उसे दो घूंट और पिला दी और बिस्तर पर गिराकर अपने होंठ उसके होंठ पर मसलते हुए कहा—'एक काम करोगी मेरी शिब्बू !"

"क्या ?"

"होटल वालों से कहकर यह कमरा कुछ दिनों के लिए मेरे पास रहने दो।"

"फिर।"

"इसे छोड़कर अगर मैं कहीं और रहने लगा तो शायद अपना प्रोग्राम बनते-बनते बिगड़ जाएगा।"

"कितने दिनों के लिए ?"

"बस यही आठ-दस दिन के लिए ।"

"कह दूंगी ।"

बनवारी ने उसे अपने शरीर के साथ भींच लिया । कमरे की बत्ती को मद्धिम कर दिया और प्यार-भरे न जाने कितने मधुर शब्द उसके कानों में उंडेल दिए । उसकी बातें एक मीठे ज़हर की तरह शबनम के मस्तिष्क में उतर गईं और उसने पूरी मस्ती के साथ उन्मादी-सी अपने-आपको समर्पण कर दिया ।

एक आग थी, एक धधकती ज्वाला थी, जिसने दोनों को अपनी लपेट में ले लिया ।

१३

अंजना मंदिर से लौट आई थी । रमिया और राजीव उसके साथ थे । राजीव आज चार-छः दिन से बीमार था । बुखार उतरते ही मां के कहने से वह उसे देवी मंदिर में ले गई थी । शेखर की मौत के बाद शांति हर छोटी से छोटी बात पर भी वहम करने लगी थी । इसलिए उसने बहू को मजबूर किया कि वह राजीव को देवी मंदिर में ले जाए और देवी के चरणों की धूल राजीव के मस्तक पर लगाए ।

ज्योंही अंजना ने दालान में कदम रखा, एक सुरीली और अनजानी चहचहाहट सुनकर वह वहीं ठिठक गई । रमिया भी उन आवाज़ों पर चकित होकर अपनी मालकिन का मुंह ताकने लगी । सदर हाल से कई लड़कियों की वार्ता की आवाज़ें आ रही थीं । उस घर में इन अनजानी आवाज़ों को सुनकर अंजना कुछ चिंतित-सी हो गई ।

डरते-डरते उसने हाल में कदम रखा । उसका अनुमान गलत नहीं था । वहां तीन नहीं चार लड़कियां विराजमान थीं और बैठी चाय पी रही थीं । बाबूजी उनके पास बैठे गप्पें लड़ा रहे थे और शांतिदेवी उनके स्वागत में लगी हुई थीं । वह वहीं दरवाज़े के पास ठिठक गई और चकित हो उन अपरिचित लड़कियों को निहारने लगी ।

उन लड़कियों की नजरें ज्योंही अंजना पर पड़ीं, वे सबकी सब चुप हो गईं और उसकी ओर देखने लगीं । निगाहें मिलते ही अंजना ने सिर झुका लिया और चुपचाप दो कदम आगे बढ़ गई ।

लाला जगन्नाथ उनका अचरज और चुप्पी दूर करने के लिए बोले—"मेरी बहू, पूनम ।"

"पूनम ! कितना प्यारा नाम है !" उनमें से एक बोली ।

"और देखने में भी पूनम का चांद !" एक दूसरी दांतों तले ज़बान दबाती हुई धीरे से बोली ।

"लेकिन इस चांद को दाग लग गया ।" शांति ने तुरंत उनकी चुलबुलाहट को गम्भीरता में बदल दिया ।

अंजना ने बढ़कर सबको नमस्कार किया । बाबूजी ने उस लड़की से अंजना की जान-पहचान करा दी जो कमल बाबू की छोटी बहन थी । शालिनी उसका नाम था ।

"प्यार से घरवाले मुझे शालो कहते हैं ।" उसने स्वयं आगे बढ़कर अपना परिचय स्वतः दिया ।

बड़ी तत्परता से उसने दूसरी लड़कियों का परिचय करा दिया—"यह है रेखा, यह कुमुद और यह है आशा ! मेरी कालेज की सहेलियां हैं ।"

अंजना के शांत चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान बिखर गई । वह बारी-बारी उन लड़कियों से मिलने लगी । शालिनी ने जैसे ही रमिया की बांहों में राजीव को देखा, उसे लपककर अपनी गोद में भर लिया और उसे चूमने लगी । दूसरी लड़कियों ने भी नन्हे राजीव से तोतली ज़बान में बातें करनी शुरू कर दीं ।

शांति अब उन लड़कियों को बहू के सुपुर्द करके पूजा के लिए चली गई । बाबूजी ने भी अपनी ज़िम्मेदारी उसके हवाले कर दी । रमिया जब राजीव को लेकर उपर चली गई तो अंजना भी उन लड़कियों को कोठी के पिछले भाग में ले गई । इस भाग में छोटा-सा उपवन था जहां से झील साफ दिखाई देती थी ।

घर के आसपास का सुन्दर दृश्य देखकर सब लड़कियां प्रशंसा करने लगीं ।

अंजना उन्हें लेकर बाग में लटके हुए झूले पर जा बैठी और बोली—"कब आईं तुम, शालो ?"

"कल शाम को ।"

"नैनीताल कैसा लगा तुम सबको ?"

"अभी देखा ही क्या है ? भइया का घर, चाचाजी की कोठी और सामने के पहाड़ ।"

शालिनी की इस बात पर सब हंस पड़ीं । अंजना के चेहरे पर भी हल्की-सी हंसी खेलने लगी ।

कुमुद सबको अपनी ओर आकर्षित करते हुए बोल उठी—

"वाह ! क्यों नहीं देखा ? वह भी तो देखा है जिसकी भइया सबसे अधिक सराहना करते हैं ।"

"क्या ?" आशा पूछ बैठी ।

"पूनम ।"

कुमुद के मुंह से अपना नाम सुनकर अंजना झेंप गई । आंखें लाज के भार से झुक गईं । वह दबी आवाज़ में बोली—"अब तुम मुझे बनाने लगीं !"

"नहीं भाभी ! सच ! वे तो उठते-बैठते तुम्हारी ही तारीफ करते रहते हैं ।"

"कहां हैं तुम्हारे भइया ?"

"हमें यहां छोड़कर किसी सरकारी काम से चले गए हैं । कह गए हैं कि लौटते समय ले जाएंगे । अभी हम काफी दिन यहां रहेंगे ।"

"तब तो खूब मज़ा रहेगा ! मेरा भी मन लग जाएगा !"

थोड़ी देर में ही सब घुल-मिल गईं । उनकी चहचहाहट में कुछ देर के लिए अंजना भी अपनी चिंता भूल बैठी । उसे लगा जैसे कुछ ही देर में वह औरत से सहसा एक चंचल लड़की बन गई हो । उसकी घुटी हुई कामनाएं मचल उठीं । जवानी का खुमार अंगड़ाइयां लेने लगा और वह भूल गई कि वह उस घराने की बहू है ।

लड़कियों ने जैसे ही झील की सैर का प्रोग्राम बनाया, अंजना उनका साथ देने के लिए सबसे पहले तैयार हो गई । वह तुरंत ही कपड़े बदलकर आ गई और लड़कियों को साथ लेकर झील की ओर चल पड़ी ।

शालिनी की भेंट ने अंजना पर जादू कर दिया था । वह उसकी बातों पर मोहित हो गई, लेकिन अपनी गंभीरता की सीमा से बाहर जाने का साहस नहीं था । वह हर बात को तौलकर मुंह से निकालती ताकि शालिनी या उसकी सहेलियों को किसी तरह यह संदेह न हो सके कि वह पूनम नहीं, अंजना है ।

उन लड़कियों के मनोरंजन के लिए वह उन्हें झील की सैर कराने लगी । सब लड़कियां एक किश्ती में बैठ गईं और नैनीताल की पहाड़ियों की सराहना करने लगीं । उस साफ-सुथरे नीले पानी में तैरती हुई उनकी नाव झील के दूसरे किनारे की ओर जा रही थी । अंजना अचानक किसीको देखकर झेंप गई । वह प्रफुल्लता, जो उसके चेहरे पर कुछ ही देर पहले से छाई थी, बरबस हवा हो गई ।

उनसे कुछ ही दूर पर एक और नाव जा रही थी। बनवारी और शबनम दोनों उसमें बैठे सैर कर रहे थे। बनवारी के सामने शराब से छलकता हुआ गिलास रखा था और शबनम उसके सीने पर सिर रखे लेटी हुई थी। लड़कियों ने जब उन्हें इस ढंग से खुले आम इश्क करते देखा तो झेंप गईं। अंजना के मुंह पर घबराहट से ठंडे पसीने आने लगे और वह लड़कियों की ओर देखती हुई तुरंत बोल उठी—"नाव वाले! नाव वापस ले चलो।"

बनवारी ने उसकी व्याकुलता देखी और एक ज़हरीली मुस्कराहट के छींटे उसपर उछालता हुआ बोला—"बचकर कहां जाएगी?"

लड़कियों की नाव तेज़ी से दूर चली गई। शांत वातावरण में बनवारी का अट्टहास गूंज उठा और उसने शराब का गिलास गले में उंडेल लिया।

"छिः छिः! कितने घटिया लोग हैं!" शालिनी ने घृणा से उसकी ओर देखते हुए कहा।

"ज़िंदगी का मज़ा ले रहे हैं, और क्या—!" कुमुद बोली।

"यह भी कोई तरीका है! देखो, किस बेशर्मी से किसी गैर मर्द के गले का हार बनी हुई है!"

"गैर तो हमारे लिए है, उसका तो अपना होगा।"

कुमुद की बात पर सबकी हंसी छूट गई, लेकिन अंजना चुपचाप उनकी बातें सुनती रही। वह चोर-निगाहों से अब भी बनवारी की किश्ती की ओर देख रही थी जो धीरे-धीरे दूर होती जा रही थी। उसे लगा जैसे नशे में केवल बनवारी ही नहीं उसकी नाव भी झूम रही है।

"तुम क्या सोच रही हो भाभी? शालिनी ने उसे मौन देखकर पूछा।

"कुछ भी नहीं।" अंजना बड़बड़ाई।

"झूठ!" आशा ने बात पकड़ते हुए कहा—"हंसते-हंसते अचानक यह खामोशी कैसी?"

"इसमें भी कोई पूछने की बात है! मैं जानती हूं भाभी के दिल की बात।" कुमुद तुरत बोली।

अंजना झेंप गई और चकित दृष्टि से उसके अधरों की छिपी हुई चंचल मुस्कान को देखने लगी जैसे सचमुच वह उसके दिल की बात भांप गई हो।

शालिनी ने तुरत पूछा—"क्या जान गई है तू ?"

"कह दूं भाभी ?"

अंजना ने उसकी आंखों की चमक देखी और हूं कहकर सिर झुका लिया।

कुमुद कुछ रुककर बोली—"शायद भाभी को अपना हनीमून याद आ गया है !"

कुमुद ने वह बात कहकर अंजना का दिल छलनी कर दिया, लेकिन वह उसे सह गई और एक फीकी-सी मुस्कराहट के साथ बोली—"ठीक कहती हो कुमुद ! यह जीवन स्मृतियों का सहारा ही तो ढूंढ़ता रहता है चाहे वे खुशी दें, या चुभन दें।"

अंजना की बात सुनकर सब चुप हो गईं और मौन धारण किए उसे निहारने लगीं जिसकी पलकों पर आंसू मोतियों की तरह चमक रहे थे।

वह फिर मुस्करा पड़ी और लड़कियों को दूर पहाड़ी चोटियां दिखाने लगी जो सुनहरी धूप में नीले आकाश तले अकेली और शांत खड़ी थीं।

जब अंजना लड़कियों को लिए हुए घर लौटी तो वे सब उपवन में घास के फर्श पर सुस्ताने बैठ गईं। अंजना ने चाय के लिए पूछा और वह बनाने के लिए कहने को अन्दर चली गई।

सदर हाल में पहुंचते ही वह ठिठक गई। बाबूजी के साथ कमल बाबू बैठे शतरंज खेल रहे थे। आहट पाते ही कमल ने अंजना की ओर देखा और इशारों ही इशारों में दोनों ने एक-दूसरे का स्वागत किया।

"कहां गए थे तुम सब लोग ?" लाला जगन्नाथ ने पूछा।

"झील तक, योंही जरा घूमने-फिरने।"

"शालो कहां हैं !" कमल ने पूछा।

'बाहर लान में सहेलियों के संग बैठी है।"

"चलो अच्छा हुआ, कुछ हंसे-बोलेगी, वरना कल से घर बैठी बोर हो रही थी।"

"खैर, वह बोर हो रही थी या नहीं, लेकिन मेरे घर की रौनक जरूर बढ़ गई है।"

"वह कैसे अंकिल ?"

"आज मैंने बहू को पहली बार हंसते देखा है इस घर में।" लालाजी ने बहू की ओर देखकर कहा।

अंजना यह सुनकर झेंप गई और लजाकर मुंह दूसरी ओर फेर लिया। कमल के अधरों पर मुस्कान खेलने लगी।

वह शालो और उसकी सहेलियों के लिए चाय बनाने चली गई और कमल चुपचाप बैठा शतरंज की चालें चलता रहा।

"अंकिल ! कितनी सौभाग्यवती है आपकी बहू, जिसके सिर पर आपका साया है !"

"सौभाग्यशाली तो हम हैं कमल जिन्हें इतनी अच्छी बहू नसीब हुई ! यह भी मैं अपने कर्मों का फल भुगत रहा हूं। न मैं इस चांद जैसी बहू को ठुकराता और न मुझे यह सज़ा मिलती।" यह कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू उतर आए लेकिन उन्होंने बड़े धीरज से काम लिया और पुनः खेल में व्यस्त हो गए।

कमल ने उनकी भावनाओं को और भड़काना उचित नहीं समझा और चुप्पी साधकर चालें चलने लगा।

लालाजी से रहा न गया। कमल की चुप्पी उन्हें डसने लगी। उसने उनकी दुखती रग को छेड़ दिया था। उन्होंने सहसा कमल के कंधे पर हाथ रख दिया और उसकी ओर देखते हुए बोले—"लेकिन एक बात है बेटे !"

"क्या ?"

"जब से यह इस घर में आई है, मैं जवान बेटे की मौत का गम भूल गया हूं। ऐसा लगता है जैसे बेटा देकर बेटी ले ली हो।"

कमल ने केवल सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति जताई और खेल में व्यस्त हो गया।

चाय तैयार हो गई। सब लोग एक मेज़ के इर्द-गिर्द जमा हो गए। अंजना ने आज चाय के साथ खाने की कई अच्छी-अच्छी चीजें रखीं। लालाजी ने जब उन चीजों की प्रशंसा की तो शांति भी हां में हां मिलाने लगी और शालिनी भी सराहना करने में पीछे नहीं रही।

बातों-बातों में जब शालिनी ने अपने घर आने की दावत दी तो अंजना ने इंकार कर दिया। वह राजीव की बीमारी का बहाना करके बात को टाल देना चाहती थी। जब शालिनी ने अधिक ज़िद पकड़ी तो बाबूजी से न रहा गया। उन्होंने बिना अंजना से पूछे ही हामी भर ली।

बहू ने चौंककर उनकी ओर देखा तो वे मुस्कराकर बोले—"हां बहू इसमें इंकार कैसा ! शालो कौन बार-बार नैनीताल आने

वाली है !"

बाबूजी की बात सुनकर शालिनी खुशी से झूम उठी। अंजना ने शांत भाव से कमल की ओर देखा जिसका चेहरा बहन की तरह खुशी से दमक रहा था। उसे लग रहा था इस हठ में ज़बान शालो की थी, लेकिन दिल कमल का।

वे लोग चले गए। अंजना उन्हें बाहर के दरवाज़े तक छोड़ने गई। वह बड़ी खुश थी। लेकिन ज्योंही उनकी जीप रवाना हुई वह देर तक दरवाज़े का सहारा लिए वहीं खड़ी उस जीप गाड़ी को देखती रही जो झील के किनारे-किनारे वीरान सड़क पर दौड़ती चली जा रही थी। जब वह उसकी नजरों से ओझल हो गई तो वह भी अन्दर जाने के लिए पलटी।

आज उसे अन्दर जाना अच्छा नहीं लग रहा था। वह उस खुले वातावरण और हवा के हल्के-हल्के झोंकों को छोड़कर फिर उस घुटन में जाने से डर रही थी। सुहाना मौसम, खुला आकाश और उसपर चिड़ियों की मनोहर चहचहाहट ! वह इन सबको छोड़कर अन्दर जाने से कतरा रही थी।

दो कदम आगे बढ़ी और रुक गई। रमिया सामने जंगले पर से राजीव के धुले कपड़ों को जो अब सूख चुके थे, उतार रही थी। अंजना ने उसके पास आकर पूछा—"राजीव कहां है ?"

"मांजी के पास बैठा खेल रहा है।"

"उसने दूध पी लिया ?"

"जी।"

"तो एक काम कर रमिया !"

"क्या बहू रानी ?"

"ये सब कपड़े प्रेस कर ले, आज मेरा जी नहीं चाहता।"

यह कहकर अंजना बगिया की ओर चली। जाते-जाते कुछ सोच-कर रुकी और रमिया से बोली—"कोई मुझे पूछे तो कह देना—यहीं हूँ, सामने पेड़ों के तले।"

अंजना बिना कुछ उत्तर दिए उपवन के उस ओर चली गई जो जंगल से मिलता था। घने पेड़ों के झुंड में जाकर वह ओझल हो गई। रमिया ने आज से पहले कभी बहू रानी को इतना खुश नहीं देखा था।

अभी तक उसके कानों में बहू रानी के ये शब्द निरंतर गूंज रहे थे—'ये कपड़े प्रेस कर ले। आज मेरा जी नहीं चाहता।'

वह इस बात की गहराई समझे बिना कंधे झटककर रह गई और जल्दी-जल्दी कपड़े समेटने लगी।

इतने में उसके कानों में एक भनभनाहट की सी आवाज़ आई। पहले तो उसे लगा जैसे किसी जानवर की आवाज़ हो, लेकिन जब वह आवाज़ दो-तीन बार और सुनाई दी तो वह चौकन्नी हो गई और घूमकर उस ओर देखने लगी जिधर से वह आवाज़ आ रही थी।

घास पर सूखे पत्तों की एक सरसराहट उभरी और इसके साथ ही बनवारी का चेहरा एक पेड़ के तने के पीछे से उभरा। वह इशारे से उसे अपने पास बुला रहा था।

पहले तो रमिया उसे वहां देखकर डर गई, लेकिन फिर चारों ओर किसी और को न देखकर वह धीरे-धीरे उस ओर बढ़ गई। बनवारी ने उसे और पास आने का संकेत किया।

"क्या बात है ?"

"तुम्हारी मालकिन कहां हैं ?"

"क्यों ?"

"ज़रा उनसे काम था।"

"तो अंदर चले जाओ, मिल लो जाकर।"

"नहीं, मुझे तुम्हारे कुत्ते से डर लगता है।"

"अरे वह तो किसीको कुछ नहीं कहता ! हां, चोर-उच्चकों को तुरत पहचान लेता है।"

रमिया की बात सुनकर उसकी सांस एक क्षण के लिए गले में अटककर रह गई, लेकिन उसने अपनी घबराहट छिपाते हुए पूछा—"उस दिन तुमने वह खत मालकिन को दे दिया था ना ?"

"हां, और उन्होंने आगे कोई और खत लेने के लिए मना कर दिया है।"

"कहीं तुमने मालकिन से यह तो नहीं कह दिया कि मैंने तुम्हें इनाम दिया था ?"

रमिया इस सवाल पर चिहुंक उठी और उसने नकारात्मक ढंग से सिर हिला दिया।

बनवारी ने तुरत जेब से दस रुपये का एक नोट निकाला और उसकी ओर बढ़ाता हुआ बोला—"यह लो, रख लो।"

"आज कोई और चिट्ठी देनी है उन्हें ?"

"नहीं, यों ही दे रहा हूं। तुम्हारा मामूली तनख्वाह से क्या बनता होगा !"

"नहीं, मैं नहीं लूंगी।"

"अरे पगली, रख ले। मैं तुम्हारी मालकिन से कहने थोड़े ही जा रहा हूं और तुम भी न कहना।"

"क्यों ?"

"ये लोग किसी गरीब का पेट भरते देखकर खुश नहीं होते।"

"पेट तो भर जाता है पर नज़र नहीं भरती।" रमिया ने ललचाई नज़रों से बनवारी के हाथ में दबे नोट की ओर देखा और उसके तनिक और कहने पर वह नोट ले लिया।

जब वह उस नोट को अपनी चोली में रख रही थी तो बनवारी की भूखी निगाहें उसके गदराये सीने पर अटक गईं।

वह झेंप गई और अपने को समेटते हुए बोली—"कोई काम था तुम्हें मालकिन से ?"

"हां, जाकर ज़रा उसे खबर तो दे कि मैं यहां हूं।"

"लेकिन वे अन्दर नहीं हैं।"

"कहां गई ?"

"उन पेड़ों के झुंड के पीछे।"

"अकेली या···"

"बिल्कुल अकेली।"

"तो मैं वहीं चला जाता हूं।"

"तुम अन्दर चले आओ ना! मैं उन्हें खबर किए देती हूं।"

"नहीं, मैं खुद ही मिल लूंगा। तुम तो जानती हो, वह मेरी सूरत देखकर ही जल उठती है।"

"हूं।"

"देखो, तुमसे कोई पूछे कि मालकिन कहां है तो कह देना कि हमें मालूम नहीं।"

रमिया ने सिर हिला दिया और बनवारी चला गया, लेकिन रमिया के लिए एक पहेली छोड़ गया। ऐसी ही बात मालकिन ने भी उससे कही थी कि कोई उसके बारे में पूछे तो कह देना कि यहीं पेड़ों तले हैं।

उसने इस उलझन को सुलझाने की कोशिश नहीं की और इधर-उधर देखने के बाद अपनी चोली से वह दस का नोट निकालकर देखने लगी। नोट बिल्कुल नया था। उसकी उंगलियों में बड़ी मनोहर खड़खड़ाहट पैदा कर रहा था। वह उसे देखकर मुस्करा उठी और फिर उसे अपनी चोली में अड़स लिया।

रमिया का इशारा पाकर बनवारी धीरे-धीरे उधर ही बढ़ता गया जिधर कुछ देर पहले अंजना गई थी। पिछवाड़े का यह भाग उजाड़ और सुनसान था। यह रास्ता झील के दूसरी ओर पैदल जाने के लिए बना हुआ था।

बनवारी उसी रास्ते पर दबे-दबे कदम उठाता हुआ बढ़ता चला गया और घने वृक्षों के उस झुरमुट में पहुंच गया। इस समय वह एक भेड़िये की तरह चौकन्ना चारों ओर देख रहा था और अपने शिकार की गंध पाने का प्रयास कर रहा था।

सहसा बनवारी के कानों में अंजना की सुरीली आवाज़ पड़ी। वह सब कुछ भूल-बिसारकर कुछ गुनगुना रही थी। बनवारी बढ़ता हुआ उस पेड़ के तने के पास पहुंच गया जहां से वह उसे भली भांति देख सकता था।

वह होंठों ही होंठों में कोई गीत गुनगुना रही थी और निश्चित जंगली घास पर बैठी झील के उस शांत जल की ओर देख रही थी जो एक खाड़ी बनाता हुआ जंगल के उस कोने तक आ गया था।

अकस्मात् उसकी गुनगुनाहट पेड़ों में दबकर रह गई और वह हसों के उस जोड़े की ओर टिकटिकी बांधकर देखने लगी जो उस ठहरे हुए पानी में नहा रहा था। उन पक्षियों को फड़फड़ाते देख उसका मन खिल उठा और आंखें हर्ष से चमक उठीं।

वह बनवारी की उस विषैली दृष्टि से नितांत अचेत थी जो कुछ ही क्षणों में उसकी आंखों की चमक अपने विष से हर लेने वाली थी।

बनवारी चील की तरह उसके फड़फड़ाते हुए हृदय को अपने पंजों में दबोचने के लिए आगे बढ़ा और अंजना की पीठ के पीछे आकर रुक गया। उसने एक जंगली फूल तोड़कर अंजू के गाल पर दे मारा। वह एकदम हड़बड़ाकर रह गई।

जैसे ही उसने उस शैतान को अपने पास देखा, उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। अब वह संभलकर बैठ गई और चिढ़ती हुई बोली—"तुम! तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"अपनी अंजू का पीछा।"

"क्यों?"

"अपनी खोई हुई मुहब्बत को फिर से दिल में बसाना चाहता हूं।"

"मुहब्बत!" वह झुंझला उठी।

"हां, वह मुहब्बत जिसे डिप्टी साहब की दौलत ने अपने आंचल में छिपा रखा है।"

"तुम फौरन यहां से चले जाओ वरना—वरना मैं चिल्लाकर···"

"नहीं अंजू ! अब तुम ऐसा नहीं कर सकोगी।" बड़े दृढ़ स्वर में बनवारी ने कहा और उसके पास आ बैठा।

अंजना घबराकर उठने लगी तो उसने उसका आंचल पकड़ लिया। वह वहीं की वहीं गठरी बनकर बैठ गई और अपने-आपको समेटकर उसकी पिशाच सदृश सूरत देखने लगी। भय से वह अधीर हो उठी। उसके होंठ फड़कने लगे।

"उस दिन मिलीं तो भाग आई, घर आया तो बेइज़्ज़ती करके निकाल दिया और आज यहां दीदार हुआ तो घृणा से मुंह मोड़ लिया।"

"और क्या करूं ? तुम्हारा और मेरा रिश्ता ही क्या है ?"

'तुम्हारा-मेरा संबंध उन रिश्तों से कहीं गहरा है जो तुमने आजकल डिप्टी साहब के यहां बना रखे हैं।"

अंजना व्याकुल हो उसे निहारने लगी। बनवारी अपनी विषैली मुस्कराहट के साथ कहता रहा—"कह दो, मैं झूठ कह रहा हूं। यह बहू ! यह बच्चे की मां और फिर यह रंडापा !, इन रिश्तों से तो कहीं गहरा है अपने प्यार का रिश्ता !"

"यह झूठ है।" वह तिलमिला उठी।

"तो सच क्या है ? तुम्हीं बता दो।"

"मैं खुद नहीं जानती बनवारी ! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, तुम यहां से चले जाओ।"

"ताकि तुम पूनम बनकर बुड्ढे की सारी जायदाद की अकेली मालकिन बन जाओ ! बिना शादी किए उस बच्चे को अपनाकर अपनी ममता का ढोंग रचा सको ! बेवा का स्वांग भरकर कमल बाबू की मुहब्बत को जीत सको !"

"बनवारी !" वह भर्राई आवाज़ में चिल्लाई। घायल हिरनी की तरह उछलकर खड़ी हो गई और बिना उसकी ओर देखे एक ओर चल दी।

बनवारी ने लपककर उसका रास्ता रोक लिया—"अब ऐसा नहीं हो सकता अंजू ! तुम मेरी मुहब्बत को ठुकराकर नहीं जा सकतीं।"

"अपनी कामुकता और विलासिता को मुहब्बत का नाम मत दो बनवारी ! मेरी मजबूरियों का मज़ाक मत उड़ाओ। मेरी ज़िंदगी से दूर चले जाओ।"

यह कहते ही अंजना फिर आगे बढ़ी। बनवारी ने झपटकर उसकी कलाई पकड़ ली, लेकिन अंजना ने एक ही झटके से अपनी बांह छुड़ा ली। इससे पहले कि वह संभलता, वह पेड़ों की झुरमुट में गायब हो गई और हिरनी की तरह चौकड़ियां भरती हुई अपनी बगिया में पहुंच गई।

बनवारी उसका पीछा करते-करते रुक गया, उसके कदम रास्ते के उस पत्थर से ठोकर खाकर रुक गए जिसके पास मोतियों का एक हार गिरा पड़ा था। बनवारी उस मूल्यवान हार को देखकर अपनी बेइज्ज़ती और अंजना की बेरुखी को भूल गया। उसकी सुर्ख आंखों में एक धुंधली-सी चमक उभरी। हार उठाकर उसे एक जौहरी की तरह अपनी उंगलियों और निगाहों से टटोलने लगा और फिर बड़-बड़ा उठा—"कोई बात नहीं अंजू! तुम्हारा यह हार तुम्हारी बेरुखी का बदला चुका देगा।"

हांफती हुई अंजना जब बड़े हाल में पहुंची तो अपने ससुर को देखकर ठिठक गई।

लाला जगन्नाथ ने अपनी बहू की परेशान और भयभीत सूरत देखकर तुरंत पूछा—"क्यों, क्या हुआ बहू?"

"कुछ नहीं, योंही बाबूजी!"

"कहो ना क्या बात है? इतनी घबराई हुई क्यों हो?"

"मैं···मैंने पिछवाड़े, वह जंगली रास्ता है ना। वह जो—जो झील की ओर जाता है, वहां एक जानवर देखा—" वह उखड़े सांसों को ठीक करती हुई बोली।

"लेकिन तुम्हें वहां जाने के लिए किसने कहा था? वह रास्ता तो वीरान है। कभी-कभी वहां भेड़िया आ जाता है।"

"जी बाबूजी, वह भेड़िया ही था।" अंजना ने घबराई हुई आवाज़ में कहा और सीढ़ियों की ओर बढ़ी। अचानक उसकी नजर रमिया पर पड़ी जो पहले ही सीढ़ियों पर खड़ी थी।

रमिया को मुस्कराता देखकर अंजना झल्ला उठी। उसका क्रोध देखकर रमिया झेंप गई और राजीव के कपड़े लिए तेजी से ऊपर चढ़ गई।

जब वह कमरे में कपड़े रखकर बाहर निकल रही थी तो अंजना को आते देख वहीं खड़ी हो गई।

अंजना ने उसे गहरी निगाहों से देखते हुए पुकारा—"रमिया!"

"जी!"

"तू मुझे देखकर हंस क्यों पड़ी थी ?" अंजना ने शंकित दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए पूछा ।

"जी···जी···वह भेड़िये वाली बात पर । आप डर गई थीं ना!"

मालकिन की नज़रों में क्रोध देखकर वह बड़े निनम्र स्वर में बोली—"मुझसे गलती हो गई बीबोजी !"

रमिया चली गई लेकिन अंजना के दिल का भय नहीं गया। बार-बार एक ही विचार उसके मन में खलबली मचा रहा था कि कहीं रमिया ने बनवारी को देख तो नहीं लिया !

१४

नैनीताल की सुन्दर वादी, हरियाली और जंगलों की गहनता शालो और उनकी सहेलियों को बहुत भाई । उनकी टोली में अंजना और कमल भी थे। अंजना कुछ देर के लिए अपनी घुटन भूल गई थी और वह उन लड़कियों में घुल-मिल गई थी । उसकी चंचलता फिर लौट आई थी । वह पहाड़ियों की तलहटियों में अठखेलियां करती, कूदती-फांदती । ऐसा लगता जैसे कोई तितली पर फैलाए कभी यहां कभी वहां उड़ती फिर रही है । इस इठलाती और छलकती जवानी की आंख जब कभी कमल से मिलती तो वह झिझक जाती। उसकी आंखों में लज्जा का आवरण लहरा जाता । उसके अंग-अंग से टपकती हुई शोखी और चुलबुलाहट फीकी पड़ जाती । वह गुम-सुम-सी होकर दूसरी ओर देखने लगती ।

उसकी इन भंगिमाओं से कमल के हृदय में एक तहलका-सा मच जाता । मन कुछ अजीब तरह से मथने लगता, लेकिन चेहरे की गंभीरता उसे प्रत्यक्ष न होने देती। वह डरता भी था कि कहीं उसकी ज़बान से कोई ऐसी बात न निकल जाए जिससे हंसती, खेलती सौंदर्य की यह प्रतिमा पाषाण-मूर्ति बनकर रह जाए । अतः वह उससे नज़रें चुराकर दूसरी ओर निकल जाता या उन लड़कियों से बातें करने लगता ।

वे घूमते-फिरते पिकनिक के मूड में बहुत दूर निकल आए थे। हिमालय की फैली हुई घाटियों का नज़ारा देखते-देखते वे उस झील के पास आ पहुंचे जो दो पहाड़ियों के बीच घिरी हुई थी । ऊपर पहाड़ों से एक झरना गिर रहा था जो सीधा उस झील में आकर समा जाता था। पानी की वह फुहार सुनहरी धूल में यों चमक रही थी

जैसे चांदी के झिलमिलाते हुए कण नीली गहराइयों में डूब रहे हों।

लड़कियां थक चुकी थीं। वे सुस्ताने के लिए झील के किनारे एक चट्टान पर बैठ गईं। कुमुद को चाय की तलब लगी और फिर सब मिलकर नाश्ते की तैयारी में जुट गईं।

शालिनी ने अपने बैग में से बिस्कुट का पैकेट निकाला और उसे खोलकर सबको बांटने लगी।

अंजना कुछ देर के लिए उस टोली से अलग हो गई। कमल ने बिस्कुट को दांतों से काटते हुए उसकी ओर देखा। वह चट्टान को पार करती हुई उस झरने की ओर जा रही थी। कमल ने जब सब लड़कियों को अपने-आपमें मस्त पाया तो तश्तरी में से दो-चार बिस्कुट उठाकर अंजना का पीछा करने लगा।

वह धीरे-धीरे पथरीले रास्ते को पार करता हुआ उसके पास जा पहुंचा। वह झील के पास खड़ी उस झरने के अनोखे दृश्य का आनन्द ले रही थी। थोड़ी ही दूर पर हरी-हरी झाड़ियां थीं जिनपर खिले फूल अपनी छटा दिखा रहे थे।

अंजू धीरे-धीरे बढ़ती वहां तक चली गई और एक गुलाब का फूल तोड़कर उन्मादी-सी अपने जूड़े में लगाने लगी। सहसा उसके शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई। एक छाया दबे पांव आकर उसके पीछे खड़ी हो गई। उसने पलटकर देखा, सामने कमल खड़ा था। यह देखते ही उसके हाथ-पांव कांप उठे और वह फूल जूड़े में शोभा देने की बजाय धरती पर आ गिरा। उसने निगाहें नीची कर लीं।

कमल ने झुककर वह फूल उठा लिया और उसे उंगलियों में नचाते हुए उसकी ओर देखने लगा। वह मुड़कर फिर उस झरने को देखने लगी।

कमल चुपके से तनिक और सट गया और दबी आवाज़ में बोला—"फूल को जूड़े में लगाते-लगाते फेंक क्यों दिया ?"

"नहीं तो, योंही देख रही थी।"

"कि बालों में कैसा लगता है ?"

"जी।"

"यह तो जंगल है पूनम ! यहां दूर-दूर तक किसी जानने वाले का पता नहीं। कौन उंगली उठाएगा इस फूल को देखकर ? जी चाहता है तो लगा लो।"

"आपने गलत समझा। मुझे फूलों से कोई खास लगाव नहीं है।"

"झूठ ! लगाव न होता तो तुम उस बेचारे को उसकी टहनी से अलग करके अपने जूड़े में सजाते-सजाते पत्थरों पर न पटक देतीं।"

"शायद आपको उसपर तरस आ रहा है !"

"क्यों न आए ? तुम्हारे हृदय को असमंजस में पड़ा देख वह मुरझा जो रहा है।"

"इतना तरस आ रहा है तो अपने कोट के बटन में लगा लीजिए ना !"

अंजना घूमकर उसके सामने हो गई और कमल उसकी गहरी झील जैसी आंखों में निहारने लगा। वह बुत बना एकटक उसमें छलकती हुई जवानी की आभा को देखता रहा और राम जाने क्या सोचकर उस फूल को अपने कोट में लगा लिया।

"लो, तुमने हुक्म दिया और मैंने मान लिया, बस !"

अंजना ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया और खिसककर उस झरने के पास आ गई। चांदी की धार गिरने से संगीत की एक धुन जैसी बजती मालूम हो रही थी। वह एकचित्त होकर उसी सरोवर के संगीत में खो गई।

"क्या सोच रही हो !" कमल से मौन रहा नहीं गया।

"यह झरना कितना सौभाग्यशाली है।

"वह कैसे ?"

"सदियों से बहता जा रहा है। अपने हृदय की भड़ास निडर और बेझिझक दुनिया-भर को सुनाए जा रहा है।"

"हां पूनम ! जितना इसके भाग्य पर गर्व होता है उतना ही इस झील को देखकर दुख भी होता है।"

"वह क्यों ?"

"इसकी गहराइयां न जाने कब से तूफान के थपेड़ों को सहती आ रही हैं लेकिन मौन साधे हुए हैं। उनमें जो भी लहर उठती है वह इसका भेद उछालने के बजाय और पर्दा डाल देती है।"

"इंसान की जिंदगी भी तो कभी-कभी ऐसी ही गहराइयों में जा छिपती है कमल बाबू !"

"ठीक कहती हो। थोड़ी देर पहले जब तुम उन लड़कियों के साथ चंचलता और अठखेलियों पर उतर आई थीं तो मुझे तुम्हारे जीवन का वह अतीत याद आ गया था जो इस झरने के समान था।"

"और आज ?" वह थरथरा उठी।

"आज तो इस झील की तरह है—शांत और गहरा। इस नीले और गम्भीर धरातल के नीचे राम जाने कामनाओं के कितने तूफान मचल रहे हैं।"

यह सुनकर अंजना झेंप गई। वह समझ गई कि कमल उसके दिल की गहराइयों को नापने का यत्न कर रहा है। वह शायद उसमें छिपे हुए पीड़ा से भरे भेद को भावुकता की चिनगारी से सुलगाकर बाहर ले आना चाहता था। वह संभल गई और उसने अपनी उभरती आकांक्षाओं को वहीं दबा दिया। भावनाएं जो मचलने के लिए व्याकुल हो रही थीं, सहनशीलता की कड़ियों में बंधकर रह गईं लेकिन उन्हें सदा के लिए दबाए रखना और भी कठिन हो गया।

"क्यों, चुप्पी क्यों साध ली?"

आपके दार्शनिक विचारों पर सोच रही हूं। सच, अपनी जिंदगी इस झील की तरह ही है। हर घड़ी, हर समय मैं अपने-आपको ऐसी गहराइयों और अंधेरों में धकेल रही हूं जहां से लौट आना बहुत कठिन है।"

"यह तुम्हारा वहम है पूनम! तुम चाहो तो अभी भी पाताल से निकलकर आकाश पर आ सकती हो।"

"इसके लिए किसी बली की बांहों के सहारे की जरूरत है जो जिंदगी के सारे अंधेरों को जानते हुए उनको खत्म करने की ठान ले और जीवन के आशाओं के दीप प्रज्वलित करने में समर्थ हो सके।"

"जानती हो वह मजबूत बांहों का सहारा क्या है?"

उसने बड़े भोलेपन से कमल की ओर देखा और देर तक कोमल भावनाओं और वेदनाओं से भरी निगाहों से कमल की आंखों में झांकती रही। अन्त में कमल ने यह स्तब्धता तोड़ी:

"प्रेम, एक पवित्र प्रेम ही जीवन का सबसे बड़ा सहारा होता है।"

अंजना को इस 'प्रेम' शब्द ने डस लिया। उसकी रगों में इसका जहर उतरते ही एक भूचाल-सा आ गया। वह सहारा, जो उसके भविष्य को कालिख पोत गया था, आज फिर उसकी परीक्षा ले रहा था।

वह अपनी खामोशी के भार को अधिक न उठा सकी। दबी आवाज में बोली—"वह सहारा तो कब का टूट गया। अब तो केवल स्मृतियां शेष हैं।"

"एक बात कहूं, बुरा तो नहीं मानोगी?"

"ऊंहूं।"

"प्रेम की उन स्मृतियों को सदा के लिए दिल से निकाल दो।"

"कमल बाबू !"

"हां पूनम ! अब वह प्यार मैं तुम्हें दूंगा।"

ऐसी बात की आशा होने पर भी वह यह सुनकर कांप उठी। उसका चेहरा सहसा पीला पड़ गया। हाथ-पांव से ठंडे पसीने छूटने लगे।

सहसा शालिनी की आवाज़ ने दोनों को चौंका दिया। वह उन्हें तलाश करती हुई वहां तक आ गई थी। अंजना उसे देखते ही वहां से चल पड़ी। उसके मन में बैठा हुआ चोर उसे डराने लगा।

ज्योंही उसने कदम बढ़ाए, कमल ने उसे पुकारकर रोक लिया। बोला—"मैं तुम्हारे जवाब का इंतज़ार करूंगा पूनम !"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और संभलकर शालिनी के सामने आ गई। वह सबके लिए चाय तैयार करके उनकी राह देख रही थी।

जब सब लोग चाय पी रहे थे तो कमल अंजना के चेहरे की गम्भीरता का अध्ययन कर रहा था।

सहसा शालो ने कोट के कालर पर टंका हुआ फूल निकाल लिया और बोली—"यह क्या ! फूल तो औरतों के बालों में लगाते हैं और आप इसे कोट में लगाकर इसका मान घटा रहे हैं !"

यह कहते ही उसने वह फूल निकालकर अपने बालों में लगाना चाहा, लेकिन कमल ने बढ़कर उसका हाथ थाम लिया, बोला—"नहीं शालो ! भाई के कोट में लगा फूल बहन कभी अपने बालों में नहीं लगाती।"

शालो का हाथ वहीं रुक गया। वह फूल को हाथों में लिए उन सब लड़कियों का मुंह ताकने लगी जो अचकचाकर उसकी ओर देख रही थीं। शालो ने जब अंजना के चेहरे पर नज़र डाली तो लज्जा से उसने आंखें झुका लीं। शालिनी के मन में लज्जा की भंगिमा ने एक न मिटने वाला चिह्न अंकित कर दिया। उसने बात न बढ़ाई और वह फूल कुमुद के बालों में लगा दिया। इसपर सबकी हंसी छूट गई और वह बरबस बोल उठी—थ्री चेयर्स फॉर मिस कुमुद !"

इस दृश्य को देखकर अगर कोई झेंप रहा था तो वह था कमल !

अंजना जब पिकनिक से घर लौटी तो रात का पहला पहर बीत

चुका था। वह इतनी देर तक कभी घर से बाहर नहीं रही थी और आज लड़कियों ने इस बात की भी ज़िद की कि वह उनके साथ कमल बाबू के घर में रह जाए तो उसने साफ इंकार कर दिया। उसने शालिनी से अपनी ज़िम्मेदारियों का रोना रोया और यह भी बताया कि मां की अनुपस्थिति में रात को वह बाबूजी को अकेला नहीं छोड़ सकती। मां दो दिन से हरिद्वार तीर्थस्नान करने गई थी। घर पर बाबूजी के अलावा राजीव भी अकेला था और उसका जाना इसीलिए बड़ा आवश्यक था।

कमल बाबू ने उसकी बातों की गंभीरता समझी और उसे गेट से अंदर तक छोड़ने के लिए साथ हो लिया। लड़कियां जीप में बैठी रहीं।

अंजना ने कमल बाबू को साथ आते देखा तो बोली—"आप जाइए, मैं चली जाऊंगी।"

"नहीं, बाबूजी बुरा मानेंगे। जब गेट तक आ गया हूं तो वहां तक जाने में क्या हर्ज है!"

वह बहस न कर सकी और आंचल संवारती हुई तेज़ी से अंदर की ओर बढ़ी।

सदर हाल में कदम रखते ही उसे किसी आवाज़ ने चौंका दिया। कमरे में कोई बैठा बाबूजी से बातें कर रहा था। जानी-पहचानी आवाज़ से उसके कान खड़े हो गए। उसने पलटकर कमल की ओर देखा और इशारे से अन्दर आने के लिए कहा।

बाबूजी के सामने बनवारी बैठा उनसे बातें बना रहा था। उसे देखते ही अंजना को एक धक्का-सा लगा। उसकी दिन-भर की खुशियों को सहसा किसी मनहूस छाया ने अपनी घिनावनी चादर में ढांप लिया।

वह अपनी कंपकंपी पर अभी काबू न पा सकी थी कि बाबूजी उसे देखते ही बोल उठे—"लो, वह आ गई बहू! मैं न कहता था कि वह आती ही होगी!"

बनवारी ने सिर घुमाकर गहरी नज़रों से उसकी ओर देखा। वह वहीं जम-सी गई। उसमें इतनी शक्ति संचारित न हो सकी कि बढ़कर बाबूजी के चरणों को छू ले। इतने में कमल ने आगे बढ़कर बनवारी से हाथ मिलाया।

लाला जगन्नाथ यह देखकर चकित हो गए कि वह बनवारी को पहले से जानता है। उसे बैठने का इशारा करते हुए बोले—"बड़ी देर से बैठे बहू का इन्तज़ार कर रहे थे।"

"हां पूनम! आज अंजू का खत आया था।" बनवारी तुरत बाल पड़ा।

अंजू का नाम सुनते ही अंजना को ऐसा लगा जैसे किसीने तेज़ वार का छुरा घोंप दिया हो। इससे पहले कि वह कुछ कहती कमल बोल उठा—"अंजू कौन ?"

"मेरी बीवी। पूनम और वह एकसाथ पढ़ती थीं। बचपन से एकसाथ खेली हैं, इसीलिए उसने मुझे मजबूर किया कि मैं लौटते समय पूनम को साथ लेता आऊं। कुछ दिन के लिए उसका दिल बहल जाएगा और ये अपनी आंटी से मिल लेंगी।"

"मुझे कहीं नहीं जाना है। इन्हें कहिए कि मेरी चिंता न करें।"

"क्यों डिप्टी साहब। मैं न कहता था कि आंटी का नाम सुनकर यह बिगड़ जाएंगी। जब बेचारी पर मुसीबत का पहाड़ टूटा तो किसीने मदद न दी और आज—"खैर, जाने दीजिए।"

कमल ने जब बेसुरी बातों का भंडार खुलता देखा तो जाने की अनुमति चाही। बनवारी और लालाजी ने उसको रुकने के लिए कहा, लेकिन उसने शालो और उसकी सहेलियों का हवाला देते हुए अपनी विवशता बताई। वे सबकी सब बाहर जीप में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

रात का समय और दूरी का ख्याल आते ही लालाजी ने जाने की अनुमति दे दी। कमल अभिवादन करता हुआ बाहर चला गया। जाने से पहले उसने अंजना की ओर देखा तो वह कुछ खोई-खोई-सी थी।

डरते-डरते जब अंजना ने कमल से नज़रें मिलाईं तो कमल की मौन निगाहों ने उसके हृदय के भीतर की भावनाओं की चुगली कर दी। अंजना को लगा जैसे वह पुनः कह रहा है—'मुझे तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी!'

बनवारी ने चोर-नज़रों से उनकी आंखों ही आंखों में उमड़ती भावनाओं को पढ़ा और अपनी ज़हरीली मुस्कान को दबाते हुए पूछा—"यही आपके दोस्त का बेटा है ?"

"हां, कालेज की छुट्टियों में इसकी बहन अपनी कुछ सहेलियों को साथ लेकर नैनीताल आई हुई है। आज पिकनिक का प्रोग्राम था। बहुत ज़िद करके वह बहू को भी साथ खींचकर ले गई थी।"

"चलो अच्छा हुआ, ज़रा दिल बहल गया; और डिप्टी साहब! यह आप जैसे ज़िंदादिल लोगों का ही हौसला है जो जमाने की पर-

वाह किए बिना बहू को इस प्रकार घूमने-फिरने की इजाज़त दे देते हैं।"

"यह तो मेरा कर्तव्य है, धर्म है साहब!" बहू और बेटी में कोई अन्तर नहीं होता।"

"वाह वाह! वाह वा! क्या बात कही है आपने! अगर आप जैसे ख्यालात के दो-चार और पैदा हो जाएं तो कल्याण हो जाए। हाल ही की बात है, हमारे गांव में एक ज़मींदार ने अपनी जवान विधवा बहू की अपने हाथों दूसरी शादी कर दी।"

बनवारी की इस छिछोरी बात पर लाला जगन्नाथ ने पहले उसकी ओर कड़ी निगाहों से देखा और बहू को देखा जो यह सुनकर पसीने-पसीने हो गई थी। बाबूजी के होंठ कुछ कहने के लिए फड़के, लेकिन कुछ सोचकर वे चुप हो रहे और बनवारी ने भी अपनी धृष्टता के लिए क्षमा मांग ली।

अंजना वहां से जाने लगी तो बनवारी ने जेब से एक डिबिया निकालकर उसे भेंट की। अंजना ने अचकचाई दृष्टि से उसकी ओर देखा तो उसने डिबिया खोलकर उसकी ओर बढ़ा दी। डिबिया में सोने की एक ज़ंजीर थी जिसे देखते ही वह चौंक उठी।

"यह क्या है?"

"अंजू ने यह भेंट दी है राजीव के लिए और वहां जाने के लिए अगर इंकार करो तो कसम रखाई है।"

डिप्टी साहब ने बनवारी को अत्यधिक ज़िद करते देखा तो बहू को इंकार करने से मना कर दिया। बहू विवश होकर बाबूजी के सामने झुक गई और बोली—"अगर यह बात है बनवारी, तो इसे अपने हाथों ही राजीव को पहना दो।"

"हां हां, कहां है राजीव?"

"ऊपर सो रहा है।" रमिया ने अन्दर आते हुए कहा और मेज पर रखे चाय के बर्तन समेटने लगी। बनवारी ने ज़ंजीर हाथ में ले ली और अंजना के साथ उसके कमरे में जाने के लिए खड़ा हो गया।

रमिया जल्दी से बाहर चली गई तो बाबूजी बहू से बोले—बनवारी बाबू का कहना है कि उनके साले की ज़मीन है हरिद्वार में गंगा के किनारे।"

"जी!" अंजना घबरा गई।

"शेखर की मां ने आश्रम के लिए जो जगह लेनी है, बनवारी बाबू से ही क्यों न ले ली जाए! इन्होंने बहुत सस्ते दाम में देने के

लिए कहा है।"

"हां पूनम ! वह अपना हजारी है ना, अंजू का भाई ! उसकी ज़मीन गिरवी पड़ी हुई है। ज़रूरतमंद है। आधे दामों मिल जाएगी। कहो तो दिला दें।"

"यह सब आप लोग जानें, मुझे तो इस बारे में कोई पता नहीं है।"

"तो एक काम करो बहू ! उस दिन जो रुपया दिया था न तुम्हें, उसमें से पांच हज़ार बनवारी बाबू को दे दो। फैसला हो गया तो वहीं बात पक्की हो जाएगी।"

बाबूजी की बात सुनकर अंजना के पांव तले से ज़मीन खिसक गई। फिर भी जैसे-तैसे उसने अपने-आपको संभाला और बनवारी को साथ लेकर अपने कमरे में चली गई।

कमरे में पहुंचते ही बनवारी ने ज़ंजीर को अपनी उंगलियों में नचाया और राजीव के भोले चेहरे की ओर देखते हुए बोला—"इसे काजल लगाकर रखा कर। कहीं बुरी नज़र न लग जाए।"

अंजना ने पलटकर बनवारी की ओर देखा जो बड़े ध्यान से बच्चे को देख रहा था।

ज्योंही उसने वह ज़ंजीर उसके गले में डालनी चाही, अंजना ने लपककर उसके हाथों से छीन ली और बोली—"रहने दो। मत छुओ इसे।"

बनवारी ने एक अपने विशेष ढंग से अंजना की ओर देखा जिसके नथने क्रोध से फड़फड़ा रहे थे। वह उसे देखकर मुस्कराया और बोला—"वाह ! जवाब नहीं तुम्हारा ! खुद ही प्यार से बुलवाया और खुद ही दुतकारने लगीं।"

"मैंने तुम्हें जान-बूझकर यहां बुलाया है।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि तुम्हें बता दूं कि जिन उद्देश्यों को लेकर तुम यहां आए हो वे कभी पूरे नहीं होंगे।"

"कोई बात नहीं। अगर पूरे नहीं होंगे तो चला जाऊंगा।"

"तुम्हें बाबूजी के सामने ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए थीं।"

"वह शादी की बात ! एक बात बताओ अंजू ! उफ ! हां, अंजू नहीं पूनम ! क्या यह सच नहीं कि तुम्हें कमल बाबू से प्यार हो गया है ?"

"तुम्हें इससे क्या ?"

"प्यार का सौदागर हूं। कोई पते की बात ही बताऊंगा।"

वह चुप हो गई। उसका अंग-अंग क्रोध से फड़क रहा था, लेकिन वह अपनी मजबूरियों में बुरी तरह जकड़ी हुई थी।

उसे मौन देखकर वह फिर बोला—"कमल बाबू का क्या इरादा है?"

"उनको छोड़ो। तुम बताओ, तुम क्या इरादा लेकर यहां आए हो?"

"अपनी पुरानी मुहब्बत को फिर से जगाने आया हूं और—और या फिर उसकी कीमत लेने आया हूं।"

अंजना ने तुरत सामने वाली अलमारी खोली और उसमें से रुपयों का एक बंडल निकालकर थमा दिया। बोली—"गिन लो, पूरे पांच हज़ार हैं।"

"यह तो हरिद्वार की ज़मीन की पेशगी है—अंजू के भाई की रकम! अंजू के दिलदार का मुंह बन्द करने का भी तो कुछ दो।"

अंजना ने उसी झल्लाहट में कुछ और रकम निकाली और उसे थमा दी। नोटों की झलक देखते ही बनवारी की आंखें चमक उठीं और खुशी के मारे दिल उछलने लगा। वह मुस्कराता हुआ कमरे से बाहर जाने लगा।

अंजना ने क्रोधित नज़रों से उसे देखा तो वह रुककर बोला—

"तुम कितनी अच्छी हो पूनम!"

"अब कभी दुबारा यहां आए तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।"

बनवारी ने दुष्टता-भरी एक दृष्टि उसपर डाली और गरदन हिला दी, मगर जाते-जाते बोला—"ख्याल रखना, अंजू की भेजी यह ज़ंजीर किसी और को मत दिखाना।"

"क्यों?"

"यह असली नहीं नकली है।"

बनवारी चला गया, लेकिन अंजना के जीवन में एक उथल-पुथल मचा गया। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे एकसाथ कई हथौड़ों ने उसके दिमाग पर चोटें लगानी शुरू कर दी हैं। इस आभास से ही वह बौखला उठी। जिन सितारों को छूने की अभिलाषा में वह एक अनजानी मंज़िल की ओर बढ़ रही थी उसे स्याह बदलियों ने घेर लिया।

वह निढाल होकर बिस्तर पर बैठ गई। सामने वह नकली सोने की जंजीर पड़ी हुई थी जो बनवारी राजीव के लिए दे गया

था। उसे ऐसा लगा जैसे वह ज़ंजीर नहीं है बल्कि बल खाए सुनहरी नागिन बैठी है।

वह तड़पकर उसकी ओर बढ़ी। क्रोध और घृणा से उसे उठाया और ज़ोर से खिड़की के बाहर फेंक दिया।

ठीक इसी समय कोई कमरे में आ गया। अंजना ने मुड़कर देखा—सामने रमिया खड़ी थी। रमिया ने उस सोने की ज़ंजीर को बाहर फेंकते हुए देख लिया था। वह चिल्ला उठी—"यह क्या बहू रानी!"

"चुप रह! तुझे इससे क्या?"

"मुझे तो कुछ भी नहीं, लेकिन…"

"जा, अपना काम कर।"

"जी।"

रमिया चुपचाप बिस्तर लगाने लगी। उसकी निगाहें बार-बार मालकिन की घबराहट का अनुमान लगा रही थीं। कमरे में शांति छाई थी लेकिन वादी में चलती हुई ठंडी हवा सांय-सांय गूंज रही थी।

जब काफी देर तक मालकिन ने रमिया से कुछ नहीं कहा तो वह बोल उठी—"जानती हो बहू रानी! आज रात तूफान आने वाला है।"

"तुम्हें कैसे मालूम?" वह चिढ़कर बोली।

"पहाड़ों से आती हुई यह आवाज़ सुनाई दे रही है ना? यह तूफान आने की निशानी है।"

"होगी। मैं क्या करूं?"

"योंही कह दिया। आप जब सोएं तो खिड़कियां-दरवाजे सब बन्द कर लें।"

रमिया चली गई लेकिन उसकी कही हुई बात अंजू के दिमाग में बुरी तरह खटकने लगी। तूफान के भय से उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गई। उसे लगा जैसे वह तूफान उस वादी में नहीं, उसकी अपनी ज़िंदगी में आने वाला है।

हवा की सांय-सांय के साथ उसके मन की कुलबुलाहट क्षण-प्रतिक्षण बढ़ती चली गई और फिर हवा के एक तेज़ झोंके ने खिड़की के पल्लों को एक-दूसरे से टकरा दिया। इसके साथ ही कोने में रखा हुआ पैडस्टल लैम्प फर्श पर गिरकर चकनाचूर हो गया।

एक अजीब-सा शोर हुआ और अंजना के मुंह से चीख निकल

गई। बत्ती के बुझ जाने से कमरे में गहन अन्धकार छा गया।

अंजना ने भयभीत हो इधर-उधर देखने की कोशिश की। चारों ओर भयानक अंधेरा छा गया था। वह तूफान, जिसके बारे में रमिया ने भविष्यवाणी की थी, वीरान वादियों से होता हुआ बस्ती में आ पहुंचा था।

उसने एक नज़र राजीव पर डाली जो इस तूफान से बेखबर गहरी नींद में सो रहा था। अंजना ने लपककर खिड़की के पल्ले बन्द कर दिए।

१८

बादलों की गरज और वर्षा के शोर ने आज नैनीताल की वादियों में तूफान मचा रखा था। कल तक जो सफेद बदलियां घाटियों को चूमती हुई दूर निकल जाती थीं, आज काली घटाएं बनकर घनघोर वर्षा करने पर तुली हुई थीं।

कमल अपनी लाइब्रेरी में बैठा जंगलों के उन मानचित्रों को देख रहा था जो नये ठेकों के लिए खुलने वाले थे। उसने अपनी लाइब्रेरी में ही सोने का प्रबन्ध कर रखा था, क्योंकि शयन-कक्ष पर शालो और उसकी सहेलियों ने अधिकार जमा रखा था।

वह जैसे ही दफ्तर की किसी फाइल के लिए सदर कमरे तक गया, उसकी नजरें अपने शयन-कक्ष में सोई हुई उन लड़कियों के चेहरों पर जा पड़ीं जो उस तूफान के शोर से अचेत मीठी नींद सो रही थीं।

शालो की तीनों सहेलियां दिन-भर की थकान के बाद एक-दूसरे से चिपटी पड़ी सो रही थीं और बड़ी अजीब-सी लग रही थीं। उनके इस सोने के ढंग को देखकर कमल के होंठों पर मुस्कराहट आ गई, लेकिन दूसरे ही क्षण वह झेंपकर अपने-आपमें आ गया।

शालिनी उसके लिए कॉफी का प्याला लेकर अन्दर आ गई थी। भइया को उस शयन-कक्ष में झांकते देखकर उससे रहा नहीं गया। वह व्यंग्यात्मक भाव से पूछ बैठी—"क्या देख रहे हो भइया?"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं। हां, उस तूफान को देख रहा था।"

"बाहर के तूफान को या उस तूफान को जो तुम्हारे दिल में उठ रहा है?"

"शालो!" वह एकदम गंभीर हो गया और बहन को बोलने

का और अवसर न देकर वह अपनी लाइब्रेरी में लौट आया। उसने फिर से फाइल देखनी शुरू कर दी।

शालिनी ने कॉफी का प्याला उसके सामने रखा। कमल ने निगाहें उठाकर अपनी बहन की ओर देखा।

वह दबी आवाज़ में बोली—"पी लो, ठंडी हो जाएगी।"

कमल ने चुपचाप प्याले को अपनी ओर सरका लिया और फिर कॉफी का एक घूंट भरा। गरम-गरम कॉफी से उसकी ज़बान जल गई। प्याला तुरत मेज़ पर रख दिया। इसपर शालो की हंसी छूट गई।

"जाओ, सो जाओ।" वह बोला।

"नींद नहीं आ रही है।"

वह चुप हो गया और फाइल के कागज़ों को देखता हुआ धीरे-धीरे कॉफी के घूंट भरने लगा। शालिनी सामने बैठ गई और चुपचाप उसके चेहरे को निहारने लगी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह नज़रें उठाकर चुपके से बहन की ओर देख लेता जो उसीकी ओर देखती जा रही थी।

अन्त में कमल से रहा नहीं गया। वह पूछ बैठा—"क्या देख रही हो?"

"भइया का चेहरा, कितना उदास रहने लगा है!"

"तुमने गलत समझा है शालो! मैं तो पहले से बहुत खुश हूं। इज़्ज़त की नौकरी है, ठाठ की ज़िंदगी है। अच्छा वातावरण है, सुन्दर-सी कोठी है। फिर भला मैं क्यों उदास रहने लगा!"

"एक बात की कमी जो है तुम्हारे जीवन में।"

"किस बात की?"

"एक जीवन-साथी की।"

"शालो!"

"हां भइया! मेरी भाभी आ जाए तो यह कमी पूरी हो जाएगी। एकान्त की चुभन दिल से निकल जाएगी। डैडी भी अपना दुख भूल जाएंगे।"

"हां, कुछ दिनों से मैं भी यह कमी महसूस कर रहा हूं।"

"तो कह दूं डैडी से कि भइया तैयार हो गए?" वह चमककर बोली।

कमल ने फाइलों को सामने से हटा दिया और अपनी बहन की भोलीभाली आंखों में झांकने लगा जिनमें हर्ष के आंसू चमकने लगे

थे। कमल उसकी ओर देखता रह गया।

"कहो ना भइया!"

"हां तो कह दूं, लेकिन लड़की कहां है?"

"एक बात पूछूं भइया?" शालो ने झिझकते हुए पूछा।

"हूं।"

"मेरी सहेलियों मे से तुम्हें कौन-सी पसन्द है?"

कमल उसकी बात सुनकर झेंप गया। इस झेंप की ओर तनिक भी ध्यान न देते हुए वह फिर बोली—"कहो ना, कौन-सी तुम्हें अच्छी लगती है—कुमुद, रेखा, आशा? जिसे कहो उसे खींच लाऊं तुम्हारी ज़िंदगी में।"

"नहीं शालो! इनमें से कोई भी ऐसी नहीं जो तुम्हारे भइया की ज़िंदगी बन सके।"

"तो फिर अपनी पसंद ही कह दो।"

"डरता हूं, कहीं तुम मुझसे नाराज़ न हो जाओ।"

"वाह! इसमें नाराज़ होने की क्या बात है? तुम्हें मेरी सहेलियां पसन्द नहीं, न सही, लेकिन अपनी पसन्द तो बता दो। मैं उसीको मनाकर अपने घर ले आऊंगी।

"क्या तुम ऐसा कर सकोगी?"

"क्यों नहीं? मैं अपने भइया के लिए आकाश के तारे तोड़ लाऊं।"

वह कुछ कहते-कहते रुक गया। शालो की व्याकुल नज़रें उसके उत्तर की प्रतीक्षा में उसकी ओर देखने लगीं। कमल की समझ में नहीं आ रहा था कि वह कैसे अपने दिल की बात अपनी बहन से कहे।

शालो ने जब और ज़िद की तो उसने साहस से काम लेते हुए दबी ज़बान में कहा—"मेरी पसन्द पूनम है, शालो!"

पूनम का नाम सुनते ही शालिनी के दिल को एक धक्का-सा लगा। उसने एक बार घूरकर भाई की ओर देखा और उसकी चमकीली नज़रें बुझ गईं। उसके होंठ थरथराने लगे। उसे भाई की बात का विश्वास नहीं हुआ। ऐसा लगा जैसे उसने उसका मुंह सदा के लिए बंद करने का एक सफल प्रयास किया है। उसकी चुप्पी देखकर कमल ने अपनी बात दुहरा दी कि पूनम ही उसकी संगिनी बन सकती है।

शालिनी हड़बड़ाकर अपनी जगह से उठी और कठोर स्वर में बोली—"विधवा! और वह भी एक बच्चे की मां! क्या दुनिया-भर

की क्वांरी लड़कियां मर गई हैं जो तुमने ऐसा सोचा भइया ?"

कमल उसकी यह बात सुनकर झेंप गया। उसने ज्योंही उससे निगाहें मिलाईं, शालो ने मुंह मोड़ लिया। क्रोध और घबराहट से उसके नथने फूल गए थे। वह कंधा झटककर उठी। कॉफी का प्याला उठाया और बिना कुछ कहे-सुने लाइब्रेरी से बाहर चली गई।

कमल का दिल बुझ गया। पूनम के बारे में घरवालों से बात करने से पहले उसने बहन का दिल टटोलकर देखने की कोशिश की थी। अब उसका रुख देखकर उसके मन पर निराशा की बदलियां छा गईं। वह पुनः अपनी दुनिया में लौट आया। सामने जंगलों के नक्शे और ठेकेदारों की फाइलें रखी थीं, जिनका निरीक्षण करके सुबह से पहले उसे पूरे साल की रिपोर्ट तैयार करनी थी।

वह फिर अपने काम में लग गया। बाहर तूफान बढ़ता ही जा रहा था। वर्षा का शोर और बादलों की गरज फिर उसके कानों से टकराने लगी, लेकिन इतने शोर में भी शालो की वह आवाज़ उसे सुनाई दे रही थी जिसने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया था—'विधवा ! और वह भी एक बच्चे की मां ! क्या दुनिया-भर की क्वांरी लड़कियां मर गई हैं जो तुमने ऐसा सोचा भइया ?'

जहां कमल आधी रात को अकेला अपनी तकदीर का फैसला कर रहा था वहां अंजना ने भी मन ही मन प्रण कर लिया कि वह इस जाल को तोड़कर बाहर आएगी जिसके तारों ने उसके जीवन का प्रत्येक क्षण जकड़ रखा है। वह आज आकाश के उन बादलों की तरह फट जाना चाहती थी ताकि उसके सीने में दबी हुई सारी आकांक्षाएं निकल जाएं और वह सुख और शांति से सांस ले सके।

घनघोर वर्षा वायुमंडल में ऊधम मचाए हुए थी, लेकिन वह सब कुछ भूल-बिसारकर अपने बिस्तर में बैठी अपनी जीवन-गाथा लिखती जा रही थी। वह पूनम का आवरण उतारकर अंजू के अस्तित्व को फिर से सामने ले आना चाहती थी। रात-दिन की घुटन, समाज का भय, बनवारी की धमकियां और वे भावनाएं जो कमल के प्यार मे अंगारों की तरह उसके सीने में दबी दहक रही थीं, वह उन सबको स्याही से कागज़ पर अंकित करना चाहती थी। आज वह कमल को सब कुछ लिख देना चाहती थी ताकि उसके प्रेम में उसका पाप बाधा न डाल सके, अतीत की परछाइयों की मनहूस छाया न पड़ सके।

उसने वह खत पूरा कर दिया। बार-बार उसे पढ़ा और उसे

कमल तक पहुंचाने का ढंग सोचने लगी। यह पत्र कल उसके भाग्य का फैसला करने वाला था।

अगले दिन सवेरे-सवेरे ही बाबूजी का बुलावा आ गया। वह जल्दी-जल्दी कपड़े पहनकर उनके शयन-कक्ष में जा पहुंची। उनके पैर छुए और हाथ बांधे बांदी की तरह खड़ी हो गई। उस समय वे सुबह का नाश्ता कर रहे थे।

यह देखकर वह हड़बड़ाकर दबी आवाज़ में बोली—"आज उठने में देर हो गई बाबूजी ?"

"अरे तो क्या हुआ ? हां, तुम्हारी सास की चिट्ठी आई है तुम्हारे नाम।" यह कहकर उन्होंने अंजना की ओर एक लिफाफा बढ़ा दिया।

अंजना ने घबराई हुई नज़रों से उस लिफाफे की ओर देखा और कांपती हुई उंगलियों से उसे थाम लिया। वह लौटने लगी तो बाबूजी ने उसे पढ़ने के लिए कहा। अंजना रुक गई और लिफाफा खोलकर चुपचाप खत पढ़ने लगी।

"क्या लिखा है शेखर की मां ने ?" वे कुछ देर के बाद पूछ बैठे।

"राज़ी-खुशी की चिट्ठी है। अपनी सेहत का ख्याल रखने को लिखा है। दस-बारह दिन और लगेंगे वहां।"

"इसीलिए मैं उसे बाहर नहीं भेजता बहू ! जहां जाती है, जाकर बैठ जाती है। घर का कोई ख्याल नहीं रहता।"

"तो क्या हुआ बाबूजी ? मैं जो हूं घर में।"

"वह तो है ही। मुझे घर की चिंता नहीं बहू ! बैठे-बैठे जी उकता जाता है। कोई बात करने वाला भी तो नहीं होता।"

सहसा वे चुप हो गए। वे बिना सोचे-समझे यह सब कह गए थे। उनकी इन बातों ने बहू को गंभीर और उदास बना दिया। अंजना बिना कुछ बोले वापस हो गई।

"क्या हुआ बहू ?" लाला जगन्नाथ ने बहू की गंभीरता को भांपते हुए कहा।

"कुछ नहीं बाबूजी ! यही सोच रही थी कि घर में जब कोई बात करने वाला न हो तो दिन कटना कितना दूभर हो जाता है !"

बहू की बात लाला जगन्नाथ के सीने में चुभ गई। वह उनके कमरे की बेतरतीब पड़ी चीज़ों को संभालकर रखने लगी और वे चुपचाप बैठे उसकी कही बात सोचने लगे। पूरी ज़िंदगी साथ बिताने के बाद भी शेखर की मां की थोड़े दिनों की अनुपस्थिति इस

बुढ़ापे में उन्हें खलने लगी थी, तो उनकी बहू पूनम जवानी की यह तपस्या कैसे निभा पाएगी ? इस बात का ख्याल आते ही उनका मन सिहर उठा।

अंजना जब कमरे से बाहर जाने लगी तो उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और बात का विषय बदलते हुए बोले—"लो, मैं भी कितना सठिया गया हूं ! काम क्या था और कहानी क्या शुरू कर दी !"

उन्होंने सामने रखी फाइल उठाने का संकेत किया और अंजना ने वह फाइल उठाकर उन्हें दे दी। लाला जगन्नाथ ने उसमें से कुछ सरकारी कागज़ों को निकालकर अंजना के सामने रख दिया और बोले—"बीमा के कागज़ात हैं। जहां-जहां क्रास लगे हुए हैं, वहां साइन कर दो।"

"लेकिन..."

"एक लाख की पालिसी है। शेखर ने तुम्हारे नाम की हुई है। तुम लोगों के पुराने पते से होकर यहां आई है।"

अंजना ने कांपते हाथों से उन क़ागज़ों को पकड़ लिया और पथराई-सी निगाहों से एक बार उन्हें देखा। बीमा कम्पनी शेखर का बीमा उसे दे रही थी—उसकी विधवा की जगह। यह ख्याल आते ही उसके दिल में एक ठेस-सी लगी, लेकिन वह संभल गई।

वह उन कागज़ों को लेकर जाने लगी तो लाला जगन्नाथ ने कहा—"बहू ! सबसे पहला काम यही करो और इन कागज़ों को माली के हाथ कमल के पास भिजवा दो। वह दफ्तर में इनका इंतज़ार कर रहा होगा। जान-पहचान की वजह से रुपया जल्द मिल जाएगा।"

अंजना अपने कमरे में लौट आई। उसने ध्यान से उस एक लाख की पालिसी को देखा। क्रास लगे निशान, जहां उसे हस्ताक्षर करने थे, गुनाह के धब्बे की तरह नजर आए। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि क्या करे और क्या न करे। एक ओर बाबूजी की आज्ञा और दूसरी ओर दिल की पुकार। वह एक विचित्र असमंजस में फंसी थी।

सहसा उसे कमल को लिखे हुए खत का ख्याल आ गया। उसने अपने तकिये के नीचे से वह खत निकाला जिसमें उसका जीवन-रहस्य छिपा हुआ था। वह रहस्य एक ऐसी चिंगारी थी जो अगर सुलग उठती तो न जाने कितनी ज़िंदगियों को अपनी लपेट में लेकर राख कर देती। लेकिन अंजना से यह सब सहन नहीं हो रहा था और वह यह भी जानती थी कि एक न एक दिन उसके जीवन में यह तूफान

आने वाला है। अतः अधिक दिनों तक वह क्यों उसे दबाए रखे ! वह अपने-आपको कमल की धरोहर समझ रही थी। आज उसे इस तूफान से अधिक अपनी पूजा का भरोसा था। उस तपस्या पर विश्वास था जो वह पिछले कई महीनों से करती आ रही थी।

उसने उस खत को दुबारा पढ़ा और अन्त में दो पंक्तियां और बढ़ा दीं। उसने अपनी विवशता भी खोल दी जिसके कारण वह बीमे के उन कागज़ों पर हस्ताक्षर करने जा रही थी। उसने लिफाफा सावधानी से बन्द किया और जल्दी-जल्दी क्रास लगे स्थानों पर हस्ताक्षर कर दिए।

उसने वे सारे कागज़ात एक बड़े लिफाफे में बन्द करके माली के हवाले किए। उसका दिल कांप रहा था। उन्ही कागज़ों में उसने अपना खत भी रख दिया था और माली को समझा दिया था कि उन्हें वह कमल बाबू को ही दे। माली के प्रश्नों से बचने के लिए उसने उन कागज़ों का महत्त्व बता दिया और तौलिया उठाकर नहाने चली गई।

माली जब कागज़ों को लेकर कमल के यहां जा रहा था तो लाला जगन्नाथ ने भी वहां तक सावधानी से पहुंचाने के लिए सतर्क किया और फिर बोले—"ज़रा बहू से कह दे, मेरी दवा और पानी दे जाए।"

"वह तो नहाने गई हैं सरकार !"

"कोई बात नहीं, तू ही ज़रा मेरे कमरे से वह दवाई ले आ। पलंग के सिरहाने मेज़ पर रखी है, और एक गिलास पानी भी।"

"जी बहुत अच्छा," कहकर माली ने कागज़ों का वह लिफाफा वहीं उनके पास रख दिया और कमरे की ओर चला गया।

लालाजी की नज़र उस लिफाफे पर पड़ी तो अचानक उन्हें ख्याल आया कि देखें बहू ने ठीक जगहों पर हस्ताक्षर किए हैं या नहीं। और फिर जैसे ही उन्होंने बीमे के कागज़ों को लिफाफे से बाहर निकाला, उनमें से एक छोटा-सा लिफाफा खिसककर फर्श पर जा गिरा। लालाजी ने झुककर वह लिफाफा उठा लिया और उसपर लिखा नाम पढ़ने लगे।

कमल का नाम पढ़कर उनका बूढ़ा शरीर डोल गया। उनके मन में एक शंका उभरी। बहू का खत कमल के नाम और वह भी बन्द लिफाफे में ! यह देखकर उनका दिल धड़कने लगा और फिर राम जाने क्या सोचकर उन्होंने वह खत जेब में डाल लिया और

बहकी-बहकी नजरों से उन कागजों को देखने लगे जिनपर पूनम के हस्ताक्षर थे।

माली के आने की आहट हुई तो उन्होंने कागजों को फिर लिफाफे में डालकर वहीं रख दिया। माली ने दवा की शीशी दी और पानी का गिलास मेज पर रख दिया।

लालाजी ने माली की ओर देखा और इशारे से उसे जाने की अनुमति दे दी। वह कागजों को लेकर चला गया। उन्होंने दवा की शीशी से दो गोलियां निकालकर पानी से उन्हें गले में उतार लिया। गोलियां खाते ही उनके बदन की कंपकंपी में कुछ कमी आ गई। रमिया बच्चे को उठाए बाहर जा रही थी। उन्होंने बहू के बारे में दुबारा पूछा। वह गुसलखाने में नहा रही थी। घर में और कोई नहीं था। उन्होंने चारों ओर निगाह दौड़ाई और कुछ सोचते, कुछ झिझकते उस खत को जेब से निकाल लिया।

लालाजी ने कांपते हाथों से बहू का पत्र खोला और पढ़ने लगे। ज्यों-ज्यों उनकी निगाहें उन पंक्तियों पर दौड़ रही थीं, उनका रंग बदलता जा रहा था। उनकी बहू इस घर में पूनम का रूप धरकर आई हुई है, यह जानकर उनका अपने ऊपर से विश्वास उठ गया। वे कभी सोच भी नहीं सकते थे कि जिस देवी की वे दिल ही दिल में पूजा करते हैं, वह उनकी बहू पूनम नहीं, बल्कि वह लड़की है जो कमल की शादी के समय घर से भाग गई थी। उन्हें अब उसकी हर बात में छल और कपट नजर आने लगा।

वह राजीव को लेकर किस इरादे से यहां आई थी—इसका अनुमान लगाना अब इतना कठिन नहीं था; लेकिन जहां उन्हें अपनी बहू का असली रूप जानकर रंज हुआ वहां उनके रंज की संवेदना कुछ कम भी हो गई कि जो सत्य कल खुलने वाला था वे उसे आज ही जान गए।

बहू की आवाज ने उन्हें चौंका दिया। वह स्नान करके बाहर आ चुकी थी। उसने ज्योंही रमिया को आवाज दी, लालाजी ने वह खत मुट्ठी में भींच लिया और जल्दी से उसे कोट की अन्दरूनी जेब में डाल लिया।

वह नौकरानी को तलाश करती हुई और अपने गीले बाल झटकती हुई बड़े हाल तक चली आई जहां लालाजी बैठे हुए थे। उन्हें देखते ही वह ठिठक गई और जल्दी से आंचल ठीक करके सिर झुका लिया।

उस आंचल में छिपी वह देवी आज उनके सामने मक्कार औरत का रूप धारण किए खड़ी थी।

अंजना ने जब उन्हें अपनी ओर कुछ विचित्र रूप से देखते हुए देखा तो वह पास आकर बोली—"मैं आपको दवा देना तो भूल ही गई बाबूजी !"

"मैंने पी ली है।"

तभी अंजना ने सामने मेज़ पर रखी दवा की उस शीशी को देखा जिसमें अब केवल दो गोलियां बाकी बची थीं।

उसने शीशी हाथ में लेकर कहा—"डाक्टर ने कहा है कि दस दिन तक यही दवा जारी रहनी चाहिए।"

"डाक्टरों का क्या है ! दवा लिख दी और चले गए। यह सोचना तो हमारा काम है कि यह कितनी महंगी मिलेगी।"

"ऐसा भी क्या बाबूजी ! जान है तो जहान है।"

"तुम ठीक कहती हो, लेकिन अब इस बुढ़ापे में अपना ख्याल भी तो खुद हमें ही रखना है।"

अंजना ने ध्यान से देखा। उनकी पलकों में आंसू बिखरते-बिखरते रह गए थे। वह उनके पास चली आई और तौलिये से उनका मुंह साफ कर दिया जो नाश्ते के बाद ठीक से साफ नहीं हो सका था।

"बाबजी !" उसने बड़े आदर-भाव से उनकी ओर देखा।

लाला जगन्नाथ ने भी पलकें उठाकर उसकी ओर देखा। उनका चेहरा अत्यधिक गंभीर था।

"एक बात कहूं, आप बुरा तो नहीं मानेंगे ?"

उसके सवाल को सुनकर लालाजी की मानो सांस रुक गई। ऐसा लगा जैसे वह अपने जीवन का वह रहस्य उनसे खोलने वाली हो। उन्होंने डरते-डरते सिर हिलाया।

अंजना धीरे से बोली—"मैंने एक लाख के बीमे पर साइन कर दिए हैं।"

"वह तो मैं जानता हूं।"

"लेकिन उस रुपये के अधिकारी आप हैं, केवल आप।"

लालाजी ने गहरी नज़रों से बहू की झील जैसी आंखों में झांका। उन्हें इस भावुकता के पीछे आज छल की झलक दिखाई दी। उन्हें बहू की हर बात, हर हरकत में बनावट का आभास हो रहा था। उसकी पलकों में आए हुए आंसू भी आज अंगारे मालूम हो रहे थे।

लेकिन वे इन सब बातों को छिपाते हुए बोले—"बहू का अधिकार बाप कैसे छीन सकता है ?"

"छीनने को कौन कहता है ! वह तो मैं खुद दे रही हूं आपको।"

"खैरात समझकर ?" उन्होंने जले-भुने स्वर में कहा।

उनकी बात और उनकी बेरुखी ने अंजना के दिल पर एक करारी चोट की और वह उखड़ी हुई नज़रों से लालाजी को निहारने लगी जो राम जाने उससे क्या कहने जा रहे थे, लेकिन बात मुंह से बाहर नहीं आ रही थी।

"आपने मुझे गलत समझा बाबूजी !" अंजना ने कांपती हुई आवाज़ में कहा।

"हां बहू ! अगर अपनी समझ से मैं सच को पहचान सकता तो आज अपने बेटे का गम न खाना पड़ता।"

अंजना की समझ में कुछ नहीं आया। अब उसने और कुछ कहना उचित नहीं समझा और चुपचाप बाहर चली गई। लाला जगन्नाथ का संदेह तो अब जड़ पकड़ चुका था।

राजीव लान में खेल रहा था। वह भी ज़बरदस्ती अपना दिल बहलाने के लिए उससे खेलने लगी। बार-बार उसके मन में एक ही बात आ रही थी कि आज लालाजी को क्या हो गया था ? वे क्यों ऐसी उखड़ी-उखड़ी बातें कर रहे थे ? उनमें बेरुखी भी थी और संदेह की कालिमा भी।

१६

अंजना जब मंदिर से लौटी तो सदर हाल में वार्ता की आवाज़ों को सुनकर एक क्षण के लिए वह रुक गई। सामने कमल की जीप खड़ी थी। उसकी उपस्थिति का आभास करते ही वह कांप गई। अंग-अंग में एक सिहरन-सी दौड़ गई। आज उसका सामना करते हुए वह भयभीत हो रही थी। उससे अपना जीवन-रहस्य खोलने के बाद वह पहली बार उसका सामना करने जा रही थी और यह उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा इम्तहान था।

अभी वह इसी असमंजस में उलझी हुई थी कि किसी आवाज़ ने उसे चौंका दिया। यह आवाज़ शालिनी की थी जिसने उसे देख लिया था और तेजी से उसकी ओर बढ़ती आ रही थी। वह पास आई और उसे अपनी बांहों में भर लिया। वह संवेदनाहीन-सी उसके साथ अन्दर

चली गई। अन्दर कमल और लालाजी में गाढ़ी छन रही थी।

अंजना को देखते ही वह बात करते-करते तनिक ठुमक गया। कमल की ओर देखते ही वह भी झेंप गई। कमल ने गहरी निगाहों से अंजना को देखा और फिर मुस्करा दिया। अंजना को आभास हुआ जैसे इस एक ही निगाह में उसने अपने दिल की बात समझा दी हो।

अंजना ने नमस्कार के लिए हाथ जोड़े, लेकिन कमल ने मद्धिम आवाज़ में कहा—"हलो !"

राम जाने आज इस 'हलो' में क्या कुछ था जिसे सुनकर अंजना के शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गई और वह लहरा उठी। उसने आगे बढ़कर बाबूजी के पैर छुए और मन्दिर से लाया प्रसाद उनकी ओर बढ़ाया। लालाजी ने हाथ फैला दिया और बहू की ओर देखने लगे।

औरत अपने जीवन में इतना बड़ा नाटक खेल सकती है, उन्हें अभी तक इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा था, लेकिन उन्होंने ज़बान से कुछ और ही कहा। बोले—"तुम मन्दिर तो जाती हो बहू ! दो-चार घड़ी दिल का बोझ हल्का हो जाता है। मैं तो यह भी नहीं कर सकता।"

"वाह चाचाजी ! आपको मन्दिर जाने की क्या ज़रूरत है ?" शालिनी ने तुरत उनकी बात काट दी।

"वह क्यों ?"

"जिस घर में पूनम जैसी देवी विराजमान हो, उस घर के लोगों को मन्दिर जाने की क्या ज़रूरत है ? वह घर भी तो मन्दिर से कम नहीं।"

बाबूजी मौन रहे। अंजना ने झेंपकर शालिनी के चुटकी काटी जैसे अनजाने में वह कोई गलत बात कह गई हो और फिर इस बहस से बचने के लिए वह अपने कमरे की ओर बढ़ी। शालो को भी अपने साथ चलने का इशारा किया।

कमल जो अभी तक मौन साधे हुए था, बोला—"वाह ! इस घर की देवी क्या बनीं कि हमें प्रसाद देना भी भूल गईं !"

"ओह !" वह जाते-जाते रुक गई और कमल की ओर पलटी।

लालाजी ने चोर-निगाहों से दोनों की मुखमुद्राएं पढ़ने का यत्न किया और अंजना के कंपन को भी भांप लिया।

ज्योंही वह प्रसाद देकर पीछे हटी, लाला जगन्नाथ ने बीमा कम्पनी का वह फार्म सामने रख दिया जो कमल अपने साथ लेकर आया था।

अंजना ने प्रश्नात्मक दृष्टि से लालाजी की ओर देखा तो वे बोले—"यह दूसरा फार्म है—हलफिया बयान देने के लिए। सरकारी कामों का भी जवाब नहीं, हमींसे पूछते हैं कि हम कौन हैं!"

"वे भी मजबूर हैं अंकिल! वरना आप जानते हैं कि हर बरस कितने ही बीमे वे लोग ले जाते हैं जिनका कोई हक नहीं होता। क्यों पूनम?"

शालिनी ने तो योंही कह दिया था, लेकिन उसकी इस बात पर अंजना व्याकुल हो उठी। वह पत्थर की मूरत बनी वहीं जमकर रह गई।

अंजना ने कांपते हाथों से उस हलफनामे पर हस्ताक्षर कर दिया। लालाजी उसकी हर हरकत को बड़े ध्यान से देख रहे थे। हस्ताक्षर करते समय वे उंगलियों की कंपन को देखने लगे।

"बहू का ख्याल है कि वह रकम मुझे मिलनी चाहिए।" अचानक वे बोले।

"इसमें झूठ क्या है? उसपर तो आपका ही अधिकार है।" कमल ने तुरत उत्तर दिया—"जब तक आप उसके सरपरस्त हैं, उसे अपने अधिकारों की क्या चिंता है?"

"लेकिन बुढ़ापा ये जिम्मेदारियां कब तक उठा सकता है? और फिर यह उस बेटे की कमाई है जो उसकी ज़िंदगी में नसीब न हुई। अब इसे लेकर क्या करूंगा?"

"एक बात कहूं बाबूजी?" अंजना ने झिझकते हुए पूछा।

"कहो।"

"आप इस रकम को राजीव के नाम जमा करा दें ताकि उसका भविष्य सुरक्षित हो जाए। मैं इसे बिल्कुल नहीं छूऊंगी।"

अंजना ने उन्हें अपने दिल के फैसले से सूचित कर दिया और अपने कमरे में चली गई। शालिनी ने भी उसका पीछा किया। लालाली और कमल दोनों एक-दूसरे की ओर देखते रह गए।

बहू राजीव से इतना स्नेह रखती है, उन दोनों को यह जानकर कुछ अजीब-सा लगा।

"कमल!"

"यस अंकिल!"

"कभी-कभी यह सोचकर दिल दहल जाता है कि मेरे बाद बहू का क्या होगा!"

"आप भी क्या सोचने लगे? कल किसने देखा है?"

"तुम ठीक कहते हो, लेकिन आज को तो परख रहा हूं।"

"मैं समझा नहीं।"

"पड़ोस की मिसेज़ मुकर्जी कह रही थीं कि बहू को हर किसीसे घुल-मिलकर नहीं रहना चाहिए। बदनामी का खतरा रहता है। खानदान की इज़्ज़त का सवाल है।"

"वह तो कहेगी ही। विधवा है ना! किसी दूसरे को हंसता कैसे देख सकती है? वरना सारा नैनीताल जानता है कि यह क्या है।"

"लेकिन हमें तो ज़माने के साथ चलना चाहिए। इसी समाज में रहना है हमें।"

"आज तो आप ऐसी बात कह रहे हैं कि जैसे आपको अपनी बहू पर विश्वास न रहा हो।"

"नहीं कमल! यह बात नहीं है। उस देवी पर तो पूरा भरोसा है मुझे। अगर डर है तो समाज के बदलते धारे का। कहीं वह भी कल का शोक भूलकर आज के रंग में रंग गई तो?"

"तो क्या? किसीके दिल को कौन पा सका है? भावुकता कभी उमड़ भी सकती है। लेकिन पूनम ऐसी नहीं है, यह मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं।"

"एक बात सोची है मैंने कमल!" उन्होंने कुछ झिझक के साथ कहा।

"क्या?"

"किसीसे कहते हुए डर लगता है।"

"कहिए ना, मैं तो आपके दिल का दर्द समझता हूं।"

"सोचता हूं कि···कि बहू की···दूसरी शादी कर दूं।"

लालाजी की बात सुनते ही कमल हक्का-बक्का हो गया। उसे विश्वास नहीं हुआ कि लालाजी के मुंह से यह बात निकली है। दिल पर एक धक्का लगा, लेकिन इस चुभन से उसकी रगों में दर्द की जगह एक गुदगुदाहट पैदा हो गई। अंधेरे और अंधे सपनों में एक धुंधली-सी आशा की किरण नज़र आने लगी और वह अंजना की कल्पना में खो गया।

लालाजी उसके चेहरे का उतार-चढ़ाव देखते रहे। जब वह काफी देर तक अपने ख्यालों में खोया रहा तो उन्होंने प्रश्न किया—"क्यों कमल! चुप क्यों हो गए? तुम्हें अच्छा नहीं लगा मेरा ऐसा सोचना?"

"जी नहीं! जी हां! भला इसमें बुरा क्या है!" वह अचकचा-

कर बोला; और फिर डिप्टी साहब की बातों का मतलब आंकने लगा।

फिर सहसा वह बोला—"लेकिन वह मानेगी ?"

"उससे पहले तो मुझे सोचना है कि क्या कोई उससे ब्याह करने पर राज़ी हो जाएगा !"

इससे पहले कि कमल कुछ उत्तर दे और बातें कुछ और आगे बढ़ें, शालिनी अंजना के कमरे से लौट आई। वह उछलती-कूदती डिप्टी साहब के पास आई और उनकी बहू को अपने साथ ले जाने की अनुमति मांगने लगी। शालिनी दूसरे दिन नैनीताल से जाने वाली थी। उसकी सहेलियां चार दिन पहले ही जा चुकी थीं। अब वह अकेली थी। आज का दिन वह अंजना के साथ बिताना चाहती थी। उसने कुछ शापिंग का प्रोग्राम बनाया हुआ था।

"मुझे कब इंकार है बेटी ?" वे यह सब विवरण सुनकर बोले।

"आपको तो नहीं, लेकिन उसे तो है।"

"वह क्यों ?"

"आप घर पर अकेले हैं ना, इसलिए।"

"लो ! जैसे मैं कोई बच्चा हूं !"

तभी अंजना हाल की सीढ़ियों पर आ ठहरी। कमल और लालाजी ने एकसाथ निगाहें उठाकर उसकी ओर देखा।

शालिनी ने जब अपनी बात दुहराई तो उसने फिर इंकार कर दिया। बोली—"घर का सारा काम पड़ा है।"

"सब हो जाएगा बहू ! रमिया है, माली है; और फिर शालो कौन-सी रोज़-रोज़ यहां आने वाली है !"

अंजना ने जब पुन: नकारात्मक उत्तर दिया तो कमल ने टोक दिया—"एक रास्ता है, दोनों की बात रह जाएगी।"

"क्या ?"

"दोनों मिलकर घर का काम निपटा लो और मैं भी अपना काम निपटा लूं। लौटते समय दोनों को लेता चलूंगा।"

कमल की बात ने सबको चुप करा दिया। अंजना को विवश होकर शालो की बात माननी पड़ी और उसने जाने का वचन दे दिया।

कमल जब जाने लगा तो बाबूजी ने पूछा—"कब तक लौटोगे कमल ?"

"दोपहर तक।"

"तो क्यों न ग्राज दोनों का इम्तहान लिया जाए!"

"वह कैसे अंकिल?"

"इनके हाथ का पका खाना खाकर।"

"ख्याल तो बुरा नहीं, लेकिन ये मानेंगी?"

"इसमें मानने न मानने की क्या बात है? ग्रौर यह तो हमारी खुशनसीबी होगी कि ग्राप हमारे घर में खाना खाएं।" ग्रंजना तुरंत कह उठी।

कमल दोपहर के खाने का वादा करके चला गया। वे दोनों ग्रपने-ग्रपने काम में जुट गईं, लेकिन डिप्टी साहब के मन का भार बढ़ता ही गया।

ग्राज उन्होंने कमल के दिल को भी टटोलने का यत्न किया था, लेकिन बात ग्रधूरी रह गई थी। वे कमल ग्रौर ग्रपनी बहू के दिल में उठती हुई ग्रौर मचलती हुई भावनाग्रों से परिचय प्राप्त कर चुके थे ग्रौर ग्रपनी ज़िंदगी में ही यह गुत्थी सुलझा देना चाहते थे। लेकिन जब यह सोचते-सोचते उन्हें ख्याल ग्राता कि ग्रंजना ने पूनम बनकर उन्हें धोखा दिया है, तो वे गुस्सा घोंटकर रह जाते। उस देवी की कल्पना एक नया रूप धारण कर लेती ग्रौर वे इस नाटक के रहस्य को समझने का प्रयास करने लगते।

कमल के जाने के बाद उनके मन में यही बातें घूमती रहीं।

ग्रंजना ग्राज बड़ी खुश थी। वह इस भ्रम में पड़ चुकी थी कि कमल ने उसके जीवन का भेद समझ लिया है ग्रौर उस पत्र ने उसके ऊपर कोई विपरीत भाव नहीं डाला। सचाई की झलक मिलते ही उसका स्नेह ग्रौर बढ़ गया ग्रौर ग्राज उसके हाथ का खाना खाकर वह उसका महत्त्व ग्रौर बढ़ाना चाहता है।

वह बड़ी फुरती से काम किए जा रही थी। ग्राज उसने ग्रपने हाथों से मसाला पीसा, स्टोव जलाया ग्रौर तरकारी काटने लगी।

शालिनी ने उसका हाथ बंटाना चाहा, लेकिन उसने मना करते हुए कहा—"तू तो बस मेरे पास बैठी रह। काम तो ग्रपने-ग्राप निपट जाएगा।"

"वह तो देख रही हूं। यों भी ग्रपने बस का नहीं है इस तरह मशीन बनना।"

"घबराग्रो नहीं, ससुराल जाग्रोगी तो ग्रपने-ग्राप मशीन बन जाग्रोगी। मैके का राज है, दो-चार दिन ग्राराम कर लो।"

"पूनम !"

"हूं।"

"तुमने तो अपने मैके में खूब आराम से दिन काटे होंगे ?"

"नहीं, अपना नसीब तो उल्टा रहा। बचपन में ही मां-बाप चल बसे, मामूं ने पाला-पोसा, बेगानों की तरह और फिर जब जिंदगी के सपने पूरे होने लगे तो अपने प्रीतम को खो बैठी।"

यह कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू आ गए। शालिनी ने उसके मन की व्याकुलता समझ ली और गंभीरता को मुस्कराहट में बदलते हुए पूछने लगी—"क्या ऐसा संभव नहीं पूनम कि जो सपने अधूरे रह गए हों वे अब पूरे कर लो ?"

अंजना ने शालो की बात सुनी और फिर कुछ विचित्र दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी। शालो के अधरों पर अब भी मुस्कान थिरक रही थी।

अंजना उसके दिल की बात समझ गई, फिर भी अनजान-सी बनकर बोली—"वह कैसे ?"

"दूसरा ब्याह करके।"

अंजना को यह सुनकर अच्छा भी लगा और बुरा भी। बोली—"यह तुम ठीक कह रही हो शालो ?"

"हां, एक लड़की ही दूसरी लड़की के दिल की गहराइयों को समझ सकती है।"

"लेकिन मेरे आंचल पर तो दाग है।"

"वह तो चांद में भी होता है।"

"लेकिन तुम यह भूल रही हो कि मैं शरीफ घराने की बहू भी हूं।"

"मगर मैं यह कैसे भूल जाऊं कि तुम एक लड़की भी हो—खूबसूरत और जवान जिसके मन में सैकड़ों इच्छाएं, आशाएं और उमंगें हैं !"

"समाज वाले इसे पाप कहेंगे।"

"कहने दो, लेकिन औरत के दिल को समझने वाला कोई नहीं कहेगा।"

"लेकिन मैं यह कैसे भूल जाऊं कि मैं एक मां भी हूं।"

"दुनिया में कई नेकदिल ऐसे भी हैं जो तुम्हारे बच्चे को भी अपना लेंगे।"

"नहीं, यह इतना असान नहीं है। कौन होगा जो अपने दिल

पर इतना बड़ा पत्थर रख सकता है !"

"एक है ।"

"कौन ?"

"मेरा भइया, कमल !"

कमल का नाम सुनते ही वह कुछ ऐसी बदहवास हुई कि छुरी की तेज़ धार से उसकी उंगली कट गई ।

शालिनी ने लपककर एक गिलास उठाया और उसकी उंगली पकड़कर बर्फीले पानी में डाल दी । अंजना अभी तक मौन थी। उसने शालिनी की बात का कोई उत्तर नहीं दिया था ।

"जानती हो, कल रात भइया ने क्या कहा ?" शालिनी ने फिर बात छेड़ दी ।

"क्या ?" अंजना ने अनजान-सी बनकर पूछा ।

"बोले, अगर पूनम तुम्हारी भाभी बन जाए तो कैसा रहेगा ?"

"तो फिर तुमने क्या कहा ?"

"पहले तो मुझे कुछ अजीब-सा लगा, लेकिन जब मैंने भइया का दिल टटोला तो हां कह बैठी ।"

"क्यों ? उनके दिल में क्या छिपा था ?"

"तुम्हारा प्यार ।"

शालिनी के इस उत्तर पर वह छुईमुई बन गई और चुपचाप पानी में से उंगली निकालकर अपने काम में लग गई ।

शालिनी भी मौन धारण किए उसका हाथ बंटाने लगी, लेकिन वह उसके दिल की धड़कनों को भली भांति समझ रही थी । उसकी बात पर अंजना नाराज़ होने के बजाय लजाकर रह गई थी ।

इधर अंजना को शालिनी की बात ने विश्वास दिला दिया कि उसका पत्र पाने के बाद ही कमल ने अपनी बहन का दिल टटोला है ।

दोपहर के खाने के बाद अंजना शालिनी और कमल के साथ बाज़ार के लिए चल पड़ी । आज उसने साड़ी भी शालिनी की पसंद की ही पहनी थी । साड़ी सादा थी लेकिन बड़ी नफीस !

लाला जगन्नाथ को भी बहू के इस लिबास में आनेवाले कल की कल्पना छिपी हुई दिखाई दी। आज वह और दिनों से अधिक खुश भी नज़र आ रही थी। उसके दिल की धड़कनें उसके अपने बस में नहीं थीं । आज तो उसकी चाल में भी अजीब लचक और लोच आ गई थी । उसका रंग-ढंग बदला हुआ था ।

दिन-भर वह उनके साथ बाज़ारों में घूमती रही। शालिनी जी भरकर शापिंग करती रही और उसके भइया बिल पर बिल चुकाते रहे। अंजना मौन बनी बहन-भाई के सवाल-जवाब सुनती रही।

कमल हर कदम पर किसी न किसी बहाने अंजना की प्रशंसा कर देता और शालिनी जब उसके इशारे को समझ जाती तो वह झेंप जाता। यह देखकर अंजना मन ही मन मुस्कराने लगती। उसे अपनी आराधना पूरी होती दिखाई दे रही थी।

एक दुकान पर जब वह शालिनी के लिए साड़ी पसंद कर रही थी तो शालिनी ने अंजना की पसंद की एक साड़ी पर हाथ रखते हुए कहा—"मेरी बात मानो पूनम! यह साड़ी तुम ले लो। तुम्हारे रंग और बदन पर खूब खिलेगी।"

"नहीं शालो, यह अवसर नहीं।"

"अवसर होता नहीं, बना लिया जाता है। यह दस्तूर है ज़माने का।" कमल ने झट से टोक दिया और गहरी निगाहों से उसकी ओर देखा।

"नहीं, आप तो सब जानते हैं।"

"यही ना, कि ऐसी चमकदार साड़ी पहनने की तुम्हें इजाज़त नहीं?"

"आप समझते हैं तो फिर क्यों कुरेदते हैं?"

"इसलिए कि एक न एक दिन तुम्हें यह बनावटी लिबास उतारकर अपनी पसंद का कपड़ा पहनना होगा।"

"भइया ने ठीक कहा है और फिर यह साड़ी तो भइया की ओर से तुम्हें एक भेंट के रूप में है।"

"हां-हां, मेरी ओर से एक तुच्छ भेंट!"

"अच्छा, आपकी यह भेंट ले लूंगी।"

"कब?"

"समय आने पर।"

कमल ने ज़िद तो बहुत की लेकिन अंजना ने उसे विवश कर दिया कि वह भेंट उस समय वह नहीं ले सकती। वह निराश हो गया।

अधीर होते हुए बोला—"वह समय बहुत दूर नहीं।"

लाज के मारे वह सहम गई और अपने दांतों से नाखून काटने लगी। शालिनी को व्यस्त देख और कमल के नयन-बाणों से विह्वल होकर वह चुपके से खिसककर शोरूम के बाहर वाले दालान में

चली गई। कमल ने जब बिल चुकाना चाहा तो शालिनी दुकानदार से दूसरे डिजाइन निकलवा बैठी।

कमल काफी देर से इस जनाना शापिंग से बोर हो रहा था। अतः धीरे-धीरे चलता हुआ वहां आ पहुंचा जहां अंजना अकेली खड़ी सामने फैली हुई झील को देख रही थी। वह चुपचाप उसके पास आ खड़ा हुआ।

अंजना सामीप्य के आभास से चौंक पड़ी।

"क्या देख रही हो?"

"कुछ नहीं। शालो कहां है?"

"उसी धुन में है। एक साड़ी का रंग बदलने की सोच रही है।"

वह चुप हो गई और इससे पहले कि वह अपने पत्र के बारे मे कुछ पूछती, वह अपने चोर-दिल से घबराने लगी और फिर योंही बात करने के लिए उसने कह दिया—"यह आपने अच्छा नहीं किया।"

"क्या?"

"मेरे बारे में शालो को सब कुछ बताकर।"

"ओह! अरे वह तो मेरे हृदय की पीड़ा थी जो मैंने बता दी। तुम्हारे बारे में तो कुछ नहीं कहा मैंने।"

"सच?"

"हां पूनम! और अगर उससे अपनी यह वेदना नहीं कहता तो यह बात पिताजी तक कैसे पहुंचती?'

"क्या वे मान जाएंगे?"

"क्यों नहीं? इस समय तो उन्हें अपने बेटे की खुशी का ख्याल है, अपनी इज्जत का नहीं।"

"वे यह सब कुछ जानते हुए भी ऐसी बहू को अपना लेंगे?"

"अपनाना ही होगा पूनम! मैं जो तुम्हें अपना बना रहा हूं।"

वह उसके और पास आ गया। अंजना ने उसकी आंखों में झांककर देखा। अब उन आंखों में उसे अपनी ही स्नेहमूर्ति दिखाई दी।

तुम्हारा संसार तो मुझे अपना लेगा, लेकिन यहां का क्या होगा?" वह रुक-रुककर बोली।

"मैं समझा नहीं"'

"यह बात बाबूजी तक कौन पहुंचाएगा? वे इसका विरोध भी तो कर सकते हैं।"

"मुझे उनपर भरोसा है। वे तुम्हें बेटी समझकर कन्यादान

देंगे।"

तभी शालिनी साड़ियों का पैकेट उठाए बाहर चली आई और उन्हें यों एक-दूसरे के समीप देखकर बोली—"वाह भइया ! तुम्हारा भी जवाब नहीं ! मुझे अकेला छोड़ यहां चले आए !"

"और क्या करता ! यहां पूनम भी तो अकेली थी !"

"और वहां सेल्समैन ने हिसाब में दस रुपये अधिक लगा दिए थे।"

"फिर क्या हुआ ?"

"मैंने फौरन भांप लिया और टोटल लगाते ही मैं उसपर बरस पड़ी।"

"इसका मतलब है तुमने दस रुपये का नोट बचा लिया ?"

"हां।"

"तो चलो कहीं बैठकर चाय पीएं। बहुत थक चुके हैं।"

इसपर शालिनी और अंजना एक-दूसरे की ओर देखने लगीं। अंजना ने घर जल्दी जाने की व्यग्रता दिखाई तो शालिनी ने इंकार कर दिया और उसे खींचते हुए सामने के रेस्तरां में ले गई।

कमल ने बहन के हाथों से कुछ पैकेट लेकर स्वयं पकड़ लिए और उनके साथ हो लिया।

अंजना कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी कि कमल उस पत्र के बाद इतना निकट आ जाएगा; वह उसके दिल के दर्द को इस हद तक बांट लेगा; वह उसकी परेशानियों को इतनी आसानी से अपना लेगा। उसे अब अपने आप पर, अपनी ज़िंदगी पर भरोसा होने लगा। उसमें बड़ी से बड़ी कठिनाई का सामना करने का साहस आ गया।

तीनों जब रेस्तरां के बाहरी भाग में बैठे चाय पी रहे थे तो एक शाल-दुशाले बेचने वाला उनके निकट आया और उन्हें बार-बार देखने के लिए मजबूर करने लगा। न जाने क्या सोचकर अंजना ने एक स्लेटी रंग के दुशाले को दिखाते हुए पूछा—"कितने का है ?"

"तीन सौ रुपये, मेम साहब !"

"बहुत ज़्यादा है।"

"माल भी तो ऐसा है मेम साहब ! ले लीजिए। असली पश्मीना का है।"

"क्या करोगी ?" शालिनी ने प्रश्न किया।

"योंही, सोचा, बाबूजी के लिए ले लूं।"

"ठीक है।" कमल ने कपड़े को उंगलियों से परखते हुए देखा।
"आपको पसंद है ?" अंजना ने पूछा।
"क्यों नहीं, और बाबूजी यह देखकर तो फूले नहीं समाएंगे कि उनकी बहू कितना ख्याल रखती है उनका !"
शालिनी की यह बात अंजना के दिल पर आ लगी। क्षण-भर के लिए उसने सोचा और फिर वह दुशाला खरीद लिया गया।
आज जीवन में पहली बार उसने बाबूजी के लिए कुछ खरीदा था। उसने जब कनखियों से बहन-भाई की ओर देखा, उसके चेहरे पर एक लाली दौड़ गई।

१७

संध्या अपना मुंह छिपा रही थी और अंधकार का आवरण धीरे-धीरे नैनीताल की पहाड़ियों को अपने आंचल में समेटता जा रहा था। चारों ओर स्तब्धता का राज्य छाया हुआ था।
अंजना जब घर लौटी तो उसे डर लग रहा था। उसे आने में काफी देर हो गई थी। बाबूजी अकेले घर में बैठे-बैठे उकता चुके होंगे और उसकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। यह सोचकर उसका कलेजा धड़कने लगा। वह दबे कदमों से अंदर पहुंची।
बड़े हाल की मद्धिम रोशनी में वह ज्योंही सीढ़ियों की ओर बढ़ी, बाबूजी की आवाज़ ने उसे चौंका दिया :
"कौन ?"
उसने पलटकर हाल के कोने में देखा जहां वे आरामकुर्सी पर बैठे थे। आज वे अपने कमरे में नहीं गए थे। अंजना ने बढ़कर छत की बड़ी बिजली जला दी और उनके निकट आते हुए बोली—"आप ! अभी तक सोए नहीं ?"
"नहीं, घर की रखवाली भी तो करनी थी !"
"रमिया कहां है ?"
"राजीव को सुला रही है।"
"और माली ?"
"शाम को ही गांव चला गया—छुट्टी पर।"
"क्यों ?"
"उसकी भावज घर से भाग गई है। घरवालों ने उसे बुलवाया है।"

उनके मुंह से यह बात सुनते ही वह झेंप गई। हाथ के पैकेट को उसी तरह थामे वह उनके शयन-कक्ष में चली गई और पैकेट को एक ओर रखकर उनका बिस्तरा ठीक करने लगी।

लाला जगन्नाथ अपनी कमज़ोर टांगों से धीरे-धीरे चलते हुए बहू के निकट आए और जब बिस्तर ठीक हो गया तो उसपर बैठ गए। बहू ने सावधानी से उनकी टांगों को लिहाफ से ढक दिया और बोली—"खाना खा लिया आपने ?"

"नहीं, भूख ही नहीं लगी।"

"तो मैं बना लाती हूं, थोड़ा-सा खा लीजिए।"

"नहीं बहू ! आज कुछ अपच हो गया है। बैठे-बैठे हाज़मा बिगड़ गया है।"

"मेरी बात मानिए। कुछ दिन के लिए आबोहवा बदलने कहीं चले जाइए। डाक्टर का कहना है, यहां का पानी आपके लिए अच्छा नहीं।"

"वे तो कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं। लोग मैदान छोड़कर पहाड़ों में सेहत बनाने आते हैं और मुझे यहां से चले जाने के लिए कहते हैं।"

इतने में अंजना ने पैकेट खोला और वह दुशाला फैलाकर उनके सामने रख दिया। वह शंकित हो पहले तो उस दुशाले और फिर बहू की ओर देखने लगे।

"यह क्या है ?"

"आपके लिए ! पहले वाला बहुत पुराना और बेकार हो चुका है।"

"पुरानी चीज़ों को यों छोड़ना अच्छा नहीं।"

"नहीं बाबूजी ! जब तक हम उन्हें छोड़ेंगे नहीं, नई कैसे अपनाएंगे ?"

आज बहू की बातों में अनोखापन था। बाबूजी यह देखकर चुप हो गए। उन्होंने उंगलियों से उस पश्मीने के रोएं को टटोला और फिर बहू की ओर देखकर बोले—"कितना ख्याल रहता है तुम्हें मेरा !"

"मुझे न हो तो कौन करेगा यह सब कुछ ?" उसने यह कहते हुए दुशाला लपेटा और बाबूजी के तकिये पर रख दिया। तभी उसकी नज़रें सिरहाने की मेज पर रखी उस ऐश-ट्रे पर पड़ीं जिसमें सिगरेट के कई अधजले टुकड़े पड़े थे। जब उसने वह ऐश-ट्रे उठाई

तो वावूजी बोले—"रमिया को साफ करने के लिए दी थी, पगली यहीं रखकर चली गई।"

"कोई आया था क्या ?"

"हां, बनवारी, तुम्हारी आंटी का रिश्तेदार !"

वनवारी का नाम सुनते ही उसके चेहरे की लाली अकस्मात् पीलिया में बदल गई। आंखों की चमक मद्धिम पड़ गई। उसके मन की दशा लाला जगन्नाथ ने भांप ली।

बनवारी का नाम सुनते ही जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया। उसने दबी आवाज़ में पूछा—"क्या कहने आया था ?"

"हरिद्वार की ज़मीन का सौदा पक्का कर आया है। बकाया रकम चाहता है ताकि ज़मीन की रजिस्ट्री हो जाए।"

"आपने क्या कहा ?"

"फिलहाल टाल दिया। सोचा, जल्दबाज़ी अच्छी नहीं है।"

वह चुप हो गई और ऐश-ट्रे लेकर खिड़की तक चली गई। राख और सिगरेट के टुकड़े बाहर फेंक दिए। उसे साफ करके फिर से मेज़ पर रख दिया।

अंजना के गंभीर मुंह की ओर देखते हुए उन्होंने पुनः कहा—"मुझे यह आदमी पसन्द नहीं आया। कोई चार सौ बीस लगता है।"

"आपने ठीक समझा है। मैं आपसे उस दिन भी कहना चाहती थी। बनवारी अच्छा आदमी नहीं है।"

"मुझे तो डर है कि कहीं वह पांच हज़ार की रकम हजम न कर जाए।"

वह चुप रही। कोई जवाब ही नहीं बना उससे।

"क्या नाता है तुम्हारा-उसका ?"

"कुछ भी नहीं। वह ज़बरदस्ती हमारा रिश्तेदार बनना चाहता है।"

"उससे तुम्हारी जान-पहचान कहां हुई ?"

बाबूजी के इस प्रश्न से उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। उसकी रगों में दौड़ता हुआ खून जैसे एकदम पानी बनकर बदन से फूट पड़ा और वह बहकी-बहकी निगाहों से ससुर का सामना करते हुए बोली—"बरसों पहले उसने मुझसे विवाह करना चाहा था।"

"तब ?"

"मेरे घरवालों ने इंकार कर दिया था।"

"क्यों ?"

"उसका चालचलन और आवारगी देखकर।"

अंजना ने भावुकता से परास्त होकर दिल की बात कह दी और फिर जल्दी से दीवार में लगी अलमारी की ओर बढ़ी और उनके लिए दवा की शीशी निकालने लगी। वे चुपचाप बैठे उसे निहारते रहे।

अंजना ने दवा की शीशी खोली और एक खुराक प्याले में उंडेल-कर उनकी ओर बढ़ा दिया।

"अपनी तो ज़िंदगी बस दो-चार दवाइयों में अटककर रह गई है।"

"नहीं, ऐसा मत कहिए।"

"यथार्थ से मुंह कैसे छिपा लूं बहू? अब तो जीवन एक बोझ-सा लगने लगा है। न जाने कब और किस समय दम निकल जाए।"

अंजना ने बहस नहीं की। दवा की शीशी बंद करके अलमारी में वापस रख दी और बात बदलते हुए बोली :

"दूध कितनी देर बाद लाऊं?"

"कहा ना, आज मन नहीं है।"

"खाली पेट सोना भी तो अच्छा नहीं आपके लिए! थोड़ी देर बाद आऊंगी।"

यह कहकर वह उस किताब की ओर बढ़ी जो मेज़ पर रखी थी। कम सोने के कारण लाला जगन्नाथ देर तक किसी न किसी पुस्तक का अध्ययन करते रहते थे। अंजना यह बात भली भांति जानती थी। इसीलिए वह किताब उठाकर उसने उनके पास रख दी और फिर उनका चश्मा उठाकर उन्हें पकड़ा दिया।

बहू की सेवा देखकर उनका दिल पिघल गया और कुछ क्षणों के लिए वे यह भूल गए कि वह उनकी असली बहू नहीं है, बल्कि नकली बहू बनकर उन्हें अपनाने आई है।

जब वह घर से बाहर कमल के साथ थी तो वे अन्दर ही अन्दर खौल रहे थे, और अब जब वह उनके सामने खड़ी थी तो वे उसकी सारी कमज़ोरियों को भूलकर उसके अस्तित्व में एक देवी का प्रतिबिंब देख रहे थे।

"पूनम!" सहसा उन्होंने बहू का नाम लेकर पुकारा। उनकी ज़बान से पहली बार अपना नाम सुनकर अंजना चकित हुई और वह कुछ उखड़ी-उखड़ी निगाहों से उनकी ओर देखने लगी। उनकी आंखों में एक चमक उभर आई थी।

"कई रोज़ से सोच रहा था कि तुमसे एक बात कहूं।"

अंजना उनकी बात सुनकर घबरा गई। आज वह उनकी हर बात पर घबरा भी रही थी।

उन्होंने उसे मौन देखकर वाक्य पूरा कर दिया—"लेकिन डरता हूं कहीं तुम बुरा न मान जाओ।"

"नहीं, नहीं। ऐसी क्या बात है! आप कहिएगा।" उसने अपनी घबराहट को छिपाने का यत्न करते हुए कहा।

"देख रहा हूं, दिन-ब-दिन कमल बाबू की दिलचस्पी तुममें बढ़ती जा रही है।"

"जी!" उसके होंठ थरथराकर रह गए—"नहीं तो।"

"या यों कहना चाहिए कि तुमने अपना भविष्य बदल देने का निश्चय कर लिया है।"

"नहीं-नहीं, यह झूठ है।" अंजना ने बड़ी गंभीरता से कहा।

"तो सच क्या है?"

वह लड़खड़ा गई। उसकी रगों में दौड़ता हुआ खून जैसे वहीं जमकर रह गया हो। उसे लगा जैसे यह पूछकर उन्होंने उसके कोमल हृदय की उन सलवटों को उधेड़ना चाहा था जिनमें उसकी ज़िंदगी का कोई रहस्य छिपा हुआ था। वह गुमसुम-सी खड़ी रह गई।

"तुम्हें अच्छा नहीं लगा मेरा सवाल?" लाला जगन्नाथ ने बहू को मौन देखकर पूछा—"दिल की बात नहीं कहोगी मुझसे?"

"आप अपनी बहू का इम्तहान लेना चाहते हैं?"

"नहीं, मैं दिल में छिपे हुए उस दर्द को जानना चाहता हूं जो प्रयत्न करने से भी ज़बान पर नहीं आता।"

"मेरा दर्द तो मेरे नसीब ने दिया है मुझे।"

"लेकिन अपना नसीब बदलने का हक तो तुम्हारे अपने पास है ना?"

"नहीं, जब तक आपका साया मेरे सिर पर है, ऐसा सोचना भी पाप है।"

"अगर तुम्हें मुझपर इतना भरोसा होता तो तुम मुझे इस उम्र में कभी धोखा नहीं देतीं, कभी विश्वासघात नहीं करतीं।"

"बाबूजी!" उसके मुंह से एक चीख-सी निकल गई। वह बुत बनी बाबूजी के चेहरे की ओर देखने लगी, जो अब तक पीलिमा से सुर्ख हो चुका था। वे उसका इम्तहान लेते-लेते ऐसी भयानक बात

कह बैठेंगे, इसकी उसे कभी आशा नहीं थी। वह उस उलझन में उलझी मौन खड़ी रही। मन में तरह-तरह के विचारों के बवंडर उठते रहे। हृदय शंकित हो उठा।

"चुप क्यों हो गईं ?" लालाजी ने पूछा।

"लगता है, मेरी ओर से किसीने आपका मन मैला कर दिया है।" उसने रुक-रुककर धीमी आवाज़ में कहा।

"तुमने बिल्कुल ठीक कहा है। किसीने तुम्हारे जीवन के सारे भेद मुझे बता दिए हैं और वह कभी झूठ नहीं कह सकता।"

"कौन है वह ?"

लाला जगन्नाथ ने निगाहें उठाकर उसके कांपते हुए होंठों की ओर देखा, लेकिन वे स्वयं अधिक देर तक अपने दिल की बात छिपा नहीं सके। क्षण-भर मौन रहने के बाद बोले—"तुम्हारा खत, जो तुमने कमल को लिखा था।"

उनकी यह बात सुनते ही वह भौंचक्की-सी, ठगी-सी रह गई। उसे ऐसा लगा जैसे किसीने उसके दिल में तेज़ धार का चाकू उतार दिया हो। लाज से वह गड़-सी गई।

जब वह अधिक देर तक उनके सामने खड़ी न रह सकी तो रुख बदल लिया और कांपती आवाज़ में बोली—"तो आपने वह खत··· पढ़ लिया ?"

"हां, और यह भी जान गया हूं कि तुम मेरी बहू नहीं हो बल्कि अंजना नाम की कोई बहुरूपिया हो।"

"भगवान मेरा गवाह है, मैंने किसीको धोखा नहीं दिया। वह तो एक वचन था जो मैंने आपकी बहू को दिया और उसे निभा रही हूं।"

"अगर तुमने ऐसा वचन दिया था, तो फिर उसे तोड़कर तुमने यह खत क्यों लिखा ? पूनम से फिर अंजना बनने का फैसला क्यों किया ?"

"मैं विवश हो गई। उनके पुराने बंधन और फिर बनवारी जैसे शैतान का भय हर घड़ी मेरी ज़िंदगी को परेशानियों में जकड़े जा रहा था।"

"लेकिन तुमने कभी यह भी सोचा कि तुम्हारी ज़िंदगी के सारे भेद जानकर कमल पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?"

"तो क्या वह खत···"

"वह खत उस तक नहीं पहुंचा। वह मेरे पास है।"

वह कोई उत्तर न दे सकी, कोई और बात न कह सकी। मौन

हो गई। जब उसके ससुर ने उसके पत्र के प्रभाव की ओर उसका ध्यान दिलाया तो वह परिणाम और सत्य को समझने लगी। उस खत ने भले ही उनकी ज़िंदगी में भूचाल पैदा कर दिया, लेकिन उसे उस खतरे से बचा लिया था जिसमें उसकी ज़िंदगी छिन्न-भिन्न हो जाती।

यह भेद जानते ही कमल को उससे घृणा पैदा हो जाती और वह शायद फिर कभी उसका नाम तक नहीं लेता।

बाबूजी की ज़बान की बरछियों का वार वह अधिक देर सहन न कर सकी। वहीं फर्श पर घुटनों के बल बैठकर उसने बाबूजी के पांव पकड़ लिए और उनपर सिर रखकर क्षमा मांगते हुए बोली— "मैं मजबूर थी बाबूजी! आप सब कुछ जान गए हैं। मेरे सीने का बोझ हल्का हो गया है। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैंने आपकी थाती आप तक पहुंचा दी है। अब मैं यहां से चली जाऊंगी और किसीको कानोंकान खबर नहीं होगी।"

"कहां जाओगी?"

"कहीं भी, लेकिन अपनी बदनसीबी की छाया आपके परिवार या उस बच्चे पर कभी नहीं डालूंगी।"

"तुम चली गईं तो इस घर की बदनामी होगी। लोग कहेंगे कि डिप्टी साहब की बहू भाग गई।"

"वह तो मर चुकी, कब की!"

"लेकिन लोग कैसे मानेंगे?"

"मेरे जाने के बाद उनपर सचाई ज़ाहिर हो जाएगी। उन्हें पता चल जाएगा कि मैं कोई धोखेबाज़, मक्कार औरत थी।"

"या लोग यह समझेंगे कि डिप्टी साहब ने अपनी बहू के गुनाह को छिपाने के लिए ढोंग रचाया है? बदनामी पर पर्दा डालने के लिए यह कहानी गढ़ी है?"

डिप्टी साहब की बात सुनकर वह सकते में आ गई। उनकी इस बात का उसके पास कोई उत्तर नहीं था। इस मजबूरी और बेबसी से बचने का कोई रास्ता नहीं था।

"एक रास्ता है," बाबूजी बोले—"जिससे इस घर की इज़्ज़त भी रह जाएगी और तुम्हारी ज़िंदगी भी संवर जाएगी।"

"क्या?"

"तुम्हारी ज़िंदगी का यह राज़ हम दोनों के सिवा तीसरा और कोई न जान पाए।"

"लेकिन..."

"तुम्हें मेरी बहू ने नया जन्म दिया है। तुम अंजना को भूलकर सदा के लिए पूनम बनी रहो। इसीमें हम सबकी भलाई है।"

"बाबूजी..." भावुकतावश उसकी आंखों में आंसू आ गए और वह सिसकियां भरती हुई बोली—"मैं आपका यह उपकार जीवन-भर नहीं भूलूंगी। मैं वचन देती हूं कि आपके नाम को कभी बट्टा नहीं लगने दूंगी। मैं आपके बेटे की बहू बनकर अपनी पूरी ज़िंदगी आपके चरणों में बिता दूंगी। राजीव को मां का पूरा-पूरा प्यार दूंगी। अंजना आज से मर गई। मैं पूनम हूं, आपकी अभागी बहू! आपके चरणों की धूल!"

यह कहते-कहते उसकी घिग्घी बंध गई। वह और अधिक कुछ न कह सकी। उसे यों लगा जैसे उसका जीवन लहरों के रेले में बहती हुई एक नौका था और आज उसे एक पतवार मिल गई। उसमें जीने की एक नई हिम्मत आ गई। उसके दिल की धड़कनों में छिपा भय सहसा निकल गया। वह एक मचलती हुई लहर की तरह उठी और कमरे से बाहर चली गई।

लाला जगन्नाथ, जो अपनी जगह तकिये का सहारा लिए ज्यों के त्यों बैठे थे, उसके मन की दशा जानकर चिन्तित हो उठे।

अंजना जल्दी से सीढ़ियां पार करके अपने कमरे में पहुंची। इस समय वह अपने-आपमें नहीं थी। उसने राजीव की भी परवाह नहीं की जो रमिया के साथ रसोईघर में बैठा खेल रहा था। उसने दरवाज़े के किवाड़ बंद कर लिए और बंद दरवाज़े का सहारा लेकर अपने जीवन के उस भार के बारे में सोचने लगी जो आज हल्का हो गया था।

तभी उसे कमल का ख्याल आया जो उसके हृदय में बस चुका था। यह सोचकर कि उसने खत से सब कुछ जान लिया होगा, वह उसके निकट आ चुकी थी। दोनों ने एक-दूसरे को अपने निश्चय से भी सूचित कर दिया था। लेकिन अब जब वह देखेगा कि अंजना ने अकस्मात् अपने को बदल लिया है तो वह क्या सोचेगा! उसने अपना विचार शालो को भी बता दिया था और यह भी संभव था कि शालो ने अपने पिताजी से बात भी कर ली हो। इन्हीं विचारों ने उसके मन पर एक बोझ बनना शुरू कर दिया और उसके सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगी। दिल आतिशदान में पड़े हुए अंगारों की तरह सुलगने लगा।

सहसा उसे अपने कमरे में किसीके मौजूद होने का आभास हुआ। उसके नथने तक जलते हुए सिगरेट की बू पहुंची और वह भय से थर्रा उठी। उसने फटी-फटी निगाहों से उस अर्ध-अंधकार में चारों ओर नज़र डाली और फिर यकायक उसके मुंह से एक चीख निकलकर कमरे में घुटकर रह गई।

वह बनवारी था। सोफे में धंसा हुआ सिगरेट पी रहा था। अंजना पर नज़र पड़ते ही उसने सिगरेट बुझा दी और संभलकर बैठ गया।

अंजना धीरे-धीरे पग बढ़ाती हुई उसके निकट आई और घबराई हुई आवाज़ में बोली—"तुम! यहां! इस समय!"

"हां अंजू! जब बाहर के उजाले में तुम्हारा दीदार न हो सका तो चुपके से इस अंधेरे में आ छिपा।"

"यों चोरों की तरह यहां घुस आए! कोई क्या कहेगा?"

"कुछ नहीं, एक चोर दूसरे चोर के कमरे में घुसा है। कोई खास बात नहीं है।"

बनवारी की इस धृष्टता का कोई उत्तर देने के बजाय उसका शरीर कांपने लगा, लेकिन जल्दी ही उसने संभलकर दीवार पर लगा बिजली का स्विच दबा दिया परन्तु बत्ती नहीं जली।

"रहने दो अंजू! यह चिराग अब तुम्हारे हाथों नहीं जल सकेंगे।"

"क्यों? बत्ती को क्या हुआ?"

"यहां आते ही मैंने तार खींच दिए थे।"

"लेकिन क्यों?" वह कुछ कठोरता से बोली।

"ताकि मैं आज अंधेरे में ही अपनी पुरानी भेंट को दुहरा सकूं।"

"बनवारी!"

"हां अंजू! उजाले में तो तुमने मुझे पहचानने से इंकार कर दिया था। तुम्हारे ससुर ने आज मनुष्यता के नाते भी मेरा लिहाज़ नहीं किया और मेरी बेइज़्ज़ती कर दी। मुझे फटकारकर घर से चले जाने के लिए कहा। इसीलिए सोचा कि इस अंधेरे में ही तुमसे दो-चार बातें कर ली जाएं।"

"तुम क्या कहना चाहते हो, बोलो।"

"पहले अपने इस अंगार बने चेहरे को कुछ नरम कर लो तो कहूं।"

"मैं जानती हूं, तुम्हें क्या कहना है।"

"क्या जानती हो ?"

"यही कि तुम्हें मेरा भेद छिपाने के लिए कीमत चाहिए। मेरे अतीत की आड़ लेकर तुम इस घर की दौलत लूटना चाहते हो। बदनामी की धमकी देकर मेरा जीवन दूभर कर देना चाहते हो।"

"नहीं, अब मुझे कुछ नहीं चाहिए, बस तुम्हारा प्यार चाहिए।"

उस शैतान के मुंह से प्यार का वह शब्द उसे ऐसा लगा जैसे उसने उसके कानों में पिघलता हुआ शीशा उंडेल दिया हो। वह खिसकती हुई उससे तनिक दूर हट गई। बनवारी भी कदम बढ़ाता हुआ उसके निकट आ गया। उसने फिर से अंजना को अपने पुराने प्यार की याद दिलाई और उसकी दुहाई दी। उसको अपनाने के लिए कसमें खाने लगा।

अंजना ज्यों-ज्यों पीछे हटती, वह बराबर आगे बढ़ता। अन्त में वह एक जगह जमकर खड़ी हो गई। बनवारी ने उसकी बांह पकड़ ली और दूसरे हाथ से उसकी ठुड्डी पकडकर उसका चेहरा ऊपर उठाया और इससे पहले कि वह उसके होंठों पर अपने भद्दे और बदबूदार होंठ रख देता, अंजना तड़पकर उससे अलग हो गई और फिर दूसरे ही क्षण उसने लपककर आतिशदान में से एक लकड़ी उठा ली और उसे बनवारी की आंखों के सामने कर दिया।

बनवारी ने एकसाथ उस जलती हुई लकड़ी और उन दहकती हुई आंखों को देखा और तनिक पीछे हटकर खड़ा हो गया।

अंजना की आंखों से आग बरस रही थी। आज वह अपनी सारी मजबूरियों को सदा के लिए भस्म कर डालना चाहती थी और इसीलिए वह जलती लकड़ी लिए घायल शेरनी की तरह उस शिकार की ओर बढ़ रही थी जिसने उसका जीना हराम कर दिया था।

अब वह सचमुच उससे डरने लगा और तेजी से पीछे हट गया। साथ ही साथ वह गिड़गिड़ाने भी लगा—"पागल तो नहीं हुई हो ! अरे ! अरे ! यह क्या नादानी है। ऐसा मजाक भी कोई करता है !"

"यह मजाक नहीं है कमीने ! एक विवश नारी की आग है जो तुम्हें भस्म कर देगी।" और वह उसकी ओर झपटी।

अंधेरे कमरे में पीछे हटते हुए वह एक-दो बार कुर्सियों से टकराया। वह वहां से बच निकलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन अंजना उसे अवसर नहीं दे रही थी। वह आज उसका मनहूस चेहरा दाग देने पर तुल गई थी। उसने आगे बढ़कर जलती लकड़ी से एक भरपूर वार किया, लेकिन बनवारी बड़ी फुर्ती से वह वार बचाकर

एक खुली खिड़की के पास जा पहुंचा। वह उस खिड़की से निकल भागना चाहता था और अभी वह अपने पर तौल ही रहा था कि अंजना ने बढ़कर वह लकड़ी उसके चेहरे से चिपका दी। एक चीख के साथ वह डगमगा गया और बाहर छत पर जा गिरा।

छत ढलवान थी इसलिए वह लुढ़कता हुआ नीचे बागीचे में जा गिरा। उसके गिरने से धमाका हुआ और साथ ही बागीचे में खुले कुत्तों ने भूकना शुरू कर दिया। कोठी के नौकर बाहर आ गए। शोर सुनकर डिप्टी साहब भी अपनी बंदूक लिए निकले और फिर बहू के कमरे की ओर बढ़ गए।

अंजना उन आवाज़ों को सुनकर दहल गई। उसने दूर बागीचे के अंधेरे में बनवारी को भागते देखा जो झील की ओर गुम हो गया। कुत्ते दूर तक उसका पीछा करते चले गए। उसने हाथ में पकड़ी हुई लकड़ी को झट से आतिशदान में फेंक दिया और दरवाज़ा खोल दिया।

जब बाबूजी उसके कमरे में पहुंचे तो वह बुत बनी खड़ी थी। उन्होंने जब बत्ती जलानी चाही तो वह जली नहीं। रमिया और घर के दूसरे नौकर भी बाबूजी के पीछे-पीछे वहां चले आए।

"क्या हुआ बहू ?" लाला जगन्नाथ ने हाथ में ली हुई बंदूक का सहारा लेते हुए प्रश्न किया।

वह चुप रही। घर के नौकरों के सामने वह कुछ बोल न सकी।

मालिक का इशारा पाते ही सारे नौकर कमरे से बाहर चले गए। लालाजी ने रमिया से लैम्प लाने के लिए कहा और वह धीरे-धीरे चलते हुए बहू के निकट आ गए। अंजना का चेहरा पीला पड़ गया था।

"क्यों बहू ! कौन था ?"

"बनवारी।" उसके कांपते होंठों से बस इतना ही निकला।

"ओह ! उस कमीने की यह मजाल ! खैर, घबराओ नहीं, मैं देख लूंगा उसे। तुम सब खिड़कियों के दरवाज़े बंद कर लो। मैं अभी पुलिस को खबर करता हूं।"

"नहीं बाबूजी ! ऐसे आदमी के मुंह लगना अच्छा नहीं। कहीं वह हमारे घराने की बदनामी का कारण न बन जाए !"

लालाजी ने एक उचटती नज़र बहू पर डाली और चुपचाप लौट गए।

इतने में रमिया मिट्टी के तेल का लैम्प अंदर ले आई और उसे पलंग के बराबर वाली मेज़ पर रख दिया। धुंधली रोशनी कमरे में

फैल गई।

अंजना ने देखा रमिया पास खड़ी उसे बड़े ध्यान से देख रही थी। निगाहें टकराते ही वह झेंपकर बोली—"ये खिड़कियां बंद कर दूं बहू रानी ?"

"क्यों ?"

"कहीं वह पाजी फिर न आ जाए।"

"कौन ?"

"आपका रिश्तेदार, बनवारी।"

"अंजना ने देखा, यह नाम लेते समय उसके अधरों पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान उभर आई। उसने मालकिन की ओर ऐसी नज़रों से देखा जैसे वह उसकी घनिष्ठ सहेली हो और पलटकर बाहर जाने लगी।

"रमिया !"

वह रुक गई।

"राजीव कहां है !"

"बाबूजी के पास।"

"उसे यहां ले आ।"

"अच्छा।"

रमिया चली गई और कमरे में फिर पहले जैसी स्तब्धता छा गई। दूर से अभी तक कुत्तों के भूंकने की आवाजें आ रही थीं।

१८

शबनम ने ज्योंही स्पिरिट से भरी रुई से बनवारी के चेहरे को छुआ, वह दर्द से बिलबिला उठा।

वह उसकी इस बच्चों वाली हरकत पर मुस्करा पड़ी और बोली—"जवाब नहीं है वार करने वाली का ! चेहरा ही दाग दिया !"

"चेहरे का यह दाग तो मिट जाएगा शिब्बू ! लेकिन दिल का दाग मिटने वाला नहीं है।"

"दया आती है बनवारी, तुमपर ! ज़िंदगी-भर ज़माना डरता रहा तुमसे और अब तुम डर गए उस मामूली-सी लड़की से ! लानत है तुम्हारे जीने पर !"

"शिब्बू !" वह क्रोध से तिलमिला उठा—"मेरी इज़्ज़त को मत ललकारो, नहीं तो मैं कुछ कर बैठूंगा।"

"क्या कर लोगे ! ज़्यादा से ज़्यादा बेचारी का खून कर दोगे। और क्या !"

"हां, शायद अब मुझे यही करना पड़ेगा।"

"जब जुआरी हार जाता है तो वह ऐसी ही बातें करने लगता है।"

"बकवास बन्द करो।"

"लो, चुप हो गई। बस !" शबनम ने अपने होंठों पर उंगली रख ली और वहां से जाने के लिए उठी।

बनवारी ने बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया और खींचकर अपनी गोद में गिरा लिया। वह एक मछली की तरह तड़पी लेकिन बनवारी की बांहों की जकड़ से निकल न सकी।

"क्यों, नाराज़ हो गईं क्या ?" बनवारी ने बड़े प्यार से पूछा।

"तुमसे नाराज़ होकर जान आफत में डालनी है !"

बनवारी ने उसके गाल में दांत धंसा दिए। वह चिल्ला उठी और कसकर बनवारी के मुंह पर तमाचा जड़ दिया।

बनवारी चांटा खाकर हंस पड़ा, बोला—"अरे, तेरी इन्हीं अदाओं ने तो मुझे अपना कैदी बना रखा है !"

"तो दुम हिलाते उस अंजू के पास गालियां खाने क्यों चले जाते हो ? मुझे यहां दुबारा क्यों बुलाया है ?"

"इन्हीं गालियों में तो मज़ा आता है शिब्बू ! एक ऐसा मज़ा जिसका अनुमान तुम नहीं लगा सकतीं जानेमन !"

"जिस दौलत के सपने तुम देख रहे हो बनवारी, वह तुम्हारे हाथ लगने की नहीं।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि वह अंज़ना के हाथ में है।"

"मैं भी तो इसी चिन्ता में हूं कि कुछ बांट लूं।"

"प्यार से चाहो तो औरत सब कुछ मर्द के ह्वाले कर सकती है, लेकिन वह तुमसे नफरत करती है। तुम्हें एक फूटी कौड़ी भी नहीं देगी।"

"तो मैं अपना हिस्सा नफरत से ही ले लूंगा।" उसने कठोर स्वर में कहा और उठकर सामने की अलमारी से शराब की बोतल निकाल दी। इससे पहले कि वह पलटता, शबनम खाली गिलास लिए उसके सामने आ गई।

बनवारी ने देखा आज वह एक ही गिलास लिए खड़ी थी। शबनम

ने वह गिलास मेज़ पर रखा और शराबी आंखों से बनवारी की ओर देखने लगी।

बनवारी मुस्कराता हुआ बोला—"क्या इरादा है ?"

"इरादा नेक नहीं है।"

"तो लाओ दूसरा गिलास।" बनवारी ने अपना गिलास भरते हुए कहा।

"आज पीने का मूड नहीं है। तुम तो जानते ही हो, मैं किसीका दुख नहीं बांटती।"

"कौन कहता है कि मैं दुखी हूं !"

"सुखी भी तो नज़र नहीं आते।"

"मेरी वेदनाओं से खेलना तूने किससे सीखा है ?"

"तुम्हारी चाल ने सब सिखा दिया।"

बनवारी ने भरा हुआ गिलास उसकी ओर बढ़ाया, लेकिन उसने इंकार कर दिया। बनवारी ने ज़बरदस्ती गिलास उसके मुंह से लगा दिया। वह लड़खड़ाई और गिलास होंठों से अलग करने का प्रयास किया। बनवारी ने उसे बालों से पकड़ लिया और ज़बरदस्ती उसके हलक में शराब उंडेलने लगा।

वह तिलमिलाई, हड़बड़ाई और इसी हड़बड़ाहट में उसे खांसी आ गई। शराब फव्वारे की तरह उसके मुंह से निकलकर बनवारी के कपड़ों पर बिखर गई। उसकी दशा देखकर बनवारी खिलखिला उठा।

इन्हीं उलझनों में गिरफ्तार अंजना अभी तक अपने पलंग पर बैठी थी। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी। आज की घटना ने उसे व्याकुल कर दिया था। वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि एक दिन उसकी ज़िंदगी ऐसे चौराहे पर आ खड़ी होगी कि उसे कोई रास्ता भी सुझाई नहीं देगा।

एक ओर बहू का कर्तव्य था और दूसरी ओर कमल का प्यार दिल के किसी कोने में पनप चुका था। एक ओर बनवारी का भय था और दूसरी ओर उस जीवन का भय जो प्रत्येक क्षण एक अंधी और गहरी खाई में गिरता जा रहा था। उस घर की ज़िम्मेदारियां अपने सिर पर लेकर वह जीवन-भर न उभर सकेगी। आज तो बाबूजी ने उसकी इज़्ज़त रख ली, लेकिन कल जब वे न होंगे तो दुनिया वाले उससे कैसा सलूक करेंगे ? इसका ख्याल आते ही वह कांप उठी।

एक फैसला जो बार-बार उसके मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था, वह था इस घर को सदा के लिए तिलांजलि दे देना। उस जाल से बाहर निकल जाना जो उसे बुरी तरह जकड़े जा रहा था। अन्त में वह कुछ सोचकर उठी और एक छोटे-से अटैचीकेस में अपने पहनने के दो-चार कपड़े रखे। ज़ेवरात और चाभियों का गुच्छा लेकर पलंग के पास आई जिसपर राजीव पड़ा सो रहा था।

राजीव को देखते ही उसके दिल में ममता उमड़ी। वह उसपर झुक गई और उसका ललाट चूम लिया। आंखों में आंसू उमड़ आए लेकिन धीरज से काम लिया। कांपते हाथों से राजीव के बाल सहलाए और फिर कंबल से ढांपकर अलग हो गई।

वह अटैचीकेस थामे धीरे-धीरे सीढ़ियां उतर रही थी। सदर हाल की धुंधली रोशनी में उसे हर चीज़ साफ दिखाई दे रही थी। उसे वे मौन वस्तुएं अपनी ओर घूरती दिखाई दीं जैसे वह इस घर से कुछ चुराकर भाग रही हो।

वह सांस रोके बड़े हाल में पहुंची। तालियों के गुच्छे को और भी मज़बूती से पकड़े वह चुपचाप बाबूजी के कमरे की ओर बढ़ी।

वे नींद में डूबे हुए थे। अंजना ने हिम्मत की और उनके शयन-कक्ष में चली गई। वह धीरे-धीरे उनके पलंग के पास पहुंची और चाभियों का वह गुच्छा उनके तकिए के पास रख दिया। ऐसा करते समय उसे ऐसा लगा जैसे उस घर की सारी ज़िम्मेदारियों का बोझ उसके सिर से उतर गया हो। उसने झुककर बाबूजी के पैर छुए और तेज़ी से बाहर निकल गई।

अंधेरे में चलते हुए वह बाहरी फाटक तक पहुंची; लेकिन ज्योंही उसने फाटक की अंदरूनी चटखनी खोलनी चाही, वह ठिठक गई। दरवाज़े पर एक बड़ा-सा ताला पड़ा हुआ था। यह देखकर वह भय से सिहर उठी। इस ताले ने उसके सारे इरादों को कुचल डाला।

अभी वह असमंजस में पड़ी वहीं खड़ी थी कि किसी आहट को सुनकर उसके कान खड़े हो गए। उसने पलटकर देखा और धक् से रह गई। किसीने बाबूजी के कमरे की बत्ती जला दी थी।

उसने इस चकाचौंध रोशनी में देखा, बाबूजी कमरे से निकलकर दालान में खड़े हैं और उनके हाथों में वह चाभियों का गुच्छा है। उन्हें देखते ही अंजना के हाथ से अटैचीकेस छूटकर नीचे गिर गया और वह सिर से पांव तक पसीने में भीग गई।

"तुम जा रही हो बहू!" लाला जगन्नाथ ने उसके निकट आते

हुए कहा ।

"जी ! नहीं तो !" वह बौखला उठी ।

"तो इतनी रात गए चाभियों का यह गुच्छा मेरे कमरे में क्यों छोड़ आई थीं ?"

"ताकि अब आपको मेरे लिए अधिक व्याकुल न होना पड़े ।"

"मैं तो कभी व्याकुल नहीं था तुम्हारे लिए । यह तो तुम्हारे मन की हलचल है जो तुम्हें शांति से नहीं रहने देती ।"

"कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूं !" वह रुआंसी हो उठी ।

"वही करो जो हम दोनों ने मिलकर तय कर लिया है ।"

बाबूजी की बात सुनकर एक बार वह फिर चौंक गई और उनकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगी ।

"हां, तुम्हें पूनम बनकर रहना होगा इस संसार में । अंजना की समृति को भी दिल से निकाल फेंकना होगा ।"

"यह कैसे संभव हो सकता है बाबूजी ! ज़िंदगी के इतने लम्बे अर्से को कैसे भुला दूं ?"

"हर असंभव बात संभव हो सकती है । कल क्या था, इसे भूल जाओ । जो कल आ रहा है, वह मेरे सुपुर्द कर दो ।"

अंजना ने उनकी यह विचित्र और अनोखी बात सुनी और उनके चेहरे की ओर ताकने लगी जो आज व्याकुल नहीं था । उनके अधरों पर आशा से भरी एक मुस्कान नाच रही थी । वे अंजना की इस हरकत से रुष्ट नहीं थे जैसे वे उसकी मानसिक दशा उससे अधिक समझते हों ।

वे कुछ देर उसकी पथराई और गूंगी नज़रों को निहारते रहे और फिर बोले—"क्या सोच रही हो बहू ? कल जब तुम्हें सहारा चाहिए था तो इसे अपना घर समझ लिया और आज जब इस घर को एक बहू की ज़रूरत है तो तुम घबरा रही हो !"

बाबूजी के शब्द उसके दिल में उतर गए । वह तड़प उठी और उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसने झुककर अपना अटैचीकेस उठाया और थकी-हारी-सी अन्दर की ओर जाने लगी ।

लाला जगन्नाथ ने उसे रोका और चाभियों का वह गुच्छा उसकी हथेली पर रखते हुए कहा—"वादा करो कि अपनी जिम्मेदारियों को अपनाओगी और कभी उनसे मुंह नहीं मोड़ोगी ।"

अंजना ने भीगी पलकों से वचन दिया । उसके थरथराते होंठ

श्रौर भी न जाने क्या कहना चाहते थे, लेकिन ज़बान न खुल सकी। लाला जगन्नाथ उस समय तक अपनी जगह पर खड़े रहे जब तक वह अपने कमरे में नहीं पहुंच गई।

अब अंजना के जीवन में एक विशेष परिवर्तन आ गया। उसने बाबूजी के कहने के अनुसार अपनी ज़िंदगी ढालनी शुरू कर दी। कल तक वह अपने लिए जी रही थी और अब उसने डिप्टी साहब के घराने के लिए जीना शुरू कर दिया। वह सचमुच अंजना को भूलकर पूनम बनने की कोशिश करने लगी। वह दिन-रात बाबूजी की सेवा करती, घर की देखभाल करती और राजीव की मुस्कराहट के लिए न्योछावर हो जाती।

इस बीच दो-एक बार कमल आया भी, लेकिन उसने उसका सामना नहीं किया। कमल ने उससे मिलने का यत्न भी किया, लेकिन वह टाल गई। वह अब उससे दूर हो जाना चाहती थी।

लाला जगन्नाथ उसमें आए हुए इस परिवर्तन को बड़े ध्यान से परख रहे थे। शायद यह औरत की सबसे बड़ी अग्नि-परीक्षा थी जब वह अपने हृदय और कर्तव्य के दोराहे पर खड़ी होकर 'किधर जाए और किधर न जाए' का फ़ैसला करती है।

आज भी जब वह सुबह का नाश्ता लेकर बाबूजी के कमरे में आई तो वे सुबह की डाक देख रहे थे। बहू को देखते ही कह उठे—"लो शेखर की मां का खत, एक हफ्ते की और मोहलत मांगी है।"

"तो क्या हुआ! मन लग गया होगा। रहने दीजिए ना, घर से निकलना आसान भी तो नहीं है।"

"इसका डर नहीं मुझे, डर तो दूसरी बात का है।"

"किस बात का?"

"कहीं उसने वहीं आश्रम बनाकर संन्यास ले लिया तो मेरा क्या होगा?"

"तो आप भी संन्यास ले लीजिएगा।" इस आवाज़ ने दोनों को चौंका दिया।

सामने दरवाज़े में कमल खड़ा था जिसने उनकी बातें सुन ली थीं और अपनी राय से अवगत करा दिया। अंजना झेंप गई और बाबूजी के लिए चाय बनाने लगी। कमल ने डिप्टी साहब के स्वागत का उत्तर देते हुए कहा:

"आंटी के बिना आप उदास हो गए हैं!"

"क्या करूं, अर्धांगिनी जो ठहरी !"

अंजना ने चाय का प्याला बाबूजी के सामने रखा और उनके लिए अंडा छीलने लगी।

कमल उसकी निष्ठुरता देखते हुए बोला—"एक प्याला चाय हम भी पीएंगे।"

अंजना ने अंडे को वहीं छोड़ दिया और उसके लिए चाय का पानी रखने लगी।

"कहो, कैसे हैं तुम्हारे डैडी ? बिल्कुल मतलबपरस्त हो गया है अब हमारा दोस्त ! महीनों खत तक लिखने की फुरसत नहीं मिलती उसे।"

"उन्हींकी खबर लेकर आया था।"

"कुशल तो है ?"

"सब कुशल है, बस अपनी शामत आ गई।"

"क्यों ?"

"वे अगले हफ्ते यहां आ रहे हैं।"

"वाह ! बाप की आमद को शामत कहते हो !"

"उनकी आमद को नहीं उनके इरादों को। मुझे तो अभी से डर लग रहा है।"

"हूं ! तो इसलिए कि वे कहीं तुम्हें शादी-ब्याह के बंधन में न जकड़ दें !"

उसने इसका कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि अंजना उसके पास ही चाय का प्याला लिए आ खड़ी हुई। उसने पलटकर उस झेंपी हुई मूरत को देखा और प्याला उसके हाथ से ले लिया।

"तबीयत तो ठीक है आपकी बहू की ?" उसने लालाजी से प्रश्न किया।

"क्यों ?"

"पहले कभी इतना गंभीर नहीं देखा।"

"तुम्हें देखते ही गंभीर हो गई है। अकेले जो आए हो।"

बाबूजी की इस बात पर दोनों चौंक पड़े।

"इसकी हमजोली शालो जो यहां से चली गई।" उन्होंने बात पूरी कर दी। कमल इसपर मुस्करा पड़ा और चाय के हल्के-हल्के घूंट भरने लगा।

इतने में अंजना ने अंडा छील दिया। नमक और काली मिर्च की शीशियों के साथ तश्तरी में सजाकर रख दिया और इससे पहले कि

कमल कोई और बात करता, वह बाबूजी के मैले कपड़े उठाकर कमरे से बाहर चली गई।

"बहू ने आकर तो मेरे घर को स्वर्ग बना दिया है कमल !"

"अपना-अपना भाग्य है !"

"इसीलिए तो कहता हूं बेटा ! अपना भाग्य बदल लो, शादी कर लो।"

"हां चाचाजी ! आप ठीक कहते हैं। मैं भी सोचता हूं कि अपना भाग्य बदल डालूं और घर वालों की इच्छा पूरी कर दूं।"

"इससे अच्छी बात और क्या होगी ! कोई लड़की पसंद आई ?"

"हूं ?"

"कौन है ?"

"कहते हुए डर लगता है।"

"मुझसे ? डरता तो तू अपने डैडी से है। मैं तो तुम्हारा चचा होने के साथ-साथ दोस्त भी हूं।"

"तो कह दूं चाचाजी ?"

"हां-हां, कह दो, बिना झिझक ! मुझसे नहीं कहोगे तो क्या अपने बाप से कहोगे ! हां, तो बताओ, कौन है वह लक्ष्मी ?"

"आपकी···बहू !" वह थरथराकर बोला।

"कमल !" लालाजी चिल्लाकर रह गए। उन्हें लगा कि इस समय उनकी बहू कमरे के बाहर खड़ी है।

"हां चाचाजी ! याद है, एक दिन आपने खुद ही अपने दिल की बात कही थी मुझसे ! आपने कहा था कि आप उसका दूसरा ब्याह करना चाहते हैं।"

"लेकिन मैंने···मैंने···" कुछ कहते-कहते वे रुक गए।

"क्या आप नहीं चाहते कि यह देवी सदा के लिए आपकी बहू बनी रहे ? आपकी नजरों के सामने रहे ? आपके राजीव के सिर पर छाया बनी रहे ?"

लालाजी ने ध्यान से कमल की ओर देखा। कमल की आंखों में प्यार उमड़ आया था। दिल में छिपे हुए प्यार के मोती अब पलकों में आ टिके थे। भावुकता की धारा में बहकर उसने अपने दिल का भेद उनसे खोल दिया था।

"तुम्हारे डैडी इस रिश्ते को स्वीकार करेंगे ?"

"उन्हें मनाना तो आपका काम है।"

"और बहू को ?"

वह चुप हो गया। बाबूजी के इस प्रश्न का उसके पास कोई उत्तर नहीं था।

उसे मौन देखकर उन्होंने फिर अपना प्रश्न दुहराया। कमल ने रुकते-रुकते केवल इतना ही कहा :

"मुझे तो विश्वास है कि वह इंकार नहीं करेगी।"

कुछ देर बाद जब कमल बाबूजी के कमरे से निकलकर कोठी के सदर फाटक की ओर बढ़ रहा था तो सहसा उसके कदम रुक गए। बागीचे की ओर लकड़ी के एक टाल तले अंजना अकेली बैठी कुछ सोच रही थी। कमल कुछ क्षण ठिठककर देखता रहा और फिर धीरे-धीरे उसके निकट चला आया।

वह अपनी चिंता में मग्न दूसरी ओर मुंह किए झील का पानी निहार रही थी। कमल भी चुपके से उसके निकट खड़ा हो गया और झील की ओर देखने लगा जिसके किनारे स्कूल के कुछ बच्चे पतंग उड़ा रहे थे। अंजना उन बच्चों की ओर देख रही थी जो नीले आसमान में डोर को ढील देते हुए एक-दूसरे की पतंग काटने में मस्त थे।

अचानक एक पतंग कटी और हवा में बल खाती हुई उनके बागीचे में आ गिरी। उस पतंग को देखकर वह उठी लेकिन किसीको अपने पास पाकर वह कंपित अधरों से बोल पड़ी—"आप!"

"यहां बैठी क्या सोच रही हो?"

"सोच रही हूं, मेरी ज़िंदगी भी इस कटी पतंग से कितनी मिलती-जुलती है?"

"वह कैसे?"

"डोर से कट जाने के बाद अपने साथियों से बिछुड़ जो गई!"

"या अपने देवता से मिलने के लिए उसने उन सबका साथ छोड़ दिया और आज़ाद हो गई!"

"लेकिन हवा के तेज़ झोंकों का कब तक सामना कर सकेगी? वह इसके टुकड़े-टुकड़े कर देगी।"

"इससे पहले ही कोई उसे उचक लेगा। देखो पूनम! उस पतंग को माली के लड़के ने उठा लिया। वह उसके लिए नई डोर लाएगा और उसे फिर से आकाश में पहुंचाएगा।"

अंजना ने निगाहें उठाकर उस पतंग की ओर देखा जिसे माली के लड़के ने थाम लिया था और उसे लिए जंगल की ओर भाग रहा था ताकि और लड़कों की निगाह न पड़ जाए। लड़का जब नज़रों से ओझल

हो गया तो अंजना ने निगाहें फेर लीं।

"जानती हो पूनम! आज मैंने बाबूजी से दिल की बात कह दी है।"

"क्या?"

"उस माली के बेटे की तरह मैं भी तुम्हें नई डोर से बांधूंगा। एक नया जीवन दूंगा अपना बनाकर।"

"कमल!" वह बस इतना ही बोल सकी।

"और उन्होंने मेरी बात मानने का वचन भी दिया है।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

"ऐसा ही है पूनम! जानती हो मैंने क्या कहा जब उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या पूनम मानेगी?"

"क्या?"

"मुझे विश्वास है कि वह इंकार नहीं करेगी।"

कमल की इस बात पर उसे विश्वास नहीं आया और मुड़कर वह अन्दर जाने लगी।

"पूनम!"

वह कमल की पुकार पर ठिठक गई। उसके कान उसकी बात सुनने के लिए चौकन्ने हो गए।

"वचन दो कि तुम कभी इंकार नहीं करोगी।"

"मेरी ज़िंदगी का फैसला बाबूजी के हाथ में है।"

"वे तो कर चुके।"

"क्या?"

"तुम्हारी दूसरी शादी।"

इस वाक्य ने उसका दिल चीरकर रख दिया। वह दूसरी शादी के नाम से कराह उठी। उसने एक गहरी नज़र कमल पर डाली और बिना कुछ कहे वहां से चली गई।

१९

"वाह! क्या सोचा है! लगता है, तुम सठिया गए हो!"

"मैं नहीं, तुम सठिया गए हो केदारनाथ! मैं तो तुम्हारे बेटे की ज़िंदगी बनाने की सोच रहा हूं।"

"जवाब नहीं तुम्हारा! एक विधवा और वह भी तुम्हारे पोते की मां! उसे मेरे बेटे के गले मढ़कर एहसान जता रहे हो!"

"वह एक देवी है, घर की लक्ष्मी है।"

"तो उसे अपने घर में ही सजाकर दिन-रात उसकी पूजा किया करो। मुझे नहीं चाहिए ऐसी देवी, ऐसी लक्ष्मी!"

"तुम हो मोटी अकल के आदमी!"

"मोटी अकल का हूं, जभी तो स्वस्थ हूं। तुम्हारी तरह जिंदगी की बारीकियों के बारे में सोचने लगूं तो दो दिन में ही चारपाई पकड़ लूं।"

केदारनाथ ने अपने माथे से पसीना पोंछा और क्रोध से नथने फुलाकर इधर-उधर देखने लगे। जगन्नाथ को अपने मित्र के मन-मस्तिष्क में फैली उत्तेजना का आभास हो गया, अतः पास पड़ी मेज से दवा की शीशी में से दो गोलियां निकालकर उसे देते हुए बोले—"लो ये गोलियां, मुंह में रख लो। तुम्हारा क्रोध और मन की सारी उत्तेजना शान्त हो जाएगी।"

"मजाक न करो जगन्नाथ!"

"अच्छा, नहीं करूंगा। अब कहो।"

"कहने को तुमने छोड़ा ही क्या है! सोचा था तुमसे कुछ मन की पीड़ा कहूंगा तो कुछ तसल्ली मिलेगी, संतोष होगा।"

"संतोष चाहते हो तो बेटे का घर बसा दो।"

"तुम घर बसाने की बात तो करते नहीं। तुम तो कमल के जीवन को दीमक लगाने की राय दे रहे हो।"

"इतने में अंजना कमरे में आ गई। उसके हाथों में नाश्ते की ट्रे थी। केदारनाथ बात करते-करते चौंक पड़े और सौंदर्य की उस जीवित प्रतिमा की ओर देखने लगे।

अंजना ने ट्रे उन लोगों के सामने रख दी और हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

"ये हैं अपने कमल के डैडी! पांव छुओ इनके बेटा।"

अंजना ने बाबूजी का इशारा पाकर जब केदारनाथ के पांव छुए तो वे हड़बड़ाके उठ गए। उनके चेहरे से पसीने की बूंदें फूट पड़ीं। वे उसे इस तरह देखने लगे जैसे पहले भी कहीं देखा हो।

"ये मेरे बहुत पुराने दोस्त हैं और भाई-बंद भी।" लाला जगन्नाथ ने आगे कहकर अपनी बात पूरी की।

अंजना तश्तरी में से एक सेब उठाकर उसे छुरी से काटने लगी और फिर उसकी फांकें उनके सामने रखकर जब वह जाने लगी तो लाला जगन्नाथ ने उससे कहा—"पूनम बेटा! ये चाय नहीं पीते,

इनके लिए गरम दूध भेज देना और दो-चार टुकड़े मीठे के भी।"

वह सिर हिलाकर चली गई। केदार बाबू ने, जो अब तक अपने मित्र की बात सुनकर क्रोध से उबल रहे थे, अंजना पर से नज़र हटाकर जगन्नाथ की ओर देखा।

"क्यों! चकरा गया दिमाग मेरी बहू देखकर! ऐसी सुशील और सुन्दर लड़की..."

"अरे, जब उसके हंसने के दिन थे तो उसे घर में घुसने नहीं दिया और आज जब उसके जीवन में आग लग गई तो उसपर तरस खाकर उसका बखान कर रहे हो।"

"हां केदारनाथ! यह दुख मुझे दिन-रात खोखला किए जा रहा है और इसीलिए मैंने फिर इसकी ज़िंदगी में बहार लाने का फैसला किया है।"

"वह कैसे?" केदार बाबू ने सेब का टुकड़ा चबाते-चबाते रुककर पूछा।

"इसे तुम्हारे घर का शृंगार बनाकर।"

"जब इसे घुन लग गया तो मेरे हवाले करना चाहते हो?"

"नहीं केदार बाबू! ऐसा मत कहो। वह गंगाजल की तरह पवित्र है और चांदनी की तरह उजली है। वह मेरे पोते की मां भी नहीं है।"

यह सुनते ही केदारनाथ का मुंह खुले का खुला रह गया। उन्हें विश्वास हो गया कि उनका मित्र बुढ़ापे में अक्ल खो बैठा है।

"क्या बक रहे हो यार?"

"ठीक कहता हूं केदार बाबू! यह उसके जीवन का एक गुप्त भेद है, जो मेरे सिवा और कोई नहीं जानता।"

"अब तुमने झूठ बोलना भी शुरू कर दिया है?"

"नहीं, यह सत्य है। मेरी पूनम मर चुकी है। यह उसकी सहेली है अंजना जो मेरे पोते को इस घर में पहुंचाने चली आई थी।"

"लेकिन पहले तो तुमने ऐसा कभी लिखा नहीं।"

"पहले मैं भी कहां जानता था! यह भेद तो उसने मुझसे भी छिपाए रखा।"

"क्यों?"

"उसे एक सहारे की तलाश थी जहां वह अपनी जवानी को छिपाकर रख सकती और इसीलिए वह विधवा बनकर मेरे घर में पड़ी रही।"

"क्या यह सब कुछ कमल भी जानता है ?"

"नहीं, वह इसे अब तक शेखर की विधवा ही समझता है और इसपर भी अपना जीवन-साथी बनाने के सपने देख रहा है ।"

"लेकिन यह कौन है ? कहां से आई है ? किस खानदान की है ? यह सब तो मालूम हो गया होगा तुम्हें ?"

"बस यूं समझो कि एक अमूल्य मोती है जिसे मिट्टी में मिलने से बचाना होगा ।"

"लेकिन बिना कुछ जाने-पूछे मैं कैसे कुछ कर सकता हूं जगन्नाथ ?"

"बहू का कहना है कि तुम उसे अच्छी तरह से जानते हो। उसके खानदान को भी जानते हो ।'

"उसे जानता हूं ?" चकित होकर उन्होंने कहा और अपने दिमाग पर ज़ोर देने लगे। तो क्या इसीलिए उसे देखकर भौचक्का-सा रह गया था ? कुछ याद न आने पर बोले —"लेकिन वह है कौन ?"

"तुम्हारे स्वर्गीय मित्र राजकिशन की भांजी, अंजना ।"

"जगन्नाथ !" वे चिल्ला उठे। राजकिशन का नाम सुनते ही उनके तन-बदन में आग लग गई ।"

उनकी आंखों के सामने वह दृश्य घूम गया जब बड़ी मानहानि उठाकर कमल की बारात लौट आई थी और इसके बाद वे किसी रिश्तेदार के सामने गरदन न उठा सके। क्रोध से एक बार फिर वे पसीने से तरबतर हो गए। उनकी ज़बान लड़खड़ाने लगी। आंखों में खून उतर आया और वे दांत किचकिचाकर बोले—"तुम चाहते हो, मैं फिर उसी खानदान में रिश्ता कर लूं जिसने मुझे कहीं का नहीं रखा ?"

"हां, मैं यही चाहता हूं ।"

"लेकिन क्यों ?"

"इसलिए कि भगवान को यही मंजूर है। अगर स्वयं विधाता उनके बन्धन नहीं तोड़ सका तो हम कौन होते हैं ! मीलों की दूरी तय करके वह हीरा फिर उसी घर का शृंगार बनने आ गया है। उसे अपना लो केदारनाथ ! पुरानी बातें भूल जाओ। यह भूल जाओ कि वह कौन है ? यह रिश्ता मेरे परिवार में हो रहा है, मेरी बहू से नहीं, मेरी बेटी से ।"

इतने में अंजना तश्तरी में दूध का गिलास लिए आई। लाला जगन्नाथ ने झट अपने आंसू पोंछ लिए और होंठों हर ज़बरदस्ती

मुस्कराहट लाते हुए गिलास लेकर केदारनाथ के सामने रख दिया। केदारनाथ, जो अभी तक अपने-आपमें नहीं थे, गहरी नज़रों से अंजना की ओर देखने लगे, जिसे बहुत दिन पहले उन्होंने अपने इकलौते सपूत के लिए चुना था।

लाला जगन्नाथ ने उनकी कड़ी निगाहों को अंजना पर से हटाने की कोशिश करते हुए कहा—"यह क्या बहू! मैंने तो केवल मीठा लाने के लिए कहा था, तुम नमकीन भी ले आईं।"

"क्या मालूम आज इन्हें क्या पसन्द हो? इसीलिए दोनों ले आई।" अंजना जो केदार बाबू की नज़रों से पहले ही घबरा रही थी और भी घबरा गई और फिर बाबूजी की दवा की शीशी उनके पास रखते हुए बोली—"शाम को गोलियां लेना मत भूलिएगा।"

"तुम कहीं जा रही हो क्या?"

"जी हां, मंदिर।"

अंजना बाहर जाने के लिए मुड़ी। केदार बाबू उसे जाते देखते रहे। जीवन में कभी ऐसा भी अवसर आएगा कि परिस्थितियां इस तरह उनका उपहास करेंगी—इस बात पर उन्हें विश्वास नहीं आ रहा था।

"क्यों केदारनाथ, क्या फैसला किया?"

"मेरी तो अकल काम नहीं करती।"

"तो दूसरों की अकल से काम लो। ऐसी बहू तो इस जन्म में नहीं मिलेगी।"

'लेकिन कमल क्या कहेगा?"

"जिसकी कल्पना से उसे घृणा है, उसीके अस्तित्व से वह प्यार करता है।"

"लेकिन जब उसके विश्वास को धक्का लगेगा तब?"

"इसीलिए तो कहता हूं, उसे मेरी बेटी समझकर रिश्ता कर लो। रहस्य रहस्य ही बना रहेगा।"

"दुनियावालों को क्या जवाब दूंगा?"

"उनकी परवाह मत करो। न तो वे कल तुम्हारे शोक में तुम्हारे साथ थे और न आज वे तुम्हारी खुशियों में भागीदार बनेंगे।"

"अंजना का क्या कहना है?"

"कुछ नहीं, वह तो अपने-आपको इस घर के लिए अर्पण कर चुकी है। उसकी खुशियों के बारे में तो हम दोनों को सोचना है।"

"लेकिन उसने तुम्हें यह सब कुछ बताया कैसे?"

"उसने नहीं, बल्कि उसके खत ने बताया है जो उसने तुम्हारे बेटे के नाम लिखा है।"

इसके साथ ही लाला जगन्नाथ ने अंजना का वह खत केदारनाथ के सामने रख दिया। केदारनाथ उसे उठाकर पढ़ने लगे। खत पढ़ने के साथ ही उनके चेहरे की हवाइयां उड़ने लगीं।

खत वापस करते हुए उन्होंने लाला जगन्नाथ से कहा—"क्या कमल को इसकी जानकारी है?"

"नहीं, यह खत उसे मिलने से पहले ही मेरे हाथ लग गया था।"

केदार बाबू चुप हो गए। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें? वे किसी गहरी सोच में डूब गए और उसी अवस्था में मग्न दूध का गिलास उठाकर घूंट-घूंट पीने लगे।

"ज़िंदगी-भर कोई पुण्य का काम हमने नहीं किया केदारनाथ!"

केदार बाबू ने प्रश्नसूचक दृष्टि से लाला जगन्नाथ की ओर देखा।

"आओ, यह पुण्य कमा लें। दो बिछुड़ी आत्माओं का मिलन करा दें।"

"बात तो पते की कहते हो दोस्त, लेकिन एक बात से डरता हूं।"

"किस बात से?"

"कहीं कमल को असलियत का पता चल गया, तो फिर से इन दोनों की ज़िंदगी बरबाद हो जाएगी।"

"उसके बारे में मैंने पहले ही सोच लिया है।"

"क्या?"

"यह बात मैं तुम्हें शादी की रात बताऊंगा।"

केदार बाबू चुप हो गए। वे जानते थे, जगन्नाथ की हर बात में कोई न कोई रहस्यमय गुर छिपा होता है।

उन्होंने दूध के दो-तीन लम्बे-लम्बे घूंट भरे। जगन्नाथ ने मिठाई की तश्तरी उनके आगे बढ़ाई और बोले—"लो दोस्त, इसी बात पर मुंह मीठा कर लो।"

केदार बाबू ने मिठाई का एक टुकड़ा उठाकर अपने दोस्त के मुंह में दे दिया और दूसरा स्वयं खाने लगे।

इतने में लाला जगन्नाथ ने देखा कि रमिया खिड़की में खड़ी उनकी ओर देख रही है। नज़रें मिलते ही झेंप गई और जल्दी-जल्दी दालान में टंगे कपड़े समेटने लगी। लाला जगन्नाथ उसे देखकर

एक पल के लिए गम्भीर हो गए। उन्हें इस बात की शंका हुई कि कहीं रमिया ने उनकी बातें तो नहीं सुन लीं। उन्होंने पुकारकर कहा—"रमिया! यहां क्या कर रही है?"

"कपड़े समेट रही हूं बाबूजी!"

"राजीव कहां है?"

"बड़े कमरे में खेल रहा है।"

"जा, पहले उसे संभाल।"

वह उनके कुसमय क्रोध को भाप गई और जल्दी से कपड़े समेटती हुई अन्दर चली गई। लाला जगन्नाथ ने देखा कि इतने में केदार बाबू ने मिठाई की पूरी प्लेट साफ कर दी थी।

दो घंटे बाद जब अंजना मंदिर से लौटी तो लालाजी के मित्र महोदय जा चुके थे और लालाजी अपने कमरे में बैठे कोई किताब पढ़ रहे थे। अंजना ने बढ़कर उन्हें देवी का प्रसाद दिया और खिड़कियों के पर्दे गिरानी लगी, क्योंकि कमरे में हवा के तेज झोंके आ रहे थे।

"आपके मेहमान चले गए बाबूजी?" उसने पूछा।

"हां बहू! अभी थोड़ी देर पहले ही गए हैं।"

वह चुप हो गई और खिड़की से हटकर उनका बिस्तर ठीक करने लगी।

सहसा लाला जगन्नाथ ने पुकारा—"बहू!"

"जी, बाबूजी!"

"आज तुम यों उजड़ी सूरत बनाए उनके सामने आओगी, इसकी मुझे आशा नहीं थी।"

"वैसा मैंने जान-बूझकर किया था बाबूजी!"

"वह क्यों?"

"पहले-पहल इन्होंने ही मुझे मामू के साथ होस्टल में देखा था। डर रही थी कि कहीं पहचान न जाएं।"

"वे तो पहली ही नज़र में पहचान गए थे कि तुम वही लड़की हो।"

उनकी यह बात सुनते ही वह धक् से रह गई। उसके हाथ-पांव कांपने लगे। बड़ी मुश्किल से वह बिस्तर की चादर ठीक कर सकी।

लाला जगन्नाथ ने उसकी मानसिक दशा समझते हुए कहा—"घबराने की कोई बात नहीं, मैंने बात बना दी थी।"

"वह कैसे ?"

"जैसे भी हुआ उन्हें विश्वास दिला दिया कि उन्हें भ्रम हुआ है।"

यह सुनकर वह चुप हो गई। एक गहरा सांस लेते हुए उसने बिस्तर पर तकिया जमाया और बोली—"आप बिस्तर पर आएंगे अभी ?"

"नहीं, कुछ देर और बैठूंगा।"

अंजना बिस्तर संवारकर जाने लगी तो बाबूजी ने उसे रोक लिया और बोले—"तुम्हारी गैरहाजिरी में हमने एक फैसला कर लिया है—एक अनोखा फैसला।"

"क्या ?" वह चौंक उठी।

"कमल और तुम्हारे ब्याह का फैसला।"

वह यह सुनते ही सिर से पांव तक सिहर उठी और लाज से मुंह फेरकर खड़ी हो गई। उसे लगा जैसे उसके पांव वहीं फर्श में गड़ गए हों।

"क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

"यह सोचना भी अब पाप है।"

"किसीके मन को कुचलना भी तो पाप है !"

"वह तो मेरा प्रायश्चित्त है। मेरा अग्नि परीक्षा है।"

"नहीं, तुम नहीं जानतीं कि मेरे खानदान के अन्तिम वारिस को घर पहुंचाकर तुमने मुझपर कितना बड़ा एहसान किया है। तुमने अपनी सहेली की बात पर इतना बड़ा त्याग किया है तो मैं कैसे वह सब भूल सकता हूं। मेरा भी तो कोई कर्तव्य है !"

अंजना ने भीगी पलकों से बाबूजी की ओर देखा।

क्षण-भर रुककर वे पुनः बोले—"हां बेटी ! मैंने अपने दिल में तुम्हारी टूटी हुई उस डोर को फिर से जोड़ने का प्रयत्न किया है। वह बन्धन जिसे भगवान न तोड़ सका, मैं उन्हें जोड़ने का वसीला बनना चाहता हूं।"

अंजना की आंखों से छम्-छम् आंसू गिरने लगे। उन्होंने इशारे से उसे पास बुलाया। वह कुछ लड़खड़ाती-सी उनकी ओर बढ़ी और उनके पांवों के पास बैठ गई।

लाला जगन्नाथ ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"अब गम के ये आंसू पोंछ डालो बेटी ! तुम्हारी आराधना पूरी हो गई। बरसों पहले समय की जो डोर कट गई थी अब वह फिर बंधने जा

रही है।"

"लेकिन वह सचाई तो···?"

"भूल जाओ उस सचाई को, उस असलियत को। मैं तुम्हें अपनी बेटी समझकर ब्याह रहा हूं। और तुम मुझे वचन दो कि जब तक मैं अपने कर्तव्य का पूर्णतः पालन न कर लूं, तुम यह भेद किसीको नहीं बताओगी।"

अंजना ने स्वीकारात्मक ढंग से सिर हिला दिया और अपने आंसू पोंछती हुई कमरे से बाहर चली गई। उसकी कुंआरी और गूंगी आंखों में फिर से वह चमक आ गई। उसकी अंधेरी राहों में असंख्य दीये जगमगा उठे। वह एक तरह से भागती हुई सीढ़ियां पार करके अपने कमरे में जा पहुंची।

सामने कालीन पर राजीव खेल रहा था। अंजना ने लपककर उसे अपने अंक में भर लिया और उसे पागलों की तरह चूमने लगी। अकस्मात् उसके पेट में वह गुदगुदी करने लगी और राजीव ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। आज से पहले उसने मां की यह मुद्रा कभी नहीं देखी थी।

अचानक रमिया को देखकर वह सकपका गई। उसने अपने ढलके आंचल को संवारा और रमिया की ओर देखने लगी जो राजीव का दूध बनाकर लिए आ रही थी।

रमिया के हाथ से दूध की बोतल लेकर उसने कहा—"जा, तू और काम कर, मैं पिला देती हूं।"

"बहू रानी!" अंजना की ओर एकटक देखते हुए रमिया बोली।

"क्या है?"

"बाबूजी से आपने कहा?"

"क्या?"

"पेशगी तनख्वाह के लिए! आज फिर मां का खत आया है।"

"आह! रमिया, तेरा भी जवाब नहीं। एक बार कहा न, वे नहीं मानेंगे।"

"आप कहकर तो देखिए।"

"अच्छा बाबा! जा काम कर। वे नहीं माने तो मैं दे दूंगी।"

रमिया यह सुनकर खुश हो गई और नाचती हुई सी बाहर चली गई। उसने आज तक मालकिन का ऐसा मूड नहीं देखा था। वह उछलती-कूदती बागीचे में चली गई और राजीव के खिलौने

बटोरने लगी जो शाम को खेलते समय वह वहीं छोड़ आया था।

सहसा अंधेरे में अंगारे की चमक देखकर वह कांप उठी। थोड़ी ही दूर पर बागीचे की हद के बाहर कोई बैठा सिगरेट पी रहा था। वह आंखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखने लगी जो अब होंठों की सीटी बजाकर उसे अपने पास बुला रहा था। उसके हाथों से वे खिलौने छूट गए और वह उसे पहचानने का यत्न करने लगी। जैसे ही अंधेरे में उस आदमी के दांत चमके, वह उसे पहचान गई। वह बनवारी था जो न जाने कब से लोहे की बाड़ का सहारा लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

रमिया ने चारों ओर नज़र डाली। जब कोई दिखाई न दिया तो वह उसकी ओर बढ़ी।

उसने सिगरेट के अधजले टुकड़े को वहीं पत्थर पर मसल डाला और बोला—"जानती हो, कब से तुम्हारे इन्तज़ार में खड़ा हूं?"

"कब से?"

"पूरा एक घण्टा हो गया।"

"तुम्हें कैसे पता था कि मैं यहां आऊंगी?"

"यूं ही, अन्दाज़ से।"

"और अगर मैं न आती तो?"

"रात-भर यों ही खड़ा रहता।" बनवारी ने मुस्कराकर कहा और फिर जेब से एक छोटा-सा पैकेट निकालकर बोला—"यह लो धानी चूड़ियां।"

"अरे! मैंने तो मज़ाक किया था!"

"तो वह मज़ाक सच हो गया।"

बनवारी ने वह पैकेट खोलकर चूड़ियों को उंगलियों में लहराया। रमिया ने ललचाई नज़रों से उस अंधेरे में उनकी चमक देखी और उन्हें बनवारी से झपट लिया और एक चूड़ी को अपनी पुतलियों के सामने नचाने लगी। देखते ही देखते धीरे-धीरे चूड़ियां वह अपनी बांहों में उतारने लगी।

"तुम्हारी बहू रानी कहां हैं इस वक्त?"

"अपने कमरे में बच्चे से खेल रही हैं।"

"उसे बच्चे से बहुत प्यार है?"

"था, लेकिन अब नहीं रहा।"

"क्यों?"

"उनका प्यार बंट गया है।"

"वह कैसे ?"

"आजकल बच्चे से ज्यादा वह कमल बाबू को चाहने लगी हैं।"

"झूठ! वह भला उसे क्यों चाहने लगी! वह तो मुझसे प्यार करती है।"

"औरत ज़ात का क्या भरोसा बाबू! जिसने प्यार के दो बोल कहे, उसीकी हो गई। मुझीको लो ना, जिसका नमक खाया उसीका भेद तुम्हें देने चली आई।"

"कोई नई खबर ?"

"सुनोगे तो तन-बदन में आग लग जाएगी।"

"अरी सुना भी।"

"इतनी बड़ी खबर और मुफ्त में कह दूं ?"

"ये चूड़ियां जो लाया हूं।"

"यह तो एक भेंट है बाबू! अपनी मरज़ी से लाए हो।"

"फिर ?"

"हाथ पर कुछ रखो तो एक अनोखी खबर सुनाऊं।"

बनवारी ने उसकी ललचाई हुई नज़रों को ध्यान से देखा और फिर दस का एक नोट निकालकर उसकी हथेली पर रख दिया। वह खिल उठी और दस का नोट अपनी चोली में रखते हुए अपना मुंह उसके कानों के पास ले जाकर धीमी आवाज़ में बोली :

"सुना है, कमल बाबू और बहू रानी का ब्याह होने वाला है।"

"यह झूठ है।" वह तिलमिला उठा।

"बिलकुल सच है। मैंने अपने कानों से सुना है। डिप्टी साहब ने कमल के बाप से कहा है।"

"एक विधवा की शादी! नामुमकिन!"

"बाबू! अगर तुम विधवा से छुप-छुपकर प्यार करने आ जाते हो, तो वह शादी क्यों नहीं कर सकती ?"

तभी अन्दर से किसीने रमिया को पुकारा और वह हड़बड़ाकर उठी।

"हाय! मर गई! बाबूजी के दूध का वक्त हो गया।" यह कहते ही वह वहां से अन्दर भागी।

बनवारी ने सिर उठाकर अंजना के कमरे की ओर देखा जिसकी खिड़की पर पड़े हुए पर्दे में से रोशनी छन-छनकर बाहर आ रही थी। वह दांत पीसता हुआ बाहर चला गया।

जब वह होटल के कमरे में पहुंचा तो डाक्टर शबनम को देख रहा था। उसे पिछले दो दिन से बड़ा तेज़ बुखार था।

डाक्टर ने तसल्ली देते हुए कहा कि मामूली नज़ले का बुखार है। दो-एक दिन में ठीक हो जाएगा।

बनवारी ने बताया—"डाक्टर ! पिछले दो दिन से यह एक पल के लिए नहीं सोई।"

"सोना चाहती हूं लेकिन नींद नहीं आती डाक्टर !" शबनम ने रुक-रुककर कहा।

डाक्टर ने उसकी नब्ज़ दुबारा देखी और कागज़ के पुर्जे पर नुस्खा लिखते हुए बोला—"यह नींद की दवा है। चौबीस घंटे में केवल एक गोली। दूसरी गोली बिना मुझसे पूछे न दी जाए।"

नुस्खा देकर डाक्टर चला गया। बनवारी उस पर्ची को पकड़े उसी कुर्सी पर बैठ गया जिसपर डाक्टर बैठा था और चुपचाप शबनम के बाल सहलाने लगा।

"क्या बात है बनवारी ?"

"कुछ नहीं।"

"इतने उदास क्यों हो ? क्या फिर अंजू से झड़प हो गई ?"

"नहीं शिब्बू ! अब तो अपने-आपसे हो रही है।"

"तो क्यों नहीं वह रास्ता छोड़ देते जिसपर चलने से तुम्हारा मन तुम्हें कोसता है ?"

"यह इतना आसान नहीं है शिब्बू !"

यह कहकर वह अपनी जगह से उठा। सामने की अलमारी से शराब की बोतल निकाली, उसका कार्क हटाया और बोतल मुंह से लगाकर कुछ घूंट हलक में उंडेल लिए। फिर उसने एक तिरछी नज़र शबनम पर डाली और वह नुस्खा लिए कमरे से बाहर निकल गया।

२०

"उई दइया !" रसोईघर में आते ही रमिया के मुंह से एक फुसफुसी-सी निकल गई। फिर उसने अपने-आपको संभाला और उस अंधेरे कोने में देखने लगी जिसमें खड़े बनवारी की आंखें जंगली भेड़िये की तरह चमक रही थीं।

बनवारी उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला—"क्या बात है रमिया ?

आज कुछ गुस्से में हो ! मेम साहब ने डांट दिया है क्या ?"

"मेरी जूती डांट खाती है ! अब के तनखाह न बढ़ाई तो देख लूंगी !" वह बड़बड़ाई।

"क्या करोगी ?"

"दस घर और हैं, हाथ जोड़के ले जाएंगे।" उसने माथे पर झलक आए पसीने की नन्ही-नन्ही बूंदों को आंचल से साफ किया और चूल्हे में आग तेज़ करती हुई बोली—"चूल्हा जलाए तो रमिया ! बच्चा खेलाए तो रमिया ! झाड़पोंछ करे तो रमिया ! और तनखाह बस चालीस रुपये ! छिः !"

"तू क्यों दीमक लगाती है पगली, अपनी जवानी को ! घर के कामकाज में !"

बनवारी की बात सुनकर वह बरबस चौंकी और उसकी भूखी निगाहों की ओर देखने लगी जो उसके जवान और गदराए बदन को छेदे डाल रही थीं। उसके सूखे होंठों पर उसकी ज़बान नागिन के फन की तरह डोल रही थी। वह तनिक घबरा गई और उसने आंचल समेटकर अपने सीने को ढक लिया। क्रोध के कारण वह उस बनवारी को वहां देखकर यह पूछना भूल ही गई कि वह वहां क्यों आया था।

इससे पहले कि वह यह पूछती, बनवारी उसके और निकट आ गया और जेब से एक पैकेट निकालकर रमिया की ओर बढ़ाया।

"यह क्या है ?" रमिया ने पूछा।

"धानी चुनरी तेरे लिए।" बनवारी ने पैकेट खोलकर चुनरी निकाली और उसे अपनी बांहों पर फैलाकर उसकी नज़रों के सामने कर दिया।

रमिया अपनी घबराहट और मन में समाया क्रोध भूलकर चुनरी की बारीक धारियों को देखने लगी। सितारों से जड़ी रेशमी चुनरी देखकर उसकी आंखों में चमक आ गई।

वह उसकी मुलायम सलवटों पर उंगलियां फेरती हुई बोली—"तुम यह सब क्यों करते हो मेरे लिए बनवारी ?"

"अपना दिल रखने के लिए। तुम जो इतना करती हो मेरे लिए !"

"मैं—! मैं क्या करती हूं ?" उसने वह चुनरी अपने हाथों में थाम ली।

"इस घर में आने देती हो जिससे एक नज़र तुम्हारी मालकिन

को देख लेता हूं।"

"बनवारी !" उसने चूल्हे पर दूध की पतीली रखते हुए कहा।

"हूं।"

"तुम उसे इतना प्यार करते हो, लेकिन वह तुमसे इतनी घृणा क्यों करती है ?"

"तू नहीं समझेगी इस प्यार को। समाज से डरती है तेरी मालकिन !"

"डरती तो कमल बाबू से क्यों प्रेम करती ?"

रमिया की बात सुनते ही वह गंभीर हो गया और क्षण-भर के लिए उसकी आंखों की समझ बुझ गई।

इतने में अंजना की पुकार सुनाई दी। रमिया ने जल्दी से गिलास साफ करके चूल्हे के पास रखा और दूध के उबाल की ओर देखने लगी। इधर बनवारी डरकर किवाड़ के पीछे छिप गया।

रमिया उसकी ओर देखकर बोली—"घबराओ नहीं, वह यहां नहीं आएगी।"

"क्यों ?"

"बाबूजी बीमार हैं, वह उनके पास बैठी है।"

"क्या हुआ है उन्हें ?"

"दो दिन पहले अचानक कुर्सी पर बैठे-बैठे गिर पड़े थे। डाक्टर कहता था कि दिल का दौरा पड़ा था।"

"अब क्या हाल है ?"

"बिस्तर पर पड़े-पड़े आराम कर रहे हैं। तभी तो काम बढ़ गया है। अभी बच्चे को सुलाके आई हूं और अब बुड्ढे को दूध देना है।" वह फिर क्रोधित हो उठी।

उसने गिलास में दूध डाला और दूसरे बर्तन में बार-बार उलट-पलटकर ठंडा करने लगी।

उसे ऐसा करते देख बनवारी ने कहा—"जवाब नहीं तुम्हारा ! पहले गरम करती हो फिर ठंडा।"

"यही दुनिया का दस्तूर है।" यह कहते हुए वह मुड़ी और बगल वाले स्टोर रूम में चीनी लाने चली गई।

बनवारी तो इसी ताक में खड़ा था। वह तुरत किवाड़ के पीछे से निकला और जेब में से दवा की एक शीशी निकाली जिसमें दस-बारह गोलियां थीं। उसने फौरन वे गोलियां दूध के गिलास में डाल

दीं और खाली शीशी को खिड़की से बाहर फेंक दिया।

रमिया चीनी लेकर लौट आई। एक चम्मच चीनी दूध में मिलाई और गिलास को तश्तरी में रखते हुए बोली—"मैं चली !"

"तो मैं जाऊं ?"

"और करोगे भी क्या ? आज वह तुम्हारे साथ बात भी नहीं करेगी।"

"वह क्यों ?"

"कहा ना, बाबूजी बीमार हैं।"

"कोई बात नहीं, कल मिल लूंगा।" यह कहते हुए बनवारी खिड़की से कूद गया।

उसका आना और फिर इस तरह चले जाना रमिया की समझ में नहीं आया। उसने एक बार मोह-भरी दृष्टि चुनरी पर डाली और दूध का गिलास लिए बाबूजी के कमरे की ओर चल पड़ी।

लालाजी को दिल का दौरा पड़े आज दो रोज हो गए थे। सीने का दर्द तो संभल गया था लेकिन डाक्टर ने उन्हें उठने-बैठने, चलने-फिरने की मनाही कर दी थी। अंजना रात-दिन उनकी सेवा में जुटी रहती। सास की अनुपस्थिति के कारण उसकी जिम्मेदारियां बढ़ गई थीं। इस बीच कमल भी वहां नहीं आ सका था। वह अपने पिताजी के साथ बरेली गया हुआ था। किसी रिश्तेदार की शादी पर।

रमिया जब दूध का गिलास लिए कमरे में पहुंची तो लालाजी बिस्तर में लेटे हुए कोई किताब देख रहे थे और अंजना चुपचाप पास बैठी राजीव का स्वेटर बुन रही थी। रमिया को देखते ही उसने इशारा किया और वह दूध का गिलास मेज पर रखकर चली गई।

लालाजी बोले—"कहा ना, दूध नहीं चाहिए।"

"सुबह आपने कुछ नहीं खाया। खाली पेट रात-भर नींद नहीं आएगी।"

"तुम भी डाक्टरों की बातों में आ गई !"

"उनका कहना मानती तो आपको पढ़ने भी न देती।"

"वे पागल हैं। ज़िंदगी के दर्द को दिल का दौरा समझ बैठे।"

वह चुप हो गई और उनको सहारा देकर उनकी पीठ के पीछे तकिया जमा दिया। वे बहू की तीमारदारी पर अत्यन्त प्रसन्न थे।

जब वह दूध का गिलास उठाने लगी तो वे कह उठे—"अभी रुक जाओ, ज़रा ठंडा हो जाए तो पी लूंगा।"

अंजना ने दूध का गिलास वापस रख दिया और उनके हाथों से किताब छीन ली। वे उसकी इस अदा पर मुस्कराकर रह गए। यह सोचकर उनके दिल में कसक-सी हुई कि वह शीघ्र ही ऐसी निःस्वार्थ सेविका से बिछुड़ जाएंगे।

"आप बुरा मान गए ?" अंजना ने पूछा।

"वह क्यों ?" उनका दिल उमड़ आया।

"आपके हाथों से यह किताब जो छीन ली !"

होंठों पर फीकी-सी मुस्कराहट लाए उन्होंने अंजना की ओर डबडबाई आंखों से देखा और बोले—"किताब छिन गई, इसका रंज नहीं, लेकिन जब कोई मेरे हाथोंसे सरस्वती जैसी बेटी छीनकर ले जाएगा तो—तो क्या होगा मेरा ?"

अंजना ने झेंपकर नज़रें झुका लीं। उसे उनकी इस चुभन और कसक का आभास हो गया। वह कुछ झिझकते हुए बोली—"यह आपने कैसे सोचा कि विवाह के बाद मैं आपको भुला बैठूंगी? आपने मुझे मां और बाप दोनों का प्यार दिया है। मैं इस प्यार को नहीं छोड़ सकती।"

"हां, अंजना ! तुम्हारे चले जाने से यह रिश्ता थोड़े ही खत्म हो जाएगा ! मैं भी क्या सोचने लगा ! तुम अपने पति के घर बस जाओगी तो मैं समझूंगा कि मेरी बगिया में फिर से फूल खिल उठे।"

लालाजी की बात सुनकर अंजना की आंखें भीग गईं, लेकिन आंसुओं को अन्दर ही अन्दर पीते हुए उसने घड़ी में समय देखा और दवा की एक गोली उनको दे दी।

गोली को गले में उतारने के बाद लालाजी बोले—"बहू !"

"जी !"

लालाजी ने एक लिफाफे में से कुछ सरकारी कागज़ निकालकर उसे दिए और सावधानी से पास रखने के लिए सचेत किया। अंजना ने उन कागज़ों को ले लिया और लालाजी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगी।

"कुछ दिन पहले मैंने वसीयत की थी, ये वही कागज़ हैं।"

"लेकिन..."

"इन्हें सावधानी से अपने पास रख लो।" लालाजी ने खाली लिफाफा भी उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—"मैंने अपनी सारी जायदाद राजीव के नाम लिख दी है और तुम उसकी गार्जियन होगी।"

अंजना ने कांपते हाथों में लिफाफा थाम लिया लेकिन ज़बान से

कुछ नहीं कहा। वह इस बारे में कुछ कह भी तो नहीं सकती थी! उसकी गंभीरता और उखड़ेपन को देखते हुए वे बोले—"तुम्हें बुरा तो नहीं लगा अंजना?"

"जी! क्या?" वह चौंक पड़ी।

"मेरा यह सब कुछ राजीव के नाम कर देना।"

"इसपर तो उसीका हक है। मैं क्यों बुरा मानने लगी?" अंजना ने होंठों पर जबरदस्ती मुस्कराहट लाते हुए कहा और तिपाई पर पड़ी चीजों को तरतीब से रखने लगी। तभी अधूरा स्वेटर उठाते समय हड़बड़ाहट में उसकी सलाइयां निकल गईं और वह गिरे हुए घरों में सलाइयां डालने लगी।

"कल तुम्हारा ब्याह हो जाएगा!" लालाजी लेटे-लेटे फिर बोले—"तुम ज़िंदगी की रंगीनियों में खो जाओगी। तुम्हारी उजड़ी हुई दुनिया में फिर बहार आ जाएगी। भगवान ने चाहा तो जल्दी ही तुम्हारी गोद भी भर जाएगी और तब..."

वह मौन रही और झेंपी हुई नज़रों से बाबूजी की ओर देखने लगी। वे कहते-कहते रुक गए थे।

एक गहरी सांस लेते हुए वे फिर बोले—"तब कहीं तुम उस मासूम को भूल न जाओ। इस खानदान की आखिरी निशानी की ज़िम्मेदारियां तुमको बोझ न लगने लगें, तुम अपनी सहेली को दिए वचन से मुंह न मोड़ लो! इसीलिए यह वसीयत कर दी है ताकि यह जायदाद तुम्हें हमेशा अपनी ज़िम्मेदारियों की याद दिलाती रहे।"

यह कहते-कहते उनका सांस उखड़ गया। सीने का बोझ उतर गया, लेकिन अपनी जगह एक तिलमिलाहट-सी छोड़ गया।

वह हाथ की सलाई छोड़कर उनकी ओर झुकी और धीरे-धीरे उनकी पीठ सहलाने लगी। उसने अपनी ज़िम्मेदारियां निभाने और राजीव की ज़िंदगी का सहारा बनने की कसम खाई। उसने अपनी डबडबाई आंखों से बाबूजी को विश्वास दिलाया कि वह कभी भी यह नहीं भूलेगी कि वह इस घराने की बहू और राजीव की मां है।

लालाजी ने कुछ और भी कहना चाहा लेकिन अंजना ने अधिक बोलने से मना कर दिया और दूध का गिलास उठाकर उनके आगे कर दिया। इस बार लालाजी इंकार न कर सके और हल्के-हल्के घूंटों से पूरा गिलास पी गए।

अंजना ने खिड़कियों के पर्दे गिरा दिए। छत की रोशनी बन्द कर दी और धुंधली रोशनी का छोटा बल्ब जला दिया ताकि कमरे में

बिल्कुल अंधेरा न हो जाए। उसने बाबूजी के तकिये सीधे कर दिए और एक बार फिर उनकी पीठ धीरे-धीरे सहलाने लगी।

कुछ देर में ही उनकी आंख लग गई। अंजना वसीयतनामा और स्वेटर लिए कमरे से बाहर आ गई। उसने सावधानी से किवाड़ बंद कर दिए ताकि ठंडी हवा कमरे की गरमी को कम न कर दे। फिर जब वह सीढ़ियां चढ़कर अपने कमरे में जा रही थी तो उसके हृदय में कुछ विचित्र-सी शांति थी। रमिया अभी तक रसोई-घर में काम कर रही थी।

अंजना ने रुककर उसे पुकारा और जब वह बाहर आई तो उसने पूछा—"रमिया! मेरा खाना तैयार है?"

"जी, बहू रानी!"

"ऊपर ही ले आना।" यह कहते हुए वह अपने कमरे में चली गई।

रमिया ने भिनभिनाकर नाक सिकोड़ी और जाकर अंजना का खाना परोसने लगी।

आधी रात बीत गई। अंजना बिस्तर पर लेटी सोने के प्रयास में व्याकुल हो रही थी लेकिन नींद जैसे उसकी आंखों से रूठ गई थी। राजीव उसके सीने से लगा सो रहा था। वह गले में लटकी हुई सोने की माला को पकड़े हुए था जिससे वह खेलते-खेलते सो गया था।

अंजना आने वाले जीवन की कल्पना में डूबी न जाने क्या-क्या बेतुकी बातें सोचे जा रही थी। अब उसे उन अंधेरों से भय नहीं लग रहा था। उसे विश्वास था कि कुछ ही दिनों में वे अंधेरे छंट जाएंगे और वह उजालों में बिखरकर कुंदन बन जाने वाली थी।

अब उन अंधेरों से किसीको डर लग रहा था तो शबनम को जो होटल के कमरे में अकेली पड़ी तड़प रही थी। शरीर का ताप तो कम हो गया था लेकिन अंतःकरण में छिपा ताप उसे व्याकुल किए हुए था, क्योंकि बनवारी अभी तक वापस नहीं आया था। दो दिन पहले उन्होंने वह होटल छोड़कर आबादी से ज़रा दूर एक नये होटल में जगह ले ली थी।

शबनम को बनवारी की यह बात पसंद तो नहीं आई थी लेकिन विवश होकर उसे उस होटल में आना पड़ा था। वह व्याकुल होकर बिस्तर से उठ खड़ी हुई और बत्ती जलाकर नींद की गोलियों वाली

शीशी तलाश करने लगी। इसी उलझन और तिलमिलाहट में उसने कमरे की कई चीज़ें उलट-पलट दीं लेकिन वह शीशी नहीं मिली। वह झुंझला उठी और खिड़की के पास रखी हुई सुराही की ओर बढ़ी। सुराही उठाकर मुंह से लगा ली और अपने सीने की भड़कती आग को कुछ कम करने के लिए गटागट पानी पीने लगी।

पानी पीते-पीते सहसा वह रुक गई और खिड़की के पर्दे को हटाकर अपनी तसल्ली करनी चाही कि जो कुछ उसने देखा, सही था या धोखा था।

होटल के बाहरी भाग में बनवारी सीढ़ियों पर अकेला बैठा हुआ था। वह कुछ क्षण खड़ी उसे देखती रही और फिर हाउस कोट से बदन ढांपकर बाहर निकल आई।

बनवारी किसी सोच में डूबा, अकेला बैठा रात की कालिमा को घूर रहा था। शबनम चुपके से उसके पास आई और उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया। वह एकदम कांपकर रह गया।

चौंकते हुए उसने पलटकर देखा तो शबनम बोली—"यहां क्या हो रहा है ?"

"कुछ नहीं।" उसने बेरुखी से उत्तर दिया।

"वाह ! तुम्हारे लिए तो कुछ नहीं और वहां मैं घंटों से तड़प रही हूं ?"

"तड़प तो मैं रहा हूं। तुम्हें क्या गम है ? जाओ, सो जाओ।" बनवारी ने बड़ी निष्ठुरता से कहा और सीढ़ियों पर जमी गर्द को अंगुलियों से चीरकर मन की व्यथा को छिपाने का प्रयत्न करने लगा।

"लेकिन मुझे नींद नहीं आई। तुम तो जानते हो, तुम्हारी शबनम तुम्हारे बिना एक पल भी चैन से नहीं सो सकती। उसे नींद की गोलियां खानी पड़ती हैं।"

वह उसकी बगल में सीढ़ियों पर बैठ गई और अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया। बनवारी, जैसे अब उसे उन अदाओं से ज्यादा लगाव न रहा हो, उसे अलग करते हुए बोला—"जाओ, दो-चार गोलियां खा लो।"

"न जाने वह शीशी कहां रख दी है, बहुत ढूंढ़ा, मिलती ही नहीं।"

शबनम के मुंह से नींद की गोलियों की बात सुनकर बनवारी के दिल की धड़कन एक पल के लिए रुक-सी गई। शबनम ने अपनी बांहें उसकी गरदन में लपेट दीं और बड़ी नाजो-अदा से उसपर झुकती

हुई बोली—"आओ चलो। कब तक यहां बैठे तपस्या करते रहोगे ?"

बनवारी ने एक ही झटके से उसे अलग कर दिया और बड़ी गहरी नज़रों से उसे देखा। बिना कोई उत्तर दिए अपना कोट कंधे पर डालकर वह उठ खड़ा हुआ। शबनम ने उसे रोकने का प्रयास किया लेकिन वह उसकी परवाह किए बिना अपने कमरे की ओर बढ़ता चला गया। उसकी ऐसी निष्ठुरता देखकर शबनम के तन-बदन में आग लग गई।

बनवारी अपने कमरे में पहुंचा। उसे यह हॉटल पसंद था क्योंकि यह आबादी से दूर था और अक्सर वीरान रहता था। अंदर पहुंचने पर उसकी नज़र कमरे में इधर-उधर बिखरी चीज़ों पर पड़ी। उन बेतरतीब चीज़ों को देखकर वह शबनम के हृदय की विह्वलता का अनुमान भली भांति लगा सकता था।

उसने अपनी व्याकुलता कम करने के लिए अल्मारी से शराब की बोतल निकाली। उस बोतल में दो-चार घूंट थे। उसने कार्क खोला और बोतल को मुंह लगाकर शराब हलक में उतार ली। खाली बोतल ज्योंही उसने एक ओर फेंकी, शबनम अन्दर आ गई और उसका रंगढंग देखकर बोली—"औरत की ज़िंदगी भी बस इस बोतल की तरह है। भरी थी तो तुम्हारे होंठों के करीब थी, खाली हुई तो एक ओर फेंक दी।"

"इसमें क्या शक है!" वह झुंझलाकर बोला और अपने कपड़े उतारने के लिए कमीज़ का बटन खोला।

"लेकिन इस बोतल को यूं आसानी से न फेंक सकोगे बनवारी!"

"वह क्यों ?"

"अब उसपर तुम्हारे नाम का लेबल लग चुका है।"

शबनम की बात को भली भांति समझते हुए भी उसने कोई उत्तर नहीं दिया और वहां से हटकर बाथरूम की ओर जाने लगा। शबनम ने रास्ता रोक लिया और अपनी बांहों को दुबारा उसके गले में डाल दिया।

अब वह उसे अलग करने से घबराने लगा। उसे ऐसा लगा जैसे किसीने उसे लोहे की मज़बूत जंजीरों से जकड़ दिया हो और उसमें अब भाग निकलने का साहस ही न हो।

"मुझे परेशान मत करो शिब्बो!"

"मैं तो तुम्हारी परेशानियों को बांटने आई हूं। चाहो तो

आजमाकर देख लो। एक ही इशारे पर मर मिटूंगी।"

"सच !"

बनवारी ने बालों को उंगलियों में उलझाकर उसका चेहरा ऊपर उठाया। शबनम ने आंखें झपकाकर अपनी बात का विश्वास दिलाया। इसपर वह अपनी गंभीरता को मुस्कराहट में बदलते हुए बोला—"तुम्हें मेरा साथ देना होगा। मछली जाल में फंस चुकी है।"

"कौन ? अंजू ?"

"हूं, चाहूं तो उसकी सारी जागीर अपने कब्ज़े में कर लूं।"

"वह कैसे ?"

"धीरे बोलो, दीवारों के भी कान होते हैं। सब कुछ समझा दूंगा।"

"फिर भी···"

उसकी बात वहीं रुक गई। बनवारी ने अपनी हथेली रखकर उसका मुंह बन्द कर दिया और उसे चुप रहने का इशारा किया। वह चुप हो गई और टुकुर-टुकुर उसकी ओर देखने लगी।

"शबनम !"

"हूं।"

"भूख लगी है।"

"लेकिन इस वक्त खाने को क्या मिलेगा ?"

"कोशिश करो, होटल वाले तो तुम्हारे इशारों पर नाचते हैं।"

वह शबनम के सुलगते हुए होंठों पर प्यार से उंगली फेरने लगा। वह मुस्करा पड़ी और बनवारी पर कटाक्ष किया।

अचानक न जाने उसे क्या सूझा कि उसने दांतों से बनवारी की उंगली काट ली। वह दर्द से कराहकर रह गया। वह उसकी इस दशा पर खिलखिला पड़ी।

वह भेड़िया जो कुछ देर पहले गुर्रा रहा था, अब पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलाने लगा। शबनम को अपनी जीत पर गुदगुदाहट-सी हुई और वह उसके लिए खाने का प्रबन्ध करने बाहर चली गई।

२१

अंजना जब मन्दिर से लौटी तो सबसे पहले रमिया से उसका सामना हुआ जो राजीव को लिए उपवन की मखमली घास पर बैठी

उसे गेंद खिला रही थी। राजीव ने मां को देखा तो गेंद लिए उसकी ओर भागा।

अंजना ने झुककर उसके गालों को चूम लिया और रमिया से बोली—"बड़े साहब जग गए?"

"अभी नहीं बहू रानी!"

अंजना ने मन्दिर का प्रसाद बच्चे के मुंह को लगाया और फिर रमिया को देकर अन्दर की ओर बढ़ गई। राजीव और रमिया फिर गेंद खेलने में व्यस्त हो गए। अंजना जल्दी-जल्दी कदम उठाती हुई अंदर आई। आज उसे मन्दिर में देर हो गई थी। कहीं बाबूजी उस-पर बिगड़ न बैठें! अभी तक उन्हें सुबह की चाय तक नहीं दी गई। वह इन सब बातों को सोचती हुई रसोईघर की ओर बढ़ चली।

सुबह की चाय के लिए जब वह बाबूजी के कमरे में आई तो वे अभी तक सो रहे थे। कमरे में पर्दों से छन-छनकर आती हुई सूरज की किरणों ने विद्युत् प्रकाश को धूमिल कर दिया था जो रात से अभी तक जलता आ रहा था।

अंजना ने चाय की ट्रे मेज़ पर रख दी और धीरे से बोली—"बाबूजी! चाय!"

वे मौन रहे। अंजना ने सोचा, शायद रात देर से सोने के कारण अभी तक नींद नहीं खुली। उसने तनिक और ऊंचे स्वर में अपनी बात दुहरा दी और खिड़की तक चली गई। ज्योंही उसने खिड़कियों के पर्दे खींचे, बाबूजी की चुप्पी उसे खलने लगी। उसका दिल धड़-कने लगा।

वह जल्दी से पलटकर तिपाई के पास आ गई और उनके लिए प्याले में चाय उंडेलने लगी।

सहसा उसके हाथ कांपकर रह गए। चायदानी हाथ से गिरते-गिरते बची। वह ध्यान से उनके चेहरे की ओर देखने लगी जो कांति-हीन और सफेद पड़ गया था। वे इतनी गहरी नींद सो रहे थे जैसे उन्हें यह नींद एक मुद्दत के बाद नसीब हुई हो।

अंजना के दिल में खलबली-सी मच गई। वह चाय छोड़कर उनके पास पहुंची। पहले धीरे से और फिर ऊंची आवाज़ से पुकारा, लेकिन लालाजी पर पुकारने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अंजना से अब अधिक सहन नहीं हो सका। उसके हृदय की भयभीत धड़कन ने उसकी सांसों को अपने शिकजे में कस लिया। उसने डरते-डरते अपना हाथ उनके कंधे पर रखा और धीरे से उन्हें झंझोड़ा।

इसी तरह हिलाते ही उनकी गरदन तकिये का सहारा छोड़कर एक ओर ढुलक गई और 'बाबूजी' कहकर अंजना के मुंह से एक घुटी-सी चीख निकल गई।

सहसा वह चुप भी हो गई और उसने अपनी सांसों को रोक लिया। ध्यान से उनके पीले चेहरे की ओर देखा जिसे देखकर अब उसे भय होने लगा। उसने तेज़ी से हाथ खींच लिया और घबराकर कमरे में चारों ओर देखने लगी। बाबूजी उसे यों मंझधार में छोड़कर चले जाएंगे, उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

वह तेज़ी से उन खिड़कियों की ओर बढ़ी जिनमें से प्रकाश की किरणें कमरे में भर रही थीं। उसने जल्दी-जल्दी वे पर्दे दुबारा खींच दिए और कमरे में अंधेरा कर दिया। विद्युत्-प्रकाश का धुंधला प्रकाश फिर उभर आया। उसने उस धुंधली रोशनी में बाबूजी की लाश को दुबारा देखा और शोक से भर उठी। लैंप बुझाना चाहा लेकिन साहस न हुआ। वह बड़े असमंजस में फंसी बहकी-बहकी निगाहों से घूरने लगी।

मांजी हरिद्वार में हैं। कमल भी नैनीताल से बाहर गया हुआ है। दूसरा कोई नहीं था जिसे इस दर्दनाक खबर की वह सूचना दे सके। सबकी अनुपस्थिति में यह घटना घटी। यह सोचकर तो उसकी सांसें टूट गईं। किसी ने अगर उसपर संदेह किया तो वह क्या उत्तर देगी?

सैकड़ों बातें उसके दिमाग में आईं और उसकी नस-नस को झनझनाकर चली गईं। ऐसी दशा में वह क्या करे, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

सहसा उसे डाक्टर का ख्याल आया। उसने लपककर टेलीफोन उठाया और नम्बर डायल किया।

"हलो, हलो···डाक्टर साहब···बाबूजी···।" वह कहते-कहते रुक गई।

"हां, हां, कहो, क्या हुआ बाबूजी को?" दूसरी ओर से आवाज़ आई।

वह हाथों में रिसीवर थामे चुप खड़ी रही। उसने सोचा, वह डाक्टर को बुलाकर अपनी ही जान पर आफत लाने का कारण बन रही है।

"हलो हलो!" डाक्टर बराबर टेलीफोन पर पुकार रहा था लेकिन अंजना उत्तर देने का साहस खो बैठी थी। उसने झट से टेलीफोन बंद कर दिया और भयभीत-सी इधर-उधर देखने लगी।

दूर बागीचे में राजीव अभी तक खेल रहा था। उसके चहचहाने

की आवाज़ अभी तक वहां की शांति को भंग कर रही थी। उसे लगा जैसे दुर्भाग्य की छाया फिर उसे मिट्टी में मिलाने पर तुल गई है।

वह इसी असमंजस में घिरी दीवार का सहारा लेकर खड़ी हो गई और अपने दुर्भाग्य पर रोने लगी। इतने में रमिया की आवाज़ ने उसे चौंका दिया। वह शायद किसी काम से उसी ओर बढ़ती आ रही थी। अंजना के अर्धमूर्च्छित शरीर में बिजली-सी लहरा उठी और वह चाय की ट्रे उठाकर बड़े हाल में आ गई।

रमिया अकेली नहीं थी। उसके साथ कोई और भी था जिसे आज से पहले अंजना ने कभी नहीं देखा था। वह फटी-फटी नज़रों से आने वाले को देखने लगी।

"बाबूजी से मिलने आए हैं।" रमिया ने कहा।

"आप—?"

"उनका दोस्त हूं। एक काम से हाज़िर हुआ हूं।"

अंजना ने हाथ की ट्रे रमिया को दे दी और उसे वापस जाने का इशारा किया। वह अभी तक आने वाले को भांप रही थी।

"घर पर तो हैं डिप्टी साहब?" उसने पूछा।

"जी, हैं तो लेकिन उनकी तबीयत ठीक नहीं है। डाक्टर ने मिलने से मना कर रखा है।"

"मैं तो एक बहुत ज़रूरी काम से आया था। ज़रा उन्हें सूचना तो दे दीजिए।"

"अभी संभव नहीं है। वे सो रहे हैं। जगाना उचित नहीं है।"

"ओह! कोई बात नहीं, मैं उनके जागने तक इन्तज़ार कर लूंगा।" वह यह कहते हुए आराम से सोफे पर बैठ गया।

उसकी ज़िद देखकर अंजना की घबराहट बढ़ गई। फिर भी उसने हिम्मत से काम लिया और बोली—'आप चाय लेंगे या कॉफी?"

"कुछ नहीं, धन्यवाद।"

वह चुप हो गई। आने वाला उसकी घबराहट का अनुमान लगाता रहा। कुछ देर बाद बोला—'आप उनकी बहू हैं ना?'

"जी।"

"मेरा नाम तिवारी है। उसका पुराना सेवक हूं।"

"लेकिन पहले तो मैंने आपको कभी नहीं देखा!"

"हां, आप तब आईं जब मैं लखनऊ में था, रेलवे पुलिस में। अब फिर नैनीताल आ गया हूं।"

पुलिस का नाम सुनते ही उसके पांव तले की ज़मीन सरक गई।

एक अजनबी और वह भी पुलिस वाला ! ऐसे अवसर पर तो उसकी ज़िंदगी खतरनाक से खतरनाक मोड़ ले सकती है ! यह सोचते ही वह सिर से पांव तक कांप गई ।

"तो क्या आप पुलिस की नौकरी करते हैं ?" उसने अपने हृदय की उथल-पुथल को शांत करने के लिए उस बात की पुष्टि करनी चाही ।

"जी हां, पहले रेलवे पुलिस में था और अब सी० आई० डी० में हूं । शेखर तो बस पांच-छ: बरस ही छोटा था मुझसे ।"

अंजना के चेहरे पर एक रंग आ रहा था और दूसरा जा रहा था । वह उसकी निगाहों का अधिक देर तक सामना न कर सकी और हाल में इधर-उधर घूमकर बेतरतीब चीज़ों को ठीक से रखने लगी । उसमें वहां से निकलने का साहस नहीं था । वह डर रही थी कि कहीं दोस्ती का दम भरते हुए यह सी० आई० डी० इंस्पेक्टर बाबूजी के कमरे में न चला जाए ।

"आपका नाम पूनम है ना ?" तिवारी ने सहसा प्रश्न किया ।

"जी ।"

"आज एक अनोखा केस आया है अपने पास ।"

"कैसा केस ?"

"किसीने डिप्टी साहब के घराने पर कीचड़ उछालने की कोशिश की है ।"

"कौन है वह ?"

तिवारी ने देखा उसके ललाट पर पसीने की बूंदें जम गई थीं । वह कुछ क्षण तक उसकी उखड़ी नज़रों को भांपता रहा ।

"यूं तो इस केस का वास्ता आपसे ही है, लेकिन डिप्टी साहब की आज्ञा बिना मैं आपसे कोई प्रश्न करना उचित नहीं समझता ।"

'ऐसी क्या बात है ! कहिए ना ! संभव है ऐसे अवसर पर यह बात उनसे न कही जा सके । वे दिल के मरीज़ हैं ।" रुक-रुककर अंजना कहती गई—"और फिर आप जानते ही हैं कि ऐसी-वैसी कोई बात सुनकर उनकी बीमारी बढ़ भी सकती है ।"

"घर पर मांजी हैं ?"

"नहीं, वे हरिद्वार गई हैं । बस, दो-एक दिन में आ जाएंगी ।"

"और कोई ?'

"मैं हूं, दो-तीन नौकर हैं ।"

"तो फिर आपको मेरे साथ थोड़ी देर के लिए पुलिस स्टेशन चलना होगा ।"

"क्यों ?" वह चौंक पड़ी।

"एक औरत को पहचानने के लिए।"

"कौन है वह ?"

"वह अपने-आपको इस घराने की बहू बताती है, पूनम ! शेखर की वेवा ! और आपके बच्चे की मां !"

"यह झूठ है !" वह बरबस चिल्ला उठी।

"मैं कब कहता हूं, यह सच है। लेकिन कानून कानून है। कभी-कभी झूठे आदमियों की बात भी पुलिस वालों को सुननी पड़ती है।"

"लेकिन आप तो जानते हैं बाबूजी बीमार हैं।"

"इसीलिए तो ऐसा कह रहा हूं। दो-चार सवालों का जवाब देते ही चली आइएगा। मैं कभी नहीं चाहूंगा कि डिप्टी साहब को ऐसी दशा में दुख पहुंचाया जाए।"

"ऐसा संभव नहीं इंस्पेक्टर साहब ! क्या यह सवाल-जवाब दो-एक दिन बाद नहीं हो सकते ?" अंजना ने बड़े नम्र भाव से निवेदन किया।

इंस्पेक्टर का दिल पिघल गया। उसने अंजना की बात मान ली कि वह इस केस की छानबीन दो-चार दिन बाद ही शुरू करेगा। संभव है तब तक डिप्टी साहब भी स्वस्थ हो जाएं।

यह कहकर वह जाने के लिए उठा और अंजना की जान में जान आ गई। इन बातों में क्षण-भर के लिए वह भूल गई कि उससे कुछ ही दूर डिप्टी साहब की लाश पड़ी थी।

तिवारी अभिवादन करके बाहर जाने के लिए बढ़ा, लेकिन फिर फौरन ही रुक गया। उसने सदर दरवाजे से शहर के प्रसिद्ध डाक्टर टंडन को आते देख लिया था।

उन्होंने आते ही अंजना से पूछा—"क्यों, क्या हुआ बाबूजी को ?"

"वह···वह···यूंही उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई।"

"तुमने टेलीफोन पर बात अधूरी छोड़ दी। मैं तो डर गया था।" डाक्टर टंडन यह कहते हुए तेजी से रोगी के कमरे की ओर बढ़ गए।

अंजना बड़े असमंजस में फंस गई। वह उन्हें रोक नहीं सकी। उसने उचटती निगाहों से इंस्पेक्टर की ओर देखा जिसके बाहर की ओर बढ़ते कदम डाक्टर की बात पर फिर रुक गए थे। अंजना भी रुख बदलकर इंस्पेक्टर की तीखी नजरों से बचते हुए डाक्टर के साथ-साथ अन्दर की ओर बढ़ गई।

डाक्टर टंडन ने लाला जगन्नाथ का निरीक्षण करने से पहले

अंजना से खिड़कियों के पर्दे खींचने के लिए कहा। लालाजी ज्यों के त्यों चित पड़े हुए थे। उनके चेहरे की रंगत और फटी हुई आंखों को देखते ही डाक्टर का माथा ठनका।

हाथ में नब्ज़ लेते ही डाक्टर साहब बोल उठे—"वहू ! ये तो चल बसे।"

"नहीं !" एक चीख जैसी आवाज़ दीवारों से टकराई और उसकी ज़बान लड़खड़ाकर रह गई। उसने फटी-फटी आंखों से इंस्पेक्टर तिवारी को एक बार फिर देखा जो अब उसे बड़ी गहरी और संदेह-जनक दृष्टि से देख रहा था। वह कांप उठी और रुख बदलकर लालाजी की पथराई आंखों की ओर देखने लगी।

"आपने कहा था, डिप्टी साहब बीमार हैं ?" तिवारी ने उसकी घबराहट का अनुमान लगाते हुए प्रश्न किया।

"जी, इसीलिए मैंने डाक्टर..."

"डाक्टर को फोन किया और बात अधूरी रह गई !" तिवारी ने बात काटकर पूरी कर दी।

"यस इंस्पेक्टर ! संभव है फोन करते-करते उनकी हालत ज्यादा बिगड़ गई हो।" डाक्टर ने टोक दिया।

"हां डाक्टर ! पहले तो मुझे विश्वास नहीं हुआ और जब मैं आपको फोन करने के लिए बढ़ी तो इनकी फटी-फटी नज़रें देखकर घबरा गई और टेलीफोन मेरे हाथों से छूट गया।"

तिवारी पर अंजना की इस बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह चुपचाप अंजना को निहारता रहा। उसकी तीव्र दृष्टि ने अंजना के दिल में जमा भय और बढ़ा दिया। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि क्या करे।

डाक्टर टंडन ने तनिक ठहरकर डिप्टी साहब की खुली पलकों को अपने हाथों से बंद कर दिया।

"डाक्टर !"

"यस इंस्पेक्टर।"

"कृपा करके आप लोग इस कमरे से बाहर निकल जाएं। पोस्ट-मार्टम के बिना किसी फैसले पर पहुंचना संभव नहीं होगा। इट इज़ ए पुलिस केस।"

यह सुनते ही दोनों एक दूसरे का मुंह देखते रह गए और फिर अंजना डाक्टर के साथ कमरे से बाहर आ गई।

इंस्पेक्टर तिवारी ने पुलिस चौकी से फोन मिलाया और इस

घटना की रिपोर्ट कर दी। उसने थाना इंचार्ज से दो सिपाही भेजने की भी प्रार्थना की।

थोड़ी ही देर में यह बात आसपास के सारे घरों में फैल गई। पुलिस चौकी से सब-इंस्पेक्टर दो सिपाहियों सहित आ गया। तिवारी ने डिप्टी साहब के कमरे के बाहर पहरा लगा दिया और नायब इंस्पेक्टर को लाश के पोस्टमार्टम के बारे में निर्देश दे दिया। घर के सदस्यों या नौकरों को अन्दर आने की मनाही कर दी गई।

इंस्पेक्टर तिवारी कुछ जांच-पड़ताल करने के बाद अंजना के पास आया और उसके पीले और मुर्दा चेहरे की ओर देखकर बोला—"मिसेज़ शेखर!"

"जी!"

"आपको अभी इसी समय मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा।"

"लेकिन घर पर...?" वह इससे अधिक और कुछ नहीं कह सकी।

"मैं मजबूर हूं। केस अब और भी टेढ़ा हो गया है, लेकिन आप घबराइए नहीं, कुछ आवश्यक बातें पूछने के बाद आपको घर भेज दिया जाएगा।"

"लेकिन घर पर कोई नहीं है। मांजी को खबर करनी है।"

"घबराइए नहीं, सब काम हो जाएगा।"

अंजना इस बात का कोई उत्तर न दे सकी और विवश होकर उसे पुलिस इंस्पेक्टर के साथ जाना पड़ा। रमिया भागकर उसका दुशाला ले आई। अंजना ने राजीव को संभालने के लिए रमिया को ताकीद की और कंधों पर दुशाला डालकर वह तिवारी के साथ चल पड़ी।

जब वह पुलिस की जीपगाड़ी में बैठकर रवाना हुई तो उस समय तक आसपास के लोगों ने फाटक के बाहर जमघटा लगा दिया था। जितनी ज़बानें उतनी बातें हो रही थीं। हर कोई उस विधवा को शंकित दृष्टि से देख रहा था।

जब वह इंस्पेक्टर के साथ पुलिस चौकी पहुंची तो वहां वह औरत मौजूद थी जिसने उस घराने की बहू होने का दावा किया था। उसे देखते ही वह हैरान रह गई। उसके सामने सफेद साड़ी पहने शबनम बैठी थी। उसका नाम अंजना की ज़बान पर आते-आते रुक गया। वह पुलिस चौकी का वातावरण देखकर और भी अकुला उठी और मौन निगाहों से उसकी ओर देखने लगी।

"आप इन्हें जानती हैं क्या ?" तिवारी ने प्रश्न किया।

"नहीं।"

"इनका कहना है, ये पूनम हैं—डिप्टी साहब की बेवा बहू।"

"यह झूठ है।"

"तो सच क्या है अंजू ?" शबनम ने इठलाकर कहा।

अंजना उसके प्रश्न पर घबरा गई। उससे कोई उत्तर नहीं बन पड़ा। वह अब पुलिस वालों के सामने क्या कहे और क्या न कहे !

"इंस्पेक्टर साहब ! यह झूठ बक रही है।" अपनी थरथराती आवाज़ में वह इतना ही कह सकी और बड़ी बेबस नज़रों से इधर-उधर देखने लगी।

आपने पहले कभी इस औरत को देखा है ?" तिवारी ने फिर प्रश्न किया।

"नहीं।"

"तो फिर यह आपका असली नाम कैसे जानती है ?"

"मेरा नाम पूनम है। मैं शेखर की विधवा हूं, डिप्टी साहब की बहू।"

"तो वह बच्चा किसका है ?"

तिवारी के इस प्रश्न पर वह पल-भर के लिए चौंकी और फिर शबनम की ओर घृणा से देखते हुए बोली—"वह मेरा बच्चा है, राजीव !"

"इसका कहना है कि वह बच्चा इसका है। तुम इससे छीनकर ले आई हो।"

"नहीं। मैंने कहा ना इंस्पेक्टर साहब ! यह झूठी है, कपटी है। यह मक्कार औरत है। मुझे किसी जाल में फंसाना चाहती है।"

"तुम्हें कैसे पता चला कि यह औरत मक्कार है ?"

इंस्पेक्टर का यह प्रश्न सुनकर वह झेंप गई और एक उचटती-सी नज़र शबनम पर डाली जो उसके उत्तर की प्रतीक्षा में थी।

अंजना ने जब कुछ क्षण कोई उत्तर नहीं दिया तो तिवारी ने दुबारा प्रश्न किया—"बोलो, यह कौन है ? तुम्हें सबसे पहले कहां मिली ? तुमसे क्या रिश्ता है इसका ?"

"हां अंजू ! कह दो ना, तुम्हें यह सबसे पहले कहां मिली ?" यह आवाज़ बनवारी की थी जो यह कहते-कहते अंदर आ गया था। वह उसे देखकर पानी-पानी हो गई।

बनवारी ने अपना सवाल दुहराया—"बता दो ना, यह पहले-

पहल कहां मिली थी ?"

"इंस्पेक्टर साहब !" वह तिलमिला उठी।

"यस मैडम !"

"यह कौन आदमी है ? और इसे यह पूछने का क्या हक है ?"

"यह एक सरकारी गवाह है, पुलिस को सच्ची बात बताने वाला।"

"फिर इससे ही पूछ लीजिए कि यह मक्कार औरत कौन है !" वह झुंझलाकर बोली।

"डिप्टी साहब की बहू और राजीव की मां।" बनवारी ने नपे-तुले ढंग से कहा।

"नहीं, यह बकवास है।"

"अंजू ! मेरी बात मानो। पुलिस वालों से झूठ बोलकर तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। सच-सच कह दो कि तुम कौन हो, मैं कौन हूं और इस औरत का इस खानदान से क्या रिश्ता है !"

अंजना ने घृणा से बनवारी की ओर देखा जो शायद उसे उन सबके सामने अपमानित करने पर तुला हुआ था। उसके अतीत को खोलकर उससे अपनी बेइज़्ज़ती का बदला लेना चाहता था। वह अभी इस निश्चय पर नहीं पहुंची कि क्या जवाब दे कि बनवारी ने उन लोगों से कहना आरंभ कर दिया—"हुज़ूर ! इसका असली नाम अंजना है, पूनम नहीं है !"

"तुम इसे कब से जानते हो ?"

"अपनी बीवी को जानने के लिए क्या वक्त बताना ज़रूरी है ?"

बीवी के शब्द पर अंजना के रोंगटे खड़े हो गए। वह अपनी सफाई में कुछ कहने के लिए बढ़ी, लेकिन तिवारी ने उसे चुप रहने का संकेत किया।

"तो अंजना तुम्हारी बीवी है ?"

"जी। लेकिन किसी बच्चे की मां नहीं है। मेरा और इसका अक्सर इसी बात पर झगड़ा रहता था। इसे बच्चों से प्यार था और मैं इसे दो बरस में बच्चा न दे सका और इसीलिए इसे मुझसे नफरत हो गई।"

"क्या तुम इस औरत को जानते हो ?" तिवारी ने शबनम की ओर इशारा किया।

"जी हां, यह पूनम है। डिप्टी साहब की विधवा बहू है।"

"तुम्हें कैसे पता चला ?"

"काशी एक्सप्रेस में हम लोग इकट्ठे आ रहे थे। जब गाड़ी की दुर्घटना हुई तो हम सब बिछुड़ गए। पूनम घायल हो गई। उसका बच्चा उससे अलग हो गया। मैंने सोचा, मेरी अंजू मर गई।"

"फिर ?"

"कुछ महीनों बाद जब मैं इस औरत की मदद करता हुआ इसे ससुराल तक लाया तो यह देखकर हैरान रह गया कि मेरी अंजू जिन्दा है। जहां मुझे इस बात की खुशी हुई कि मेरी बीवी इस संसार में जीवित है, वहां इस बात का दुःख भी हुआ कि वह इस घराने में पूनम बनी दिन काट रही है।"

"यह सब झूठ है इंस्पेक्टर साहब ! सब झूठ है। न तो यह मेरा पति है और न ही मैं इसकी बीवी हूं। न तो यह पूनम है और न ही मैं इस घराने की बहू हूं। पूनम तो मर चुकी है।"

"तो फिर तुम कौन हो ?"

"अंजना, पूनम की सहेली।"

"और वह बच्चा ?"

"उसकी धरोहर है जिसे मैंने मां का प्यार दिया।"

"ओह ! आई सी। तो यह बात है कि इस औरत का इस घराने से कोई सम्बन्ध नहीं है और असली पूनम मर चुकी है !"

"जी।"

"और यह भी सच है कि तुम असली बहू नहीं हो और न ही यह तुम्हारा पति है ?"

"जी।"

"तो क्या मैं पूछ सकता हूं मिस अंजना देवी, कि आपने ऐसा क्यों किया ?"

"क्या मतलब ?"

"मेरा मतलब यह है कि एक घराने की बहू बनकर आपने डिप्टी साहब और कानून को धोखा देने की जो कोशिश की है, तो आखिर किसलिए ?"

लेकिन इससे पहले कि अंजना इस बात का जवाब देती, तिवारी तनिक ठहरकर फिर कहने लगा—"बनवारी ने इस बीच आपसे मिलने और आपको समझाने की कई बार कोशिश की, लेकिन आपने उसे हमेशा धक्के मारकर घर से निकाल दिया। यहां तक कि उसपर कुत्ते छोड़ दिए और उसे पहचानने से साफ इंकार कर दिया। क्या मैं यह समझूं कि आप शेखर की विधवा का रूप धारण करके इस

खानदान की सारी जायदाद हड़प करना चाहती थीं ?"

"नहीं नहीं नहीं, यह सब झूठ है। मेरा कोई पति नहीं, इससे मेरा कोई रिश्ता नहीं। यह मक्कार और धोखेबाज़ है। यह मेरी ज़िन्दगी तहस-नहस करने पर तुला हुआ है।"

अंजना इतना कहते-कहते हांफ गई। उसका सांस उखड़ गया। और कुछ कहने से पहले वह मूर्च्छा खाकर अचेत हो गई।

एक सिपाही ने बढ़कर उसे संभाला। तिवारी ने शबनम और बनवारी को एक ओर बैठा दिया और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा। बनवारी और शबनम ज़रा अलग होकर अपने दिल में समाई हुई पापी धड़कनों को संभालने का यत्न करने लगे।

अंजना को जब होश आया तो तिवारी ने सहारा देकर उसे मेज़ पर बैठा दिया। वह अधमुई-सी उन सब लोगों को देखने लगी। तिवारी ने ऐसी अवस्था में कोई और प्रश्न करना उचित नहीं समझा और उसे वहीं कुछ देर आराम करने की अनुमति दे दी।

"आप लोग बाहर जा सकते हैं।" तिवारी ने बनवारी और शबनम की ओर देखकर कहा।

वे दोनों अपनी जगह से उठे तो बनवारी ने पूछा—"तो मैं जाऊं हुज़ूर ?"

"नहीं, आप लोग बाहर इंतज़ार कीजिए।"

दोनों चुपचाप बाहर चले गए। तिवारी ने एक अटपटी-सी नज़र अंजना के चेहरे पर डाली जो हल्दी की तरह पीला पड़ चुका था। कमज़ोरी और घबराहट से उसकी पलकें बोझिल हो चुकी थीं। तिवारी उसे छोड़कर अपनी कुर्सी पर आ बैठा और दूसरी फाइलों को देखने लगा।

पुलिस अफसर की हैसियत से अभी तक वह इस पहेली को सुलझा न सका। डिप्टी साहब की असली बहू मर चुकी है—यह बात अभी तक नकली बहू ने छिपा क्यों रखी ? किस इरादे से वह परिवार में बहू बनी रही ? इन सब बातों को समझने के लिए शायद काफी छानबीन की ज़रूरत थी। संभव है डिप्टी साहब की मौत का कारण भी यह अंजना ही हो।

इस खयाल के आते ही उसने मुड़कर अंजना की ओर देखा। घबराहट, कमज़ोरी और किसी अन्दरूनी चुभन के कारण उसकी आंखें बंद हो चुकी थीं।

२२

कमल और उसके पिताजी जब डिप्टी साहब के अन्तिम दर्शनों को पहुंचे तो उनकी चिता जलकर राख हो चुकी थी। राख के उस ढेर को देखते हुए उनकी आंखों में आंसू आ गए। जिस व्यक्ति को वे हंसता-बोलता राज्य करता छोड़ गए थे, आज वह एक सपना-सा बनकर रह गया था।

कमल ने उनकी विधवा शांतिदेवी को सहारा दिया और चिता से दूर ले गया। उसके पिता केदारनाथ वहीं खड़े राख के उस ढेर को देखते रहे। मित्र की मृत्यु ने उनके दिल पर गहरा असर किया था और उन्हें लग रहा था जैसे उनका एक बाज़ू टूट गया हो।

कमल ने चिता के गिर्द खड़े अन्य लोगों की ओर देखा। उनमें बनवारी भी था और शबनम भी—जिसने उस घराने की असली बहू होने का दावा किया था। शबनम जब शान्तिदेवी के करीब गई तो शान्तिदेवी ने घृणा से मुंह फेर लिया। शबनम ने रोनी सूरत बनाकर पुकारा—मांजी !"

"हट जाओ मेरे सामने से। मेरी कोई बहू नहीं। मेरा कोई बेटा नहीं। तुम लोगों ने मिलकर मेरा सुहाग लूट लिया..."

शबनम उनका यह व्यवहार देखकर डर गई। कमल ने उन सबको वहां से चले जाने को कहा और मां को पिताजी के हमराह भिजवा दिया। सभी सम्बन्धी और जान-पहचान वाले धीरे-धीरे चले गए। इंस्पेक्टर तिवारी भी उसी हुजूम में मौजूद था। कमल को देखते ही वह उसके करीब चला आया।

"मुझे बेहद अफसोस है कमल ! काश कि तुम यहां होते !"

"इंस्पेक्टर ! यह सब कुछ इतनी जल्दी हो जाएगा, मैं सोच भी नहीं सकता था।"

"भगवान के कामों में कौन बोल सकता है ! होनी को कौन टाल सकता है !"

कमल पर उसकी इस तसल्ली का कुछ असर न हुआ। उसने एक नज़र चिता पर डाली और दूसरी उन लोगों पर जो क्षण-भर में जीवन-भर के नाते तोड़कर लालाजी से दूर चले जा रहे थे। उसे इस बात का अत्यन्त दुख था कि वह लालाजी के अन्तिम समय उनके पास नहीं था।

"इंस्पेक्टर !" वह दर्द-भरी आवाज़ में बोला।

"हां, कमल।"

"क्या यह सच है कि उनकी मौत ज़हर देने से हुई है ?"

"बिल्कुल सच। डाक्टर की रिपोर्ट यही बताती है।"

"और क्या यह भी सच है कि इसमें पूनम का हाथ है ?"

"बिल्कुल—और अब तो वह यह भी कबूल कर चुकी है कि वह पूनम नहीं अंजना है—और वह बच्चा भी उसका नहीं है।"

"उस दूसरी औरत के बारे में उसका क्या कहना है ?"

"एक यही प्वाइंट है जहां वह सच नहीं बोल रही। उसका बयान है कि असली पूनम मर चुकी है। वह उसकी सहेली थी और इस औरत से उसका कोई वास्ता नहीं।"

"और इस खून के बारे में वह क्या कहती है ?"

"साफ इनकार करती है।"

"आपकी क्या राय है ?"

"दिल तो नहीं मानता, लेकिन सबूत सब उसके खिलाफ जाते हैं।"

"वह कैसे ?"

"नौकरानी का बयान। उसका मेरे सामने झूठ बोलना और यह मानना कि रात को सोने से पहले उसीने उन्हें दूध दिया था।"

"इसमें रमिया का भी तो हाथ हो सकता है !"

"रमिया ! ओ, उनकी नौकरानी ! वह भला ऐसा क्यों करने लगी ?"

"फिर तो आप यह भी बता सकते हैं कि पूनम—नहीं, अंजना ने ऐसा क्यों किया ?"

"डिप्टी साहब की जायदाद के लिए—।"

"लेकिन जायदाद का वारिस तो उनका पोता है।"

"जी हां, लेकिन उनकी वसीयत के मुताबिक अंजना उसकी गार्जियन है।"

"लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकती इंस्पेक्टर।"

"लालच कभी-कभी देवताओं को भी शैतान बना देता है।"

तिवारी की बात सुनकर कमल चुप हो गया। वह पुलिस वालों से बहस तो नहीं कर सकता था लेकिन उसका दिल अभी तक यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि वह ऐसे दयालु व्यक्ति की हत्या कर सकती है, जिसने उसे पिता का प्यार दिया। उसे विधवा मानकर उसकी खुशियों को लौटाने का फैसला कर लिया। इज़्ज़त दी। मान दिया।

इंस्पेक्टर जब 'अच्छा चलता हूं' कहकर जाने लगा तो कमल ने उसे रोक लिया और पूछा—"तो अब क्या फ़ैसला हो रहा है उसकी किस्मत का ?"

"बात घर की बहू तक रहती तो मैं ही निबट लेता, लेकिन इस खून के बाद तो यह केस सेशन में ही चल सकता है।"

"इंस्पेक्टर !"

"हूं।"

"क्या किसी तरह मैं उससे एक बार मिल सकता हूं ?"

"क्यों नहीं– तुम चाहो तो अभी मेरे साथ चल सकते हो।"

कमल ने कृतज्ञ नज़रों से तिवारी की ओर देखा और उसके साथ हो लिया।

अंजना हवालात की कोठरी में अकेली बैठी थी। उसकी आंखों का पानी मर चुका था, लेकिन दिल अभी तक रो रहा था। उसने अपने उपकारी, उस देवता के अन्तिम दर्शन करने का भी निश्चय किया था, लेकिन इस कलंक के बाद वह लोगों का सामना करने का साहस न कर सकी। उस समय शाम ढल रही थी और ज्यों-ज्यों उस कालकोठरी की दीवारों से अंधेरे की चादर फैलते हुए उसके निकट आ रही थी, भय से उसका दिल डूबा जा रहा था।

अचानक कदमों की आहट सुनकर उसके कान खड़े हो गए। कोई उस कालकोठरी की ओर बढ़ा आ रहा था। शाम के धुंधलके में उसकी नज़रें उन दीवारों से हटकर लोहे की उन सलाखों से जा टकराईं जहां अभी-अभी कोई आकर रुका था।

छत की मद्धिम बत्ती जली और उसने कमल को वहां खड़े देखा। कमल वहां खड़ा गहरी नज़रों से उसकी ओर देख रहा था। वह खामोश था लेकिन अंजना के होंठों की थरथराहट उसे अपनी विवशता की कहानी सुनाने लगी। कमल दो कदम आगे बढ़ा और हवालात की सलाखों को पकड़ते हुए बोला :

"ज़िंदगी दो दिन में ही इतनी बदल जाएगी, विश्वास नहीं होता !"

"मैं निर्दोष हूं कमल।"

"हां—दोष तो सारा उन लोगों का है जिन्होंने तुम्हें अपनी बहू मान लिया—और मैं भी तो तुम्हें पूनम समझता रहा हूं।"

कमल की व्यंग्यात्मक बात सुनकर अंजना का जैसे कलेजा फटने

लगा। लेकिन जैसे-तैसे सहन करके वह मुंह फेरकर खड़ी हो गई।

"इतना बड़ा धोखा ! आखिर तुम्हें यह नाटक खेलने की ज़रूरत क्या थी ?"

"मेरी मजबूरी···"

"ऐसी मजबूरी जिसने एक शरीफ इंसान को ज़हर देकर मौत की नींद सुला दिया !"

"नहीं, नहीं, कमल ! मुझपर विश्वास करो। मैंने ज़हर नहीं दिया।"

"तो और किसने दिया ?"

"मैं कुछ नहीं जानती। बस इतना जानती हूं कि यह पाप मैंने नहीं किया।"

"पाप और पुण्य का फासला तो तुमने उसी दिन खत्म कर दिया था जब तुम उस घराने में बनावटी रूप धरकर दाखिल हुई थीं।"

"वह तो एक वचन था जो मैं निभा रही थी।"

"झूठ और फरेब का सहारा लेकर !" वह झुंझलाकर बोला।

"हां।"

"क्यों ?"

"मैं अपने अतीत को हमेशा-हमेशा के लिए मिटा डालना चाहती थी," यह कहते-कहते उसने मुंह फेरकर डबडबाई आंखों से उसकी ओर देखा। एक बार तो जी में आया कि वह अपने जीवन का रहस्य उसपर प्रकट कर दे, लेकिन कमल की आंखों में घृणा की चिनगारियां देखकर उसमें साहस न हुआ। इसके अतिरिक्त वह यह भी नहीं चाहती थी कि कल जिसकी कल्पना-मात्र से कमल को घोर घृणा थी, आज उसका अस्तित्व देखकर कहीं वह कोई भयानक कदम उठा ले।

वह अभी तक उसे संदिग्ध नज़रों से देख रहा था और अब शायद उसके अतीत को जानने के लिए बेचैन हो गया था। वह बनवारी से उसके सम्बन्ध के बारे में जानना चाहता था, लेकिन वह उसके प्रश्नों से डर रही थी। इससे पहले कि वह उसपर घिनौने प्रश्नों की बौछार कर दे, वह स्वयं ही बोल उठी :

"कमल ! जिस कंवल को पाने के लिए मैं दिन-रात कीचड़ में लथड़ती रही, जब वह मेरे निकट आया तो लहरों के रेले ने उसे फिर मुझसे दूर कर दिया। अब तो दिल के सारे कंवल बुझ गए हैं। सारी आशाएं टूट चुकी हैं। मैं जानती हूं कि मैं तुम्हें हमेशा-हमेशा के लिए खो चुकी हूं—" यह कहते-कहते उसकी ज़बान लड़खड़ा गई

श्रौर उसकी श्रांखों से पानी बरसने लगा।

"श्रंजना!" कमल ने लोहे की सलाखों का सहारा छोड़ दिया श्रौर उसकी बरसती श्रांखों में घृणा से झांककर बोला, "कभी श्रौरत की श्रांख से टपका हुश्रा एक श्रांसू ताजमहल बन जाता है श्रौर कभी दरिया भी बह जाएं तो कुछ श्रसर नहीं होता।"

कमल ने बेरुखी से श्रपना कंधा झटका श्रौर मुंह मोड़कर जाने लगा। तभी श्रंजना ने उसे पुकारा श्रौर वह ठिठककर रुक गया।

"क्या श्रभी कुछ श्रौर कहने-सुनने को बाकी है?" कमल ने क्रोध से पूछा।

"बस एक भीख मांगना चाहती हूं। वचन दो कि निराश नहीं करोगे।"

"क्या कहना है तुम्हें?"

"बाबूजी को मैंने जहर नहीं दिया। यह कलंक जो मुझपर लगा है, इसे किसी तरह मिटा दो। मैं श्रभागिन जरूर हूं लेकिन नारी-जाति पर कलंक नहीं हूं।"

कमल ने तिरछी नजरों से उसकी श्रोर देखा श्रौर बिना कोई उत्तर दिए वहां से चल दिया। श्रंजना एक घायल हिरनी की तरह उन सलाखों से टकराकर रह गई।

कमल जब लालाजी की कोठी पर पहुंचा तो शाम गहरी हो चुकी थी। उसके पिता श्रौर शान्तिदेवी दुःख में डूबे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। रमिया राजीव को लिए बाहर बरामदे में खड़ी थी—जो बार-बार एक ही रट लगा रहा था—"ममी कहां है?" कमल को जब मां ने बताया कि राजीव सुबह का भूखा है श्रौर उसने दूध पीने से इंकार कर दिया है तो उसके दिल को ठेस लगी। श्रौर तो कुछ न सूझा, बस रमिया से राजीव को बागीचे में ले जाने के लिए कह दिया।

"मुलाकात हुई क्या?" केदार बाबू ने श्रचानक प्रश्न कर दिया।

कमल ने सिर उठाकर पहले उनकी श्रोर देखा श्रौर फिर हामी भरते हुए सिर हिला दिया।

"क्या कहती थी?"

"बस एक ही रट लगा रही थी कि मैंने यह पाप नहीं किया। मेरे माथे पर से यह कलंक मिटा दो।"

"तुमने कुछ सोचा इस बारे में?"

"नहीं···और सोचा भी क्या जा सकता है ! सारे सबूत उसके खिलाफ जाते हैं। सचाई को उसने स्वयं झूठ के पर्दे में छिपाकर अपने-आपको अपराधी सिद्ध कर दिया है।"

"लेकिन हमें उसे बचाना ही होगा। मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि वह ऐसा नहीं कर सकती। वह निर्दोष है।"

"यह अचानक आपको उससे हमदर्दी क्यों होने लगी !" कमल ने आश्चर्य से पूछा।

"इसलिए कि वह हमारे घराने की इज्जत है।"

पिता की यह बात सुनकर पुत्र ने और भी आश्चर्य से उनकी ओर देखा। वे पुनः बोले—"यह भूल जाओ कि उसने क्या किया। यह सोचो कि उसने क्या नहीं किया तुम्हें पाने के लिए !"

"यह आप क्या कह रहे हैं ?"

"वह भेद—जो डिप्टी साहब ने कुछ दिन पहले मुझे बताया था। अंजना वही लड़की है, कमल, जो कभी मेरी बहू बनने वाली थी। जिसे ब्याहकर तू अपने घर लाने वाला था—जिसके चले जाने से हमारी रुसवाई हुई थी।"

यह सुनकर जैसे कमल के पांव तले से जमीन निकल गई। पिता ने पुत्र को पुनः विश्वास दिलाया कि वे यह सब कुछ जानते थे। इसीलिए उन्होंने उसे बहू बनाना स्वीकार कर लिया था। डिप्टी साहब ने उसे पुनः बसाने का वचन दे रखा था।

होनी का यह अनोखा खेल कुछ देर के लिए कमल की समझ में न आया।

केदार बाबू ने जब बेटे को उलझन में पड़े देखा तो उसकी शंका दूर करने के लिए उन्होंने अंजना का वह पत्र उसके सामने रख दिया जो कभी उसने कमल को लिखा था। कमल परेशान नजरों से वह पत्र पढ़ने लगा और फिर धीरे-धीरे अंजना का समस्त जीवन उस-पर प्रकट हो गया। पत्र पढ़कर वह विचित्र बहकी-बहकी नजरों से अपने पिता और शांतिदेवी की ओर देखने लगा।

"हां कमल—यह सब कुछ उसने तुम्हें लिख दिया था, लेकिन यह पत्र डिप्टी साहब के हाथ लग गया और उन्होंने इसे तुम तक न पहुंचने दिया।"

"क्यों ?"

"कहीं सचाई जानकर तुम उसकी कठिन तपस्या को न ठुकरा दो। यह आराधना थी उसकी तुम्हें पाने के लिए।"

कमल पत्र को पुनः पढ़ने लगा और केदार बाबू उसे विश्वास दिलाने लगे कि वह लड़की कल की भूल संवारने के लिए आज का पाप नहीं कर सकती। शान्तिदेवी ने भी उनकी हां में हां मिलाई और कहा कि इस पत्र के आधार पर उस बेचारी की सहायता की जाए। उसे बनवारी और उस औरत के चंगुल से छुटकारा मिलना ही चाहिए—और फिर अगर यह सिद्ध न हो सका कि उनकी बहू मर चुकी है तो वह औरत इस घराने की सारी जायदाद की मालिक बन बैठेगी।

कमल की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसने पत्र को मुट्ठी में भींच लिया और एक ओर पड़ी हुई कुरसी पर बैठ गया। अंजना के कहे हुए शब्द बार-बार उसके कानों से टकराने लगे—'बाबूजी को जहर मैंने नहीं दिया—यह कलंक जो मुझपर लगा है, इसे किसी तरह मिटा दो—इसे किसी तरह मिटा दो—!'

अचानक राजीव ने उनके इन विचारों का क्रम भंग कर दिया। वह भागता हुआ भीतर आया और सीधा उसकी गोद में जा छिपा। शायद रमिया और वह आंखमिचौली खेल रहे थे। रमिया भी भागी-भागी भीतर आई और फिर ठिठककर बोली—"बाबूजी—बाबूजी—इसके हाथों से ले लीजिए।"

"क्या ?"

"वह—कांच की शीशी—मुंह में लग जाएगी।"

कमल ने राजीव को प्यार से अपने वश में किया और उसके हाथों से वह शीशी ले ली जिससे वह खेल रहा था। यह वही शीशी थी जो बनवारी ने गोलियां दूध में डालने के बाद खिड़की से बाहर फेंक दी थी। उसे हाथ में लेकर कमल को कुछ संदेह हुआ और वह गौर से उसपर लगे लेबिल को पढ़ने लगा। फिर तिरछी नजरों से रमिया की ओर देखकर बोला :

"यह तुम्हें कहां से मिली ?"

"रसोईघर के बाहर।"

"कौन लाया था इसे ? इसमें क्या था ?"

"मैं क्या जानूं बाबूजी !"

"रमिया ! जब छोटी मालकिन रसोईघर से दूध लेकर निकली थीं तो यह शीशी कहां थी ?"

"मुझे नहीं मालूम बाबूजी ! लेकिन दूध तो मैं लाई थी रसोई-घर से।"

"तो बाबूजी को दूध किसने दिया ?"

"बीबीजी ने।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि जब तुम रसोईघर से दूध लेकर गईं तो दूध ले जाने से पहले तुमने इस शीशी का ज़हर दूध में मिला दिया।"

"नहीं बाबूजी, नहीं। मैंने तो इसे देखा तक नहीं। राम कसम, मैंने ऐसा नहीं किया।" उसने बौखलाकर कहा।"

"दूसरा कौन था तुम्हारे पास ?"

"बनवारी।" वह उसी बौखलाहट में कह गई।

कमल ने उसकी कांपती हुई आवाज़ को महसूस किया और बनवारी का नाम सुनते ही चुप हो गया। उसके पिताजी और शान्तिदेवी भी उसके निकट चले आए।

"वह वहां क्या कर रहा था ?" अब केदार बाबू ने प्रश्न किया।

"जी—जी—वह मेरे लिए धानी चुनरिया लेकर आया था—बस।"

"ओः, तो तुम लोगों की पुरानी पहचान है !"

"नहीं बाबूजी ! वह तो बीबीजी के दर्शनों को आता था।"

"बकवास बन्द करो—सच-सच बताओ, यह दवा उस दूध में किसने मिलाई ?" कमल ने रमिया को चोटी से पकड़ लिया और झंझोड़ते हुए पूछा। वह चिल्लाने लगी कि उसे इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं। और फिर वह कसमें खाने लगी। कमल ने निराश होकर उसे छोड़ दिया और वह राजीव को लेकर बाहर चली गई।

"इसमें ज़रूर बनवारी का हाथ है कमल !" केदार बाबू ने कहा।

"हां बेटे, अगर वह निर्दोष बच सकती है तो मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूलूंगी।" शान्तिदेवी ने गिड़गिड़ाकर कहा।

कमल ने, जो अभी तक किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था, उनकी ओर मौन नज़रों से देखा। फिर उसने सावधानी से वह शीशी अपने कोट की जेब में रख ली और बाहर निकल गया। केदारनाथ और शान्तिदेवी उसे देखते ही रह गए।

कमल वहां से सीधा राकेश की दुकान पर पहुंचा। वह काउंटर पर खड़ा किसी ग्राहक को दवाइयां दे रहा था। कमल ने उसे 'हैलो' कहा और दूसरे कोने में जा खड़ा हुआ। राकेश ग्राहक से निवटते

ही कमल के पास आ गया और मुस्कराकर बोला—"आज कैसे रास्ता भूल पड़े ?"

"एक दवा की ज़रूरत थी।" उसने वह शीशी जेब से निकालकर उसके सामने रख दी।

राकेश ने लेबिल पढ़ते ही कहा —"यह तो नींद के लिए है।"

"हां दोस्त ! आजकल नींद नहीं आती।"

लेकिन यह दवा तो डाक्टर के नुस्खे के बिना नहीं दी जा सकती।"

"अरे ऐसा भी क्या ! मैं कोई अजनबी तो नहीं हूं।"

"लेकिन दोस्ती के लिए कानून कैसे तोड़ा जा सकता है ! यह दवा कोई आम दवा नहीं है। डाक्टरी नुस्खे के बिना बेचना जुर्म है।"

"क्या इस दवा से किसीकी मौत भी हो सकती है ?"

"क्यों नहीं, अगर कोई दस-बारह गोलियां एकसाथ ले ले—लेकिन···।"

"तो एक बात सुनो राकेश।"

"क्या ?"

"डिप्टी साहब की मौत इन्हीं गोलियों से हुई है।"

"ओह ! तो क्या यह भी सच है कि यह काम उनकी बहू ने किया है ?"

"हां—और वह वाकई अंजू ही है—तुम्हारी क्लासफेलो, जिसे तुम उस दिन पहचान गए थे—लेकिन वह गोल कर गई थी।"

"तभी कहूं—आज तक धोखा नहीं खाया यार ने—कहां है वह ?"

"पुलिस की हिरासत में।"

"क्यों ? कालेज के दिनों में तो वह बड़ी सीधी-सादी लड़की थी।" यह कहने के बाद वह भीतर से कालेज का ग्रुप फोटो निकाल लाया और उसमें खड़ी वह लड़की दिखाने लगा जो दो वर्ष पहले की अंजना थी। कमल ने ध्यान से वह ग्रुप फोटो देखा और सभी चेहरों पर नज़रें दौड़ाते हुए उससे पूछा :

"पूनम नाम की कोई लड़की भी पढ़ती थी तुम्हारे साथ ?"

"नहीं—वह हमसे एक साल पीछे थी—लेकिन शादी के बाद उसने कालेज छोड़ दिया था।"

क्षण-भर के लिए कमल चुप रहा फिर ग्रुप फोटो की ओर देखकर बोला :

"तुमने कालेज कब छोड़ा ?"

"थर्ड इयर में—बी० ए० न कर सका।"

"और अंजना—?"

"वह तो कालेज की योग्य लड़कियों में से थी और शायद बी० ए० भी किया था उसने ?"

कमल ने तुरन्त बात बदल दी और गोलियों की खाली शीशी को हाथ में नचाते हुए बोला :

"हां तो राकेश ! डिप्टी साहब की मौत इन्हीं गोलियों से हुई है।"

"तो अब तुम्हारा क्या इरादा है ?—मेरा मतलब है ये गोलियां खाने का ?"

"नहीं, मैं तो यह जानने के लिए यहां आया हूं कि अगर यह दवा नुस्खे के बिना नहीं मिल सकती तो अंजना इसे तुम्हारी दुकान से कैसे ले गई ?"

"कौन कहता है कि वह ले गई ? उसे तो मेरी दुकान की शक्ल देखे भी एक महीना हो गया है।"

"तो फिर और कौन ले जा सकता है ?"

"कोई भी—यह कैसे संभव हो सकता है कि शीशी देखकर मैं ग्राहक को पहचान जाऊं।"

"लेकिन अपने रिकार्ड से नुस्खा तो निकाल सकते हो तुम ?"

"उससे क्या होगा ?"

"शायद एक निर्दोष की जान बच जाए।"

"यानी अंजू की—वह निर्दोष है क्या ?"

"हां, अगर तुम साबित कर दो कि दवा की यह शीशी तुमसे कौन ले गया था।"

"लेकिन—तारीख—दिन ?"

"यही कोई आठ-दस दिन पहले।"

राकेश ने झट से रिकार्ड की फाइल उठाई और उसमें से नुस्खे छांटने लगा। यह दवा कम बिकती थी इसलिए वह नुस्खा ढूंढ़ने में देर न लगी। कुछ दिन पहले का नुस्खा उसके हाथ में आ गया जिसे तुरन्त ही कमल ने उससे झपट लिया और गौर से पढ़ने लगा। नुस्खा शबनम के नाम का था और उसे डाक्टर काशीनाथ ने लिखा था। कमल ने डाक्टर काशीनाथ का पता पढ़ा और वह नुस्खा अपने पास रखना चाहा। इसपर राकेश ने मना करते हुए कहा—"कमल! तुम सिर्फ पता नोट कर लो। नुस्खा रहने दो ताकि डाक्टर गवाह

बनने से इनकार न कर दे।"

राकेश की बात उसकी समझ में आ गई। उसने नुस्खा लौटा दिया और उससे 'आज्ञा चाहता हूं' कहकर अपनी मुहीम पर निकल खड़ा हुआ।

वहां से सीधा वह डाक्टर काशीनाथ के यहां पहुंचा जो शहर की भीड़-भरी पुरानी आबादी में रहता था। छोटी-छोटी गलियां पार करता हुआ वह उसके मकान तक जा पहुंचा। ढलान से ऊपर जाते ही गली के नुक्कड़ पर उसका दवाखाना था। वह उसके बाहर रुक गया और ध्यान से उस तख्ती को पढ़ने लगा जिसपर डाक्टर का नाम लिखा हुआ था। उसने शाम के अंधेरे में उस ज़ीने की ओर देखा जो मकान की पहली मंज़िल की ओर जाता था। डाक्टर काशीनाथ का दवाखाना उसी मंज़िल पर था। वह वहां गली के नुक्कड़ पर खड़ा मन ही मन कोई बहाना सोचने लगा, जिसके आधार पर वह मशवरे के लिए ऊपर जा सके।

सहसा गली की ढलान पर एक स्ट्रीट लैम्प के सहारे बनवारी को खड़ा देखकर वह चौंक पड़ा और फिर जल्दी से उसने अपने-आप को अंधेरे में छिपा लिया। बनवारी बेचैनी से किसीकी प्रतीक्षा कर रहा था और उसी बेचैनी में सिगरेट पर सिगरेट फूंके जा रहा था और बार-बार उसी ओर देख रहा था जिधर कमल खड़ा था।

एकाएक बनवारी दवाखाने के ज़ीने की ओर देखकर ठिठक गया। उसने होंठों में दबाए हुए सिगरेट को पास की नाली में फेंक दिया और अपनी बेचैनियों को समेटे उस ज़ीने तक चला आया—जिससे शबनम नीचे आ रही थी। कमल और भी सिमटकर खड़ा हो गया और उन दोनों की तरफ गहरी नज़रों से देखने लगा जो किसी अज्ञात कारण से परेशान नजर आ रहे थे।

"क्यों, क्या हुआ?" बनवारी ने निकट आते ही पूछा।

"डाक्टर ने इंकार कर दिया है।"

"लेकिन तुमने···"

"सब कुछ कहा, लेकिन वह पैसे के लिए अपने उसूल तोड़ने को तैयार नहीं।" शबनम ने गंभीरता से कहा और गली की पथरीली ढलान पर बढ़ने लगी—। शबनम की बात सुनकर बनवारी के तन-बदन में आग लग गई। वह गुस्से में बड़बड़ाता हुआ उसके पीछे-पीछे चल दिया।

कमल अंधेरे कोने से बाहर निकला और ज़ीने के पास खड़े होकर

उन दोनों की ओर देखने लगा जो एक-दूसरे के लिए अजनबी-से बने हुए तेज़-तेज़ कदमों से ढलान पर चले जा रहे थे। उनकी बातचीत ने कमल को सन्देह में डाल दिया था। वह देर तक खड़ा उनकी ओर देखता रहा। जब वे नज़रों से ओझल हो गए तो उसने भी रुख बदला और कुछ सोचकर ज़ीना चढ़ गया।

डाक्टर काशीनाथ दवाखाना बन्द करने जा रहा था कि नवागंतुक को भीतर आते देखकर रुक गया। "आइए-आइए," उसने कहा।

कमल ने एक कुर्सी का सहारा लेते हुए कहा—"डाक्टर! आई नीड यूअर हेल्प (मुझे आपकी सहायता की ज़रूरत है)।"

"यस! वट कैन आई डू फार यू (कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं)?"

"मुझे एक नुस्खा चाहिए— इन गोलियों के लिए।" उसने जेब से वही खाली शीशी निकालकर दिखाई।

"यह तो नींद के लिए है।"

"जी हां, आजकल मुझे नींद नहीं आती।"

"लेकिन ये गोलियां लेना कोई अच्छी आदत नहीं है—और फिर जब तक मैं आपका ब्लड टेस्ट न कर लूं, ये गोलियां नहीं दी जा सकतीं।"

"क्या इनके इस्तेमाल में कोई खतरा है?"

"खतरा ही नहीं, जान का खतरा है। अगर आठ-दस गोलियां एकसाथ ले ली जाएं तो आदमी जान से हाथ धो बैठता है।"

"आपने ठीक कहा डाक्टर! डिप्टी साहब की मौत इन्हीं गोलियों से हुई है।"

"क्या लाला जगन्नाथ की?"

"जी—और यह वही शीशी है जो उनके घर में पाई गई है।"

"लेकिन आप—?" डाक्टर ने किंचित् संदिग्ध नज़रों से कमल की ओर देखा।

"घबराइए नहीं—मैं कोई पुलिस का आदमी नहीं हूं। इसी इलाके का एक फारेस्ट आफीसर हूं—कमल नाम है मेरा।"

"लेकिन इस सिलसिले में मैं क्या कर सकता हूं?"

"मेरी सहायता।"

"वह कैसे?"

"यह बताकर कि शबनम कौन है?"

"शबनम···?" डाक्टर उलझन में पड़ गया।

"वह औरत जो अभी-अभी आपके दवाखाने से गई है!"

"मेरे लिए तो वह बस एक रोगी है।"

"कैसी रोगी—? मेरा मतलब है क्या बीमारी है उसे ?"

"सॉरी ! मैं एक डाक्टर हूं और किसी रोगी के बारे में इस तरह की बातें बताना उचित नहीं समझता।"

"ठीक है—लेकिन यह भी तो सोचिए कि आपकी थोड़ी-सी सहायता किसीको फांसी के फंदे से बचा सकती है।"

"लेकिन उसकी बीमारी से डिप्टी साहब की मौत का क्या संबंध हो सकता है ?"

"हो सकता है—क्योंकि इसी दवा से उनकी मौत हुई है जिसे आपने इस औरत के लिए तजवीज़ किया था और जिसे बारह सितम्बर को आपके नुस्खे पर नेशनल मेडिकल स्टोर्ज़ से खरीदा गया। इस शीशी का नम्बर उस नुस्खे पर मौजूद है।"

डाक्टर काशीनाथ चुप हो गया और बड़े गौर से कमल के चेहरे को पढ़ने लगा जो वास्तविकता जानने के लिए बेचैन था—और किसी सी० आई० डी० अफसर की तरह पूछताछ कर रहा था। जब डाक्टर काफी देर तक कुछ न बोला तो कमल ने उसे अंजना की गिरफ्तारी की पूरी घटना सुना दी और जैसे ही उसने भावुकता में बहकर अंजना के जीवन की भीख मांगी और यह बताया कि अब शबनम उस घराने की विधवा बहू होने का दावा कर रही है, डाक्टर सटपटा गया और चिल्लाकर बोला—"नहीं, यह कैसे हो सकता है ?"

"क्यों…? क्यों नहीं हो सकता ?"

"मेरा मतलब है वह…वह उस घराने की विधवा बहू कैसे हो सकती है ?"

"यही तो मुझे सिद्ध करना है कि वह उनके बेटे की विधवा नहीं है। वह तो एक बरस पहले गाड़ी की दुर्घटना में मर चुकी है।"

"ओ, आई सी ! फिर तो यह काम बहुत ही आसान है।"

"कैसे ?"

"…लेकिन मिस्टर कमल ! कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि आपकी सहायता करते-करते मैं किसी चक्कर में फंस जाऊं ?"

"कभी नहीं, यह तो एक इंसानी फर्ज़ होगा डाक्टर।"

"उस औरत का डिप्टी साहब की मौत से क्या सम्बन्ध है, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन इतना ज़रूर जानता हूं कि वह विधवा नहीं है।"

"वह कैसे ?"

"वह मां बनने वाली है।"

"डाक्टर!" कमल यह सुनकर एकदम चौंक उठा और फिर डाक्टर के दोनों हाथों को अपने हाथों में लेकर वह उसको धन्यवाद देते हुए बोला—"वह शायद इसीलिए यहां आई थी!"

"इलाज के लिए नहीं—उस बच्चे को खत्म कराने के लिए।"

"लेकिन आपने यह पाप करने से इंकार कर दिया!"

"यस! यू आर राइट (हां, आप ठीक समझे); लेकिन आपको यह कैसे मालूम हुआ?"

"आपकी शराफत को देखकर," कमल ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया और नमस्ते करके बाहर जाने लगा। फिर जाते-जाते रुककर बोला—"डाक्टर!"

डाक्टर ने पलटकर उसकी ओर देखा।

"अगर आपको यही बात पुलिस वालों से कहनी पड़े तो क्या आप कह देंगे?"

"क्यों नहीं—यह तो मेरा फर्ज़ है।"

डाक्टर की बात सुनकर कमल की आंखों में चमक आ गई और वह श्रद्धा से सिर झुकाकर दवाखाने से बाहर निकल गया।

डाक्टर काशीनाथ ने बढ़कर उस खिड़की का सहारा लिया जो गली की ओर खुलती थी। किवाड़ बन्द करने से पहले उसने देखा, कमल लगभग दौड़ता हुआ ढलान उतर रहा था।

२३

रात आधी से अधिक बीत चुकी थी लेकिन शबनम और बनवारी की आंखों में नींद न थी। बनवारी आज बेतहाशा शराब पी रहा था और वह साकी बनी उसे जाम पर जाम दे रही थी। बनवारी ने उसे भी पिलानी चाही लेकिन वह बराबर इंकार करती रही।

"डरती हो क्या?" बनवारी ने हिचकी ली और उसके होंठों पर अपनी उंगली फेरते हुए पूछा।

"नहीं तो—डर किस बात का?"

"कहीं पी लो तो कोई नुकसान न पहुंच जाए!" बनवारी ने उसके पेट की ओर संकेत किया।

"अरे नहीं—डर तो बस एक बात का है कि कहीं तुम धोखा न दे जाओ।"

"वह क्यों ?"

"पुलिस वालों के सामने अंजू को अपनी बीवी जो मान लिया है तुमने ।"

"रही ना अनाड़ी की अनाड़ी । अरे माना ही तो है, ब्याह थोड़े रचा लिया है—बल्कि यह कहो कि एक तीर से मैंने दो निशाने बांध लिए हैं ।"

"वह कैसे ?"

"जिसे बीवी माना है, वह तो जीवन-भर जेल में सड़ेगी और जिसे अपनी माना है, वह विधवा बनकर इतनी बड़ी जायदाद की मालिक बनकर मज़े करेगी ।"

"और कहीं यह पता चल गया, मैं तुम्हारे बच्चे की···"

"शी···ई···ई···" उसने तुरन्त गिलास रखकर शबनम का मुंह बन्द कर दिया और धीमी आवाज़ में बोला—"धीरे···जानती नहीं, दीवारों के भी कान होते हैं !"

वह तिरछी नज़रों से उसकी ओर देखने लगी, और बनवारी उसकी इस अदा पर मुस्करा दिया । शबनम ने बढ़कर गिलास में और शराब डाल दी ।

"इतनी न पिलाओ शिब्बू कि बहक जाऊं ।"

"बहक भी जाओ तो गम नहीं ।"

"क्यों ?"

"आज तो पिलाते-पिलाते मेरा दिल ही बहक जाने को चाह रहा है ।"

बनवारी उसकी इस बात पर कहकहा लगा उठा । शबनम ने भी उसका साथ दिया और फिर वे दोनों बेतहाशा हंसने लगे ।

सहसा दोनों की हंसी रुक गई और वे बुत-से बनकर उस आवाज़ को सुनने लगे जिसने अचानक उनके हंसते क्षणों को छीन लिया था । कोई धीरे-धीरे कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दे रहा था । दोनों ने पलटकर पहले उस दरवाज़े की ओर देखा और फिर एक-दूसरे का मुंह निहारने लगे । इतनी रात गए भला कौन उनसे मिलने आ सकता है ।

दरवाज़े पर फिर दस्तक हुई । बनवारी ने शराब से भरे गिलास को एक ही सांस में समाप्त कर दिया और लपककर दरवाज़ा खोलने को बढ़ा । शबनम भयभीत नज़रों से दरवाज़े की ओर देखने लगी ।

दरवाज़ा खुलते ही बनवारी की आंखें फटी की फटी रह गईं ।

शबनम भी अपने स्थान पर उछल पड़ी। दरवाज़े के बाहर अंजना खड़ी थी—मौन, गंभीर।

"अंजू—तुम !" बनवारी के मुंह से निकला।

अंजना चुपचाप भीतर चली आई। बनवारी ने बाहर फैले हुए अंधकार में नज़रें दौड़ाईं, लेकिन किसीको करीब न देखकर झट से दरवाज़ा बन्द कर लिया। अब अंजना चुपचाप खड़ी शबनम की ओर देख रही थी।

शबनम ने अपने अर्धनग्न शरीर को ढांपने का असफल प्रयास किया और टुकुर-टुकुर अंजना की ओर देखने लगी।

"घबराओ नहीं शबनम ! मैं तुमसे कुछ छीनने नहीं, बल्कि तुम्हारा हक तुम्हें लौटाने आई हूं।"

"लेकिन—तुम तो पुलिस की हिरासत में थीं !" बनवारी ने बीच में पड़ते हुए कहा।

"हां—लेकिन अब उन्होंने छोड़ दिया है मुझे।"

"वह कैसे ?"

"असली हत्यारे को पकड़कर।"

"कौन है वह ?" बनवारी के थरथराते होंठ सूख गए और चेहरे का रंग पीला पड़ गया। अंजना क्षण-भर के लिए मौन रही और फिर उसकी घबराहट का अनुमान लगाती हुई बोली :

"रमिया।"

"रमिया !" बनवारी ने दोहराया और रूमाल से माथे पर आया हुआ पसीना पोंछने लगा।

"हां, रमिया। उसीने वह ज़हर बाबूजी के दूध में मिलाया था। ज़हर की खाली शीशी रसोईघर के बाहर पड़ी हुई मिल गई है।"

"ओः—लेकिन वह भला क्यों ज़हर देने लगी ? आखिर इससे उसे क्या मिल जाता ?"

"यह जानना तो पुलिस वालों का काम है—हां, उन्हें सन्देह है कि ज़हर उसने अकेले नहीं दिया। उसका कोई साथी भी है।"

"होगा—मुझे इससे क्या !"

"लेकिन रमिया ने तुम्हारा नाम लिया है।"

"यह झूठ है।" वह बौखला उठा।

"भगवान करे यह झूठ हो—बनवारी !" और अंजना ने बढ़कर उसके कंधे का सहारा ले लिया। शबनम को उसका यह रंग-ढंग अच्छा न लगा। अब तक वह चुपचाप बैठी यह सब देख-सुन रही थी,

लेकिन अब उससे सहन न हो सका। वह भूखी बिल्ली की तरह उसपर झपटी और उसे बनवारी से अलग करते हुए बोली :

"आज अचानक तुम्हें इससे इतनी हमदर्दी क्यों होने लगी···?"

"वाह ! मुझे ही घायल करके मुझीसे सवाल कि दर्द क्यों हुआ !"

"देखो अंजू ! इस तरह बनने से काम न चलेगा। साफ-साफ कहो, यहां, क्यों आई हो ?"

"बाबूजी की जायदाद का दावा करके तो तुमने मुझे बेघर कर दिया। क्या अब मेरे बनवारी को भी मुझसे छीनना चाहती हो ?"

"अंजू···" बनवारी ने कंपकंपाती आवाज़ में कहा।

"हां बनवारी याद है, एक दिन ऐसी ही एक अंधेरी रात को तुमने इसके कारण मुझे ठुकरा दिया था, लेकिन आज···"

"तुम कहना क्या चाहती हो ?"

"दिल की वह बात जो आज तक न कह सकी। आज जब सारी दुनिया ने मुझे ठुकरा दिया है तो क्या तुम मुझे सहारा नहीं दोगे ?" वह सजल नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए बोली और उसने फिर आगे बढ़कर उसके बाज़ू का सहारा ले लिया। शबनम यह देखकर भिन्ना गई। उधर बनवारी अंजना के इस व्यवहार से विचित्र असमंजस में पड़ गया। अंजना फिर गिड़गिड़ाकर बोली :

"बनवारी ! पुलिस को सन्देह है कि यह हत्या तुमने की है। रमिया ने अपनी जान बचाने के लिए तुम्हारा नाम ले दिया है। वह कहती है कि जिस रात डिप्टी साहब की हत्या हुई उस रात तुम मुझसे मिलने गए थे।"

"यह सब झूठ है।" वह संटपटाकर बोला।

"मैं कब कहती हूं कि सच है ! मैं तो जानती हूं कि तुम उस रात मुझसे नहीं मिले। लेकिन तुम्हारा अब यहां रहना खतरे से खाली नहीं। आओ, हम दोनों यहां से भाग चलें।"

"यह इतना आसान न होगा अंजू ! मेरे होते हुए तुम बनवारी को छू तक नहीं सकतीं,"—और शबनम ज़हरीली नागिन की तरह बल खाकर उनके सामने खड़ी हो गई।

"याद है शबनम ! एक दिन इसी तरह तुमने मेरा सब कुछ छीन लिया था—और अब···"

"और अब तुम मेरी मोहब्बत को छीनने आई हो ?"

"नहीं, अपना हक लेने आई हूं। अब तो सारी दुनिया जानती

है कि यह मेरा पति है और तुम डिप्टी साहब की बहू हो। अब तो कानून भी मेरा गवाह है।"

"नहीं, यह झूठ है। बनवारी मेरा है—मेरा। इसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता। तुम भी नहीं..."

"वाह शबनम, वाह! तुमने उस घराने की बहू होने का दावा करके मेरा सब कुछ छीन लिया और मैंने उफ तक नहीं की और अब जब मैं अपना हक लेने आई हूं तो तुम उसकी भी मालिक बन बैठीं।"

"इसमें ज़रूर तुम्हारी कोई चाल है। कल तक तुम इससे नफरत करती थीं और आज अचानक प्यार उमड़ आया तुम्हारे दिल में!"

"अगर तुम अचानक इतनी बड़ी जायदाद की मालिक बन सकती हो, तो क्या मैं इसे नहीं अपना सकती! मैं देखती हूं, मुझे कौन रोकता है इसकी पत्नी बनने से।"

और यह कहते हुए अंजना ने बनवारी को अपने करीब खींच लिया और उसी प्रकार खींचती हुई दरवाज़े की ओर बढ़ने लगी। शबनम से यह सब सहन न हो सका। उसने झपटकर उनका रास्ता रोक लिया और बोली—"नहीं—नहीं—मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। तुम मेरी दुनिया में आग लगाने आई हो! बनवारी अब किसीका नहीं हो सकता—वह मेरे होने वाले बच्चे का बाप है।"

"शिब्बू!" बनवारी ज़ोर से चिल्लाया और धड़ाक से उसके मुंह पर थप्पड़ जड़ दिया। इसके बाद कुछ क्षणों के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया और हर किसीने कांपती हुई नज़रों से एक-दूसरे की ओर देखा। बनवारी क्रोध तथा लज्जावश अपनी उंगलियों को दांतों तले चबा रहा था। अंजना ने आश्चर्य से बारी-बारी उनकी ओर देखा और फिर धीमे स्वर में बोली:

"क्या यह सच है बनवारी?"

बनवारी ने एक तीखी नज़र अंजना पर डाली। सोफे पर पड़ा हुआ अपना कोट उठाया, कंधे पर डाला और अंजू की बात का उत्तर देने की बजाय गुस्से से कंधा झटककर बाहर जाने के लिए दरवाज़े की ओर बढ़ा। अंजना तो उसकी ओर देखती हुई चुपचाप खड़ी रही, लेकिन ज्योंही बनवारी ने दरवाज़ा खोलना चाहा, शबनम ने तड़पकर उसे अपनी पकड़ में ले लिया। बनवारी ने पूरे ज़ोर से उसे परे धकेलकर दरवाज़ा खोल दिया।

लेकिन दरवाज़ा खुलते ही वह धक् से रह गया। उसके सामने इंस्पेक्टर तिवारी, कमल और दो सब-इंस्पेक्टर खड़े थे। बनवारी ने

कंपकंपाती नज़रों से पहले उनकी ओर और फिर अंजना की ओर देखा जो बड़ी मज़बूती से अपने स्थान पर खड़ी थी। आज उसने बनवारी से जीवन-भर का बदला ले लिया था।

"कानून से बच निकलना इतना आसान नहीं है बनवारी।" इंस्पेक्टर तिवारी ने कहा।

"लेकिन इंस्पेक्टर..."

"मैं अपनी ज़िम्मेदारी खूब समझता हूं," उसने पिस्तौल तानकर कहा और फिर ज़रा रुककर बोला—"तुम्हें मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा।"

"लेकिन क्यों—मैंने क्या अपराध किया है ?"

"डिप्टी जगन्नाथ की हत्या और उनकी जायदाद हड़पने की साज़िश।" फिर इंस्पेक्टर तिवारी ने अपने सहायक को इशारा किया और वह हथकड़ी लिए हुए बनवारी की ओर बढ़ा।

शबनम जो बुत बनी यह सब देख रही थी, बनवारी के भाग्य का निर्णय सुनकर चुपके से बाथरूम की ओर जाने लगी, लेकिन तिवारी ने उसे वहीं रोक लिया :

"श्रीमतीजी, आप भी।"

"नहीं—नहीं—" वह चिल्लाकर भागने लगी। दो सिपाहियों ने लपककर उसे अपनी पकड़ में ले लिया और घसीटकर बनवारी के बराबर ला खड़ा किया।

"वाह ! इतनी बेरुखी ! सुना है मोहब्बत करने वाले कयामत तक एक-दूसरे का साथ देते हैं—आप तो सिर्फ जेल से डर गईं !" इंस्पेक्टर ने मुस्कराकर कहा।

शबनम सटपटाकर रह गई और फिर तिवारी का इशारा पाकर दोनों पुलिस के हमराह हो लिए।

उनके जाने के बाद जब अंजना भी उनके पीछे-पीछे जाने लगी, तो एक कोने में खड़े कमल को देखकर उसके कदम रुक गए। अंजना ने पलटकर उसकी ओर देखा। वह इत्मीनान से खड़ा सिगरेट सुलगा रहा था। वह उसके निकट जाकर धीरे से बोली—"मेरे पास शब्द नहीं हैं जो आपको धन्यवाद दे सकूं !"

किस बात का ?"

"यह जो आपने इतना बड़ा अहसान किया है मुझपर !"

"कैसा एहसान ?"

"मेरे माथे पर से कलंक का टीका मिटाकर। नहीं तो दुनिया वाले

मुझीको बाबूजी का हत्यारा समझते ।"

"अंजू !" वह बस इतना ही कह सका और अंजना अपना चेहरा आंचल में छिपाए पुलिस वालों के पीछे चली गई ।

वह तेज़-तेज़ कदम उठाती चली जा रही थी और कमल अपनी जगह पर बुत बना खड़ा था ।

दूसरे दिन अभी सुबह का सूरज पहाड़ों की चोटियों पर नहीं उभरा था कि कमल की जीप गाड़ी पुलिस स्टेशन के बाहर आ रुकी। वह तेज़ी से उतरा और सीधा इंस्पेक्टर तिवारी के कमरे में जा पहुंचा ।

"गुड मॉर्निंग इंस्पेक्टर !" कमल ने कमरे में प्रवेश करते ही इंस्पेक्टर से कहा जो सुबह की चाय पी रहा था ।

"आओ, आओ । आज सुबह ही सुबह कैसे ?"

"सोचा, कल रात को मौका नहीं मिला—अब शुक्रिया अदा कर आऊं ।"

"शुक्रिया तो हम पुलिस वालों को करना चाहिए तुम्हारा, जो असली अपराधी को पकड़ने में हमारी मदद की और एक निर्दोष को बचा लिया ।"

"वह तो मेरा कर्तव्य था इंस्पेक्टर ।" वह चमककर बोला और फिर बात बदलते हुए उसने पूछा—"अंजना कहां है ?"

"उसे रिहा कर दिया गया है ।"

"कब ?"

"थोड़ी देर पहले ।"

"तो अब कहां गई है वह ?"

"कुछ बताया नहीं। इतना ज़रूर कुछ पूछ रही थी कि काठगोदाम की बस कितने बजे जाती है !"

"ओ, आई सी !" कमल तुरन्त कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ और इजाज़त लिए बिना ही कमरे से बाहर निकल गया । तिवारी चकित-सा उसकी ओर देखता रह गया।

कमल अपनी जीप गाड़ी में बैठा नैनी झील के किनारे-किनारे अंजना की तलाश में जा रहा था । उसे विश्वास था कि वह अवश्य ही उसे पा लेगा । कुछ देर के बाद उसे दूर सड़क के बायें किनारे एक सफेद साया-सा बढ़ता नज़र आया । उसका अनुमान गलत नहीं था।

वह ज्यों-ज्यों उसके निकट आ रहा था, उसे उस साये पर अंजना के अस्तित्व का विश्वास होता जा रहा था। आखिर करीब पहुंचकर उसने जीप गाड़ी के ब्रेक लगा दिए।

जीप गाड़ी के ब्रेक की चीख सुनकर अंजना वहीं ठिठककर खड़ी हो गई। उसे लगा जैसे वह चीख उसके भीतर की सारी पीड़ा समेट-कर बाहर ले आई हो। उसने पलटकर कमल की ओर देखा जो उछलकर जीप गाड़ी से नीचे उतर आया था और अब उसीकी ओर बढ़ रहा था। अंजना ने मुंह फेर लिया और झील के उस पानी की ओर देखने लगी जिसपर सुबह की हवा के झोंकों ने सरगम-सी छेड़ रखी थी।

"कहां जा रही हो अंजू ?" कमल ने पास आकर पूछा।

"यह तो मैं स्वयं भी नहीं जानती।" उसने उसी प्रकार झील की ओर देखते हुए कहा।

"आखिर कोई मंज़िल तो होगी ?"

"मंज़िल तो मैं कब की खो चुकी।"

"तो मेरी एक बात मान लो।"

"क्या ?"

"किसी ऐसे साथी को साथ ले लो—जो स्वयं खो गया हो।"

अंजना ने पलटकर कमल की ओर देखा और कुछ क्षणों तक चुप-चाप देखती रही। आज कमल की आंखों में एक अनोखी चमक थी। एक नया अन्दाज़ उमड़ आया था उनमें—जो आज से पहले अंजना ने कभी नहीं देखा था।

"खड़ी क्या सोच रही हो ? उस मुसाफिर का हाथ नहीं थामोगी जिसे तुमने एक दिन अपने द्वार पर दूल्हा के रूप में बुलवाया था।"

"कमल !" वह थरथराती आवाज़ में पुकार उठी।

"हां अंजू, मैं सब जान गया हूं। जिन बन्धनों को भगवान न तोड़ सका, हम इंसान उन्हें कैसे तोड़ सकते हैं ?"

"लेकिन यह सब कुछ तुमसे कहा किसने ?"

"तुम्हारी इन खामोश निगाहों ने—तुम्हारी इस परीक्षा ने। उस आराधना ने जो मिलन की घड़ियों के लिए पल-पल तरसती रही।"

"वह एक स्वप्न था, जो मैंने देखा था।"

"आज मैं उसीका स्वप्नफल बनकर आया हूं। आओ, अंजू ! मेरे करीब आओ और अपनी दुखदायी यादों को मेरी छाती में इस तरह दफन कर दो कि वे फिर कभी सिर न उठा सकें—" और यह

कहते-कहते वह बिल्कुल निकट चला गया।

अंजना, जो एक भटके हुए राही की तरह खड़ी थी, उसकी बात सुनकर पिघल गई। उसकी आंखों में छिपे हुए आंसू सितारों की तरह झिलमिला उठे। वह बड़ी बेवाकी से उसकी ओर बढ़ी और किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत उसने अपने-आपको उसकी बाहों में गिरा दिया और अपना चेहरा उसकी छाती से लगाकर बच्चों की तरह फफक-फफककर रोने लगी।

दूर शिव मन्दिर की घंटियां नैनीताल की पहाड़ियों में गूंज रही थीं। वह लहराती हुई गूंज हवा के झोंकों के साथ आ-आकर उनके कानों से टकराने लगी। कमल ने उसके बालों को उंगलियों से सहलाते हुए पूछा :

"आज मन्दिर नहीं चलोगी—अंजू ?"

"नहीं, आज मैं कहीं नहीं जाऊंगी।"

"क्यों ?"

"मेरा देवता अपना सिंहासन छोड़कर स्वयं मेरे मन-मन्दिर में आ बसा है। अब मैं क्या करूंगी वहां जाकर !"

कमल ने कसकर उसे अपने साथ लगा लिया और फिर उसे सहारा देकर जीप गाड़ी की ओर बढ़ चला।

वादी में अभी तक मन्दिर की घंटियां गूंज रही थीं।

○ ○ ○

मुद्रक : न्यू मदन हाफ़-टोन कम्पनी, नई दिल्ली-५.

१।१००



कटी पतंग

गुलशन नन्दा

आज के अत्यन्त ख्याति-प्राप्त लेखक गुलशन नन्दा का रोमांटिक उपन्यास—नाज़ुक परिस्थितियों में घिरी एक सुन्दर युवती की अत्यन्त रोचक तथा दर्द-भरी कहानी, जिसे एक बार हाथ में लेकर आप पूरा पढ़े बिना नहीं छोड़ सकेंगे।

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

हिन्द पॉकेट बुक्स